Printed by
(1) Text only
Time Printers Pvt. Ltd.
Binani Chambers,
Opp Ellisbridge Station
Ahmedabad-9.
(2) Introduction, etc
Swami Tribhuvandas Shastri,
Shree Ramananda Printing Press
Kankaria Road,
Ahmedabad-22
Published by
Dalsukh Malvania
Director
L. D. Institute of Indology
Ahmedabad-9.

FIRST EDITION
August, 1975

"Published with the financial assistance from the Government of India, Ministry of Education and Social Welfare (Department of Culture)"

PRICE RUPEES 16

जयवंतसूरि रचित

ऋषिदत्ता रास

संपादक

निपुणा अ. दलाल

प्रकाशक

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर

अहमदाबाद-९

पुरोवचन

ऋषिदत्ता रासनुं प्रकाशन भारत सरकारनी सहायताथी करवामा आव्युं छे ते सहाय माटे अमे भारत सरकारना शिक्षाविभागना आभारी छीए.

कवि जयवंतसूरिए अनेक ग्रंथोनी रचना सं १६१४ थी १६५२ना गाळामा करी हशे एवु तेमना केटलाक ग्रंथोने अते आपेल रचना संवत उपरथो जणाय छे. प्रस्तुत रचना ऋषिदत्ता रासनी जूनामा जूनी प्रति स. १६५९मा लखायेली मळे छे. परतु ते सुवाच्य न होवाथी प्रस्तुत संपादनमा सं १६६५ मा लखायेल प्रतनो मुख्यपणे आधार लेवामा आव्यो छे. तेथी आपणे कही शकीए के लेखकना समयनी भाषाथी वहु दूर नहि एवी जूनी गुजराती भाषानुं रूप आपणने प्रस्तुत कृतिमा प्राप्त थाय छे कृतिना सपादक डो निपुणा दलाले घणी काळजी लइ अनेक प्रतोना पाठातरोनी नोंध लीधी छे अने कवि जयवंत तथा तेमनी कृतिओनो विगते परिचय आप्यो छे प्रस्तुत ऋषिदत्ता कथानु मूळ छेक १३मा सैकामा मळे छे अने ते आख्यानकमणिकोषनी वृत्तिमा छे ते पछी प्रस्तुत कृति सिवाय २८ ऋषिदत्ता विषेनी कथाओ अने रास आदि रचाया तेनी नोंध सपादके लीधी छे. आ उपरथी सूचित थाय छे के आ कथा केटली लोकभोग्य वनी छे आमा सतीचरित्रनु चित्रण छे अने अनेक कष्ट पडवा छता ऋषिदत्ता पोतानुं शील अने प्रतिष्ठा केवी जाळवी राखे छे तेनु निदर्शन छे. एक ज कथामा जुदा जुदा लेखकोने हाथे केवा केवा परिवर्तनो थता रह्या छे तेनी पण नोंध सपादके लीधी छे छंद अने अलंकार उपरात आ कृतिगत कहेवतोनो सग्रह पण परिशिष्टमा सपादके करी दीधो छे नमूनारूपे जुदा जुदा लेखकोना वर्णनो पण तारवी आप्या छे अने शब्दसूची पण आपी छे.

आशा छे के जूनी गुजराती भाषना अभ्यासोने आ कृति बहु उपयोगी थई पडशे आ कृतिनु संपादन करी डॉ निपुणा दलाले एस एन डी. टी युनिवर्सिटी (मुंबई) नी पीएच डी. नी पदवी प्राप्त करी छे. आ कृतिना प्रकाशननी मंजूरी आपवा माटे उपर्युक्त युनिवर्सिटीना अमे आभारी छीए.

ला. द. भा. सं विद्यामंदिर
अमदावाद
३८० ००९
१५ ओगस्ट १९७५

दलसुख मालवणिया
अध्यक्ष

संपादकीय निवेदन

एस एन. डी. टी युनिवर्सिटी(मुंबई)माथी इ स १९७० मा मने गुजराती विभाग-माथी पीएच डी नी पदवी प्राप्त थई पीएच डी माटे में जूनी गुजरातीमा लखायेल कवि जयवंतसूरिनी "ऋषिदत्ता रास" नामनी हस्तप्रत पसद करेल कवि जयवतसूरि मध्यकालीन गुजराती साहित्यमा अगत्यना कवि थइ गया छे अने एमणे नानी मोटी अनेक कृतिओ रची छे.

"ऋषिदत्ता रास" मा कविए एक सतीनु जीवनचरित्र आलेख्यु, छे अने में आ रासनु संपादन कर्युं छे

आ संपादनकार्यमा मने घणी व्यक्तिओ तेम ज संस्थानी किंमती मदद मळी छे हस्त-प्रतोने माटे मारे अमदावादना ला. द. भा संस्कृति विद्यामंदिरना संचालकोनो, देवसानापाडाना उपाश्रयमा आवेला भंडारना व्यवस्थापकनो, श्री गोडीजीना उपाश्रय(मुबई)ना भंडारना व्यवस्थापकनो अने महावीर जैन विद्यालयना संचालकनो आभार मानवानो छे

हस्तप्रतोना वाचनमां अत्यन्त मदद रूप बननार पडित श्री अंबालाल प्रेमचंद शाहनो तथा संस्कृत हस्तप्रतना वाचन अने अनुवाद माटे स्व मुनिश्री पुण्यविजयजीनो मारे अत्यत आभार मानवो घटे. में तैयार करेल शब्दकोष काळजीपूर्वक जोइ जई केटलाक उपयोगी सूचनो अने सुधारा करी आपवा बदल हु वयोवृद्ध पंडित श्री बेचरदास दोशीनी ऋणी छु

गुजरात युनिवर्सिटी, गुजरात विद्यापीठ, फार्बस गुजराती सभा(मुबइ)ना पुस्तकालयोनो में कयारेक उपयोग कर्यो छे अने ते संस्थाओनी हु आभारी छु

अंते आ पुस्तकना प्रुफ वाचीने सुधारी आपवामा मदद करनार प० श्री बाबुभाई तेम ज आखाये पुस्तकने झीणवटथी तपासी जनार ला द. विद्यामंदिरना नियामक श्री मालवणिया-साहेबनु ऋण स्वीकार्या विना केम ज चाले ? आ रासना संशोधनकार्यमा मने प्रोत्साहन आपी सशोधननी आटीघूटीथी पूरती माहितगार करीने मारुं कार्य झपाटाबंध पूरुं कराववामा मददरूप थनार डॉ श्रीमती अनसूयाबहेन त्रिविदी तथा भूपेन्द्रभाई त्रिवदीनो हुं अत्यंत आभार मानु छुं

आ पुस्तकना प्रकाशन माटे मोटी रकमनी सहाय आपवा बदल भारत सरकारनो पण हुं अंत:करणपूर्वक आभार मानु छु.

निपुणा अ. दलाल

विषयनिर्देश

प्रस्तावना

प्रतपरिचय

(१) अ—ला द भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरना हस्तप्रतसंग्रहनी १५२६५ क्रमांकवाळी प्रत, पत्र ३२, पत्रदीठ पंक्ति १२, पंक्तिदीठ अक्षरो आशरे ४० लेखन वर्ष वि सं. १६६५ पानानु माप २६.१×११ सें मी. छे बन्ने बाजु हांसियो ३ सें मी.नो राखेलो छे. उपर—नीचे १ २ सं.मी. जग्या कोरी राखेली छे.

आ प्रत कोई विद्वान लहियाना हाथे लखायेली लागे छे, जेथी वाक्यरचना सुसंगत छे अने अर्थ काढवामा मुश्केली नथी पडती एनी पुष्पिका नीचे प्रमाणे छे

"संवत् १६६५ वर्षे वैशाख वदि १२ दिने श्री गंधारवास्तव्य पटुआ पासवीर-लिखित सकलवाचकमंडलीतिलकायमान – वाचकचक्रचक्रवर्ति – महोपाध्यायश्रीविमलहर्ष-गणिचरणाम्बरीकाप्रमाण—देवविजयगणिवाचनार्थं शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु श्रीश्रमणसंघस्य ॥ "

(२) ब—देवसाना पाडाना भंडार संग्रह, अमदावादनी प्रत पत्र २१, पत्र दीठ पंक्ति १२, पंक्तिदीठ अक्षरो ४०.

(३) क—देवसाना पाडाना भंडार संग्रह, अमदावादनी प्रत पत्र ३०, पत्रदीठ पंक्ति १४, पंक्तिदीठ अक्षरो ३५ पानानुं माप २२.३×१०.२ सें मी. छे

(४) ड—महावीर जैन विद्यालय, मुंबईना ह लि प्रतिभंडारनी प्रत क्रमांक स ४४२, पत्र २७, पत्रदीठ पंक्ति १३, पंक्ति दीठ अक्षरो ३७

(५) ई—महावीर जैन विद्यालय, मुंबईना ह लि प्रतिभंडारनी प्रत, क्रमांक ४४३, पत्र २६, पत्रदीठ पंक्तिओ १३, पंक्तिदीठ अक्षरो ४५ पानानुं माप २६ २×११ २ सें मी छे

(६) फ—गोडीजी उपाश्रयना ह लि भंडार, मुंबईनी प्रत, क्रमांक १२०३, पत्र २५, पत्रदीठ पंक्तिओ १३थी १४, पंक्ति दीठ अक्षरो ४०, लेखन वर्ष १६५९ पानानु माप २६×११.१ सें मी. छे

उपलब्ध प्रतोमा आ प्रत सौथी जूनी छे, परंतु एनी स्थिति सामान्य छे. प्रत पाणीथी भींजायेली छे, जेथी पत्रोनु लखाण झाखुं अने आछुं थई गयु छे, क्याक अक्षरो पण भुंसाई गया छे, छता बीजी प्रतना आधारे वाची शकाय.

अेनी पुष्पिका नीचे प्रमाणे छे

"इति सतीशिरोमणि ऋषिदत्ता आख्यान संपूर्णमिति ॥ भट्ट महोपाध्याय श्री कल्याणविजयगणि पंडित श्री शुभविजयगणि शि लालविजय लिखित । स्वपरोपकाराय रत्नभतीर्य ॥ श्री ॥ संवत १६७९ वर्षे पोष सुदि ४ दिने चिर जय ॥ श्री ॥

(७) ग—ला द भा.संविद्यामंदिर, अमदावादना हू लि भंडारनी प्रत, क्रमांक ३३६८, पत्रसंख्या ४२, पत्रदीठ पंक्ति २४, पंक्ति दीठ १३ अक्षरो.

आ प्रतना पत्रो छूटां नथी गुटका[1] माइझमा बीजी अनेक प्रतोनी साथे ग्रथाकारे बंधायेली छे प्रतनां पृष्ठ नंबर ५४ थी ९८ छे. पानानुं माप २२.१×१२.७ से.मी. छे.

अते पुष्पिका नीचे प्रमाणे छे :

"भट्टारक श्रीविजयदेवसूरीश्वर आचार्य श्री विजयसिंहसूरिराज्ये पंडित श्री सुमतिगणिशिष्य हीरसागेण लिखितं श्रीगलकुंडनगरे आशीर्वाद पंचमीदिने श्री । "

संपादनमां पाठनिर्णय अने पाठसंकलन

"ऋषिदत्ता रास"ना संपादन माटे जे सात प्रतोनो उपयोग कर्यो छे तेमाथी अेक प्रत 'अ' ने आदर्श गणी बीजी छ प्रतोना पाठभेद नोंध्या छे. मूळ लेखकना हाथे ज लखायेली प्रत

---

[1] आ गुटकामा नीचे प्रमाणे बीजी कृतिओ छे :

(१) शाश्वत जिन स्तवन— कर्ता लक्ष्मीविजय, पत्र १०–१२ संपूर्ण छे.
(२) विक्रमादित्य पंचदंड चोपाई—रचना संवत १५५६, ,, २१–५३ ,,
(३) पार्श्वनाथगीत—नन्नसूरि ,, ९८
(४) कायागीत —पद्मतिलक ,, ,,
(५) मुनिपति चोपाई—रचना संवत १५५०, ,, १–४८
(६) नेमराजुल बारमास —जयवंतसूरि ,, ४८–५५
(७) स्थूलभद्रकोशा प्रेमविलासफाग— ,, ,, ५५–५८
(८) कुनार छंद ,, ५८
(९) शखणी छंद ,, ५८–५९
(१०) सीमधर गीत नन्नसूरि ,, ५९–६०
(११) नेमिगीत ,, ६०
(१२) पद्मावती स्तोत्र ,, ६०–६३.
(१३) रुसाउली असाईत ,, ६३–९४
(१४) दिनरात्रिना चोघडिया आदि ,, ९४–९५
(१५) माधवानल कामकंदला चोपाई—कुशललाभ ,, ९५–१३५
(१६) वेताल पंचविंशतिका चोपाई— ज्ञानचंद्र ले.सं. १७०८ ,, १३५–१९३.

मळे तो पाठांतर लेवानी जरूर न पडे, पण लेखकनी पछी १०-१५ के ५० वर्षे लखायेली प्रतोमां लहियानी योग्यता समजीने तेने महत्त्व आपवुं पडे. अेवाय योग्यता न जणाय तो पाठो माटे तत्कालीन भाषाप्रवाहने ध्यानमा राखी बीजी प्रतो उपरथी मूळ पाठने शुद्ध करवो पडे.

उपलब्ध प्रतोमाथी समयनी, जोडणीनी के भाषानी प्राचीनताना धोरणे प्राचीनतम ठरावी शकाय तेवी तेम ज ते सुवाच्य होय अेवी प्रतने मुख्य प्रत गणी छे अने संपादित ग्रंथपाठ तेने आधारे तैयार करवामा आव्यो छे. आ प्रत ला. द. विद्यामंदरना ह. लि. भंडारनी छे आना करता जूनी प्रत गोडीजी उपाश्रयना ह.लि. भंडारमानी छे, परतु ते प्रत पाणीथी भींजायेली छे अने तेमा क्याक अक्षरो भुसाई पण गया छे.

प्राचीन गुजराती कृतिओना संपादनमा पाठांतरोनी नोंध अे अेक खूब ज गूचवे अेवो प्रश्न छे अनेक कारणे प्रतोमा जोडणी बाबत संपूर्ण अराजकता प्रवर्तती जोवामा आवे छे. घणी वार अेवु बने छे के लहियो जो विद्वान न होय अने मूळ पाठ बराबर ऊकल्यो न होय तो पोतानी समज प्रमाणे अेणे फेरफार करीने प्रत उतारी होय छे अेटले लहियाओनी मर्यादाओ स्वीकारी लईने मूळ पाठने शुद्ध करवानो प्रयत्न कर्यो छे बीजी छ प्रतोना पाठांतरो कृति पूरी थता पाछळ अेक साथे ज आप्या छे संदर्भ माटे आवश्यक होय ते तेम ज बीजी प्रतोमा मळता वधाराना पाठने पण त्या नोंध्या छे. मुख्य प्रतनी अेक के वधारे कडीओ बीजी कोई पण प्रतमा न मळती होय तो पण ते कडी संपादित ग्रंथपाठमा औचित्यपुरःसर ते ते स्थळे मूकी छे.

कवि जयवंतसूरिनुं जीवन

ऋषिदत्ता रासना कर्ता कवि जयवंतसूरि आचार्य विनयमंडनसूरि स्थापित वृद्धतपगच्छनी परंपरामा थई गया अेवी माहिती तपागच्छ पट्टावलीमाथी मळे छे.[१]

लगभग चौदमा सैकानी शरूआतमां वृद्धपौषालिक तपागच्छ अने लघुपौषालिक तपागच्छ अेम बे गच्छो विचारभेदना कारणे अस्तित्वमा आव्या हता तेमाथी वृद्धपौषालिक तपागच्छनी स्थापना संवत १३०० थी १३२५ना गाळामा थई हती

कवि जयवंतसूरिना जीवन उपर प्रकाश पाडे तेवी कोई सामग्री हजी सुधी उपलब्ध थई नथी संसारीपणानो त्याग करी दीक्षा लई लेनार जैन साधुओ पोताना पूर्वजीवन उपर भाग्ये ज प्रकाश पाडे छे–अेमना दीक्षित जीवन विषे पण बहु ओछी माहिती मळी शकती होय छे. कवि जयवंतसूरिअे पोताना गीतसंग्रहमां पोताने माटे नीचे मुजब लख्यु छे अने तेने आधारे आपणे कही शकीए के तेओ बाळब्रह्मचारी हता :

> " नेमिनाथ जयती राजलि पुहुती गडगिरनारी रे,
> जयवंतसूरि सामी तिहा मिलीइ, आबाल ब्रह्मचारी रे "

---

[१] 'श्री तपागच्छ पट्टावली, भाग १लो'—कर्ता–उपाध्याय श्री धर्मसागरजी, संपादक–पन्यास श्री कल्याणविजयजी महाराज, प्रकाशक–श्री विजयनीतिसूरिश्वरजी जैन लाइब्रेरी, अमदावाद, इ स. १९४०, पृष्ठ ५–६ 'शत्रुंजय तीर्थोद्धार प्रबंध'नी प्रस्तावना—कर्ता श्री जिनविजयजी, आत्मानन्द प्रकाश, माघमासनो अंक, पृष्ठ १५६

दीक्षा लेता पहेलां तेमणे कटलो अने कोनी पासे अभ्यास कर्यो हतो ते विषे कशुं जाणवा मळतुं नथी, पण एमनी कृतिओ जोता एमनो अभ्यास सारो एवो हशे एम अनुमानी शकाय. मम्मट आचार्यना 'काव्यप्रकाश' उपर तेमणे संस्कृत टीका लखेली होईने तेओ संस्कृतना सारा विद्वान हता अने अलंकारशास्त्रना सिद्धांतोथी सुपरिचित हता एम निःसंकोचपणे कही शकाय–

कवि जयवंतसूरि पोताना गुरु विनयमंडन उपाध्यायनो उल्लेख पोतानी कृतिओमां करता रहे छे :

" वडतपगच्छ सोहाकर हो, श्री विनयमंडन गुरुराजि,
रत्नत्रय आराधकी हो, जे जगि धर्मसहाय.

त्रूटक

जे जगि धर्मसहाय गुणाकर, बुधिविद्यितनई धुरि किध,
तस सीस गुणसोभाग सुनामई, जयवंतसूरि प्रसिद्ध."

—ऋषिदत्ता रास

ह. लि. प्रत, ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, क्रमांक १२१८, पृष्ठ ३१.

"श्री विनयमंडन उवझाय अनोपम, तपगच्छ गयणचंद,
तसु सीस जयवंतसूरिवर, वाणी सुणता हुई आणंद."

—नेमराजुल बारमास वेल प्रबंध

ह. लि. प्रत, ला. द. विद्यामंदिर—गुटको

"श्री विनयप्रमोदगुरु सीस, इम बुझवई वचन रसाल
जयवंतपंडित वीनवई, इम जाणी रे विषयरस टालि."

—राजुलगीतादि–इतिस्पर्शेन्द्रियजीत.

ह. लि. प्रत, ला. द. विद्यामंदिर—गुटको

"साधु सिरोमणि जाणीइतु, श्री विनयमंडन उवझाया रे
तास सीस गुण आगला तु, बहुला पंडितराया रे."

—श्री सीमंधरस्वामी लेख.

"फल लीइ नरभवतरतणां, श्री विनयमंडण गुरु सीस
जयवंत पंडित वीनवई, कर सफल धर्मिइ देह रे

—गीतसंग्रह–इति अंतरंग गीत.

कवि जयवंतसूरिए पोताना ग्रंथ शृंगारमंजरीमां जे केटलीक विशेष माहिती आपी छे ते उपरथी नीचेनी विगतो जाणी शकाय छे :

श्री विनयमंडन उपाध्यायने विवेकधीरगणि अने जयवंतसूरि ए बे शिष्यो हता. एमां विवेकधीरगणि शिल्पशास्त्रमां अत्यंत निपुण हता अने तेमणे शत्रुंजयतीर्थोद्धारना कार्यमां

शिल्पीओना निर्माण पर पूरी देखरेख राखी हती. शत्रुंजयतीर्थोद्धारनी प्रशस्ति तेमणे संस्कृतमां रची छे. तेमना गुरुभाई जयवंतसूरिनुं अपरनाम गुणसौभाग्यसूरि हतु अेमणे गुरुपरंपरानो उल्लेख नीचे मुजब शृङ्गारमंजरीमां कर्यो छे

" श्री तपगछ उद्योतकर, श्रीविजयधर्मसूरिंद
जिम सुरपति सुरवृन्दमा, जिम ग्रहगणमा चंद
श्री विजयरत्न सूरिंद गुरु, पट्ट महोदय भाण
श्री धर्मरत्न सूरीश्वर, केतू करु वखाण
श्री विद्यामंडन सूरीश्वर, श्री विनयमंडन उवज्झाय
श्री सौभाग्यरत्न सूरीश्वर, विजयमान गुणधार
विजयमान कुलमंडनह, श्री विवेकमंडन उवज्झाय
श्री सौभाग्यमंडन पंडितह, चतुर सोभागी सार.
श्री विनयमंडन मुणींद, लघु सीस भूमिप्रसिद्ध,
जयवंतपंडित अभिनवी, शृङ्गारमंजरी कीद्ध "

उपरना अवतरणने आधारे गुरुपरंपरानु वृक्ष नीचे मुजब थाय
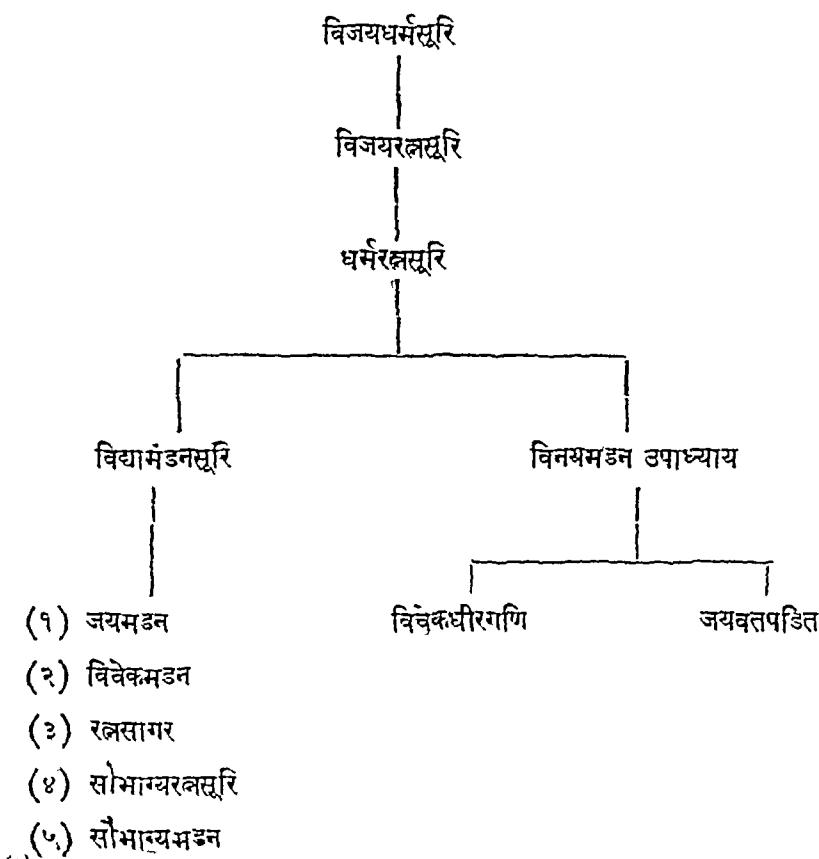
कवि जयवंतसूरिनी कृतिओ

"ऋषिदत्ता रास" उपरांत नानी मोटी थईने जयवंतसूरिनी नव-दस कृतिओ उपलब्ध छे, जेमांथी बे-अेक जैनगृहस्थोना जीवनप्रसंगने लगती छे, तो बे-अेक जैन संतो-साधुपुरुषो विषे छे तदुपरांत बे-त्रण कृतिओ स्तवन अने सज्झाय रूपे छे, जेमां जैनतीर्थंकरनुं गुणदर्शन करेलुं छे. आ सर्व कृतिओमां "ऋषिदत्ता" तेम ज "शृंगारमंजरी" बन्ने कृतिओ सारी रीते मोटी तेम ज कविनी कवित्वशक्तिने छती करती, तेमनी विद्वत्ताने नवाजती सुंदर कृतिओ छे कृतिओना नाम नीचे प्रमाणे छे

(१) शृंगारमंजरी (शीलवती चरित्र) सं १६१४.
(२) स्थूलभद्रकोशा प्रेमविलास फाग—१६१४ आसपास २९ कडी
(३) ऋषिदत्ता रास—सं. १६४३
(४) नेम राजुल बारमास वेलप्रबंध
(५) सीमंधर स्तवन
(६) राजुलरतिगीत
(७) स्थूलभद्र मोहनवेलि—ग्रंथाग्र ३२५
(८) सीमंधरना चंद्राउला—२७ कडी
(९) गीतसंग्रह
(१०) लोचन-काजल संवाद—१८ कडी
(११) नेमनाथ स्तवन.

कृतिपरिचय

(१) शृंगारमंजरी .

जयवंतसूरिअे "शृंगारमंजरी" (अपर नाम "शीलवतीचरित्र")नी रचना सं १६१४मां अेटले के अेमना यौवनकाळ दरम्यान करेली छे लगभग साडाबारसो श्लोकमां रचायेली आ कृतिमां कविअे अेक सती स्त्रीनुं जीवनचरित्र सचोट शब्दोमां आलेखवानो प्रयास कर्यो छे. शील अे स्त्रीनुं मोंघी बधांथी मूल्यवान रत्न छे अने अेने कोईपण संजोगोमां साचवी राखवुं अे स्त्रीनुं जीवननुं कर्तव्य थई पडे छे अे दर्शाववानो कविनो उद्देश छे कविअे नायिका शीलवतीना शृंगारनुं वर्णन तेम ज ते समयनुं जीवनदर्शन, राजकीय स्थिति, लोकोनी धर्मभावना वगेरेनुं पण वर्णन कर्युं छे

"संवत सोल चौविसइ, आसो सुदि गुरु बीज
करी छोपी शृंगारमंजरी, जयवंत पंडित हेज "

(२) स्थूलिभद्रकोशा प्रेमविलास फाग :

प्रस्तुत "स्थूलिभद्र-कोशा प्रेमविलास फाग" कविअे सं. १६१४नी आसपास रच्यो छे. [illegible] कडीनी, तेमनी संक्षिप्त पण सम्पूर्ण कृति छे. आ काव्यमां कविअे जैन समाजमां खूब ज प्रसिद्धि पामेल आचार्य स्थूलिभद्र अने वेश्या कोशाना जीवननुं वर्णन कर्युं

छे पाटलिपुत्रना राजा नंद महाराजना मंत्री शकटालना पुत्र स्थूलिभद्र गृहत्याग करीने बार वर्ष सुधी कोशा नामनी वेश्याने घेर प्रेमविलासमां जीवन व्यतीत करे छे पिताना मृत्यु पछी नाना भाईने मंत्रीपद सोंपे छे अने पोते संसार प्रत्ये वैराग्य उत्पन्न थता साधु पासे दीक्षा ग्रहण करे छे. दीक्षा दरम्यान अेमना गुरु अेमना चारित्रनी परीक्षा करवा वेश्या कोशाने त्यां चातुर्मास गाळवा मोकले छे. ज्यां स्थूलिभद्र वेश्यानी साथे रहेवा छतां पण जळकमलवत् रही पोतानुं शुध्ध चारित्र साबित करे छे. ते दरम्यान स्थूलिभद्रना वियोग समये कोशाने ऋतुओ केवो संताप आपे छे तेनुं वर्णन अने स्थूलिभद्रना मिलने अेनुं हैयुं केवुं कमल समान विकसित थाय छे ते वर्णव्युं छे

आ फागमां ४१मी कडी सुधीमां स्थूलिभद्र के कोशानुं नाम पण आवतुं नथी. त्यां सुधीनी रचना सांसारिक प्रेम काव्यनी ज छे. मात्र छेवटनी चार कडीओमां ज कविअे अछडतो उल्लेख कर्यो छे अने रचनाने जैन फागुनी परंपरागत कोटिमां मूकवानो औपचारिक प्रयत्न कर्यो छे.

(३) ऋषिदत्ता रास :

सं १६४३मां रचायेल ४१ ढाळना आ रासनुं संपादन अहीं कर्युं छे अेटले अे अंगे विगतवार माहिती पछीना प्रकरणोमां आपी छे.

(४) नेमराजुल बारमास वेल प्रबंध :

आ बारमासी काव्यमां कविअे जैनोना बावीसमा तीर्थंकर नेमनाथे मुक्तिरूपी स्त्रीने मनमां धारण करी राजुलकुमारीने परणवा जतां अेनो केवी रीते त्याग कर्यो तेनुं वर्णन कर्युं छे नेमनाथना विरह दरम्यान बारे ऋतुओ राजुलने केवी रीते विरहथी संतापे छे अने अन्यने सोहामणी लागती ऋतुओ राजुलकुमारीने केवी पीडा आपे छे ते वर्णव्युं छे.

" वीजलीया चमकत कि कलमल होइ हइया रे
ढावा उपरि लूण लगावइ बप्पैया रे "

अंते नेमनाथे जे मुक्तिना गुण गाया ते सांभळीने राजुले पण जिनेश्वर पासे संयमनी याचना करी अने शिवपुरीने वरी.

(५). सीमंधर स्वामी लेख

२९ कडीना आ स्तवनमां कविअे हालमां महाविदेहक्षेत्रमां विचरता जैन तीर्थङ्कर सीमंधरस्वामीनी स्तुति करी छे : "मारा गुणवान अेवा सीमंधर स्वामी ! तारुं नाम बोलतां मोढामांथी अमृत झरे छे, तेम ज तारी गुणरूपी कपले मारा मनरूपी भ्रमरने वींध्यो छे. तने मळवाने मारुं मन खूब ज विह्वळ छे पण शुं करुं ? तुं खूब ज दूर छे तारा मुखरूपी चंद्रने जोवा माटे मारा नयनो आतुर छे. तारा गुण गावा माटे तो मारी पासे अक्षर पण ओछा छे."

" अक्षर बावन गुण घणा तु, केता लखीइ लेख रे
थोडइ घणउ करी मानयो, मुख होसिइ तुम्ह देखिई रे. "

(६) राजुलगीतानि :

आ गीतमा नेमनाथ विना राजुल केवी झूरे छे अने अेने विरह केवो थाळे छे ते कविअे वर्णव्युं छे. कवि सलाह आपे छे के हे भविक जनो ! तमे विषयमा विलुब्ध न थशो. विषयने उत्पन्न करनारी आ पचेन्द्रिय उपर संयम केळवो, कारण, विषय तो कषाय करावे छे. नाक, कान, आख, जीभ अने स्पर्श आ सर्वे इन्द्रियो विषयरसने वधारनारी छे तेथी सुख पामवा अेना उपर जीत मेळवो कविअे आ गीतने पाच जुदां गीतोमा वहेंच्युं छे प्रथम गीतमा कवि नेमनाथना विरहमा राजुलना मुखे बोलावे छे के जे माणस स्नेहथी बधायेलो होय तेने विरह सहेवो मुश्केल छे बीजा गीतमा चक्षुने दोष दइ कवि कहे छे के "पापी अेवा नयनोने धिक्कार हो ! जेने स्वप्नमा पण मल्या न होय तेने जोईने स्नेह धरे छे अने अेना विरहथी झूरी मरे छे." त्रीजा गीतमा भ्रमर नामिका द्वारा रसनी मुग्ध माणी केवी रीते कमलना बधनमा जकडाय छे ते वर्णव्युं छे. चोथा गीतमा हाथीनु दृष्टात आपीने कह्युं छे के स्पर्शेन्द्रियथी हाथिणीअे जे विलास रच्यो तेमा हाथी सपडाई गयो, माटे तमे विषयरसने टाळो पाचमा गीतमा पोपटनुं प्रतीक लइ कवि कहे के फळनी आशाअे ते पिंजरमा पुरायो आम जाणी विषयरस त्यागो.

आम मोह ज आपणने दुःखी करे छे—जेवी रीते नेमनाथना स्नेहमा राजुल दुःखी थाय छे तेवो गीत माटे इन्द्रियोना सुखनो त्याग करो अेवो कविनो उपदेश छे

(७) "स्थूलिभद्र मोहनवेलि"—ग्रथाग्र ३२५ :

आ कृतिनी हस्तप्रत प्राप्त थई नथी

(८) सीमंधरना चंद्राउला :

आ २७ कडीनुं काव्य छे आमा पण कविअे हालमा महाविदेहक्षेत्रमां विहरता जैनोना तीर्थंकर सीमंधरस्वामीनी स्तुति करी छे.

"मुणज्यो वीनतीरे, ओलगडी रे संदेसे मान्यो दूरिथी रे
अतिशय सयल अलकर्यारे, सीमधर जिनरायो."

(९) गीतसंग्रह :

आ गीतसंग्रहमा कविअे रचेला ५३ गीतानो संग्रह छे. कविअे सरस्वती–लक्ष्मी पद्मावती वगेरे देवीओना गुणगान गाता गीतो रच्यां छे, तो केटलाक तीर्थंकरोनुं वर्णन कर्युं छे. तदुपरांत प्रख्यात श्रावकोना चरित्रो उपर पण गीत रच्या छे. सरस्वती देवीनो महिमा गाता कवि कहे छे के—

"वाणी निर्मल आपनी रे, कापनी अरितणां मूल
महिमाअे महिम वधारती रे, शारदा थई सानुकूल.

चोथा गीतनो चोवीसमा तीर्थंकर 'महावीरस्वामी'नी स्तुति करी छे :
"इणना अंतर केरडा हारदू, तु भेटई सवि दुरयोरे दयाट."

नवमा गीतमा जैनोना महातीर्थ शत्रुंजयगिरिनु वर्णन करता कवि कहे छे

"त्रणेय भुवनमा विमलाचल जेवु कोई तीर्थस्थान नथी. त्या ऋषभदेव जिनेश्वर समोसर्या छे अने पाचकोडि मुनिओ परिवर्या छे."

सोळमा गीतमा कवि तृष्णानो त्याग करवा विनवे छे

एकत्रीसमा गीतमा कवि नेमनाथना विचार चढती राजीमतीनी व्यथा वर्णवे छे ते विचारे छे के "मारा नेमजी आवशे त्यारे एमने थाळभरी मोतीथी वधावीश जे मारा वालिमनी वात करशे तेने वधामणी रूपे हार आपीश"

तेत्रीसमा गीतमा स्थूलिभद्र ज्यारे पाछा कोशाने त्या आवे छे त्यारे कोशाना दिलमा जे आनंद थाय छे ते व्यक्त कर्यो छे

अंते त्रेपनमा गीतमा कविए राजुलनी नेमनाथना दर्शन करवानी अभिलाषा वर्णवी छे

आम गीतसंग्रहमा अनेक छूटाछवाया गीतोनी लहाण कविएकरी छे.

(१०) लोचनकाजल संवाद :

आ अढार कडीनु सुंदर गीत छे आमा कविए लोचन अने काजल वच्चेनो सुंदर संवाद रजू कर्यो छे :

"नयणारे गुण रयणा नयणा, ए मणघटती जोडि,
काला कज्जल केरड कारणि, तुझनइ मोटी खोडि रे"

आ उपरात, कविए काव्यप्रकाशनी टीका संस्कृतमा लखी छे तेनी प्रशस्ति नीचे प्रमाणे छे :

"टीका काव्यप्रकाशस्य आलिलेख प्रमोदत· ।
गुणसौभाग्यसूरीणा गुरूणा प्राप्य शासनम् ॥
सवत १६५२ वर्षे पोष सुदि १३ बुधे समाप्तोय ग्रन्थ· ॥

आम कविए पद्यसाहित्यना विविध प्रकारो जेवा के रास, बारमासी, फागु, स्तवनो, गीत वगेरे खेड्या छे

(११) नेमनाथ स्तवन :

४० कडीनी आ नानकडी कृतिनु संशोधन करी मुनिश्री संपतविजयजीना शिष्य मुनि धर्मविजये ए कृति ताजेतरमा बहार पाडी छे एम जाणवा मल्यु छे.

रास (संक्षिप्त स्वरूपचर्चा)

प्राचीन गुजराती साहित्यमा 'रास', 'फागु', प्रबंध पवाडु, बारमासी, पद वगेरे जे अनेक साहित्यप्रकारो खेडाया छे तेमा रासप्रकारने आपणे सौथी वधारे महत्त्वनो गणी शकीओ

'रास' के 'रासो' अेटले प्रासयुक्त पद्यमा (दुहा, चोपाई के 'देशी' नामे ओळखाता विविध रागोमाना कोईमा) रचायेलु, धर्मविषयक ने कथात्मक के चरितात्मक, सामान्यत काव्यगुणो थोडे अंशे होय छे तेवु, पण समकालीन देशस्थिति तथा भाषानी माहिती सारा प्रमाणमा आपणने आपतु, लाबु काव्य "

'रास' काव्योनो मध्यकाळमा मोटो प्रचार हतो 'रास' रमवो अने 'रास' रचवो अेम बे भिन्न भिन्न क्रियाओ परत्वे रास शब्दना भिन्न भिन्न अर्थ थाय छे 'रास' रमवो अेटले रास नामना नृत्यप्रकारना समारंभमा भाग लेवो ते ने 'रास' रचवो अेटले रास नामना काव्यप्रकार रचवो ते. आम 'रास' नृत्यप्रकार छे तेम काव्यप्रकार पण छे ×

आ स्थळे आपणे रासना काव्यप्रकारने विचारीशु 'रास' के 'रासो' नामथी ओळखाता आ काव्यप्रकारनो प्रयोग सौथी पहेलो जैन मुनिओअे करेलो जणाय छे अपभ्रंश भाषामा महाकाव्यो रचाता तेने स्थाने मध्यकालीन गुजरातीमा 'रास' रचावा लाग्या महाकाव्योनी सर्गनी पद्धतिने बदले कडवा, भासा, ठवणी के ढाळमा विभाजित अेवो आ गेय काव्यप्रकार हतो

अेम जणाय छे के आरंभमा 'रास'नु स्वरूप ऊर्मिकाव्य जेवु हशे. पण पछीथी ते विस्तृत वर्णनात्मक काव्यस्वरूप बनी गयु अने 'रासउ' के 'रासो'नी संज्ञा पाम्यु

मध्यकालीन गुजरातीमा जूनामा जूनो उपलब्ध रास ते स १२४१मा रचायेल शालिभद्र-सूरि कृत "भरतेश्वर बाहुबलि रास".

हेमचंद्र आचार्यना समयमा रास अथवा रासक अेक गेयरूपक तरीके लोकोने परिचित काव्य-प्रकार हतो उत्सव टाणे मंदिरोमा तथा जैन देरासरोमा रास रमाता अने गवाता खास प्रसंगने माटे जैन साधुओ नवा नवा रास रची पण आपता "ताल रासक" अने "लकुटा रासक" अे बे नामो उपरथी लागे छे के रास गेय अने अभिनयक्षम साहित्यप्रकार ज हतो

शरूआतमा रासने समयमर्यादा नडे अेटले ते टूका गीत जेवा होय, परतु तेमा कथानु तत्त्व वधु ने वधु प्रमाणमा उमेराता अे प्रकार वर्णनात्मक अने पाठ्य बनी गया गेयता भले कायम रही पण अभिनयक्षमता घटी गई आ काव्यप्रकार विस्तृत बनता रचनबंध कोई पण अेक ज ढाळ पूरतो मर्यादित न रह्यो रचनाना खड पडया अने ते खडो भास, ठवणी, ढाळ इत्यादि नामो पाम्या अने तेमनी गेयता दर्शाववा माटे लोकप्रचलित देशीओनो उल्लेख खडोने मथाळे थवा लाग्यो

वैद्य विजयराय क . "गुजराती साहित्यनी रूपरेखा" आवृत्ति १ली, १९४३, पृष्ठ १९-२०.

× ठाकर धीरुभाई "गुजराती साहित्यनी विकासरेखा" (खड १–मध्यकाळ), चोथी आवृत्ति, १९७९, पृष्ठ ११०–१११

જે વિસ્તૃત રાસાઓ જૈનમુનિઓ દ્વારા રચાયા તેમાં જૈન આગમો સૂત્રો અને અંગોમાં આવતા પૌરાણિક પાત્રોને અનુલક્ષીને કથાનકો રચેલા મળે છે ઘણા રાસોમાં શૃંગારરસના વર્ણનો મળે છે, પણ તેની સાથે કવિને ઉપદેશવાનો હોય છે વિષયોપભોગનો ત્યાગ એટલે કાવ્યનો અંત હમેશા શીલ અને સાત્ત્વિકતાના વિજયમાં આવે છે રાસની રચનાનો ઉદ્દેશ ઉપશમનો બોધ આપવાનો હોય છે અને એમાં સંયમશ્રીને વરવાની વાત આવતી હોય છે

રાસાઓનો મુખ્ય હેતુ ધર્મોપદેશ આપવાનો. રોચક કથાનક દ્વારા જો એ કાર્ય થઈ શકે તો જનતા ઉપર એ ઉપદેશની સચોટ અસર થાય વળી ઘણા રાસાઓ તીર્થંકરો, રાજવંશી જૈન સાધુઓ કે જૈન શ્રેષ્ઠીઓના જીવનચરિત્રને વિષય બનાવે છે કોઈક રાસ તીર્થનું માહાત્મ્ય પણ વર્ણવતો હોય છે આમ જૈન મુનિઓએ રચેલા રાસમાં જૈનધર્મનું માહાત્મ્ય બતાવવું એ જ પ્રધાન હેતુ છે

વર્ણનો, પ્રસંગો અને ધર્મોપદેશ ઉપરાંત સાહિત્યનું તત્ત્વ પણ ઘણા રાસાઓમાં મળે છે સંસ્કૃતમાં પ્રવીણ એવા ઘણા સાધુઓએ રચેલ રાસાઓમાં શબ્દાલંકાર ને અર્થાલંકાર બન્ને મોટા પ્રમાણમાં મળે છે આ રાસાઓમાં ધર્મનો સિદ્ધાંત ઠસાવવા માટે આગળપાછળના ભવોની કથા કવિ આપે છે કવિમાં પાંડિત્ય હોય પણ કવિત્વની ઉણપ હોય ત્યાં એની કૃતિ રોચક ન બને ને કેવળ ધર્મકથા જ બની રહે એ પણ એટલું જ સાચું છે પાછળથી રચાયેલા કેટલાક રાસાઓમાં પરિસ્થિતિએ આવો વળાંક લીધો હોવાનું જણાય છે

સામાજિક દૃષ્ટિએ પણ રાસાઓ ઉપયોગી બને છે, કેમ કે તેમાં વ્યક્તિગત, ઐતિહાસિક, સામાજિક, ભૌગોલિક કે રાજકારણ સંબંધી ઉપયોગી માહિતી પણ ભરવામાં આવી હોય છે આ હિસાબે જૈન રાસા–સાહિત્યનું ઐતિહાસિક દૃષ્ટિએ પણ મહત્ત્વ છે

શ્રી જયવંતસૂરિએ રચેલ "ઋષિદત્તા રાસ"નું કથાવસ્તુ (ઢાલાનુક્રમે)

પંચ પરમેષ્ઠીને નમસ્કાર મા સરસ્વતી ઋષિદત્તાના આખ્યાનની રચના માટે નિર્મળ વાણી આપો. રસિકજનોના આગ્રહે ઋષિદત્તાનું ચરિત્ર આલેખવાનો આ ઉદ્યમ કીધો છે (૧)

રથમર્દનપુર નામે એક સુંદર શહેર હતું ત્યાં હેમરથ નામે રાજનીતિમાં નિપુણ રાજા રાજ્ય કરતો હતો. તેને સુયશા નામની રૂપવતી પટરાણી હતી તેનો દીકરો કનકરથ કાંતિમાં કામદેવ સરખો હતો. (૨)

કાવેરી નામની એક રમણીય નગરીમાં સુંદરપાણિ નામે બળવાન રાજા રાજ્ય કરતો હતો. તેની પટરાણી વસુધાને રુખમણી નામની રવરૂપવતી દીકરી હતી તે ઉમ્મરલાયક થતાં પિતાને તેને લાયક વર શોધવાની ચિંતા થઈ. કનકરથ જ વર નક્કી કે સર્વોત્તમ માનતા હેમરથ રાજા પાસે દૂત

---

* કૃતિનું સંપાદન અહીં પ્રધાન હોઈ તેના પ્રકાર અંગે આટલી સંક્ષિપ્ત ચર્ચા ઉચિત ગણી છે ડૉ. ભારતી વૈદ્યકૃત "મધ્યકાલીન રાસ સાહિત્ય" ડૉ મંજુલાલ મજમુદારનું "ગુજરાતી સાહિત્યના સ્વરૂપો" ડૉ ચંદ્રકાન્ત મહેતાનું 'મધ્યકાળના સાહિત્યપ્રકારો" શ્રી કે. કા. શાસ્ત્રીનું "ગુજરાતી સાહિત્યનું રેખાદર્શન" તથા ડૉ હરિવલ્લભ ભાયાણીના [illegible] રાસના સ્વરૂપ અને વિકાસની વિગતે ચર્ચાવિચારણા મળી રહે છે.

मारकने साथु मोकल्यु. पितानी आज्ञा माथे चडावी कुवर कनककाय स्वर्णमणीने पगनवा सैन्य साथे कवेरी जवा शुभ शुकन जोई नीकल्यो आगळ जता मार्गमा अेक जंगल आव्युं. त्या पीवाना पाणीनी मुश्केली ऊभी थई. पाणी शोधवा गयेला सेवको अेक असंभव वात लई आव्या. (३)

सेवकोअे तेओ कहेवा लाग्या "पाणीनी शोधमा भटकता अमे अेक पाणीथी भरेलुं विशाळ सरोवर जोयु जात जातना पक्षी त्या खेलता हता अने अनेक जळचरो पाणीमा विहरता हता. सरोवरने किनारे वन्य वन हतु. तेमा ओचिंतु हांचतो अेक अद्भुत सुंदरीने अमे जोई. अमने जोईने ते तरत ज अलोप थई गई बहु बहु शोधवा छताय अे अमने न मळी." सेवकोनी आ वात साभळी कुवर आश्चर्यचकित थयो अने ते सुंदरीने जोवा माटे सेवकोअे देखाडेल मार्गे आतुरतायी आगळ वध्यो रस्ते अेणे वृक्षो अने फळफूलोथी सभर अेवो अेक सुंदर बगीचो जोयो बगीचानी शोभा जोतो ते अेक आवाना झाड तळे आराम करवा बेठो त्या अेकाअेक तेणे ते सुंदरीने जोई रुपस्वना अवार सनी ते सुंदरी नजरे पडता कुवर तेना पर मोही पड्यो. अने शी रीते बोलाववी अेनो विचार करता हतो त्या पाछळ आवता सैन्यनो कोलाहल साभळी ते सुंदरी अदृश्य थई गई कुवर वहावरो बनी गयो. सैन्यने त्या ज उतारो आपी ते सुंदरीने शोधवा, कुवर ते काननमा फरवा लाग्यो दूर अेक सुंदर मंदिर नजरे पडता ते त्या जई मंदिरमा पेठो -मंदिरना गर्भागारनु सौन्दर्य निहाळी हर्ष पामेला तेणे तेनी प्रदक्षिणा करी. (४)

गर्भागारमा ऋषभदेवनी मूर्ति जोई स्तवन गाई तेणे पूजा आदरी ने ते पतावी रंगमंडपमा बेठो. त्या कोई तापस पेली कुमारिकानो हाथ झाली आवी पहोच्यो कुवरे तापसने प्रणाम कर्या ऋषिअे आशिष आपी समाचार पूछ्या बंदीजनोअे कुवरनी वंशावलि कही समजावी विनयपूर्वक कुमारे तापसने तेनी साथे आवेली कन्या अंगे प्रश्न कर्यो. जिनपूजा पतावीने अे लाबी कथा कुमारने समजाववानी तापसे खातरी आपी तापसे स्तवनसहित जिनेश्वरनी पूजा आदरी. (५)

पूजा पूरी करी ते ऋषि राजकुंवर बेठो हतो त्या रंगमंडपमा आव्यो. तेनी साथेनी सुकोमल सुंदरी स्नेहपूर्वक कुंवरने जोई रही कुवरे पण तेना प्रत्ये जबरु आकर्षण अनुभव्यु. कुवरने पोतानी साथे लई तापस पोतानी झूपडीअे आव्यो अने विधिपूर्वक तेनो सत्कार कर्यो पछी तेणे पोतानो वृतान्त कहेवा माड्यो "चित्रकावती नामनी नगरीमा राज करता हरिषेण राजानी राणी हती प्रियदर्शना. तेनो पुत्र अजितसेन भेटमा मळेला अेक सफेद अश्व पर सवार थई राजा हरिषेण दूर दूर फरवा नीकळी पड्यो. (६)

अश्वने रोकी न शकाता हरिषेणे मार्गमाना अेक वृक्षनी डाळी पकडी लीधी अने घोडाने दोडी जवा दीधो. झाड परथी ऊतरी वनमा फरता तेणे अेक सरोवर जोयुं. त्या पहोची हाथमग अने मो धोई पाणी पीधु, वनफळ खाधा. आगळ जता ते तापस विश्वभूतिने आश्रमे जई पहोंच्यो. ऋषिने प्रणाम कर्या. ऋषिअे आशीर्वाद आप्या. त्या तो अेनु सैन्य अेने शोधतुं आवी पहोंच्यु. मुनिसेवा करता ते त्या अेक मास रह्यो, अने वनमा सुंदर ऋषभेश्वरनु मंदिर बधाव्यु मुनिअे खुश थई हरिषेण राजाने जेर उतारवानो मंत्र आप्यो. राजा ते पछी पोताने महेले पाछो फर्यो. (७)

अेक दिवस सभा भरी ते बेठो हतो त्या अेक दूत आव्यो, कहेवा लाग्यो. "मंगलावती नगरीमा प्रियदर्शन राजानी दीकरी प्रीतिमतीने नाग करड्यो छे बापने दीकरी प्राणथी पण वधु

प्यारी छे. वैद्योना इलाज निष्फळ गया छे. तमे परोपकारी छो अेटले राजाअे मने तमारी पासे मोकल्यो तमे आवी स्त्रवळे तेनु झेर उतारो. सज्जनो पारका माटे जवरो भोग आपता होय छे. विलम्ब न करता आप अवळानी वहारे थाओ."

हरिषेणे जईने प्रीतिमतीनु झेर उतार्यु. प्रियदर्शन राजाअे खुश थई प्रीतिमतीने तेनी साथे परणावी. हरिषेण सुखी दांपत्यजीवन गुजारवा लाग्यो केटलेक वाळे तेने पुत्र थयो. ते जुवान थता तेने राज्यभार सोंपी दपतीअे तापसव्रत लीधु ने विश्वभूति मुनिना आश्रममा जई रह्या अे समये प्रीतिमतीने गर्भवृद्धि थती जणाई. आश्रममा आव्या पहेलानो गर्भ रहयो होवो जोईअे अेम प्रीतिमतीअे हरिषेणने समजाव्यु. पण बीजा तापसा आश्रमना नियमनो भग थयेळो गणी आश्रम छोडी जता रहया. आश्रमने निर्जन जाई दूर जई रहेला अेक वृद्ध तापसने राजाअे प्रश्न कर्यो अने तेणे तापसो चाल्या गया तेनु कारण दर्शाव्यु राजा खिन्न थई गया. जेमतेम चार मास विताव्या अने पूरे दहाडे ऋषिदत्ता जन्मी. सूआरोगमा प्रीतिमती मृत्यु पामी. बापे ज दीकरीने उछेरीने भणावी. दीकरी आठ वर्षनी थई त्यारे अेना रूपने कारणे अेने माटे कोई दुष्ट विचार न करी शके अेटला खातर तेणे अदृष्टीकरणनु अजन कर्यु.

ते ऋषिदत्ता ते आ कन्या, अने हु ज तेनो बाप छु ते तने जोईने मोह पामी छे" (७)

कुवर कनकरथ पण ऋषिदत्ताना प्रेममा पडयो बन्नेनो परस्पर प्रेम जोईने तापस हरिषेणे बन्नेना लग्न कर्या आनंद वर्त्यो. पुत्रीनो विरह नहीं ज सहेवाय अेम मानीने हरिषेणे बळी मरी आपघात कर्यो. कल्पात करती ऋषिदत्ताने कनकरथे समजावी, मनावी लीधी. काळबळ आगळ कोईनु कशु चालतु नथी, माटे झाझो शोक न करवानु तेने कह्यु. (८)

ऋषिदत्ता जेवी सद्गुणी अने स्नेहाळ पत्नी मळता कनकरथ धन्यता अनुभवी पुण्यमहिमा अने प्रीतनी रीत दर्शावता कवि बहुपत्नीत्वनी टीका करता जणावे छे के अेवे प्रसगे पुरुष करता स्त्रीनी दशा बूरी थाय छे. शोकयना सालनो विचार आवता कनकरथे रुखमणीने परणवा जवानु माडी वाळ्यु ने रथमर्दनपुर पाछा फरवानो निर्णय लीधो. (आ प्रसगे कविअे शाकुतलमाना "शकुतलानी विदाय"ना प्रसगनु स्पष्ट स्मरण करावे अे रीते ऋषिदत्ताने वनना वृक्षो, पशु-पक्षीओ, लतावेलीओ वगेरेनी विदाय लेती चीतरी छे.) हवे रथमर्दनपुर जता ऋषिदत्ता रस्ते थोडे थोडे अतरे सदा फूलना बी रोपती चाली. (९)

कनकरथ–ऋषिदत्ता केटलेक दिवसे रथमर्दनपुर पहोच्या त्यारे राजा हेमरथे नगरमा मोटो उत्सव कराव्यो बन्ने सुखथी रहेवा लाग्या उत्तरोत्तर अेमना स्नेहमा वृद्धि थती गई (१०)

कनकरथना ऋषिदत्ता साथना लग्ननी वात केटलेक वखते कावेरी नगरीमा पहोची सुदरपाणि राजाने आळ लागी रुखमणी रुठी पोताना पतिने भोळवी, तेने परणी बेसनार ऋषिदत्ता उपर पूरु वेर लेवानो अेणे निर्णय कर्यो कूडकपटमा कुशळ अेवी सुलसा योगिणीने तेणे साधी. ऋषिदत्ता उपर खोटु आळ आवे अने ते दुखी दुखी थई जाय अेवु करवा सुलसा कबूल थई. रथमर्दनपुर जई तेणे पहेली तके ऋषिदत्ताने जोई लीधी (११)

मुनिने मल्याथी पोताने घणो आनंद थयो छे अने मुनिने जोता पोतानी आंख धराती ज नथी एम कुवरे मुनिवेशधारिणी ऋषिदत्ताने कह्यु. तेणे पूर्वजन्मना ऋणानुबंधनी वात करी. कुवरे तेने पोतानी साथे कावेरी नगरी आववा आग्रह कर्यो. ऋषिदत्ताए ना पाडी. (२८)

कुंवरनो अति आग्रह जोई ऋषिदत्ता जवा कबूल थई बन्ने कावेरी पहोच्या. सुंदरपाणि राजाए कुंवरनो सारो सत्कार कर्यो. जोषीओए आनंदपूर्वक कनकरथ अने रुखमणीना लग्न कराव्या. सुंदरपाणिए थोडा दिवस कुंवरने पोताने त्या राख्यो (२९)

हवे प्रिय पति पोताने वश छे एम मानती रुखमणीए एक वार हर्षथी कुंवरने पूछ्युं के तमे ते तापसकन्याने केम परण्या हता ? तेनामा शु दीठु के मने तजी दीधी ? (३०)

कुवरे जणाव्युं के पोते ऋषिदत्ताना गुणोने वश हतो. ऋषिदत्ता जेवी रुपाळी स्त्री जगतमा नथी ज. कथा रत्न ने क्या काकरा ? अमृत न मळे तो काजी पीने संतोष लेवो पडे तेम ऋषिदत्ताना विरहे रुखमणी जेवी पत्नी दैवसंजोगे मने मळी. (३१)

रुखमणी आ साभळी कोपी गुस्सामा ने ईर्ष्याने कारणे ते बोली गई के ज्यारे ऋषिदत्ता तेना मार्गमा आवी ने तेनी कुंवरने परणवानी आशा कापी नाखी त्यारे पोते तेने केवी दु:खी दु:खी करी दीधी ! वेर वाळवा पोते ज तेना पर हिंसानुं आळ चडावेलु. ऋषिदत्ता गमे तेवी कुलीन पण तेनु शु वळ्युं ? माता सुलसाने वन्य के तेणे पोताने माटे बधा ज उपाय कर्या ने ऋषिदत्ता कलंकिणी साबित थई. (३२)

रुखमणीना बोल साभळी कनकरथ गुस्से थई गयो. स्वार्थी रुखमणीने सखत शब्दोमा तेणे ठपको आप्यो. रुखमणीए ऋषिदत्ताने आम हणी तेथी ते कुवरनी वेरण थई चूकी. जो ऋषिदत्ता स्वर्गे सिधावी तो पोताने जीववानि हवे शु काम छे एम करी कुवर चिता खडकावी वळी मरवा तैयार थयो. बधे कोलाहल मची गयो. राजा सुंदरपाणि आव्यो. तेणे कुंवरने वार्यो पण ते अटक्यो नही त्यारे मुनिवेशधारी ऋषिदत्ताए तेने आपघात न करवा मीठाशपूर्वक समजाववा माड्यो. जीवतो नर भद्रा पामे एम कह्यु (३३)

कुंवरे ऋषिदत्ता माटेना पोताना उत्कट प्रेमनो एकरार कर्यो अने तपनी शक्तिथी मुनि ऋषिदत्तानो मेळाप करावी दे तो पोते तेनो दास बनी जशे एम जणाव्युं (३४)

मुनिवेशधारी ऋषिदत्ताए कुवरने कह्यु के ज्ञानना प्रभावे पोताने त्रिभुवन प्रत्यक्ष छे अने ऋषिदत्ता यमने घेर कल्लोल करे छे. कुवरे पोतानी पासे ते केवी रीते पाछी आवे ते पूछ्युं. जवाब मल्यो के हु त्या जई तेने तारी पासे मोकलु छु. कुवरे अधीराईथी ते प्रमाणे करवा कह्यु. मुनिवेशधारी ऋषिदत्ताए पूछ्यु के एथी तेने शो लाभ ? कुवरे कह्यु के मित्रप्रेमने कारणे माणस शु नथी करतो ? तारे माटे हुं प्राण आपवा पण तैयार छु. प्राण आपवानी जरुर नथी एम कहीने पोते भविष्यमा जे मागे ते आपवानु वचन लई मुनिवेशी ऋषिदत्ता पडदा पाछळ गई (३५)

ते पछी ऋषिदत्ता पोताने असल स्वरुपे प्रगट थई एनां रुप अने काति जोई बदीजनो अने लोको जय बोलावी प्रशंसा करवा लाग्या एनी सरखामणीमा रुखमणी दासी जेवी छे एम जणावी लोको कुंवरना ऋषिदत्ता माटेना प्रेमने योग्य गणवा लाग्या. (३६)

ऋषिदत्ता मळी ते समाचार जाणी सुदरपाणि आनद पाम्यो. कुवर तथा ऋषिदत्ताने हाथी पर बेसाडी पोताने मदिर लाव्यो. रुखमणीने अपराधी गणी तेने खूब ठपको आप्यो. सुल्सानु नाक कापी तेने देशबहार काडी मूकी. (३७)

अेक दिवस कुवर पोताना मुनिमित्रने सभारवा लाग्यो ने तेनो विरह पोताने खूब साले छे अेम ऋषिदत्ताने कह्यु कुंवरना प्रेमनी परीक्षा करवा पोते ज मुनिवेष धारण कर्यो हतो अेम जणावी ऋषिदत्ताअे कुवरने तेना वचननी याद आपी अने रुखमणीने माफ करी तेने पोताना सरखी ज गणवा मागणी करी. कुवरने आनद थयो ने तेणे रुखमणीने स्वीकारी ससराने घेर थोडा दिवस रही हवे तेओ रथमर्दनपुर गया. हेमरथे तेमना सत्कारमा मोटो उत्सव कर्यो ने दान आप्या. सुलसाना कपटनी वात साभळी हेमरथे पोतानो अपराध सभारी फरी फरीने ऋषिदत्तानी क्षमा मागी. पछी शुभमुहूर्तमा कनकरथने गादीअे बेसाडी तेने सघळी सपत्ति सोपी हेमरथे भद्र-यशोसूरि पासे दीक्षा लीधी ने त्रिकरणशुद्धिथी सयम पाळी मोक्षने वर्यो राजा तरीक कनकरथ उत्तम रीते राज्य चलाव्यु अने ऋषिदत्ताथी तेने सिहरथ नामनो कातिवान पुत्र थयो. (३७)

अेक दिवस कनकरथ ऋषिदत्ता साथे आनदपूर्वक नगरनी शोभा जोतो हतो तेवामा अेका अेक आकाश वादळाथी छवायु अने थोडी ज वारमा वादळ चाल्या गया आ वाते कनकरथने वैराग्य आण्यो. ससारनु स्वरूप पण आवु ज क्षणभगुर छे अेम अेने थई गयु. अे समये मुनि भद्रयशो वनमा आव्या ऋषिदत्ता सहित कनकरथ तेमने वादवा गयो अे समये ऋषिदत्ताअे पोताने कया पूर्वकर्मो नडया हता ते मुनिने पूछयु (३८)

गणधरे कह्यु "जम्बूद्वीपमा भरतक्षेत्रमा गगापुर नामे नगर छे. त्या राजा गगसेन अने राणी गगादवीनी तु गगसेना नामे पुत्री हती. त्या चद्रयशा नामे महासती हती. तेमना उपदेशनी असर व्यापक हती (३९)

तेमनी पासे हती ते सगा नामनी गुणवान साध्वीना लोको घणा वखाण करता हता. ते साभळी तने ईर्ष्या थई. ते आळ चढाव्यु के ते दिवसे तप करे छे पण रात्रे मासनो आहार करे छे सतीने आवु कलक लगाडयु तेनु पाप तने लाग्यु अने तेनु आवु भयकर परिणाम तारे भोगववु पडयु. कर्म कोईने छोडता नथी पापनु प्रायश्चित्त ते न कर्यु, तेथी अनेक भव तारे दुःख वेठवु पडयु. ते गगसेना तरीके दीक्षा लई तप कर्यु हतु अने अनशनथी तारु मृत्यु थयु हतु अेटले ते पछी तु ईशानेन्द्रनी इन्द्राणी थई हती. ते पछी तु हरिषेणनी पुत्री थई अने कर्मनो लवलेश बाकी हतो ते ते भोगव्यो" (४०)

गुरुना उपदेशथी ऋषिदत्ताने जातिस्मरण ज्ञान थयु कर्मनो भयानक विपाक जोई डरी जइने तेणे गुरु पासे सीधी दीक्षा ज लीधी कनकरथे पण तेम कर्यु तेनो पुत्र सिहरथ राजा थयो ऋषिदत्ता ने कनकरथ गुरु साथे भद्दिलपुर जई रह्या त्या तप तपी केवळज्ञान पामी मोक्षे गया

निर्मळ जनोनी आवी कीर्ति अने अेमनु उत्तम चरित्र साभळता मानवी पवित्र थाय छे, अने शुभ धर्मने अपनावी ते आ लोक अने परलोकमा बधा सुख पामे छे

वडतपागच्छना गुरुराय श्री विनयमंडनना शिष्य गुणसोभाग जयवंतसूरिंदा. रसिक जनोना आग्रहथी, रचीनु आ चरित्र सं. १६४३मा मागशर सु. चौदसने रविवार पूरुं थयुं.

कवि अंतमा कहे छे

> न्यून अधिक जे हुई आगमथी, मिच्छा दुक्कड तास,
> कविता वक्ता श्रोताजननी, फलज्यो दिन दिन आस (४१)

" ऋषिदत्ता रास " माना कथाघटको अने तेमनो रसलक्षी विस्तार

(१) अमुक राजकुवरी साथे लग्न करवानु नक्की थया पछी लग्न माटे जता वाटमा प्रथम दृष्टिअे प्रेम थता राजकुवरना अेक तापस कन्या साथे लग्न

(२) दीक्षित साधु-साध्वीने पेट जन्मेली तापसकन्या

(३) राजानु अजाण्या घोडा पर बेसवु ने अजाण्या आश्रममा जई चडवुं. मुनिसेवा ने जिन-मन्दिरनी स्थापना मुनिअे आपेल विषहर मन्त्र

(४) विषहर मन्त्रने बळे कोई राजकुवरीनु झेर उतार्या बाद तेनी ज साथे लग्न. सरवाळे दीक्षित थया बाद आश्रममा पुत्रीजन्म अने ऋषिओनो आश्रम त्याग, ने मातानु मृत्यु.

(५) कन्याना रक्षण माटे अदृष्टीकरणनु अंजन

(६) कन्याना लग्न बाद तेने प्रतिबोध अने भावी पुत्रीवियोगने कारणे पितानी आत्महत्या.

(७) थनार पति अन्य कोईने—अने ते पण तापसकन्याने—परणी बेठो ते जाणता ते कन्या पर वेर लेवानी इच्छाथी राजकुवरीअे मेली विद्यानी साधक योगिनीने साधवी

(८) दुष्ट योगिनी द्वारा मचेलो उत्पात अने ते कारणे नायिकाने माथे मानवभक्षी राक्षसी होवानु आवेलु आळ

(९) न्यायप्रिय राजा द्वारा कलंकिनी साबित थई चूकेली पुत्रवधूने अपमानित करी स्मशाने हणवानो हुकम

(१०) स्मशानमा नायिका असहाय दशामा बेभान थई पडी जता ते मृत्यु पामी छे अेम मानी माराओनु चाल्या जवुं

(११) मूर्छामाथी जागेली नायिकानी अेकलवायी दशा अने तेने वेठवी पडती हाडमारी तथा तेनुं कल्पांत

(१२) अगाउ रोपेला वृक्षोने आधारे नायिकानुं पिताना आश्रममा जवु तथा त्या ओषधीना बळे पुरुष बनी रहेवुं

(१३) पत्नी विरहे झूरता राजकुवरनी आत्महत्या करवानी इच्छा अने कुटुंबीजनोओ तेने फरी संसाराभिमुख करवो अने फरीवार मूळ राजकुवरीने परणवा मोकलवो,

(१४) रस्ते फरी अेक वार नायक अने पुरुषवेषी नायिकानु मिलन अने आवर्जण पुरुषवेषी नायिकाने आग्रह करी साथे लेवी

(१५) लग्न बाद, पोते तापस कन्याने कवी रीते रूहात करी धार्यो पति मेळव्यो तेनी राज-कुवरीअे कुवर आगळ हांकेली बडाश

(१६) कुवरनो गुस्सो, कुवरे करेलो राजकुवरीनो तिरस्कार अने कुवरनो आत्महत्यानो प्रयास पुरुषवेषी नायिकाअे वच्चे पडी तेने वारवो अने पोते नायिकाने यसने घेरथी, पोते त्या रही जई, मोकली आपशे अेम कही कुवरना मननु समाधान करी तेनी पासेथी अेक वचन मागवु.

(१७) कोई न जाणे अे रीते औषधिनी असर दूर करी नायिकाअे असलना नारी रूपे छती थई सौ कोइने आनद आपवो.

(१८) प्रसग मळता राजकुवरी प्रत्ये पण कुवर पोताना जेवा ज भावथी जुअे अेवु वचन नायि-काअे मागी लेवु.

(१९) ससारनी क्षणभगुरता समजाता, उमरलायक पुत्रने राज सोपी राजाराणीअे दीक्षा लेवी.

(२०) आ जन्मे आवेला आळ माटे पूर्वजन्मे कोइक साध्वी उपर चटावेलु अेवु ज आळ कारणभूत छे अेवी गुरुनी स्पष्टता.

(२१) नायक-नायिकाने गुरुउपदेशथी केवलज्ञान अने मुक्ति

आ सौ कथाघटकोने कविअे केवी रीते रसान्वित कर्या छे तेनो ख्याल आपवा, पुनरुक्तिने भोगे पण अेमाना थोडाक घटको विस्तारथी लइअे.

वर-कन्याना मातापिताअे नक्की कर्या प्रमाणे राजकुवर कनकरथ राजकुवरी रुखमणीने परणवा रथमर्दनपुरथी कावेरी जवा नीकळे छे रस्ते पाणीनी तगी पडता पाणीनी शोधमा गयेला सेवको समाचार लावे छे के तेमणे वनमा अप्सरा जेवी अेक कन्या जोई जे तरत ज अदृश्य थई गई कुतूहलप्रेर्यो राजकुवर सेवकोअे निर्देशेल मार्गे आगळ गयो तेणे पण ते कन्याने जोई, ने ते तरत ज अदृश्य थई गई. कन्यानी शोधमा आगळ गयेला राजकुवरे ऋषभेश्वरनु अेक मदिर जोयु अने प्रदक्षिणा करी रगमडपमा चढो त्या कोई वृद्ध तापस पेली कन्यानो हाथ झाली आव्यो आछा परिचयविधि बाद कुवरे कन्यानी बाबतमा पृच्छा करता, पोते जिनपूजा पताबी निरांते आपशे अेम तापसे जणाव्यु. तापसे उदार जिन स्तवन सहित जिनपूजा करी अने पछी कुवरने लई पोतानी झुपडीअे गयो. अे गाळामा तो कुवर अने कन्या परस्पर प्रत्ये प्रबळ प्रेमे आकर्पाई चूक्या हता. तापस पासेथी कन्यानो वृत्तान्त साभळया बाद कुवरे ते कन्याने परणवानी इच्छा

दर्शावता अने कन्यानु पण लज्जित मुख जोता। तापसे बन्नेना लग्न कराव्यां दीधां अने पुत्रीने सासरवासनं उचित उपदेश कर्यो. पुत्री परणी गई पोताना जीवननो हवे शो रस छे करी तापसे अग्निमा झंपलाव्यु. पिता पाछळ पुत्री गेई, खुब रोई. कुंवरे मनावी. वनना पशुपंखी ने लता-वेलीओनी दर्दभरी विदाय लई नवोढा ऋषिदत्ता कनकरथ साथे चाली. कनकरथे विचार्युं " समर्थ पुरुष अेक ज लग्न करवु जोईअे, जेने गुणनी परीक्षा न होय ते ते काई माणसमा छे ? सोनानी जगाअे रत्ननी प्राप्ति थई तो हवे फफडाट शाने ? वे नारीनो वल्लभ साचो प्रेमी न होई शके. गाळीयनु साल स्त्रीना जीवनने दुःखी दुःखी बनावी दे माटे हवे राजकुंवरी रुक्मणीने परणवा कावेरी जवुं योग्य नथी ज " ऋषिदत्ता साथे कनकरथ रथमर्दनपुर पाछो फर्यो.

तापसकन्या ऋषिदत्ताना कनकरथ साथेना लग्न, तापसनो नवोढा पुत्रीने उपदेश अने वनमाना मगीआनी विदाय लेती ऋषिदत्ता आपणी समक्ष कण्वमुनिना आश्रममाथी विदाय लेती शकुन्तलानु कालिदासे शाकुन्तल नाटकमा करेल आलेखन खडु करे छे. ऋषिदत्तानी जन्मकथा पण नोंधपात्र छे मातामे गर्भ हतो अे न जाणता पिता-माताअे दीक्षा लीधी अने आश्रममा बाळकी जन्मी परिणामे ऋषिओ आश्रम छोडी गया अे तापस मातापिता कोण तेनी काईक अवान्तर लागती कथा कवि मूळकथामा सरस रीते वर्णी ले छे कनकरथनी तापसकन्या अंगेनी पृच्छाना अनुसंधानमा तेनो तापस पिता पूर्ववृत्तात रजू करे छे :

चित्रतावती नगरीना हरिषेण राजाने कोइके अेक उत्तम सफेद अश्व भेट आप्यो. तेना पर राजा सवार थयो त्यां तो अश्व पवनवेगे दाडयो अने रोकयो रोकायो नहीं रस्ते जंगल आव्यु. हरिषेण मार्गमाना अेक वृक्षनी डाळी पकडी लीधी अने अश्वने जवा दीधो. वृक्ष परथी नीचे ऊतरी आगळ जता ते मुनि विश्वभूतिना आश्रममा आव्यो ने सत्कार पामी त्या रोकायो. पोते त्या महिनो रह्यो अने मुनिसेवा करी. ऋषभेश्वरनु अेक मंदिर पण त्या बंधाव्युं. विश्वभूति प्रसन्न थया अने तेने विषहर मंत्र आप्यो हरिषेण पोतानी नगरीमा पाछो फर्यो.

अेक दिवस सभा भरी ते बेठो हतो त्या अेक दूत आव्यो. कहेवा लाग्यो, " मंगलावती नगरीना प्रियदर्शन राजानी दीकरी प्रीतिमतीने नाग करड्यो छे, वैदोनु कशु वळ्यु नथी. आप परोपकारी छो तो आवीने मंत्रबळे कुंवरीनु झेर उतारो " हरिषेणे जई प्रीतिमतीनु झेर उतार्युं. प्रियदर्शन राजा खुश थइ गयो अने तेणे प्रीतिमतीने हरिषेण साथे परणावी दंपतीना दिवसो सुख-पूर्वक वीतवा लाग्या. केटलेक समये प्रीतिमतीने पुत्र थयो ते युवान थता तेने राज्यधुरा सोंपी दंपती तापसदीक्षा लेवा विश्वभूतिने आश्रमे गया बेमाथी अेकने ख्याल न हतो के प्रीतिमतीने फरी गर्भ रह्यो छे दीक्षा लीधी ते पछी केटलेक वखते ख्याल आव्यो हवे शुं थाय ? समय पूरो थता पुत्री जन्मी राजाराणीने कुकर्मनुं—भ्रष्टतानु कलंक चोटयु ऋषिओ आश्रम छोडी गया. प्रीतिमती पण सुवारोगमा गुजरी गइ तापस पिताने माथे पुत्रीना उछेरनो बोजो आवी पड्यो अने ते तेणे निष्ठापूर्वक उठाव्यो कन्या मोटी थती गई अने रूपसुंदर थती चाली. हवे लोलुप पुरुषोनी नजरथी अेने बचाववा अने भयमुक्त राखवा पिताअे अे कन्याने अदृष्टीकरणनुं अंजन कर्युं जेथी इच्छे त्यारे ते अदृश्य थई जाय अे कन्या ते ऋषिदत्ता अने पिता ते तापस हरिषेण.

ऋषिदत्ताना जन्मनी आ कथा "वल्कलचीरी"नी कथा साथे साम्य धरावे छे अे कथामा पण मातापिता दीक्षा ले छे अने तेमने दीक्षा पूर्वे रहेला गर्भथी पुत्र थाय छे अने वल्कलचीरीने जन्म आपी तेनी माता मृत्यु पामे छे अेटले तेनो उछेर पण आश्रममा थाय छे

अेक मुद्दो अही ज चर्चवो ठीक लागे छे ते अे के ऋषिदत्ताने परणाव्या बाद, तेने शीख आपी, तापस हरिषेण जे आत्महत्या करे छे अे योग्य छे? जैनधर्मनी दृष्टिअे तो आ रीतनी आत्महत्या सर्वथा अयोग्य पण कविने तो पाछळथी पतिथी विखूटी पडती ऋषिदत्ताना अेकलवाया पणानु सचोट आलेखन करवानु छे अेटले अेमणे आ परिस्थिति रसदृष्टिअे योजी जणाय छे. अद्भुत, शृङ्गार अने करुण अे त्रणे रसने सुग्रथितपणे निरूपवा मथता कवि अही धार्मिक मान्यतानो विचार करवा थोभता जणाता नथी धर्मोपदेशने अेमणे अन्तमा प्रवर्ताववाना उपगम के शातरसने माटे सघरी राखेलो गणवामा बाध नहीं आवे

पोताने वरवा आवतो कनकरथ बीजी ज कोई कन्याने परणी जाय अने ते पण तापसकन्याने, अेवु ते कुवरे ऋषिदत्तामा शु दीठु के पोते खानदान राजकुळनो छता अेक तापसनी कन्याने परणी बेठो?—आम विचारती रुखमणी इर्ष्याथी सळगी ऊठी तेणे ऋषिदत्ताने जेर करवा सुलसा योगिनीने साधी ताडना त्रीजा भाग समी, भयानक देखाववाळी, सुलसाअे खुशीथी ऋषिदत्तानी खानाखराबी करवानु काम स्वीकार्यु रथमर्दनपुर जई तेणे हाहाकार मचाव्यो. मरकीथी माणसो टपोटप मरवा लाग्या शेरीमा शबोना ढगला थया अने नगर आखु दुर्गधथी धणधणी ऊठयु. ऋषिदत्ताने अवस्वापिनी निद्रा आपी सुलसाअे तेना होठ लोहीथी रग्या, तेना कपडा पर लोहीना डाघ पाड्या, तेना ओशीका आगळ मासथी भरेल करडिया मूक्या सवारे जागेल कनकरथ पत्नीनी आ स्थिति जोई गभराई ऊठयो तेने ढगली प्रश्नो कर्या ऋषिदत्ताअे पोते सर्वथा निर्दोष होवानु जणाव्यु कह्यु, जन्मथी ज कोई जीवने पोते पीडा आपी शकती नथी, लोहीमासनी गध खमी शकती नथी, खुल्ली पाळी जोईने पण अेने डर लागे छे तो अे आवी हिंसा कई रीते आदरे? नक्की पूर्वजन्मना कोई कर्म नडता होवाथी कोई अेने आवी पीडा आपी रह्यु छे कुवर मानी गयो

सुलसाअे नगरमा महा उत्पात मचाव्यो राजाने वहेम आवता तेणे पाखडीओ, साधको ने सन्यासीओने नगर बहार कढाववा माड्या. अेवा निर्दोष मानवीओना बचाव अर्थे अने खरा गुने-गारने शोधी आपवाने बहाने सुलसा हेमरथ राजा समक्ष गई पोताने स्वप्न आव्यु हतु तेमा कोई देवी अेवु कही गई के राजानी पुत्रवधू राक्षसी छे अने तेणे ज आ उत्पात मचाव्यो छे अेवु राजाने तेणे कह्यु

राजाअे राजकुवर कनकरथने बोलावी पोतानी पासे राख्यो अने राते ऋषिदत्ता पर नजर राखवा चर मोकल्यो सुलसाअे अदृश्य रही मासना करडिया, लोही, वगेरेनी योजना ऋषिदत्ताना आवासमा करी अने चरने ऋषिदत्ता गुनेगार भासी, अने राजाने तेणे ते प्रमाणे कह्यु राजा कोप्यो. बिचारो कनकरथ! अे शो जवाब आपे? पत्नी निर्दोष छे अे जाणवा छता अे परिस्थिति-मा तेनो बचाव पण शी रीते थाय? हेमरथ राजाअे ऋषिदत्ताने अपमानित करी स्मशानमा लई जई तेनो वध करवा फरमाव्यु

राक स्वभावनी असहाय ऋषिदत्ता राजाना कोपनो भोग थई पडी तेने विरूप करी गधेडे बेसाडी गाममा फेरववामा आवी अने तेने स्मशानमा लई गया, माराओअे तेने इष्टदेवनु स्मरण करी

लेवा जगाड्यु. थाक अने बीकनी मार्गे ऋषिदत्ता मूर्छित थई भोय उपर पडी. भागाओने लाग्यु के अेना प्राण रसी गया छे. तेओ पाछा फरी गया.

ऋषिदत्ता भानमा आवी अने निर्जनतानो लाभ लई नासवा मांडी अथडाती–कुटाती, अनेक रीते पीडा पामती, असहाय अने अेकाकिनी ते रुदन करती आगळ वधी. मार्गमा पोते रोपेलां वृक्षो आववा लाग्या अे अेंधाणीअे आगळ वधती ते पिताना आश्रममा पहोंची गई. पिताने संभारी संभारी तेणे कल्पान्त करी मूक्यु. वनना वृक्षवेलीओ अने पशुपक्षी पण अेना रुदन साथे रडी ऊठ्या जेम तेम शांत पडी विचारवा लागी. " अेकली स्त्रीने सतत भय. स्त्रीने अेकली जोता पुरुषोनी डाढ सळवळे शुं करवु ? " याद आव्यु के पिताअे अेक औषधि बतावी छे जे कानमा राखवाथी स्त्री पुरुष बनी जाय अने ऋषिदत्ता पुरुष तापस बनी धर्मध्यान करती आश्रममा रही.

कथानकना आ खंडमा कविअे हरिषेण पक्षे रौद्र, सुलसाने पक्षे भयानक, अद्भुत अने बीभत्स, ऋषिदत्ताने पक्षे करुण अने छेवटना भागमा अद्भुत अने शांत अेम रसयोजना करी छे.

जगतनो साचो प्रेम घणीये वार आकरी कसोटीअे चढे छे कनकरथनो प्रेम पण कसोटीअे चड्यो. प्रियाविरहे प्रीतम विलाप करी रह्यो कांताना रूप अने सद्गुणोने संभारी संभारी, तेनी साथे गाळेला सुखना दिवसोने याद करतो ते दैवनी निन्दा करवा लाग्यो विरहनी पीडा न सहेवाता ते मरवा तैयार थयो त्यारे सगासंबंधीओअे जेमतेम समजावी रोकी राख्यो पण तेनी स्थिति दयाजनक थई पडी दुःखथी टळवळता तेने आनंदप्रमोदनी कोई वात रुचती न हती. नहोतो ते खाई शकतो, नहोतो सुखे सूई शकतो. प्रियतमानु स्मरण करी करीने पोतानी जातनो तिरस्कार करी रहेता तेने सौ धीरज आपवा लाग्या.

अे गाळामा सुलसा पहोंची रुखमणी पासे अने तेने बधी वातथी वाकेफ करी, कुंवरीअे राजाने वात करी अने तेणे फरी वार परणवा आववानु कनकरथ माटे कहेण मोकल्यु. हेमरथे पुत्रने खूब समजाव्यो ने पितानी आज्ञा माथे चडावी फरी अेक वार कनकरथ रुखमणीने परणवा चाल्यो. मार्गमा शुभ शुकन थया रस्ते ज्यां पोते ऋषिदत्ताने परण्यो हतो ते आश्रम आव्यो. पूर्वनां स्मरणो जाग्रत थयां. हैयु फाटवा लाग्यु. वन खावा धायु. धीमे धीमे ते जिनमंदिर पासे आव्यो प्रियसंगम-सूचक इंगितो अनुभवता विचारमा पड्यो. त्या तो तापसरूपी ऋषिदत्ता पुष्पादिक लईने आवी. कनकरथने ते आवता हाथनो स्पर्श थयो ने बनेने रोमांच थयो कुंवर तेने जोई रह्यो. ऋषिदत्ता समजी गई के प्रीतम हवे रुखमणीने परणवा जाय छे प्रश्नोत्तर थया. ऋषिदत्ता-अे तापस तरीके ज पोतानो परिचय आप्यो. तापसने जोता पोतानी आंख ठरती ज नथी अेम कुंवरे कह्यु ने पूर्वजन्मना स्नेहने कारणरूप गणी तापसने पोतानी साथे कावेरी नगरी आववा ठराव कर्यु ऋषिदत्ता मूंझाई करी कसोटीमा मूकाई गई. बहाना काढ्या पण आखरे कुंवरना आग्रहने वश थई जवु ज पड्यु प्रीतिबद्ध अे बे जीवो कावेरी पहोंच्या

विप्रलंभ शृंगारने पडखे कविअे अहीं करुणनो पण असरकारक साक्षात्कार करावी दीधो छे.

कनकरथ अने रुखमणी परण्या. ससराअे आग्रह करी जमाईने रोक्यो पियु पोताने हवे वश छे अेम जाणी मदमत्त रुखमणी पतिने प्रश्न करी बेठी के ते मार्गमा तापसकन्याने कां परणी बेठा हतो ? अेवु ते तेनामां शुं हतु के ऊचनीचनो भेद पण न परखायो ? जेने कारणे कावेरी जवानु ज मांडी वाळ्यु. ते तापसकन्या अेवी ते केवी हती ? उदास हैये छता अनन्या

प्रेमे प्रेरेली उत्कटताथी कुवरे ऋषिदत्ताना रुखमणी आगळ भारोभार वखाण कर्या अने रुखमणीने हलकी पाडी. क्रोधाग्निथी धगधगती रुखमणीअे हवे पोत प्रकाश्यु ने पोते ऋषिदत्ताने केवी ने केटली सतावी ते वात खुल्ली करी दीधी. सुलसाअे भजवेला भागनो पण स्पष्ट उल्लेख कर्यो. ते साभळी कनकरथ कोप्यो तिरस्कारना आकरा शब्दो तेणे रुखमणीने कह्या. ऋषिदत्ता जेवी निरपराध स्त्रीने भयानक सकटमा सपडाववाने कारणे रुखमणीने वैरिणी ठरावीने पोते चिता रचावी बळी मरवा तैयार थयो ऋषिदत्ता माटेना साचा प्रेमनो परिचय फरी अेक वार अेणे आप्यो ऋषिदत्ता निष्पाप हती अे वात जाहेर थई गई ऋषिदत्ताने परिस्थिति समजाई जता पोताने माथ चोटेलु कलक दूर थयु जाणी तेने आनद थयो

ऋषिदत्ताने मभारी तेनी पाछळ आत्महत्या करवा तत्पर थयेलो कुवर ससरा सुदरपाणिनो अटकाव्यो पण अटकतो न हतो त्यारे तापस ऋषिदत्ताअे मीठाशथी तेने समजाववा माड्यो अने पोते जीवतो रहेशे तो क्याक पोतानी प्रियाने मेळवशे अेवु आश्वासन आप्यु मरेला ते क्याई पाछा आवे ?–कुवरनी शका अे हती विरहनी वेदना हवे केम वेठवी ? तापस पोतानी तपनी शक्तिथी जो प्रियाने मेळवी आपे तो तेना दास बनी रहेवानी तयारी बतावी. प्रसन्न थयेला तापसे कुवरना अे साहसथी तेनी प्रियतमा प्रसन्न थई छे अेम जणावता कुवरे पूछ्यु के तापसे तेने क्याय दीठी छे ? ज्ञानना बळने आगळ करी तापसे जणाव्यु के तेनी प्रियतमा यमने घेर कल्लोल करी रही छे कुवरने अेक ज रढ हती.—ते पाछी केम आवे ? तापसे जणाव्यु के पोते त्या जई तेने मोकलशे–कुवरने सुखी करवा पोते अेटलो भोग आपशे. पण अेम कर्ये अने शो फायदो ? कुवर पोताना प्राण पण आपी छूटवानी वात करवा लाग्यो त्यारे समय आव्ये पोते जे मागे ते तेणे आपवु अेवु वचन तापसे कुवर पासे लीधु कुवरे आप्यु

तापस ऋषिदत्ता पडदा पाछळ गई. परिणाम जाणवा सौ अधीरा बन्या ऋषिदत्ता "निजरूपे" पाछी फरी रूपरूपना अवार समी तेने जोईने सौ अजाई गया रुखमणी पण झाखी पडी गई बदीजनो जयजयकार करवा लाग्या कुवर माटे ऋषिदत्ता ज सर्वथा योग्य छे अेम सौने लाग्यु समाचार राजा सुधी पहोंच्या. सुंदरपाणि जाते आवी, कुंवर ने ऋषिदत्ताने हाथी पर बेसाडी पोताने मदिर लई गयो पोतानी दीकरी रुखमणीने तेणे सखत ठपको आप्यो अने सुलसानु नाक कापी तेने गाम बहार तगेडी काढी.

अेक दिवस कुंवरने परोपकारी तापस मित्र याद आव्यो अने तेनो विरह अने सतावा लाग्यो. ऋषिदत्ताने अेणे वात करी. तापस रूपे प्रीतमना स्नेहनी परीक्षा पोते करी हती अेवी चोखवट ऋषिदत्ताअे करी कुवरनु हैयु आनदथी नाची उठ्यु सज्जन ने दुर्जननी तुलना करवा लाग्यो त्या ऋषिदत्ताअे वचननी याद आपी मागी लीधु के कुवर, पोतानो गुस्सो छोडी, रुखमणीने पण पोताना सरखी ज गणी अपनावी ले कुंवरे तेम कर्यु ने थोडा दिवस पछी रथमर्दन-पुर चाल्यो

कथानकना प्रणयत्रिकोणना कोण बनता त्रण पात्रोना मानसनो कविअे आ विभागमा खूब अच्छो परिचय आपी दीधो छे गुस्साने कारणे थती पतिपत्नी वच्चेनी तडातडीने कुटुबमा प्रगटता रौद्ररसना उदाहरण रूप लेखी शकाय साचो प्रेम प्रिय पात्रने सुखी जोवामा ज सतोष माने छे स्वार्थी प्रेम वखत आव्ये प्रिय पात्रना विनाशने नोंतरे छे साचो प्रेमी प्रेमनी कसोटीमा केटली

हृद भोग आपी शके तेनो विचार पण अहीं छे. नायक-नायिका मल्या त्यां सर्वांगि सुयोग शृंगारनुं निरूपण छे.

कनकरथ बे पत्नी साथे पाछो फरता रथमर्दनपुरमां मोटो उत्सव करी रह्यो. हेमरथे कुलमार्नो वात जाणी पोताने अपराधी गणी तेणे फरी फरी ऋषिदत्तानी क्षमा मागी. तापसी सतीने तो कोई नम. शुभ मुहूर्ते कनकरथनो राज्याभिषेक करी हेमरथ सद्गुरु पासे दीक्षा लई लीधी अने त्रिकरणशुद्धिए संयम पाळी मुक्तिने वर्या।

समय जतां कनकरथने ऋषिदत्ताथी पुत्र थयो सिंहरथ.

वर्षो वीत्या. अेक दिवस नगरनी शोभा जोता कनकरथ ऋषिदत्ता साथे गोखमां बेठा हतो. त्यां तेणे आकाशमां वादळ आवी थोडा वखतमां विखराई जतुं जोयुं. आ दृश्य तेना वैराग्यनु कारण बनी गयुं. भवनुं स्वरूप पण आवुं ज क्षणभंगुर छे अेवुं भान तेने थयुं. संसारसुखनी क्षणिकताने ते विचारतो हतो त्यां वनमां गुरु भद्रयशो आव्या. कनकरथ अने ऋषिदत्ता हर्षथी तेमनी पासे पहोंची गया. गुरुचरण वांदी सघळा पाप धोई नाख्या. ऋषिदत्ताअे पोताने लागेला कलंकनु कारण पूछयुं. गुरुअे पूर्वभवनी कथा कही. ऋषिदत्ताने तेमणे कह्युं : “गंगापुरमां गंगदत्त राजा ने गंगादेवीनी दीकरी तुं गंगसेना हती. ते नगरमां चन्द्रयशा नामे महासतीनी हती. तेनी ईशना सांभळवा तुं साध्वीओ भेगी बेसती, त्यां आवती वेरागण सगाना लोको बहु वखाण करता. तेनी तने ईर्षा थई. ते तेना पर आळ चडाव्युं के ते नगा मांसभक्षिणी छे. अेवी सतीने ते आळ चडाव्यु तेथी तारी आ दशा थई. गंगदत्तथी सांभळ्ने तताप तेने थयो आवे. थयां कुकर्मना फळ भोगववा ज पडे. निंदा करनार महुर्थी मोटा चांडाल छे. गंगापुरमां ते जिनदीक्षा लीधी, तप कर्युं, अनशनथी मरी, इशानेन्द्रनी इन्द्राणी थई ने ते पछी हरिषेणनी पुत्री थई. कर्मनो जे ल्वलेश रह्यो ते कारणे तारु आवुं अहित थयुं. ” गुरुना वचन सांभळी ऋषिदत्ताने जातिस्मरण थयुं. कर्मनो विपाक जोई ते भय पामी. गुरु पासे तेणे दीक्षा लई लीधी. कनकरथे पण सिंहरथने गादीअे बेसाडी दीक्षा लई, संयम पाळी, तप आदर्युं. गुरु साथे फरता फरता वन्ने भद्दिलपुर आव्या ने त्यां ध्यानाग्निथी कर्मनिकायने भस्मीभूत करी केवलज्ञान पामी मुक्तिअे गया।

कथाना आ अंतिम भागमां धर्मोपदेश, सुसारत्याग ने तप महत्त्वनो भाग भजवे छे. कर्मनो नियम अफर छे तेथी कुकर्मथी सर्वथा दूर रहेवुं अे सलाह दुन्यवी गमे ते मानवीने आपी शकाय, पण संसारनी क्षणभंगुरता समजी चूकेली व्यक्तिने दीक्षित थये ज साचो धर्मलाभ उपशमने अनुलक्षता आ अने अन्य अनेक जैन रासाओनी माफक अते शांतरसने ज आगळ करे छे. ऐहिक बधनो तूटी जता, कर्मनी आसक्ति भस्मीभूत थता अनता, जीवनमां शान सिवाय बीजो कयो रस संभवे ?

समग्र दृष्टिअे अवलोकता वार्तासाना घटकोने कविअे स्पष्ट रीते अने पूरता विवेक्य-सहित रजू कर्या छे अेम कही शकाशे.

ऋषिदत्ताकथानी परंपरा

[१] 'आख्यानकमणिकोष'ना [कर्ता–नेमिचन्द्रसूरि] वृत्तिकर्ता आम्रदेवसूरिએ १२मा सैकामा ९९ भावशल्यानालोचनदोषाधिकारमां ऋषिदत्ताचरित्र प्राकृतमा ९१मी कथारूपे ५४० गाथामां रचेल छे. प्रकाशन—प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, वनारस. सं २०१८

[२] 'विवेकमंजरी' [कर्ता–कवि आसड र स १२४८]ना वृत्तिकर्ता बालचन्द्रसूरिએ ऋषिदत्ता-कथा संस्कृतमा लखी छे प्रकाशन—सं १९७५.

[३] अज्ञातकविकृत संस्कृत-प्राकृत मिश्र भाषामा लखायेल ऋषिदत्ताचरित्र लख्या स १८२४. प्राप्तिस्थान–ला. द भा स विद्यामंदिरना विजयदेवसूरि संग्रहमा ह. प्र क्रमाक १०४७ अने ९१८५.

[४] अज्ञात कवि कृत ऋषिदत्तारास—स. १५०२

[५] 'ऋषिदत्ता चउपई' : कर्ता देवकलश सं १५६९, पत्र १३, कडी ३०१ प्राप्तिस्थान—[१] हालाभाई मगनलालनो भंडार, पाटण [२] ला द भा. सं विद्यामंदिर, अमदावाद–क्रमाक १२५१. [३] लींबडी भंडार [४] कोडाइकेनालनो भंडार

[६] 'ऋषिदत्तारास' कर्ता सहजसुंदर स १५७०
–प्राप्तिस्थान–ला. द. भा सं. विद्यामंदिर, क्रमाक १०४२

[७] 'ऋषिदत्तासती चोपाई' : कर्ता रंगसार सं. १६२६ प्राप्तिस्थान–जोधपुर.

[८] 'ऋषिदत्ता रास' . कर्ता जयवंतसूरि स. १६४३. प्राप्तिस्थान–(१) ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर (२) महावीर जैन विद्यालय, मुंबई, (३) श्री गोडीजी उपाश्रय (मुबई).

[९] 'ऋषिदत्तारास' कर्ता–मतिसार. र. सं. १६४३. प्राप्तिस्थान—डहेलानो उपाश्रय [अमदावाद]

[१०] 'ऋषिदत्तारास' : कर्ता गुणसौभाग्य. र. स. १६४३ प्राप्तिस्थान—कोडाइकेनाल.

[११] 'ऋषिदत्तारास' : कर्ता–सरवण (पायचंदगच्छना) र. सं. १६५७. प्राप्तिस्थान—अभय-सागरनो भंडार, पाटण.

---

* आ परंपरानी यादी बनाववा माटे नीचेना ग्रंथो उपयोगमा लीधा छे ·

(१) 'जैन गुर्जर कविओ—भाग १, २, ३' देसाई मोहनलाल दलीचंद.
(२) लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरना हस्तप्रत भंडारनी यादी.
(३) डहेलाना उपाश्रयना हस्तप्रत भंडारनी यादी.
(४) 'श्रीमद् राजेन्द्रसूरि स्मारक ग्रंथ'—स नाहटा अगरचंद.
(५) 'आनंद काव्यमहोदधि—भाग १' स. झवेरी जीवणलाल साकरचंद.

[१२] 'ऋषिदत्ता चोपई' : कर्ता—गुणविनय, र. स. १६६३. प्राप्तिस्थान—अभयसागरनो भंडार.

[१३] 'ऋषिदत्ता चउपई' : कर्ता—विनयशेखर, र. सं. १६८७ ले. सं. १६०१. प्राप्तिस्थान—ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर.

[१४] 'ऋषिदत्ता चउपई' : कर्ता दयाचंद्र र. सं. १६९१, प्राप्तिस्थान—ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर.

[१५] 'ऋषिदत्ता चोपई' . कर्ता चोथमल, र. स. १६८४.

[१६] 'ऋषिदत्ता चोपई' : कर्ता वेगडगच्छीय महिमसमुद्र. र. स. १६९८

[१७] 'ऋषिदत्तानो रास' : कर्ता विजयशेखर र. स. १७०७. प्राप्तिस्थान—महावीर जैन विद्यालय.

[१८] 'ऋषिदत्ता रास' : कर्ता जिनहर्ष र. सं. १७४९. प्राप्तिस्थान—पाटण.

[१९] 'ऋषिदत्ता चोपई' : कर्ता वीरमसागर. र सं. १७५१ प्राप्तिस्थान—जेसलमेर.

[२०] 'ऋषिदत्ता चोपई' : अज्ञातकविकृत. र. सं. १७५२ प्राप्तिस्थान—विजयधर्मसूरिनो भंडार, बेलनगंज, आग्रा.

[२१] 'ऋषिदत्ता चोपई' : कर्ता गुणसागरना शिष्य ज्ञानचंद्र. र. सं. १७९७. प्राप्तिस्थान—सुरत.

[२२] 'ऋषिदत्ता रास' : कर्ता मेघराज ऋषि पार्श्वचंद्रीय, र सं. १७मो सैको. प्राप्तिस्थान—ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर, अमदावाद.

[२३] 'ऋषिदत्ता स्वाध्याय' : कर्ता सुमतिमाणिक्य, र. स १७मो सैको प्राप्तिस्थान—ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर (न.)ना भंडारमां क्रमांक १३७३ छे

[२४] 'ऋषिदत्ता चउपई' कर्ता सिंहसौभाग्यना शिष्य सुमतिगणि, र सं. १८३३. प्राप्तिस्थान—ला द. भा. सं. विद्यामंदिर.

[२५] 'ऋषिदत्ता चौपाई' : कर्ता चौथमल, र. सं १८६४. देवगडमां रचना करी छे.

[२६] 'ऋषिदत्ताचरित्र' ; कर्ता बालचंद्रसूरि. संस्कृत भाषा. प्राप्तिस्थान—ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर. (पु.) क्रमांक १४५६.

[२७] 'ऋषिदत्ता चउपई' : कर्ता शिवकलश. प्राप्तिस्थान—ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर. (पु.) क्रमांक ६२१८.

[२८] 'ऋषिदत्ता कथानक' . अज्ञातकविकृत प्राप्तिस्थान—ला. द. भा. स विद्यामंदिर. क्रमांक ५३९२.

नोंध : ज्यां भाषानो उल्लेख नथी त्यां भाषा मध्यकालीन गुजराती समजवी.

जयवंतसूरि अने अेमना पुरोगामीओअे रचेल ऋषिदत्ताना कथानकमां देखाता केटलक आगळ पडता वस्तुविषयक फेरफारो :

जयवंतसूरिअे ऋषिदत्ता रासनी रचना संवत १६४३मा करी. प्रथम ढालनी सातमी कडीमा अेओ लखे छे .

"पूर्वई छई सुकवि कर्या, अेहना चरित प्रसिद्ध,
तउ हई रसिकजन आग्रहई, मइ अे उद्यम कीद्ध."

आगळ ऋषिदत्ता कथानी जे परंपरा आपवामा आवी छे ते जोता सती ऋषिदत्ता उपर संस्कृत प्राकृत अने गुजरातीमा सातेक कृतिओ जयवंतसूरि पूर्वे रचाई चूकी हती. अेमाथी नीचेनी पाच मळी शकी छे जेने आधारे अही नोंधेला फेरफारो दर्शाववामा आव्या छे

(१) 'आख्यानक मणिकोष' : कर्ता नेमिचंद्रसूरि (तेरमी सदी पूर्वे). २९ भावशल्यानालोचन-दोषाधिकारमा ११मी कथा ऋषिदत्ताचरित्र प्राकृतमा ५४० गाथामा

(२) 'विवेकमंजरी' : कर्ता कवि आसड. र. सं १२४८. संस्कृत गद्यमां ऋषिदत्ताकथा.

(३) 'ऋषिदत्ता चरित्र' : कर्ता अज्ञातकवि भाषा संस्कृत-प्राकृत. गद्य-पद्य मिश्र

(४) 'ऋषिदत्ता चरित्र' : कर्ता देवकलश. र. सं. १५६९.

(५) 'ऋषिदत्ता चउपई' कर्ता सहजसुंदर. र. सं. १५७२.

कथाना आरंभमा ज केटलाक फेरफारो मळे छे.

आचार्य नेमिचंद्रसूरिअे आ रासनी शरूआत कोई पण आराध्य देवदेवीने प्रणाम कर्या वगर ज करी छे अज्ञातकविअे पाच महातीर्थंकर ऋषभदेव, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ अने सुमतिनाथ वगेरेने प्रणाम करीने करी छे जयवंतसूरिअे पंचपरमेष्ठिने नमस्कार करीने ज्यारे सहजसुंदर अने देवकलशे सरस्वती देवीनी आराधना करी तेमने प्रणाम करी पोतानी कृतिनी शरूआत करी छे.

सहजसुंदरे पोतानी कथानो आरंभ आ प्रमाणे कर्यो छे

" जंबूद्वीपमा राजगृही नगरी छे. त्या इन्द्र समान श्रेणिक राजा राज्य करे छे अेनां राज्यमा अेक वार वीर भगवान समोसर्या श्रेणिक महाराजा वीर भगवाननी समक्ष धर्म सांभळवा बेठा. वीर भगवाने देशना आपवा मांडी " कर्म आगळ राजा ने रंक बधा ज सरखा छे. कर्या कर्मथी कोई ज छूटतु नथी. कर्मे राजा हरिश्चंद्रने पण रोळ्यो ने भलभला बळवानने पण ना छोड्या. " श्रेणिक महाराजाअे प्रश्न पूछ्यो " कूड-कलंक कया कर्मथी चडे ? " महावीर भगवाने कह्युं, " ऋषिदत्ता सतीने कूड-कलंक चढ्यु हतु " आ पछी ऋषिदत्तानु कथानक आवे छे.

अज्ञातकविनी कथामां कनकरथनो जन्मोत्सव तेम ज केळवणीनी विस्तृत विगतो आरंभमा मळे छे. कनकरथ रुखमणीने परणवा जाय छे त्यारे मार्गमा अेने युद्ध करवु पडे छे अने शत्रुओने ताबे करवा पडे छे अेनु वीररस-सभर वर्णन अही तेम ज आख्यानकमणिकोशमा मळे छे. बीजा कविओअे आ विगतो आपी नथी, कारण तेओने रसदृष्टिअे अे ठीक नहि लाग्युं होय जैनकविओ

युद्धमा थती हिंसाने कारणे युद्धप्रसगोना वर्णनोने टाळे ते समजी शकाय तेवु छे. परंतु कनकरथना जन्मसमयना उत्सवनी के अेनी केळवणीनी विगतोने, ते अगाउनी कृतिओमां होवा छता तेमणे पोतानी कृतिमा स्थान नथी आप्यु. अेनु कारण अे होई शके के ते ते कविओअे कनकरथना प्रणयने ज महत्त्व आपी भिन्न भिन्न पात्रो द्वारा अे प्रणयनी ज मीमासा करवानु इष्ट गण्यु होय अने अे परिस्थितिमा मददरूप न थई पडनार विगतोने बाजु पर राखी होय.

कनकरथकुंवरना जन्मोत्सवनी विगत अज्ञातकविकृत रचनामा आ प्रमाणे मळे छे

"कुवरनो जन्म थयो छे ते जाणी राजाअे जन्मोत्सव कराव्यो. याचकोनी निर्धनता हरी लीधी, मागनारने इच्छित दान अपायु नाचनारीओअे नृत्य कर्या. गवैयाओअे गीत गाया. वंदीजनो द्वारा राजाना वखाण थया. ब्राह्मणोअे वेदोच्चार कर्या. कुलीन स्त्रीओअे आशीर्वाद आप्या. मोती माणेक हीरा वगेरे रत्नो दानमा अपाया. हाथी–घोडाथी रमतो, सोनाना अलकारो धारण करतो अने धात्रीओथी सचवातो अे पाच वर्षनो थयो."

कनकरथनी केळवणी अगे अज्ञात कवि नीचे मुजब बयान आपे छे:

"अभ्यासलायक कुवरने थयेलो जाणी पिताअे अेने ज्ञान आपवानो विचार कर्यो. निशाळे मूकवानो दिवस नजदीक आव्यो. अे दिवसे अेने तेल चोळवामां आव्यु. सुगधित द्रव्यो वडे स्नान कराव्यु. मारा वस्त्रो पहेराव्यां. कनकरथे माथा उपर कीमती रत्ननी कलगी धारण करी मातापिताने प्रणाम कर्या. गळामा हार, हाथे मुद्रा, कानमां कुडळ वगेरे आभूषणो पहेर्या. ब्राह्मणे शातिकर्म करान्यु. मागलिक आचार थयो. कुवर पालखीमा बेठो. माथे छत्र राख्यु. रस्तामा सेवको बे बाजुअे चामर वींझवा माड्या. प्रधानो, अमात्यो, सामतो बधा अेनी साथे चाल्या. निशाळमा प्रवेश कर्यो. गुरु पासे शास्त्र अने शस्त्रनी कळा, छद, व्याकरण, अलकार, रथशास्त्र, प्रमाणशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र वगेरे बोतेर कळा शीख्यो."

कनकरथ उंमरलायक थाय छे. अेने यौवनवय पामेलो जोई हेमरथ राजाने चिंता थाय छे के अेने लायक कन्या कोण हशे? अेनो पाणिग्रहणनी चिंतानी वात मात्र देवकलश आपे छे.

रुखमणी यौवन वय पामी छे. अेटले व्यवहारु माता अेने अलकारोथी सज्ज करी पिता पासे मोकले छे पिता पुत्रीने जुअे छे अने विचारे छे "अहो! मारी पुत्री आटली बधी मोटी थई गई! हवे अेने लायक वरनी तपास करवी पडशे." मंत्री राजाने चिंतित जोई कारण पूछे छे. राजानो जवाब साभळी मंत्री कहे छे "भाटचारणोथी गवातो अेने लायक वर साभळ्यो छे. ते कनकरथ छे अेने माटे मागु मोकलो" राजा मंत्रीने ज मागु करवा मोकले छे आ प्रमाणे सविस्तर कथन नेमिचन्द्र, आसड कवि अने अज्ञात कवि त्रणेय आपे छे. जयवतसूरिनी कथामा आटलो विस्तार नथी

कनकरथे रुखमणीने परणवा कावेरी तरफ प्रयाण कर्यु त्यारे चालता चालता ते अरिदमन राजाना प्रदेशमा पहोच्यो. राजाअे ज्यारे जाण्यु के कुंवर पोताना प्रदेशमा प्रवेश्यो छे त्यारे अेने कहेवडाव्यु: "तु मारा देशनी सीमामा प्रवेश नही करी शके तेम ज पडाव पण नही नाखी शके." आवा क्रूर वचनो साभळी कुवर खूब ज गुस्से थयो ने युद्ध माटे तैयार थयो.

युद्धनुं वर्णन :

" अकाळे युद्ध थयु. झूलवाळा हाथीओनो समूह परस्पर भीडायेलो छे. घोडानी खरीओथी धूळ उडता सूर्य ढकाई गयो छे वेगथी रथो चालता होवाथी दिशाओ बहेरी थई गई छे. खडगथी कपायेला हाथीना कुंभस्थळोमाथी गळता लोहीनी नदीनी अदर यान अने जवान तरे छे जय मेळववा माटे लुब्ध अेवा बन्नेनु युद्ध अनेक जीवोनो जान लेनारु थयु. भयकर विनाश सर्जायेलो जोई दयाळु अेवा कुमारे बाहुयुद्ध करवा अरिदमनने समजाव्यो. तेमा कनकरथे अरिदमन उपर विजय मेळव्यो. नागपाशथी राजाने बाधीने वश करी दीधो. अरिदमन हारी गयो हवे राज्यमा शु मोढु बतादवु ? तेने वैराग्य उत्पन्न थयो ने दीक्षा ग्रहण करी " आ वर्णन नेमिचन्द्र, आसड अने अज्ञात कवि त्रणेय लगभग सरखुं आपे छे

अरिदमनना पुत्र शत्रुशल्ये ज्यारे जाण्यु के पिताअे दीक्षा लीधी छे त्यारे अे अेमनी पासे गयो. पिताने विनति करी, " राज्य पाछु ग्रहण करो ने शातिथी जीवो " पिता जणावे छे के " ससार कडवो झेर जेवो छे अने लक्ष्मी अस्थिर छे माटे मने अेनो खप नथी " पितानी वाणीथी अे पण जिनधर्ममा रत थाय छे अेनो राज्याभिषेक थाय छे अने अे राज्य करे छे अेना राज्याभिषेक वखते घणा राजाओ, मत्रीअो हाजर रहे छे

हरिषेण राजा अजाण्या घोडा उपर सवार थईने जाय छे त्यारे घोडो अेने छोडी दे छे. अे विश्वभूति तापसना आश्रममा जाय छे त्या विश्वभूतिने पूछे छे के " मारे पैसानो सदुपयोग करवो छे तो केवी रीते करु ?" विश्वभूति समजावे छे के मोटा मोटा मदिरो बधाववाथी, प्रतिमा पधराववाथी, जिनप्रासाद बधाववाथी, प्रभावना करवाथी पैसानो सदुपयोग थाय छे आ प्रमाणे न्यायथी पैसा कमाई जे मदिर बधावे तेने साम्राज्य प्राप्त थाय अने तेनु कल्याण थाय धनश्रेष्ठीनी जेम. अज्ञात कवि अही धनश्रेष्ठीनी अवान्तर कथा रजू करे छे

हरिषेण राजा मगलावती नगरीमा प्रीतिमतीनु विष उतारवा जाय छे मत्रथी विष उतारे छे त्यारे पुत्री आळस मरडीने ऊभी थाय छे प्रियदर्शन राजा पुत्रीने खोळामा बेसाडी पूछे छे " तने शी तकलीफ थाय छे ? " पुत्रीअे कह्यु "मने काई ज थतु नथी बधा भेगा केम थया छो ?" " हे पुत्री ! तु मृत्यु पामी छे अेम जाणी तने स्मशानमा लाव्या ने चिता तैयार करावी छे आ अकारण परोपकारी राजाअे तने प्राण पाछा आप्या छे " पुत्रीअे कह्युं " मारा पुण्यने लीधे अेणे मने सारी करी मे पण मारा प्राण अेने आप्या छे. " राजाअे कह्यु " तें योग्य ज कर्युं छे. " आ साभळी हरिषेणे जवाब आप्यो, " हु तो दीक्षा लेवानो छु ने तपोवनमां जवानो छु. तारी कन्या बीजाने आप " प्रीतिमतीअे कह्यु " मारे कोई बीजो माणस अग्नि समान छे " आ उत्तर साभळी हरिषेण प्रीतिमतीने परण्यो. आ विगत आख्यानक-मणिकोशमां छे.

हरिषेण राजा पुत्र अजितसेनने राज्यभार सोंपी दीक्षा ग्रहण करवानो विचार करे छे. तेणे राणीने कह्युं "तु पैसा जेटला जोइअे तेटला ले ने घरमा रहे हुं ससारथी विरक्त थई गयो छुं ने तापसव्रत ग्रहण करवानो छु." राणी आंखमा पाणी लावी बोली " वृक्षनी छाया वृक्ष वगर रही शके नही, अेवी ज रीते तमारा वगर हु पण घरमा रहीश नही. हे स्वामी !

तमारी गति ते मारी गति " आम कही बन्ने तापसव्रत ग्रहण करे छे आ वात आख्यानक-मणिकोशमा आपी छे.

कनकरथ हरिषेण तापसना आश्रममां आवे छे. ऋषिदत्ताने जुअे छे. कनकरथ अने ऋषिदत्ता बन्ने वच्चे परस्पर प्रेम जाग्यो छे अे जाणी हरिषेण रूपमदवत्ता सखि पासे बन्नेने परणावी दे छे. लग्न थया पछी कनकरथ हरिषेणने ऋषिदत्ता विषे वृत्तात पूछे छे. हरिषेण सर्व हकीकत जणावे छे. आम सहजसुदरकृत कथामा प्रथम कनकरथ ऋषिदत्ताने परणी जाय छे ने पछी अे कोनी पुत्री छे ते हकीकत जाणे छे. आ तो " पाणी पीने पूछे घर " तेना जेवी वात छे.

हरिषेण तापस कनकरथने ऋषिदत्ता विषे वृत्तात कहे छे तेमा प्रथम अेवु जणावे छे के " मत्तीयावई नगरीमा हरिषेण राजा राज्य करे छे. अेनी पत्नीनु नाम प्रियदर्शना छे. अेने अेक पण पुत्र नथी तेनु राजाने असह्य दुःख छे. दुःखी थयेलो राजा उद्वेगवाळो छे. पतिने दुःखी थयेला जाणी राणी सूचन करे छे के " पुत्रनी प्राप्ति माटे कुलदेवीनी आराधना करो." राजा शुद्ध श्वेत वस्त्रो पहेरी, ब्रह्मचर्यव्रत धारण करी, हाथमा माळा लई कुळदेवीना मदिरमा गयो, त्या डाभनी पथारीमा सूतो. त्रण दिवस उपवासव्रत आदर्यु . तपथी प्रसन्न थयेली कुळदेवीने कह्यु " मने पुत्र आप " देवीअे कह्यु : " जे आयुष्यानु विधिअे निर्माण कर्यु ज न होय ते देवो आपी शकता नथी. " राजाअे कह्यु : " मारा वडीलोनी तारा तरफनी भक्ति याद कर ने पुत्र आप, नही तो तलवारथी हु मारु मस्तक उडावी दईश ". राजाअे तलवार खेंची माथु उतारवानी तैयारी करी त्यारे प्रसन्न थई देवीअे कह्यु - " तने पुत्र थशे " आम अजितसेन नामनो पुत्र जन्म्यो. आ विगत आख्यानकमणिकोशमा ज आपी छे.

कनकरथ ऋषिदत्ताने परणीने आश्रममाथी विदाय ले छे त्यारे ऋषि पासे शिखामण मागे छे. ऋषि कहे छे : " तु रुखमणीने परणवा जा. " कुमार जवाब आपे छे : " हमणा तो तमारी पुत्रीथी ज स्त्रीना सबधमा कृतार्थ थयो छु , अने तेथी रुखमणीने परणवानो विचार नथी " आ सांभळी ऋषि जमाईने शिखामण आपे छे · " हे कुमार ! तु लक्ष्मीथी ठगातो नहीं . विद्यानो अहकार करीश नहीं गुणनो गर्व न करतो मारी पुत्री भोळी छे, ते आश्रममा उछरी छे अने शहेरना कपटथी अज्ञात छे तेथी अेना उपर गुस्सो करीश नहीं मारी दीकरीने छोडी न देतो " जमाईने आ जातनी तापस हरिषेणे आपेली शिखामण मात्र आख्यानकमणिकोषमा ज छे

ऋषिदत्ताने परणावी हरिषेण तापस अग्निप्रवेश करे छे तेम ज ऋषिदत्ताना जन्म पछी अेनी माता सूआरोगथी मृत्यु पामी छे अेवी विगत लगभग बधी ज कथामा आवे छे. अेक सहजसुदर ज अेवी विगत आपे छे के ऋषिदत्ता स्मशानमाथी सीधी ज ऋषिपिताना आश्रमे अे आशाअे आवे छे के अेने मातापिता मळशे अने अेनी सारसभाळ लेशे परतु ज्यारे अेणे त्या जई जाण्यु के अे तो परलोक सिधाव्या छे त्यारे अे कल्पांत करे छे आ तद्दन भिन्न हकीकतथी आपणे अेटलु तारवी शकीअे के ऋषिदत्ता सासरे विदाय थईने विपरीत सजोगोमा पाछी आवी अे गाळामा अेना मातापिता मृत्यु पाम्या हशे.

अज्ञातकविकृत कथाना अेवु आवे छे के हरिषेणना मृत्यु पछी अेना जमाई कनकरथे तापस ससरानी यादमा चैत्यस्तभ बनाव्यो

कनकरथ ऋषिदत्ताने परणी गयो छे ओ वात ज्यारे रुखमणीना कानेै पहोंची त्यारे ते गाडी जेवी बनी गई. सुलसा योगिणी रस्तामा रुखमणीने मळी जाय छे रुखमणी पोताने घेर ओने लावे छे. पिता सुंदरपाणि ओने आश्रय आपे छे अने सारु सारु खावापीवानु आपे छे. पछी रुखमणी ओने ऋषिदत्ता उपर आळ चडाववानुं कहे छे. आवी विगत विवेकमंजरीमा आवे छे

नेमिचन्द्रसूरि अेवुं जणावे छे के सुलसा योगिणी फरती फरती रुखमणी पासे आवे छे रुखमणीने उदास जोई पूछे छे के "तु रति जेवी सुंदर छे छता वर वगरनी केम छे ? देवोने दुर्लभ अेवुं यौवन अेळे केम जवा दे छे ?" रुखमणी जवाब आपे छे "मारा पतिने तापस-कन्याअे वश कर्यो छे, तो हवे हु शु करुं ?" सुलसा पूछे छे "हु अेवो प्रयत्न करुं जेथी कनकरथ तारे वश थाय ?" आम सुलसा सामेथी रुखमणीने पूछे छे

कनकरथ ऋषिदत्ताने परणी जाय छे ओ वात रुखमणीना काने पहोचे छे त्यारे रुखमणी कल्पात करे छे. ओ विचारे छे "जो अेमने मारा उपर शोक्य लाववी हती तो परमेश्वरे मने घडी ज शा माटे ? मे कोई कूडु करम कीधु हतु के कोईना पर आळ चडाव्यु हतु के कोई बाळकने विछोड्या हता के पछी काची डाळी मोडी हती, जेथी मारे नशीबे आवुं बन्यु ? अत्यारे जे लग्ननो वेश धारण कर्यो छे ते गमतो नथी. मस्तके जे मोड घाल्यो छे ते माथे झाड जेवो लागे छे. पटोळु जे शरीरे धारण कर्युं छे ते जाणे संतापनु मूळ होय अेम लागे छे. वळी चूडो तेम ज सर्व शणगारनो भार लागे छे." आवुं अेनु कल्पात सामळी सर्व सखीओ टोळे मळी. पछी सखीओना कहेवाथी सुलसाने साधे छे. आवी विगत सहजसुदर कवि आपे छे.

रुखमणीअे मोकलेली सुलसा रथमर्दनपुरमा आवे छे. ऋषिदत्ताने ओळखी ले छे अेनु अप्रतिम सौंदर्य निहाळी मुग्ध थई जाय छे. विचारे छे, "आवी सौंदर्यवती निखालस स्त्रीने केम मराय ?" पाछी ऊठी जाय छे. वळी पाछो विचार आवे छे, "रुखमणीअे आ कार्य सोप्यु छे तो करी ज नाखुं. नही तो अेने शु मोढु बतावीश ?" आम विचारी ऋषिदत्ताना अधर लोही-मासथी खरडे छे. आवी विगत विवेकमंजरीमा आपी छे

सुलसा योगिणी ऋषिदत्ता पर आळ चडाववा माटे अेना मुख उपर लोहीमास खरडे छे आ वातनी राजाने खबर पडे छे. चरो पासे तपास करावे छे ने ऋषिदत्ता ज राक्षसी छे अेवुं साबित थाय छे. राजा अेने मारी नाखवानो हुकम आपे छे. राजानी आज्ञाथी सेवको अेने शूळी पासे लावे छे चोरने जेम बाधवामा आवे तेम अेने बाधवामा आवी. लोकोअे हाहाकार मचाव्यो आ शोरबकोर सामळी ऋषिदत्ता मूर्छा पामी लोकोअे अेने मरेली जाणी छोडी दीधी, आवी वात सहजसुदरनी कथामा आवे छे.

आख्यानकमणिकोषमा अेवुं आवे छे के ऋषिदत्तानो विकृत वेश करी अेने स्मशानमा लाववा-मा आवी. ज्यारे माराओमाथी अेके तलवार खेची त्यारे अे विनति करवा लागी. "हे पिता ! हे भाई ! हु तमने पगे लागु छु. मने ना मारो. मारा घरेणा लई लो ने मने जीवती मूको." आ सामळी एक चाडाळे कह्यु, "आ छोकरी दुष्ट काम करे तेवी लागती नथी. माटे मारो जीव लई लो ने अेने छोडी दो" आ सामळी बधाअे ऋषिदत्ताने कह्यु "अमे तने छोडी दईअे छीअे पाछी तु देखाती नही. तु ज्या जाय त्या तारी कोईने जाण न थाय. जो तु देखाशे

तो राजा अमारो जीव लई लेशे." आम कही ऋषिदत्ताने छोडी दीधी, अने चांडाळो राजा पासे गया ने ऋषिदत्ताना जेवु ज बीजा कोईनु मडदु बताव्यु जेथी राजा समजी गयो के ऋषिदत्ता मृत्यु पामी छे

कनकरथ ऋषिदत्ता मृत्यु पामी छे अेम जाणी रुखमणीने परणवा जाय छे. पोते सुलसा योगिणीने पण पोतानी साथे ज लई जाय छे. कनकरथनो तापसमुनि ऋषिदत्ता साथे मेळाप थाय छे. अेने ऋषिदत्ता पर स्नेह जागे छे. मित्रभावे पोतानी साथे कावेरी आववा आमत्रण आपे छे ने पोताना निवासस्थाने चाल्यो जाय छे. त्यार बाद सुलसा योगिणी आश्रममा प्रवेशे छे. तापसरूप ऋषिदत्ताने पूछे छे, "हे भगवन्! तारी आवी प्रथम युवावस्था होवा छता भयङ्कर वनमां तु अेकलो कम रहे छे?" आ प्रश्न साभळी तरत ज कनकरथे वर्णवेला वर्णन परथी ऋषिदत्ताने अनुमान थई जाय छे के आ पेली ज योगिणि छे जेणे मारा पर आळ चडाव्यु छे. अे कहे छे. "हु गुरुना उपदेश प्रमाणे वर्तु छु. मारा उपर औषधि–तप–विद्या कोईनु कई ज चालवानु नथी." अेणे योगिणीनो भाव जाणवा पूछ्यु "तु पण अेकली शा माटे फरे छे? कोनी चेली छे?" सुलसा विचारे छे, "हु आने कहु तो अे मने अेनी पासे जे विद्या हशे ते आपशे." अेटले अेणे कह्यु, "मारी पासे अवस्वापिनी तेम ज तालोद्घाटनी विद्या छे. जो तु मने तारी पासे जे विद्या होय ते आपे तो हु तने आ बे विद्या आपु." ऋषिदत्ताअे अे बे विद्यानु माहात्म्य पूछ्यु. तेना उत्तरमा सुलसाअे जवाब आप्यो, "मारी विद्याथी हु रथमर्दनपुर आवी अने त्या अवस्वापिनी विद्याथी कुमार कनकरथनी पत्नी ऋषिदत्ताने राक्षसी ठेरवी मारी नखावी हवे हु कुमार साथे आवी छु अने कुमार रुखमणीने परणवा मने साथे लई जाय छे अे माहात्म्य छे" आ जवाब साभळी ऋषिदत्ताअे कह्यु. "मारे तारी आवी पापी विद्या नथी जोईती." सुलसा निराश थई चाली जाय छे आवी बधाथी तद्दन जुदी विगत आख्यानकमणिकोशमां आपी छे आम अधवच्चे ऋषिदत्ता जाणी जाय छे के पोते साचे ज कलकरहित छे ज, अने सुलसा अेना आळ माटे जवाबदार छे तो अेने जिज्ञासा न ज रहे, अने अे बधु जाण्या पछी अे कनकरथ साथे कावेरी जाय अे स्वाभाविक नथी लागतु जयवतसूरिअे आलेखेल विगतो ज योग्य लागे छे

कुमार तापस मुनिने पोतानी साथे आववानु आमत्रण आप्यु. बहु समय सुधी अेनी प्रतीक्षा करी तो पण अे आव्यो नहि अेटले कुमार अेने बोलाववा गयो. जईने जुअे छे तो मुनि ध्यानमा बेठेलो छे. कनकरथ विवेकपूर्वक अेने पोताना पडावमा लई जाय छे रात्रे बन्ने पासे पासे सूई जाय छे अने खूब स्नेहथी वातो करे छे आ समये तापस ऋषिदत्ताअे कुमार कनकरथने पूछ्यु, "ते ऋषिदत्ता केवी हती जेना माटे तने आटलो बधो स्नेह छे अने तु दुःख पामे छे?" कुमारे कह्यु, "अेक जीभथी वर्णवी न शकाय अेवी अेने प्रजापतिअे बनावेली छे." आम वातो करता करता प्रातःकाळ थयो ने तापस ऋषिदत्ता कनकरथ साथे कावेरी तरफ प्रयाण करे छे. आवो प्रसग अज्ञातकविकृत कथामा आवे छे.

रुखमणी कनकरथने परणे छे. प्रियतम पोताने वश थयो छे जाणी ऋषिदत्ता उपर पोते ज आळ चडाव्यु ने मारी नाखी छे अेवु अे स्पष्ट कहे छे कनकरथ आ साभळी खूब ज गुस्से थाय छे. रुखमणीने कहे छे, "ते ज मारी प्रियाने मारी नाखी छे तो तु ज हवे मने पाछी आप. नहि तो तारा हाथ कापी नाखीश." कुमरे तो कागारोळ करवा माडी कोईनु कह्यु माने

ज नहि. मोटे सादे रुखमणी पण रडे छे ने लोकोने कहे छे, "कोण अे मनुष्य छे जे मारा कथने वारशे ? जे वारशे तेने हु मनवाछित फळ आपीश " ते वखते तापस ऋषिदत्ता बोले छे, "हु तारा भरथारने वाळीश " आवी विगत सहजसुदरे आपी छे.

अज्ञातकविकृत कथापा अेवु आप्युं छे के रुखमणी कनकरथने वात करे छे त्यारे तापस (ऋषिदत्ता) त्या हाजर नथी परतु कनकरथ अेने बोलावीने पोते साभळेली सर्व हकीकत कहे छे. अे समये ऋषिदत्ता पोते निर्दोष सावित थई तेथी खुश थाय छे जेवी रीते माणस कडवी औषधिने फेंकी दे छे तेवी ज रीते कनकरथ रुखमणीने काढी मूके छे. त्यार पछी कनकरथ मनमा विचारे छे, "मारी पत्नी ऋषिदत्ता निर्दोष होवा छता मे अेनो त्याग कर्यो तेथी हु नरकमा पडीश. मारे हवे चिता सळगावी बळी ज मरवु जोईअे " आम विचारी चितामा पडवा जाय छे त्यारे सुदरपाणि राजा वीनवे छे छता ते मानतो नथी त्यारे लोको तापस (ऋषिदत्ता)ने अेने मनाववा कहे छे तापस अेने समजावे छे, "स्त्रीनी पाछळ पुरुषे मरी न जवु जोईअे. जो तारामा सत्व होय तो स्त्री मरेली होवा छता पण पाछी आवी जाय भानुमत्रीने वन्यु तेम अने ते पछी भानुमत्रीनी आडकथा कवि आपे छे

कनकरथ ऋषिदत्ता तेम ज रुखमणी साथे रथमर्दनपुर पहोच्यो. बन्ने सुखपूर्वक दिवसो व्यतीत करवा लाग्या. ऋषिदत्ताने गर्भ रह्यो. पोताने पुत्र जन्मवानो छे अेवु स्वप्न आव्यु स्वप्नमा जोयु के खोळामा रहेलु शरदऋतुना चद्रमा जेवु श्वेत अने जेना अग उपर भूरा रगनी केशवाळी फेलायेली छे अेवु सिहनु बच्चु अेना स्तनमाथी दूध पीअे छे आ स्वप्नफळ उपरथी राजाअे जाण्यु के अेने पराक्रमी पुत्र थशे ने पुत्र थया बाद सिहरथ अेवु नाम पाड्यु

सिहरथनो जन्मोत्सव तेमज केळवणी प्रसंग :

नव महिना ने साडा सात दिवस पछी पुत्र जन्म्यो. अे दिवसे सारा ग्रहो हता ने बधी दिशाओ प्रकाशित थई हती. प्रियवचनिका दासीअे राजाने पुत्रजन्मनी वधामणी आपी. कनकरथे दासीने खूब ज दान आप्यु. ढोल वगडाव्यो गभीर वाजा वाग्या. लोकोअे नवा रगेला वस्त्रो धारण कर्या वधूओ सुदर रीते नृत्य करवा लागी तमाम नागरिकोनु सन्मान करवामा आव्यु जग्याअे जग्याअे रासडा लेवाया. ठेकठेकाणे दान लेवा लोको भेगा मल्या. घेर घेर मूसळ ऊभा कर्या तोरणो बधाया. परस्पर आभरणो अपाया वधामणीमा रत्नो अपाया अभयदान अपायु शुक्लपक्षना चद्रमानी जेम सिहरथ मोटो थयो ने गुरु पासे भणवा मोकल्यो ते सर्व कळामा पारगत थयो. आ सर्व हकीकत आख्यानकमणिकोषमा छे.

अज्ञातकविकृत कथामा नीचे प्रमाणे छे :

" पुत्रनो जन्म नव महिना ने साडा सात दिवस पछी थयो. वींटी–परवाळा, सोनु, चादी वगेरेनु दान अपायुं आखाय गाममा तोरण बधाया जेलमाथी केदीओने छूटा करवामा आव्या बीजा राजाओने भोजन कराव्या वस्त्रो अपाया. सिहरथने माटे पाच धात्री राखवामा आवी. शास्त्र अने शस्त्रनी कळा शीखवा तेने उपाध्याय पासे मोकल्यो

केटलाक गौण फेरफारो .

सहजसुदरनी कथामा ऋषि कनकरथ साथे ऋषिदत्ताने मदिर पासे परणावी दे छे.

त्यारपछी कनकरथ ऋषिदत्ता कोनी पुत्री छे अेवो वृत्तात पूछे छे ने हरिषेण सघळी हकीकत जणावे छे. आ योग्य नथी. बीजी कथाओमा कनकरथ प्रथम सघळी हकीकत जाणे छे पछी ज ऋषिदत्ताने परणे छे. अे राजकुवर होवाथी राजकुवरीने ज परणी शके. राज्यना कायदाकानून मुजब: तेथी पहेला परणी जाय ने पछी अे कोई सामान्य मातापितानी पुत्री होय तो मुश्केली ऊभी थाय पाणी पीने पछी घर पूछवानो शो अर्थ ?

ऋषिदत्ता पिताना आश्रममा आवे छे त्या पोते स्त्री होवाथी अेकली ना रही शके कोईपण पुरुषनी दानत वगेरे माटे पिताअे वतावेली औषधि जाघ चीरीने तेमां मूकी दे छे आ योग्य नथी. बीजी कथाओमा कानमा घाले छे अेवु दर्शाव्यु छे, ज्यारे आख्यानकमणिकोशमां अेवु दर्शाव्यु छे के डावो साथळ चीरीने अेणे तेमा औषधि मूकी. सामान्यत: पुरुष साथळमां मूके तो ते समजी शकाय.

सहजसुदरे आपेला कथानक प्रमाणे कनकरथ भद्रयशो गुरुने पूछे छे, " मारी पत्नी ऋषिदत्ता-अे पूर्वभवमा कया पाप कर्या हता जेथी आ भवे अेना कर्मे कलक चोटयु ?" जयवतसूरिकृत कथामा ऋषिदत्ता पोते ज गुरुने पूछे छे, " मने पूर्वभवना कया कर्म नडया, जेथी आ भवे आवु कलक चडयु ? '

अज्ञातकविकृत ऋषिदत्ताकथामा आवती वे दृष्टांतकथाओ :

हरिषेण राजा अेक वार अजाण्या घोडा उपर सवार थई नीकळी पडयो फरता फरतां जगलमा आवी चडयो. त्या घोडाने अेणे छोडी दीधो पछी अे खूब फर्यो अने दिशाओ भूली गयो त्या अेक तापसनो आश्रम जोयो. अे आश्रममा आवीने बेठो. आश्रममा कच्छ—महा-कच्छवशमा थयेला विश्वभूति तापस अनेक शिष्योथी वीटळाईने बेठेला हता. हरिषेण राजा गुरुने नम्यो अने बोल्यो, " हे महानुभाव ! तमारा दर्शनथी बधु ज सारु थई गयु. जे मृगोनी मैत्री राखनार छे, दु खी प्राणीओने सांत्वना आपनार छे तेने कोण न वादे ?" आम कही गुरुने पगे लाग्यो. तापस विचारे छे के आकृतिथी तो आ राजा लागे छे. आशीर्वाद आप्यो, " ज्या सुधी आ स्वैरगगानो प्रवाह चाले छे, ज्या सुधी सूर्य आकाशमां चाले छे, ज्या सुधी मेरु पर्वत शोभे छे त्या सुधी तु स्वजन, पुत्र, पौत्रथी वींटळायेलो रहे. ज्या सुधी काचवानी पीठ पर भुजगपति छे त्या सुधी तु राज्य कर."

अेक वार राजाअे विद्वद्गोष्ठिमा पूछ्यु , " पैसा कमावामा दु ख छे, कमाया पछी साचववा-मा दु.ख छे. पैसाने वापरवो दु खकर छे. अेक जन्मने माटे पैसानु पाप ऊभु थाय छे. हु पैसो केवी रीते वापरु जेथी मारो जन्म सफळ थाय ? मुनिअे कह्यु, " जे माणसो न्यायथी पैसा कमाई मदिर बधावे तेनु कल्याण थाय छे—धनश्रेष्ठिनी जेम. "

धनश्रेष्ठीनी आ दृष्टातकथा नीचे प्रमाणे छे :

" धनद नामनो शेठ नाम प्रमाणे गुणवान हतो अेने धनश्री नामे पत्नी अने धर्म, अर्थ काम अने मोक्ष जेवा चार पुत्रो धनदत्त, धनपाळ, धनसार अने धननायक नामे हता राजाअे अेने शेठनी पदवी आपी. सारा व्रतवाळा शेठ गुरुनी देशना साभळी. देशना साभळी शेठे ऋषभ-देव भगवाननु मोटु मदिर बधाव्यु. आखा गामने अे शुभ प्रसगे नोंतर्यु.

दरेकना बधा दिवसो सरखा नथी जता. धनद शेठ निर्धन थई गया तेओ विचारे छे, "कुटुंबमां धन वगर रहेवु योग्य नहि." तेथी तेओ सघपुरनी पासेना गाममा रहेवा चाल्या गया. चारेय पुत्रो शहेरमा धन कमाय अने अवारनवार पिता पासे आवी थोडुघणु आपे जेथी तेमनु गुजरान चाले. पत्नी पारकानु काम–खाडवा दळवानु–करे आम दिवसो पसार थाय.

अेक वार शेठ पुत्रनी साथे सघपुर गया शेठे मदिर बधाव्यु हतु त्या तेओ गया, चैत्य वंदन कर्यु, भावना भावी. माळीअे जूना स्नेहथी फूल आप्या आम धर्मनी क्रिया लाजशरमथी करी पछी उपाश्रयमा गुरु महाराजने वदन करवा गया त्या बेसीने पूछयु, "हु सपत्तिवाळो हतो ते निर्धन शाथी थई गयो ?" गुरुअे पूर्वभवनो वृत्तात जणाव्यो

"रत्नपुर शहेरमा रत्नशेठ अने रत्नावती दंपतीने तु धन नामनो पुत्र हतो. तु आठ वर्षनो थयो त्यारे परणावी दीधो अेक वार ज्यारे तु जमवा बेठो हतो त्यारे भाणामा वधारे दूधपाक नखाई गयेलो ते साभळेलु के यति मेघसमान छे. आप्यु होय अेना करता सोगणु थाय तेथी तारे आगणे मूर्ख तपस्वी ऊभो हतो तेने ते दूधपाक वहोराव्यो परतु जेम दारूना घडामा नाखेलु दूध पण नकामु तेम कुपात्रमा आपेलु नकामु जाय वरसादनु पाणी छीपमा पडे तो मोती थाय ने सापना मोढामा पडे तो झेर थाय. आम तने सकल्पविकल्प थया ने कुपात्रे दान आप्यु तेथी तु निर्धन थई गयो

अेक वार काळी चौदसे ते मत्रनी साधना करी मत्र सिद्ध थयो ने साक्षात् यक्ष आव्यो यक्षे कह्यु, "तु जे मांगीश ते मळशे" तें कह्यु, 'मे जे भगवाननी पूजा चोमासामा करी छे तेनु फळ आप." यक्षे कह्यु, "हु अे फळ केवी रीते आपु ? जे सर्वज्ञ होय ते ज आपे." अे रात्रे तने स्वप्न आव्यु, स्वप्नमा कोईके कह्यु, 'चार रत्नो मूक्या छे ते तु लई जजे" आ प्रमाणे सवारे रत्नो मल्या.

पुत्रोअे पूछ्युं, "पैसा क्याथी लाव्या ? कोणे खुश थईने आप्या ?" सर्व हकीकत जणावी पैसो आव्यो अेटले छोकराओ पितृभक्त थया, मिथ्यादृष्टिवाळा हता ते जिनभक्तिवाळा थया. धनद शेठे ते पछी जिनमदिर बधाव्यु.

दृष्टांतकथा–२

कनकरथ रुखमणीना मोढे साभळे छे के ऋषिदत्ता उपर अेगे ज आळ चाढाव्यु हतु ने मारी नखावी. अे खूब ज कोपायमान थाय छे पोताने हवे जीवीने शु काम ? अेम विचारी चिता तैयार करावे छे. सुदरपाणि राजा तेम ज घरना अन्य माणसोथी वार्यो अटकतो नथी त्यारे तापस ऋषिदत्ता अेने वीनवे छे के "जो तारामा सत्व होय तो मरेली स्त्री पण पाछी आवे- भानुमत्रीनी जेम."

आ भानुमत्रीनी कथा नीचे मुजब छे.

"वाराणसी नगरीमां सुरसेन राजा हतो. तेनी श्रीदत्ता पत्नी हती. अे राजाने भानु नामनो मत्री हतो, जे सन्मार्गे चालनारो हतो अने जेने गुणवाळी, कलायुक्त, सुलक्षणा, प्रिय-भाषिणी पत्नी सरस्वती हती. बन्ने वच्चे शकर–पार्वती जेवो, कृष्ण–रुक्ष्मणी जेवो स्नेह हतो. बन्ने सोगठाबाजी रमता, आनद–क्रीडा करता, दिवसो पसार करता हता.

अेक दिवस राजाअे प्रधानने बोलाव्यो, परंतु ते मोडो गयो. राजाअे ठपको आप्यो, "तु बुद्धिशाळी छे छता ते ठपकानु कारण केम उभुं कर्यु ?" प्रधाने जवाब आप्यो, "मारी पत्नी बहु प्रेमाळ छे. अे मारो विरह सहन करी सकती नथी." राजाअे कह्युं, "पण अधिकारी तरीके तारे काम तो करवुं ज जोईअेने ?" आवु सांभळी मंत्री पोताने घेर गयो. राजाअे मंत्रीनी परीक्षा करवा माटे अेने युद्धमा मोकल्यो. राजाने पगे लागी अे युद्ध करवा नीकळी पड्यो. राजाअे अेनी पासे अेनी मुद्रानी महोर घेरथी मगावी लीधी. मंत्री सैन्यमा शोभवा मांड्यो. जबरु युद्ध जाम्यु आ बाजु राजाअे मंत्रीनो प्रेम जाणवा अेने घेर अेनी स्त्री पासे चर मोकल्यो. आ जोई स्त्री समजी गई के "नक्की मारो पति युद्धमा मृत्यु पाम्यो छे, नहि तो वींटी तेम ज मुगुट अेकलां ज केम आव्यां ?" आम विचारी सरस्वती पण मृत्यु पामी. युद्धमा विजय मेळवी मंत्री पाछो आव्यो अेणे जाण्यु के पोतानी स्त्री वियोगथी मृत्यु पामी छे. आ सांभळी मूर्छित थई गयो ठंडा उपचारथी जाग्रत थई घेर गयो विलाप करवा माड्यो, "हे प्रिये! तारा विना बधी दिशाओ आधळी थई गई छे" आम विलाप करतां करता ते साव मूढ बनी गयो. पोताना माणसो के पारकाना कोईने ओळखतो नथी. आम गाडो बनी गयो अेटले राजाअे अेने प्रधान-पदेथी छूटो करी मूक्यो

अेक वार अे बहार नीकळ्यो. रस्तामा गंगा तरफ जतो कोई यात्री मळ्यो तेनी साथे चालवा लाग्यो. गगा नदीमां जई "सरस्वती, सरस्वती, सरस्वती," अेम त्रण वार बोली स्नान करवा लाग्यो अेक दिवस ध्यानी, ज्ञानी, अने मौन राखनारो साधु त्यां नहावा आव्यो तेने भानुमंत्रीअे नमस्कार कर्या मुनिने पूछ्यु, "मारी स्त्री मरीने क्या गई छे ?" मुनिअे विभंग ज्ञानथी जोवु ने कह्युं, "गंगापुर गाममा सिंहदत्त नामना धनवाननी ते पुत्री थई छे अत्यारे अेनु नाम सुदरी छे जे बहु ज दयावान छे. उंमरमा बार वर्षनी थई छे अेना पिता पण अेने विषे चिंतातुर छे के आने योग्य वर कोण मळशे ? यश अने बुद्धिमान तुं अे सुंदरी पासे जईश तो अेने जातिस्मरण ज्ञान थशे अने अे तने परणशे."

कोईकवार सुंदरी त्या नहावा आवी भानुमंत्रीने स्नान करतो जोयो ने जातिस्मरण ज्ञान थयु. पूर्वभव जोयो अेटले अेना गळामा माळा नाखीने परणी गई. मातापिताअे जाण्युं अेटले दंपतीने घेर लई गया आवा साहसिक कार्य माटे सत्कार कर्यो. आम भानुमंत्री गंगा नदी पासे गयो ने अेनी स्त्री अेने त्या मळी गई"

भिन्न भिन्न कविओनी कथाओमा मळता आवा नानामोटा फेरफारो, ऋषिदत्तानी कथा-मांना ते ते कविने जरुरी लागेला रसस्थानोना सूचक गणवा करता तो लोकमा पुष्कळ प्रचार पाम्याने कारणे सहजभावे जे केटलीक विगतो कथामां बदलाती चाले तेना साक्षीरूप गणवा अे वधु ठीक लागे छे बधी विगतोनो समग्रपणे विचार करीअे तो ते जमानाना प्रजामानसने तथा लोकरूढिओने जाणवा-विचारवानी सविशेष सामग्री आपणने आ बधामा मळे छे ज.

पात्रोना अने स्थळनां नामोनी बाबतमा अगाउनी अने जयवंतसूरिनी रचनामा केवा फेरफार छे ते हवे पछी आपेला कोठा परथी ध्यानमा आवशे जयवंतसूरिना पुरोगामीओअे आपेलां केटलांक वधारानां वर्णनो छेडे परिशिष्टोमा आप्या छे.

भिन्न भिन्न लेखकोनी कृतिओमां मळतां स्थळो अने पात्रोनां नाम

१ ऋषिदत्तारास जयवतसूरि	२ आख्यानकमणिकोष नेमिचन्द्रसूरि	३ विवेकमजरी आसड	४ ऋषिदत्ता अज्ञातकवि	५ ऋषिदत्ता चउपई सहजसुन्दर	६ ऋषिदत्ताचरित्र देवकलश
रथमर्दनपुर	रथमर्दननगर	रथमर्दननगर	रथमर्दनपुर	विजयपुरी	रथमर्दनपुर
हेमरथ	हेमरथ	हेमरथ	हेमरथ	हेमरथ	हेमरथ
सुयशा	सुजशा	सुयशा	सुयशा	हेमवती	सुजिसा
कनकरथ	कनकरथ	कनकरथ	स्वर्णरथ	कनकरथ	कनकरथ
कावेरी	कावेरी	कावेरी	कावेरी	अयोध्या	कावेरी
सुदरपाणि	सुदरपाणि	सुदरपाणि	सुरसुदर	सुदरपाणि	सुदरपाणि
वसुधा	वासुदेवी	वासुला	वासुला	सुदरी	वसुधा
रुखमणी	रुप्पिमणि	रुक्मिणि	रुकमिणि	रुप्पिणी	रुकमिणि
मित्रतावती	मत्तियावयी	मत्तितावती	अमरावती	गजपुर	मत्रीतावती
हरिषेण	हरिषेण	हरिषेण	हरिषेण	सुनयणाणद	हरिषेण
प्रियदर्शना	प्रियदर्शना	—	प्रियदर्शना	श्रीदेवी	प्रियमति
अजितसेन	—	अजितसेन	जयसेन	—	अजितसेन
मगलावती	मजुलावयी	मगलावती	मगलावती	—	लीलावती
प्रियदर्शन	प्रियदर्शन	प्रियदर्शन	प्रियदर्शन	—	प्रियदर्शन
—	—	विद्युत्प्रभा	विद्युत्प्रभा	—	प्रियमति
प्रीतिमती	प्रीतिमती	प्रीतिमती	प्रीतिमती	—	कनकावली
विश्वभूति	विश्वभूति	विश्वभूति	विश्वभूति	—	—
ऋषिदत्ता	ऋषिदत्ता	ऋषिदत्ता	ऋषिदत्ता	ऋषिदत्ता	रिषिदत्ता
सुलसायोगिणि	सुलसायोगिणि	सुलसायोगिणि	सुलसायोगिणि	योगिणि	योगिनी
भद्रयशोसूरि	भद्रयशोसूरि	भद्रयशोसूरि	भद्रयशोसूरि	गुरु	भद्रसूरि
सिंहरथ	सिंहरथ	सिंहरथ	सिंहरथ	सिंहरथ	—
गगापुर	गगापुर	गगापुर	गगापुर	वणारसी	गगापुर
गगदत्त	गगदत्त	गगदत्त	गगदत्त	—	गगदत्त
गगादवी	गंगादेवी	गगादेवी	गगादेवी	—	गगादेवी
गंगसेना	गगसेना	गगसेना	गगसेना	मसिवासणी	गंगसेना
चद्रयशा	चद्रयशा	चद्रयशा	चद्रयशा	वैरसुदर (महासती)	चद्रयशा
संगा	सघा	सघा	सघा	—	सगा

"ऋषिदत्ता रास"माथी खडुं थतु तत्कालीन समाजचित्र

आपणे जोयु ते प्रमाणे ऋषिदत्ता रासनां मुख्य पात्रो राजकुटुंबनां ज छे अने ते पण राजाओ–राणीओ–राजकुवर–राजकुवरीओ छे. आ उपरांत कथानो मुख्य विषय प्रणय–नियोजन निरूपण करवानो छे अेमा पण लग्ननी वात आवे छे. कविने अे कथानी रजुआत करता जे कंई कहेवानुं थयु छे तेमाथी तत्कालीन जीवननी केटलीक आछी-पातळी रेखाओ उपलब्ध थाय छे ते रेखाओ केवी मळे छे तेवी आपणे जोईअे

रथमर्दनपुरना वर्णनमा कवि अे नगरने सुंदर कहे छे. त्यां मोटा प्रमाणमा धनाढ्य शेठियाओ वसे छे. अेमाना घणा दानवीरो छे पुरुषो अत्यंत दयावंत अने निराभिमानी गणनाय छे. स्त्रीओ गौरवर्णी अने गजगामिनी छे नगरमा अनेक देरासरो अने पौषधशाळा छे अने मुनिओ त्यां संयम पाळता सुखपूर्वक जीवन वितावे छे. अलबत्त गाम होय त्यां बधी ज जातनी वस्ती होय अेटले अे नगरमा घणा पाखंडीओ, कामणटूमण करनाराओ, मंत्रवादी जोगीओ, गणिकाओ, परदेशी, मठवासीओ, सन्यासीओ वगेरे पण छे. पंडितो ने जोशीओ पण नगरमा छे. नगरना रक्षण माटे तलार के नगररक्षकनी योजना जणाय छे अने गाममा कशु अनिष्ट थाय तो तेने माटेनी जवाबदारी अेनी छे. कांई पण गुनो न पकडातो होय तो राजा तलारने बोलावीने तेने ततडावतो जणाय छे

उत्सव टाणे नगरवासीओ जातजातनी रीते आनंद करता जणाय छे. राजाने त्यां लग्नोत्सव होय ते प्रसंगे आखा नगरमा उत्सवनु वातावरण जामे छे. मोटा मोटा मंडपो बांधवामां आवे छे अने उत्तम जातना तोरणोथी–कमानोथी शहेर शोभी ऊठे छे रंगबेरंगी पताकाओ मंडप उपर लहेराय छे भातभातना चंदरवा बंधाय छे कुंकुमना छांटा छंटाय छे, फूल–पगरथी सुगंधी वातावरण मघमघे छे. कृष्णागरना धूप थाय छे. धवळो गवाय छे याचकोने मनवांछित दान अपाय छे. नाचनारीओ ठामठाम नाचे छे अने वाजित्रोनो ध्वनि व्यापी रहे छे. भाटचारणो बिरुदावली बोले छे सुहासिणी नारीओ टोळे वळी गीतो गाय छे. बीजी अनेक स्त्रीओ गोखे चढीने वरघोडो जोवाने माटे उत्सुक बनती होय छे. वरघोडो आवता वर–कन्याने मोतीना थाळ भरी वधाववामां आवे छे साधुओ आशिष आपे छे. अेम सर्वत्र आनंद आनंद थई रहे छे

लग्ननो विचार करीए तो मोटे भागे माता–पिता ज ते नक्की करता जणाय छे. कन्यापक्ष मागु मोकले छे. क्यारेक एवुय बनतु लागे छे के छोकरा–छोकरीने परस्पर प्रेम उद्भवे ने परिस्थिति सानुकूळ होय तो तेओ परणी जाय छे. अलबत्त आवा लग्ननी बाबतमा छोकरो वधारे स्वतंत्र लागे छे. राजा हरिषेण प्रीतिमतीने साप करडयो तेनु झेर उतारे छे अने उपकारवश थई प्रीतिमती हरिषेणने ज परणे छे अे पण अेक नोंधपात्र हकीकत छे राजवीओ अेकथी वधु पत्नी करी शकता, पण कवि बहुपत्नीत्वनो विरोध करे छे—स्त्रीना सुखनी दृष्टिअे. कहे छे : "सूली रूडी सउकिथी " अेकाकिनी अने निराधार स्त्रीने हमेशा पुरुषोनो डर रहेतो, अने लग्न अे दृष्टिअे आवश्यक बनी जता पुरुष स्त्रीविरहे आपघात करवा जाय तो ते हासीपात्र गणातुं तेम ज नक्की थयेल कन्या जो कोई बीजाने वरे तो ते लज्जास्पद गणातु

राजाओनी बाबतमा अेम जणाय छे के तेओ प्रजावत्सल राजवीओ छे हेमरथराजाने न्यायनिपुण – न्यायरजन – अन्यायगजन तरीके वर्णववामां आव्यो छे राजा सुंदरपाणिने तो

केवळ तलवार बहादुर ज कहेवामा आव्यो छे, ज्यारे हरिषेण माटे 'शुभमति' अेवु अेक ज विशेषण कविअे मूक्यु छे प्रजा पीडाती होय त्यारे राजा पीडानु कारण शोधवाने मथे छे अने कारण जणाय तो ते तत्काळ गमे ते भोगे पण दूर करवा माटे मथतो होय छे. ऋषिदत्ता उपर आवेलु' आळ साचुं लागता हेमरथ राजा ते पोतानी पुत्रवधू छे अे विचारे अटकतो नथी पण अेने देहांत-दंडनी भारेमा भारे शिक्षा फरमावे छे. ऋषिदत्तानो बचाव करवा माटे तत्पर थयेला पोताना पुत्रने अे लवडधक्के ले छे अने तेने न्यायना मार्गमा आडे आवतो अटकावे छे अे ज प्रमाणे रासना पाछळना भागमा रुखमणीअे मुलसा द्वारा ऋषिदत्ताने हेरान करी हती ते भेद खूली जता जमाई बनेला कनकरथने तथा ऋषिदत्ताने सत्कारवा उपरात सुदरपाणि पोतानी पुत्रीने ठपको पण आपे छे आ राजवीओ बधा ज हैयाना उदार छे अने स्वभावे निखालस जणाय छे. तापस बनी चूकेलो हरिषेण राजा कनकरथना प्रश्नना जवाबमा ऋषिदत्तानी उत्पत्ति अगे पोतानो पूर्व इतिहास निखालसभावे रजू करे छे ऋषिदत्ता निर्दोष छे अने पोते तेने खोटी रीते आकरी शिक्षा करी तेनो अपराध कर्यो छे ऐम लागतां राजा हेमरथ ते पुत्रवधूनी वारवार क्षमा याचे छे

पटराणीओ केवळ रूपसुदर होवा उपरात कथानकमा क्यो सक्रिय भाग नथी लेती ते उपरथी अेम तारवी शकाय के समाजमा स्त्रीओनो दरज्जो नीचो हतो अने दीकरा–दीकरीने परणाववानी बाबतमा पण अेमनो अभिप्राय नहोतो पुछातो लाडघेली राजकुवरीओ पिताना वात्सल्यने बळे धार्यु' करती अने करावती जणाय छे रुखमणी जेवी कुवरी मनोवाछितनी सिद्धि माटे सुलसा योगिनीने साधे छे ने ऋषिदत्तानो काटो काढी कनकरथने परणे छे त्यारे ज जपे छे

कनकरथ परणवा जाय छे त्यारे कुलीन युवतीओ मगलगीतो गाय छे. कुवर पोतानी साथे चतुरग सेना लईने परणवा माटे कावेरी तरफ प्रयाण करे छे. अेना मातापिता अेने परणाववा नथी जता, पण अे परणीने आवे त्यारे अेनो सत्कार करी उत्सव मनावे छे खरां. कनकरथने जोवा मार्गमा लोको भेगा मळे छे अने अेने जातजातनी भेट आपे छे. कन्यापक्षे सुदरपाणि राजा सामे आवीने सामैयु करे छे अने कुवरने सारी जगाअे उतारो आपे छे अने उत्तम मडपमा जोशीओअे काढी आपेला शुभ मुहूर्तमा पोतानी कन्याने परणावे छे अने जमाईराजने थोडो वखत पोताने त्या ज राखे छे. आ पहेला ज्यारे कनकरथ ऋषिदत्ताने परण्यो हतो अने तेने सासरे वळाववानी हती त्यारे तापस हरिषेण पुत्रीने सासरवासने लायक शिखामण आपे छे अने जमाईने पोतानी दीकरीनी सभाळ राखवानुं कहे छे आ बधा प्रसगो आपणा जूना लग्नटाणाना रीतरिवाजो अने ते वखते अनुभवाता वातावरणनो ख्याल आपे छे.

ते जमानाम। लोको शुकन–अपशुकन, कामण–टूमण, चमत्कारो, स्वप्न वगेरेमा श्रद्धा राखता जणाय छे. कनकरथना लग्न माटेना प्रस्थान वखते अेने जमणु' अग फरकवा जेवा शुभ शुकन थाय छे. तो ऋषिदत्ता उपर आळ आववानु छे ते टाणे अपशुकनियाळ वीना बने छे. सुलसा कामण-टूमणमा पावरधी छे अने रथमर्दनपुर आखाने हेरान–परेशान करी मूकी अनेक लोकोनो भोग ले छे. हेमरथ राजानी पासे सभामा जवानी परवानगी मेळवी लई त्या जईने ते पोताने आवेला स्वप्ननी वात द्वारा ऋषिदत्ताने कलंकिनी ठरावे छे. ऋषिदत्ता औषधिने बळे रूपपरिवर्तन करी शके छे, अने तापस तरीके ते दिवगत गणाती ऋषिदत्ताने पोताना तपने प्रभावे यमघेरथी पाछी आणी आपवानु' बीडु झडपे छे. आ बधामा तत्कालीन लोकमान्यताना दर्शन थाय छे

गुनेगारने थती आकरी शिक्षाना प्रकार पण अहीं मळे छे. राक्षसी गणाती ऋषिदत्ताने अपमानित करी तेने हणवानो हुकम हेमरथ आपे छे. ते पछी ऋषिदत्ताने पकडी तेने माथे सात पाटा पडवामां आवे छे, माथे चूनो चोपडवामां आवे छे. वीलानुं झुमखुं त्यां राखवामां आवे छे, विकृत वेश करवामां आवे छे. सूपडानु छत्र धरवामां आवे छे. गधेडे बेसाडवामां आवे छे, लीमडानां पानडानी माळा पहेरावबामां आवे छे. शरीरे हींगनो लेप करवामां आवे छे. मो पर मेंश चोपडवामा आवे छे अने गाममां फेरवी स्मशानमां वध माटे लई जवामां आवे छे. वार्तानां पाछळना भागमां सुलसायोगिनी अपराधी जणाता राजा सुंदरपाणि तेनुं नाक कपावीने तेने नगरनी बहार काढी मूके छे.

कोई महत्त्वनी जाहेरात करवानी होय तो राजा गाममां ढोल पिटावी ते करतो जणाय छे.

लोको धर्ममां अत्यंत श्रद्धावाळा जणाय छे. साधु-साध्वीओ प्रत्ये अेमने अत्यन्त पूज्यभाव छे. याचकोने शुभ प्रसंगे दान आपवानी चाल जणाय छे. पैसादारो पोताना द्रव्यनो व्यय मंदिरो बंधाववामां पण करता होय अेम जणाय छे.

अेकंदरे प्रजाजीवन सुखी अने समृद्ध हतुं अने राजा प्रजाना संबंधो घणा सारा हता अेवी छाप आ रास ऊभी करे छे.

जंगलमां आश्रम बांधी रहेता तापसो प्रत्ये लोकोने अने खुद राजाओने पण बहुमान जणाय छे मुख्य तापसनी रजा विना राजा पण आश्रममां प्रवेशतो नथी. आगंतुकोनु उत्तम आतिथ्य तापसो करे छे. पोताना आचारविचारनी बाबतमां तेओ खूब ज कडक जणाय छे, अने आश्रमने अत्रअने तेवो कोई दोष थता आश्रम छोडी जाय छे आचार अे प्रथम धर्म छे अने परम धर्म छे अेवी आपणी रूढ मान्यता अही प्रगट थाय छे.

पुत्रो उमरलायक थता व्यवहारभार तेमने सोंपी मावाप कोई आश्रममां जई शेष जीवन दीक्षा लई चरित्र पाळवा—पूर्वक वितावी अंते मुक्तिने वरता देखाय छे. आम बाळक ने कौमारवयमां विद्याभ्यास, जुवानीमां गृहस्थाश्रम अने घडपणमां वानप्रस्थाश्रमनी व्यक्तिजीवननी पुराणी धरेड अहीं रजू थई छे.

ऋषिदत्ता रास रचवा पाछळनो कवि जयवंतसूरिनो उद्देश :

कवि जयवंतसूरि ऋषिदत्ता जेवी सतीनु सच्चरित्र रसिकजनोना आग्रहे रचे छे. अेमनी काव्यरचनाना आ प्रेरकबळनो उल्लेख अेमणे प्रथम ढालनी सातमी कडीमां अने छेल्ली ४१ मी ढालनी पांचमी कडीमां कर्यो छे. सतीचरित्र सुणतां अने भणतां जन्म पवित्र थई जाय छे अने मनमां उत्तम धर्मलाभ मेळवता उत्तम जनो आ लोकमां अने परलोकमां बधा सुख प्राप्त करे छे अेम अेमणे कहयु छे.

आम ऋषिदत्तानुं कथानक साची रीते छे तो अेक सतीना सच्चरित्रनुं रोमांचक चित्र, रोमांचक अेटला माटे के पूर्वजन्मोना कर्मोना आधारे आ जन्ममां पण चारित्र्यशील मनुष्योने अनेक जातनां दुःखो सहन करवा पडे छे तेनु अे उदाहरण छे. पूर्वजन्मना कर्मने परिणामे निर्दोष ऋषिदत्ता उपर आळ आव्यु अने अेने भयंकर अपमान सहेवुं पडयुं अे आ कथानो मुख्य मुद्दो गणी शकाय. पण कविअे जे रोचक रीते आ काव्यनी रचना करी छे ते जोतां आपणे आने प्रणयत्रिकोणना कथानक तरीके पण ओळखावी शकीअे.

आ रासना महत्त्वना बधा पात्रोने ध्यानमा लईअे तो प्रणयना केटलाक बीजा स्वरूपो पण आ रासमा जोवा मळे छे जेम के पिता–पुत्रीनो अेटले के हरिषेण-ऋषिदत्तानो प्रेम अने कुंवर कनकरथ अने तापसवेषी ऋषिदत्तानो मित्रप्रेम राजा हेमरथनो पुत्रप्रेम अत्यंत गौण स्वरूपे मळे छे अने ते नायक–नायिकाना मूळ प्रेममा बाधक बनतो होवाथी रुचिकर नीवडतो नथी

प्रणयत्रिकोण रचाय छे कुंवर कनकरथ, ऋषिदत्ता अने रुखमणी वच्चे अेमा कनकरथ अने ऋषिदत्ता अे कथाना नायक-नायिका छे ज्यारे रुखमणीने कहेवी होय तो उपनायिका कही शकाय जोके अेक रीते तो अे मूळ नायिका साथे स्पर्धामा ऊतरती अने कावादावाथी तेना जीवनने कलुषित बनावती स्त्री छे. पण नायिकानु अहित सीधी रीते अेने हाथे नथी थयु ते तो थयु छे सुलसायोगिणि द्वारा अेटले खलपात्र तरीके तो सुलसानु नाम ज आगळ करी शकाय अने कविन्याय मुजब जे कडक शिक्षा खलपात्रने खमवी पडे ते खमवी पडे छे सुलसाने ज.

प्रणयनो मार्ग काटाळो गणायो छे जगतनो व्यवहार ज कोईक अेवा प्रकारनो छे के जेमा साचा प्रणयने हमेशा सहन करवु पडतु होय छे. प्रणयीओ हमेशा आकरी कसोटीअे चडे अने अे कसोटीमाथी अेओ पूरेपूरा पार ऊतरे ते पछी ज अेमना प्रणयनी कदर जगत करी शके छे. परिस्थिति आवी होवाने कारणे आपणा कवि जुदा जुदा स्थळे प्रणयनी प्रसगोचित मीमासा करे छे

ऋषिदत्ताने जगलमा प्रथमवार जोता ज कुवर कनकरथ अेना प्रेममा पडे छे ऋषिदत्तानु सौंदर्य जोई मोह पामेलो कुवर " नाठई वेध्या नाग जिम लय पाम्यउ अनग " कया उपायथी अेने प्राप्त करवी अेनो अे विचार करे छे त्या तो ऋषिदत्ता अदृश्य थई जाय छे अने कुवरनु हैयु अेना फरी दर्शनने माटे तलसी रहे छे थोडा ज समय बाद मदिरमा फरी अेकवार, कनकरथ अेने तापस हरिषेणनी साथे जुअे छे आ प्रसगे कुवरने जोईने ऋषिदत्ताना अतरमा प्रेम जागे छे अने कवि छठ्ठी टाळमा कडी ३ थी ५ मा ऋषिदत्तानी प्रणयचेष्टाओनु ताद्दश निरूपण करे छे. अे वर्णन बाद कवि नवमी कडीमा वेधनी वात न्यारी छे अेम दर्शाववा जुदा जुदा उदाहरणो आपे छे अने कडी ११–१४ मा प्रेमनी पीडानु वर्णन करे छे ते पछी लखे छे -

" वेहूनई प्रेम हुउ साखिउ, पूरव पुण्यतणउ पारिखउ,
अेणइ ससारइ अेतलउ सार, प्रेमतणउ मोटउ आधार " (६ १५)

अही कवि आ प्रथमदृष्टिना प्रणयने माटे पूर्वजन्मना पुण्यना पारखानी वात करे छे आम कनकरथ अने ऋषिदत्ता बन्नेना पूर्वजन्म अेमना आ प्रथम परिचयना प्रणयना मूळमा छे तेवु जणाय छे पण जयवतसूरिअे अतमा केवळ ऋषिदत्ताना ज पूर्वजन्मनी कथा आपी छे अने ते पण अेने आगला जन्मना कया पाप नडया ते जणाववा माटे कनकरथनो पूर्वभव अेमणे जणाव्यो नथी. अेटले कनकरथ ऋषिदत्ता वच्चेनी प्रणयोत्पत्ति माटे पूर्वजन्मनु कोई कथानक अही सहायभूत बनतु नथी कनकरथने तापस हरिषेण ऋषिदत्ताना जन्मनी कथा कहे छे, अने तेमा पोते भित्रावतीनो राजा हतो, अमुक सजोगोमा तेणे तापसव्रत ग्रहण कर्यु अने ते पछी ऋषिदत्ता जन्मी, सूआरोगमा तेनी माता मृत्यु पामता पोते तेने उछेरी मोटी करी वगेरे बाबतो स्पष्ट करे छे आम ऋषिदत्ता बरसो सुधी जाणे तापस हरिषेणना ध्याननु केन्द्र बनी रहे छे. ते पछी तेने पाणग्रही कनकरथने सोप्या बाद अेनो विरह सही शकवानी पोतानी अशक्ति जाहेर करी दे छे अने सरवाळे अग्निप्रवेश करी आपघात करे छे. आम अेकले हाथे पुत्रीने उछेरनारा माता तेम ज पिता बन्नेनु कार्य

तारस हरिपेग करे छे अने पुत्रीनो मात्रि विरह अे महीं ज सकतो नथी अे अेना पिता तरीकेना वात्सल्यनी पराकाष्ठा बतावे छे ऋषिदत्तानो पितृप्रेम पण अेवो ज उज्ज्वल छे. जन्मतां माता गुमावी अेटले माताना तो बिलकुल स्मरणो अेने नथी, परतु केवळ पिताना सान्निध्यमा अेमना पूर्ण वात्सल्यनो अनुभव कर्या बाद परणता वेत अे तेने गुमावे ते अेने माटे बीजो जबरो आघात छे. पिताना मृत्यु पछीनो अेनो विलाप कविअे आठमी ढाळमा त्रीजी कडीथी आगळ जे निरूप्यो छे ते हैयु वलोवी नाखनारो छे, पण पतिनु सात्वन अेने आ प्रसगे स्वस्थ करी शके छे.

कनकरथ–ऋषिदत्ताना सुखी दापत्यनु चित्र कवि नवमी ढाळमा खडु करे छे, अने त्या प्रणयपात्र अगेनी केटलीक लीटीओ नोधपात्र बने छे :

" खाडनइ ठासइ साकर, पामी पुण्यथी रे,
कल्पवेलि लही अलवि तु, कारली खर नहीं रे
लींबू नीर तणी परि, सहू स्यइ सारिखु रे
ते स्यउ माणस जसु मनि, नही गुण पारिखु रे,
फटिक सरीखा माणस, तेह स्यउ कुण भिलई रे,
ते विरला जगमाहिं कि, प्रीतिइ जे पलई रे.
भुजबलि उदधि उल्लघन, नाग खेलावना रे,
खग दोहिला तेहथी, प्रीतिका पालना रे
शसि स्यउं नही सनेह, कमलिनी रवि विना रे,
माणस तेह प्रपाण जे, प्रीतइ अेकमना रे

(ढाल ९. ५–८)

आ स्थळे कवि बे नारीना कथनी प्रेमी तरीके विचारणा करे छे अने अेवो प्रेमी साचो न होय अेम भारपूर्वक जणावे छे. बहु नारीनो वल्लभ स्त्रीनी अवदशा करे छे केम के स्त्रीने माटे तो " शोक्यना साल करता शूळी वधारे सारी " जे माणस पोतानी पत्नीने खरेखर चाहतो होय तेने अगे बीजी पत्नीनी शक्यता ज नथी

आम तो कनकरथ रुखमणीने परणवा जतो होय छे पण मार्गमा ऋषिदत्ताने जोई अने तेने परिणामे अतरमा प्रेम जागता ते तेने ज परणे छे अने रुखमणी पासे जवानु माडी वाळे छे. कवि आम बहुपत्नीत्वना विरोधी जणाय छे अने साचो प्रेम अेक पत्नी पूरतो मर्यादित होय अेम अहीं जणावे छे

ऋषिदत्ता वनना पशु–पखी–वृक्षो–वेलीओ वगेरेनी विदाय लेती वखते पोतानी जातने " परदेसिणि " गणावे छे अने पोतानी जातनो तिरस्कार करती ते कहे छे :

" जेहवी आभा छाह कि, पाणी लीहडी रे,
झबकई दाखवई छेह, विदेशी प्रीतडी रे " (९ १६)

आज स्थळे असमान व्यक्तिओ वच्चेना प्रेमने अगे पण कवि टहुको कर्या वगर रही शकता नथी. लखे छे

" ऊच ऊन्यउ मोह, विचक्षण कुण करइ रे,
नीठर मेहली जति कि, परदुख नवि धरइ रे." (९ १७)

कनकरथने परणवा उत्सुक रुखमणी रखडी पडी. ऋषिदत्ताना सौभाग्ये एना मानसने विकृत करी मूक्यु अने एणे कूडकपटनो आशरो लीधो आ तकनो लाभ लई कवि स्त्रीनिंदा करे छे ते नोंधपात्र बने छे. "स्त्रीनी जात अदेखी छे" एम कहीने अटकी गया होत तो वांधो नहोतो, पण एमणे तो स्त्रीने गाळो ज भांडी छे.

"लोभिणी लपटि लूटी, निसनेही नीठर कुटी,
अवगुणं केरी खांणि, नारी एहवी निरवाणि" (११३)

हताशाथी पग थता हरकेराटमा रुखमणी प्रतिज्ञा करी बेसे छे के "ऊनारु जउ तसु नाद, तउ हु साची नारी." पण साची नारीना अतरनी उदारता ने प्रिय पात्रने सुखी जोवा माटनी एनी झखना ते केटला वधा जुदा छे ते तो आपणने ऋषिदत्ताना पात्रमाथी ज समजाय छे

सुलसायोगिणी जाते स्त्री छे ऋषिदत्ताए एनु कशु ज बगाडयु नथी छता रुखमणीने पक्षे रही ऋषिदत्तानो सर्वनाश करवा तत्पर थाय छे ते करता पहेलां ए रथमर्दनपुरमा मरकी फेलावी हाहाकार मचावी दे छे अने माणसो मारती वखते स्त्रीओ अने बाळकोने पण दूर राखती नथी. सुलसा निष्ठुर नारीहृदयनी साक्षात् प्रतिमा छे पण ए निष्ठुरता पण ऋषिदत्ताना अद्भुत सौंदर्य अने निर्दोषता आगळ क्षणभर दूर थती जणाय छे. पोताने हाथे सुलसा ऋषिदत्ताने मारी शकती नथी. मात्र एना पर आळ चढावीने सतोष माने छे.

सुलसाना कपटनी ऋषिदत्ता भोग बनी अने एना अधर उपरनु लोही तथा वस्त्रो परना छाटा वगेरे जोईने कनकरथे एने करेला प्रश्नना जवाबमा ए पोतानी निर्दोषता सहजभावे जाहेर करे छे. मन, वचन अने कायाथी पोते क्यारेय कोईने दूभव्यु नथी एम जणावी आ परिस्थिति पूर्वकर्मनो विपाक छे एम ए कहे छे आम कर्म अने पुनर्जन्मना सिद्धातने ऋषिदत्ताना पात्र द्वारा एना प्रणयना आलेखननी साथोसाथ कवि रजू करता रहे छे.

कनकरथ प्रेमपूर्वक पत्नीनु मो लूछी नाखी टाढामीठा बोलथी एने आश्वासन आपे छे. रखेने ए मुग्धा दु खी थाय एवु विचारी तेनी मुश्केलीओ दूर करवाने तत्पर रहे छे कवि लखे छे.

" अवगुण सघला छावरई, जे जसु वल्लभ हुति,
सरसव जेता दोषनड, दोषी मेरु करति" (१३. ८ ५)

ऋषिदत्ता उपर सुलसाए आळ चढाव्यु अने राजा हेमरथ कोप्यो. एणे कनकरथने पोतानी पासे बोलावी लीधो अने जासूस मारफते ऋषिदत्तानी तपास करावी विषम परिस्थितिमा मूकायेलो कनकरथ विचारे छे.

"माहरी बाट जोई जोईनड, सूती होस्यई बाला,
आज्ञा तातनणी एकपासा, एक ता प्रेम रसाला."

एक बाजु निर्दोष ने स्नेहाळ मुग्ध पत्नी माटनो उत्कट प्रेम ने बीजी बाजु पितानी कठोर आज्ञा बन्ने वच्चे कनकरथ मूझाय छे छता सरवाळे प्रेमना ज जय थाय छे हेमरथने ए स्पष्ट शब्दोमा कहे छे के मारी अत्यत सुकुमार पत्नीथी आवु थई ज ना शके हेमरथ राजा एथी वधु गुस्से थइने एने "स्त्रीना दास" तरीके सबोधे छे ने स्त्रीना प्रत्यक्ष अवगुण छावरवा माटे टको आपे छे. स्त्रीनो बचाव करवामा पोते निष्फळ गयो छे एम ए स्त्री

समक्ष ज जाहेर करे छे त्यारे ऋषिदत्ता अेने धीरज आपे छे अने फरी अेकवार कहे छे "मुजने करम प्रमाण" ढाल १७ अने ढाल १८ मा कवि कर्मनो महिमा वर्णवे छे कर्म रकने ज नहि पण रायने पण रोळी नाखे छे. ऋषिदत्ता जेवी निर्दोष सतीने पण "पूरव करम" ने कारणे भयकर अपमान अने शिक्षा सहेवा पडे छे. कवि उपदेश पण आपी दे छे

"मत करयो रे मत करयो रे कोई गरव लिगार (१८.१)
पूरव करम शुभाशुभ दाता, अवरग्न्यउ केहउ दोस रे" (१८.११)

पूर्वकर्मनो आ सिद्धात ऋषिदत्ताने पोतानी आवी कपरी अवदशा वखते पण आश्वासनरूप बनी रहे छे पोतानी जातने अे आ सिद्धातने बळे ज धीरज आपे छे १९मी ढाल आखी कर्मनो महिमा ज प्रत्यक्ष करे छे कवि लखे छे.

"करम साथइ रे कुणइ नवि चलइ, करमि नड्या रे अनेक जी."

अने आ अनेकमा कवि, श्री ऋषभेश्वर, श्री रामचन्द्र, श्री वासुदेव, पाडवो, मत्स्येन्द्रराय, सत्यवादी, राजा हरिश्चन्द्र, रावण, सूर्य-चद्र वगेरेने गणावे छे, पण विपत्तिनी वेळाअे पूर्वना पुण्यने वश अेवी बुद्धि माणसने सहायरूप बने ज छे अने ते रीते पोतानी अेकल्वायी अने असहाय दशामा पोते अगाउ रोपेला झाडनी अे वाणीअे पिताना आश्रममा ऋषिदत्ता पाछी आवी शके छे.

अेकली असहाय दशामा वनना अेकातमा ऋषिदत्ता शी रीते रही शके ? समाजमा तो अेवी परिस्थिति प्रवर्ते छे के

"पाकी बोरी अनइ स्त्रीजाति रे, देखी सूनां सहु वाहइ हाथ रे,
वनिता अनइ मेलडी वाडेर, देखी पुरुषातणी गलई डाढ रे, (२१.५-६)

"शील ते स्त्रीनइ परम निधान" होवाथी सावधान बनीने ऋषिदत्ता पोतानु शील जाळववा मथे छे अने तेमा पिताअे देखाडेली औषधि अेने "स्त्री फीटी नर" बनवामा मददरूप बनी जाय छे.

बावीसमी ढालमा कवि ऋषिदत्ताना विरहमां कनकरथे करेलो विलाप आलेखे छे जे आपणने कालिदासना "अजविलाप"नु स्मरण करावे छे अेनो पत्नी माटेनो प्रेम केटलो बधो उत्कट छे ते तो पत्नी पाछळ अे मरवा तैयार थाय छे ते उपरथी जणाई आवे छे. कनकरथनी आवी दशा जोई हेमरथनु हैयु खूब दाझे छे. शु करता पुत्र पाछो आनदमा आवे अेनी अे मथामण करतो होय छे त्या फरी अेकवार रुखमणी माटे कहेण आवे छे अने अे पुत्रने समजावे छे.

"आगा विछूवी रुखमणी, उवेखता नहीं धर्म्म,
अबला तणइ नीसासडेइ, पुरुषनइ पाडई मर्म" (२४.७)

"नर अवर जउ को तसु वरई, तउ आपणी नही माम,
जउ मरण गई आप्यातणी, तउ जीवतइ स्यउ काम" (२४.८)

मन मानतु नथी छता कनकरथने पितानी आज्ञानु पालन करवु पडे छे अने आ परिस्थितिनो लाभ लई कवि २५मो ढालमा पुरुषना अने स्त्रीना प्रेममा रहेलो तफावत कनकरथने मोढे रजू करता लखे छे :

"नेह खरउ नारी तणउ रे, नरप्रेम्ई अवटाई,
नर निसनेही निरगुणी रे, बीजी करउ थाई (२५.३)

रुखमणीने परणवा जता फरी अेक वार आश्रममा कनकरथ अने तापसवेषा ऋषिदत्ताना मिलन वखते कवि लखे छे :

" कुण किहाना किहाथी मिलइ हो, पूरवप्रेम सयोग,
अेक देखी मन उहलसइ हो, अेक दीठइ करइ शोक " (२८ ६)

आ पक्तिओमा जे प्रेमनो उल्लेख छे ते मैत्रीभावनो. जगतमा अमुक व्यक्तिओ प्रत्ये माणसने निष्कारण प्रेम जागे छे तो अमुक व्यक्ति प्रत्ये निष्कारण तिरस्कार पण जन्मे छे पूर्वजन्मना सस्कारो आ परिस्थितिने माटे जवाबदार छे अेम कवि मानता जणाय छे

कनकरथ रुखमणीने परणे छे पत्नीनो हक भोगवती रुखमणी कनकरथने तेणे अेक तापस-कन्या साथे शा माटे प्रणय कर्यो अेवो प्रश्न करी वेसे छे. ऊचनीचना ने राय-रकना भेद प्रणयनी वाबतमा पण आडा आवे अे वात अेना प्रश्न परथी समजाय छे पण कवि तरत ज नीचेना शब्दोमा समाधान पण करे छे .

" अथवा जेहस्यउ मन मिल्यउरे, ते विगुणाइ सुरग,
धतुरु हरनइ रुचइ रे, ससि उच्छगइ कुरगो रे " (३०.७)

कनकरथे करेला ऋषिदत्ताना वखाण रुखमणी सही शकती नथी गुस्सामा ने गुस्सामा अे कही नाखे छे के अेणे ज सुलसा द्वारा ऋषिदत्ताने मारी नखावी सुलसाने माटे अहोभाव अनुभवती ते बोले छे .

" धन धन सुलसा भगवती, पूरव जनमनी माय,
माहारइ कहइणि जेणीइ, कीधा सयल उपाय, " (३२.७)

दीकरीने सुखी करवा माटे माता गमे ते उपाय करे अने तेने सुखी जुअे त्यारे सतोष पामे ते जाणीती वात छे. अही सुलसाअे रुखमणीने अेनो प्रीतम मेळवी आप्यो तेथी रुखमणी अेने पूर्वजन्मनी माता गणे छे अने आम आ जन्मनो क्षणिक संवध पण पूर्वजन्मना कोईक गाढ सबधनु परिणाम छे तेवु सूचवे छे

माणस आ जन्मे खोटु करे तो आवते भवे अेने दुष्ट कर्मना फळ भोगववा ज पडे तेवी स्वाभाविक मान्यता प्रवर्ते छे. अे मान्यताने आधारे कनकरथ रुखमणीने कहे छे

" परभवनउ भय अवगुणी, कीधउ अत्यजनू करणी,
असुभ हेतु जेहवी भरणी, मइ विण जाण्यइ तु परणी " (३३ ४)

कर्म अने पुनर्जन्म तेम ज कर्मविपाकना सिद्धातो आम मूळ प्रणयकथा जोडे सफळाईने आगळ वधे छे

कनकरथ ऋषिदत्तानो विरह सही शकतो नथी दिवगत प्रियतमा पासे जता अेने कोई रोके नहि अेवी इच्छा अे प्रगट करे छे अे कहे छे

" विसमी विरहनी वेदना, राम लहइ जगि सोई " (३३ ६ ३)

आवा उत्कट प्रणयीने आपघात करतो वचाववा माटे आपघात धर्मविरुद्ध छे अने आपघात करनार व्यक्ति अनत भव दु खी थाय छे अेम तापसवेषी ऋषिदत्ताने मुखे कवि कहेवडावे छे वळी " पुरुष मरइ स्त्रीकारणइ अे तो अवळी रीति " अेम पण अेने कहेवामा आवे छे अने कनकरथ अटके छे

३४मी ढालमा " प्रेम विवहार (केवो) दोहिलउ " छे ते जणावे छे. साचो प्रेम प्रिय पात्रनी पाछळ प्राण आपवामा ज छे अेम कनकरथ कहे छे अने प्रेमी खमीरवंत जोईअे अेम जणावता कवि लखे छे :

" छलछलीया वहिला ऊसटइ रे, छेह लगइ ऊडा नीर,
जे जन न बीहइ मरणथी रे, ते पालइ नेह धीर " (३४ ३)

" प्राण तिजइ तृणनी परइ रे, नेहइ वाध्या जेह,
अेक मरता बेहुं मरइ रे, साचउ कपोत सनेह. " (३४ ४)

" स्वजन विण जे जीवीइ रे, ते जिव्यउ न कहेवाई. " (३४.६)

सरवाळे कनकरथने ऋषिदत्ता पाछी मळी कनकरथना स्नेहनी परीक्षा जोवाने अेणे पुरुषवेष लीधो हतो अेम कहीने ऋषिदत्ता पतिअे पोताने आपेला वचननी याद देवडावे छे अने कहे छे: "मारी माफक ज तमे रुखमणी उपर प्रेम राखो अने तेने स्वीकारो. " कनकरथ पासे आ टाणे कविअे सज्जन अने दुर्जन वच्चेना तफावतनी संक्षिप्त मीमांसा करावी छे अने ऋषिदत्ताना उदार मानसने व्यक्त कर्युं छे पतिना प्रेममा अने पतिना सुखमा ज राचती अे साची प्रेमिका छे अने कनकरथ जेवा सनिष्ठ प्रेमीने लायक अे ज छे अेम स्पष्ट थई जाय छे.

कनकरथ–ऋषिदत्ता–रुखमणी रथमर्दनपुरमा पाछा फरे छे त्यारपछी साची परिस्थितिनी जाण थता न्यायप्रिय राजा हेमरथ, जेणे अगाउ पुत्रवधूनुं आळ साचुं गणी तेने प्रजाना हितमा हणवानो आदेश आप्यो हतो ते पुत्रवधूनी पोताना अपराध माटे फरी फरी क्षमा याचे छे. हेमरथनी न्याय-प्रियता अने अेना अन्तरनी निखालसता बन्ने अहीं प्रत्यक्ष थाय छे. अेना जेवो निर्मळ अन्त-करणवाळो उमदा खमीरवंत राजवी झटपट दीक्षा लई ले ते पण आ परिस्थितिनुं स्वाभाविक परिणाम लागे छे

ढाल ३८मी संसारनी क्षणभंगुरतानो चितार आपे छे अने साथे साथे ऋषिदत्तानी पूर्वकर्मनी विगतो माटेनी जिज्ञासा रजू करे छे मुनि भद्रयशोसूरि पूर्वभवकथा रजू करे छे अने ते द्वारा कर्म अने पुनर्जन्मना सिद्धांत साबित करे छे ढाळ ४०मा कवि कथाकथन करता उपदेशकथन वधारे करे छे अभ्याख्यान, वध–मारण, परधन नाश वगेरे दुष्ट कार्योनो विषम विपाक थाय छे. कर्मनो लवलेश रह्यो होय तो ते भोगवी कर्म खपाव्ये ज छूटको कर्म खपी जता मुक्तिनो मार्ग खुल्लो थई जाय छे सद्गुरुना उपदेशनुं श्रवण अे माटे उत्तमोत्तम साधन बनी रहे छे

आम, प्रणयकथा रचता रचता कविअे स्त्रीपुरुषना प्रणयनी वखतोवखत मीमांसा करी छे. अने जीवनमा ऊभी थती चोक्कस परिस्थितिओनी पाछळ पूर्वजन्मना कर्मो ज रहेला छे अेम अेमने ठसाववानुं छे आ वात ध्यानमा रहे तो लोको दुष्ट कर्म करता अटके जेणे कर्म खपावी दीधा छे तेमने माटे ज मुक्तिनो मार्ग खुल्लो थई शके

ऋषिदत्तानी कथा " अभ्याख्यान "ने आगळ करीने लखाई छे. "निंदक ते चांडाल सहुथी" अेम जणावी कवि जगतमा बहु सामान्य थई पडेल निंदाप्रियता तरफ लालबत्ती धरे छे अने धर्मोपदेशक तरीके लोकोने आ कथानक द्वारा धर्म अने नीतिने मार्गे वाळवानो प्रयास करे छे.

"ऋषिदत्ता रास"नी समालोचना

ऋषिदत्तानी कथा नथी ऐतिहासिक के नथी पौराणिक अेने आपणे धर्माभिनिवेशी लोकाख्यान कही शकीअे.

पोतानी प्रौढावस्थामा जयवंतसूरिअे रचेल ऋषिदत्ता रास रासना लगभग बधा लक्षणो धरावे छे अेनी रचना प्रासयुक्त पद्यमा थई छे अने अेनी ४१ ढालो राग-रागिणीओ के देशीओमा रचाई छे. रासनु वस्तु सती-चरित्र छे. प्रत्यक्ष कथनात्मक शैलीमां परंतु साहित्यिक भाषामा अे रजू थाय छे अने अेनो उद्देश नीति अने धर्मनुं महत्त्व जीवनमां स्थापवानो छे. समकालीन देश्य स्थितिनु अे केटलेक अंशे भान करावे छे अने मध्यकालीन गुजराती भाषाना ठीक ठीक लक्षणो अेमा प्रत्यक्ष थाय छे आ रास गेय तो छे ज अने आख्याननी माफक अे श्रोताओ आगळ रजू थतो हशे अेम मानी शकाय. नृत्य साथे अेने संबंध नथी, पण वक्ता अेने साभिनय रजू करे तो सारा माणभट्टोनी कथानी माफक लोकमेदनीने आकर्षी शके तेम छे अहीं शृंगाररसना उद्दीपक वर्णनो खास नथी, पण कथानी नायिकाना सौंदर्यनु वर्णन बेथी त्रण वखत आपवामा आव्यु छे अने अे रीते अे नायिका उपर ज ध्यान केन्द्रित करवामा आव्यु छे कथानु शीर्षक पण नायिकाना नामे अपायु छे. ऋषिदत्ता सोल सतीओमानी अेक जाणीती सती छे अने अेना चरित्रनु श्रवण श्रोताओ होशे होशे करे, केमके ते चरित्रद्वारा शील अने सात्त्विकतानो जीवनमा विजय कवि निरूपे छे. वार्ताना नायक-नायिकाने संसारनी क्षणभंगुरता समजाय छे त्यारे तेओ गुरुना उपदेशनु श्रवण करीने दीक्षा लई ले छे अने केवळज्ञान प्राप्त करी मुक्ति मेळवे छे जैनकथाओमा अंते प्रगट थतु आ सामान्य तत्त्व छे अने अे दर्शावे छे के आवी काव्यरचनानो हेतु आमजनताने धर्माभिमुख करवानो छे नायक के नायिकाना पूर्वभवनी आवती कथा पूर्वकर्म अने तेना विपाकनी विगतो रजू करे छे अने तेम करता सहजभावे कुशळ वार्ताकार नीतिनो उपदेश पण साथे साथे रजू करी दे छे. आवो उपदेश आ रासमा होवा छता आ रास वाचता केवळ धर्मकथा वाच्यानो संतोष नथी अनुभवातो, परंतु कोई प्रतिभाशाळी कविनी साहित्य-सृष्टिमा रममाण थता होवानो अनेरो आनंद अनुभवी शकाय छे. आ रास प्रणयकथा छे तेवी धर्मकथा पण छे.

आ रासनी भाषानो विचार करीअे त्यारे अेनी संस्कृतमयता तरत ज ध्यानमा आवे छे. संस्कृत तत्सम शब्दोनो कविअे छूटथी उपयोग कर्यो छे, अेटलु ज नहि परंतु केटलाक संस्कृत समासो पण अेमणे अहीं वापर्या छे प्रासयुक्त पद्यमा घणी ढाळो रचाई छे अने तेमा अंत्यानुप्रास उपरांत आंतरप्रास पण महत्त्वनो भाग भजवता जणाय छे झडझमक ने वर्णसगाई कविने ज्या तेमनी जरुर लागी छे त्या आणवामा आव्या छे पोतानी समक्ष भेगा थयेला रसिकजनोने शु अने केटलु गमशे अेनो अंदाज कविने छे ज. उपमा, रूपक अने उत्प्रेक्षा जेवा सामान्य अलंकारो आ कृतिमा बहु मोटा प्रमाणमा छे. क्यारेक क्यारेक समुचित दृष्टांत अने अर्थान्तरन्यासी कथनो आह्लादक बनी जाय छे तो क्यारेक कवि कल्पना काव्यलिंग के विभावनानो पण आशरो करी बेसे छे. श्लेष अने सजीवारोपण क्यारेक वर्णसगाईनी साथोसाथ आवता भाषामा अेक नवी ज झलक पेदा करे छे व्यतिरेक ने विशेषोक्तिनो उपयोग नायिकाना सौन्दर्य माटे खास करवामा आव्यो छे

भाषानो विचार करता कविअे १२मी ढाळ हिन्दीमा ज रची छे ते अेक नोंधवा जेवी हकीकत छे. आखी कृतिमा क्यांक वच्चे वच्चे गुजराती अने हिन्दी बन्ने भाषामा खपे अेवा

वाक्यखंडो मळे छे पण सुलसायोगिणि जेवा पात्रे जे उत्पात रथमर्दनपुरमां मचाव्यो तेनु आलेखन पात्रने ध्यानमा राखीने कविअे हिन्दीमा रजू करीने बीभत्स अने अद्भुत समर्थ रीते अेक ज ढाळमा आलेख्या छे कोईक शब्द अेवा आवे छे के जेथी आपणने मराठी शब्दो याद आवे छे. दा त. चग, फार, पाहुणा, धरी (=पकडी) "मोरु नाह" जेवा प्रयोगमां आपणने राजस्थानीनो अणसार आवे छे डरपाणी–मूर्छाणी–भराणी जेवा शब्दो सौराष्ट्री छाटनो अनुभव करावे छे तो "दढोला' जेवा कोई शब्द कच्छी सुधी आपणने पहोचाडे छे क्यारेक 'मिहननि' जेवो उर्दू शब्द अन्यथा सस्कृतमय भाषामा उचित स्थाने वपरायेलो देखाय छे कालिदासनी असर अगाउ लख्या प्रमाणे आ कवि उपर छे ज अने जे केटलाक सुभाषितो अही मळे छे तेमा पण अेवा ज अे अर्थना सस्कृत सुभाषितोनी असर जणाय छे गुजराती तळपदा शब्दो पण अहीं साग-प्रमाणमा छे ज अने विभक्ति प्रत्ययोनो विचार करीअे त्यारे गुजराती भाषाना विकासना भिन्न भिन्न तवक्काओ अहीं जोवा मळे छे. आ कथानकमा सवादनु तत्त्व वधारे नथी, पण ज्या ज्या छे त्या त्या भाषा पात्र अने प्रसंग वर्ननेने अनुरूप वापरवानो ज कविअे आग्रह राख्यो छे.

रसदृष्टिअे जोईअे तो अहीं वीर अने हास्य सिवायना बीजा बधा ज रसो सापडे छे अने भिन्न भिन्न रसोनु आलेखन पण कविने हाथे खूब कुशळतापूर्वक थयु छे वार्तानो आस्वाद माणीअे तेनी साथे साची साहित्यिक कृति वाच्यानो आह्लाद आपणे अनुभवीअे छीअे अेनु आ पण अेक कारण छे कविअे वर्णनोनी बाबतोमा पण काव्योचित सयम जाळव्यो छे नगरोना वर्णन अत्यत टूका छे राजा–राणीओनी बाबतमा पण तेमना केटलाक आगवा गुणोनो उल्लेख करी कवि अटकी गया छे मात्र नायक–नायिकानी बाबतमा—खास करीने तो नायिकाना स्वरूपनु आलेखन करती वखते—बे के त्रण स्थळे विस्तार कर्यो छे अने ते सहेतुक जणाय छे मुख्य पात्र उपर ज वाचकनु ध्यान राखी कथा दरम्यान केन्द्रित थईने रहे अे जातनु निरूपण कविनु छे. ज्या विस्तार छे अेवा वर्णनोमा ४थी ढाळमा आवता सरोवर अने बगीचाना वर्णनो परपरागत शैलीना यादीरूप छे, छता अेमा रहेला शब्दालकारने कारणे कंटाळो नथी आपता कनकरथ अने ऋषिदत्ता परणीने आव्या त्यारे रथमर्दनपुरमा जे उत्सवनु वातावरण जाम्यु तेनु दसमी ढाळमा मळतु वर्णन अे ज नगरीमा सुलसाअे मचावेला उत्पातना बारमी ढाळमा मळता वर्णननी साथे वाचीअे तो भिन्न भिन्न वातावरणो अने रसो सर्जवानी कविनी शक्तिनो उत्तम परिचय आपणने थई जाय छे करुणरसना आलेखनमा कवि कमाल करता जणाय छे. १८मी ढाळमा मळतो ऋषिदत्तानो विलाप, २०मी ढाळमा निरूपानी जगलमा रखडती ऋषिदत्तानी असहाय दशा, २२मी ढाळमा आवतो कनरथनो विलाप अने २३मी ढाळमा निरूपायेली कनकरथनी विरहदशा कविनी करुणना आलेखननी शक्ति केवी प्रगाड छे ते बतावे छे. आमानु प्रत्येक वर्णन मर्मभेदक बने छे ऋषिदत्ता-ने माथे सुलसा आळ चडावीने पछी राजा हेमरथ आगळ फरियाद करवा राजसभामा जाय छे. त्यारनु सुलसानु वर्णन भयानक रस सर्जे छे. अतमा उपशमने कारणे उत्पन्न थतो शातरस पण अेटली ज स्वाभाविकताथी निरूपायो छे

साहित्यिक दृष्टिअे सपन्न अेवा आ रासमा अेक–बे विगतो खूचे तेवी छे. ते विगतो हरि-षेणना वृत्तातने लगती छे. हरिषेण राजाने अेक राणी हती के बे तेवो प्रश्न ऊभो थाय छे जयवतसूरि प्रमाणे प्रियदर्शना अने प्रीतिमती अेवी बे पत्नी हरिषेणने हती अेम लागे छे; ज्यारे अन्यत्र प्रियदर्शन राजानी राणी प्रियदर्शना ने तेनी पुत्री ते प्रीतिमती अेवी विगत मळे छे. पुत्र

अजितसेनने राजभार सोपी हरिषेण अने प्रीतिमती विश्वभूति तापसना आश्रममा तापस बनीने रह्या अने ते पछी चार-■ महिनामा ऋषिदत्ता जन्मी जेने परिणामे ऋषिओ आश्रम छोडी चाल्या गया. अहीं अेक मुद्दो विचारवा जेवो छे अगाउ ज्यारे विश्वभूति तापसना आश्रममा महिनो रहीने हरिषेणे ऋषभदेवनु मदिर बधाव्यु हतु त्यारे विश्वभूति तापसे अेने विषहरमत्र आप्यो हतो जेने आधारे अेणे प्रीतिमतीनु झेर उतार्यु ने प्रीतिमतीने परण्यो आ उपरथी अेम तो लागे छे के तापस विश्वभूति जैनधर्मना पक्षपाती हशे, पण तो पछी पत्नी सहित हरिषेणे अे मुनि पासे पाछळथी केवी रीते दीक्षा लीधी अने बन्ने जणा अे आश्रममा शी रीते रह्या ? अत्यारनी परपरा जोता जैनधर्म अनुसार आवु बनी न शके वळी हरिषेण कनकरथने मळे छे ते वखते मदिरमा भगवतनी पूजा करीने जिनस्तवन उच्चारे छे ने चैत्यवदन करे छे पुत्रीने परणावीने वळावता अे ज हरिषेण चिता खडकावी बळी मरे छे अे पण जैनधर्मनी विरुद्ध ज छे, कारण, आपघात करनार अनत भव रझळे छे अने आ भव तेम ज परभव बन्ने भवनु अहित करे छे, अेम आ ज कवि पाछळथी (३३ दू ५) कहे छे.

अेक अेवो पण प्रश्न थई शके के ऋषिदत्ता जन्मी अने अेनी माता मृत्यु पामी ते पछी अेना पिता हरिषेणे ज अेने उछेरवानु शा माट माथे लीधु ? तापस तरीके अे जजाळ अेणे शा माटे स्वीकारी ? पोताना पुत्र अजितसेन पासे शिशु ऋषिदत्ताने अे मोकली शक्यो होत तापस होवाने बदले अे आश्रममा रहेतो होवा छता हरिषेण वधारे प्रमाणमा गृहस्थी जेवी माया-ममतावाळो निरूपायो छे अे चोक्कस अलबत्त सामान्य वाचकने प्रसगोनी झडपी अने रसिक परपराना प्रवाहमा तणाता आवो कोई प्रश्न न सूझे अे स्वाभाविक छे अेटले समग्रपणे जोता आ वात कृतिने हानिकारक नथी नीवडती

"ऋषिदत्ता रास"नी भाषाभूमिका

"ऋषिदत्ता रास"नी अनेक उपलब्ध हस्तप्रतोमाथी मे जेनो उपयोग करी पाठातरो नोधी आ कृतिनु सपादन कर्यु छे ते प्रत २१ पत्रनी छे अने भाषानी दृष्टिअे, तेम ज अर्थनी दृष्टिअे वधारे शुद्ध छे रचनासाल पछीना लगभग बावीसेक वर्षनी ज लखायेली आ प्रत छे अेटले "जयवतसूरि" ना मूळ पाठनी वधु नजीक लई जवामा सरळता करनारी छे आ प्रत देवनागरी जैन मरोडनी छे अने अेमा वर्तमान पद्धतिअे मळे छे ते प्रकारे शब्दो छूटा पाडेला नथी, वाक्य-खडो तारव्या नथी, पण सळग लीटीअे लेखन करवामा आव्यु छे शब्दने गमे त्याथी तोडवानी रीत चालु छे केटलीक वार अनुसधान माटे < आवु के — आवु निशान करवामा आव्यु छे केटलीक वार शब्दमा कानो पण तोडवामा आव्यो छे ज्या छद के देशी बदलाय छे त्या छदनु नाम तथा प्रत्येक कडीअे आक मूकवामा आव्या छे

लिपि अने उच्चार

"ऋषिदत्ता रास" समर्थ कवि जयवतसूरिनी रचना छे अने अेनु लिपीकरण लहियाओअे अति चीवटथी कर्यु छे अेथी अेनी भाषामा अे युगनी शिष्ट वाणीनु प्रतिबिंब सुभगपणे झिलायु छे. आ प्रत जेने 'अ' अेवी सज्ञा आपी छे तेमा व्यजनोमा आवता अे कार अने ओ कार आधुनिक पद्धति प्रमाणे मात्रामां ज लखायेला छे, छता क्वचित् पडिमात्रानो पण उपयोग करायो छे उदा न ते पाचई (ढा १ क. १) सोहकरी, सेवई (ढा १ क २) अनुस्वार अने अनुनासिक वच्चे

कोईपण प्रकारनो भेद दर्शाववामा आव्यो नथी. आ प्रतमा अनुस्वारोनो उपयोग मोटा प्रमाणमा करेलो जोवामां आवे छे

व्यजनोमा 'ख' उच्चारण थाय छे तेवा लगभग बधा शब्दोमा 'ष' लखायेलो जोवा मळे छे जेम के ससिमुष (टा. २–२) सरिषी (३–५), दषत पेषि (४–९), द्राष, अषोड (४.१५)

आवा स्थानोमा में तैयार करेली वाचनामा 'ख' ज वापर्यो छे.

सामान्य रीते तत्सम शब्दोमां मोटा भागे 'श' ने बदले 'स' जोवा मळे छे. उ.त. सुभ सुक्ने (२ १३) सीतल (४.६)

अनुनासिक व्यजनो जेवा के ण, न अने म नी पूर्वे अनुस्वार जेवु बिंदु आ प्रतमा जणाय छे जेम के कामी (४ १५) जाणे (४.२१).

'य' जो शब्दारंभे होय तो अेनो उच्चार तद्भव शब्दोमां 'ज' थाय छे

'ल' ने स्थाने जिह्वामूलीय 'ळ' उच्चारण थतु हशे तो पण 'ल' स्वरूपे नोंधायेल मळे छे उ दा सुविशाल (४.२५) चोली (४.२९).

'ह' श्रुति–ह व्यजन तरीके शब्दारंभे तेम ज शब्दना मध्यमा पण छे परतु ज्यारे अे शब्दना मध्यमा व्यजन साथे जोडायेल होय छे त्यारे अे लघुप्रयत्नतर (स्वरने महाप्राणित) करतो होय ते रीते आवेलो होवानी शक्यता छे. "अेहवउ" (टा ४. ३५) पहिरूं (४ ३९) तुहमे (५.१) ताहरा (५.१)

लखाणमा तु अने तु, त्र अने त घणी वार सरखा लागे छे, जाणे के अेक ज होय अेवी भ्राति थाय ज्यारे अक्षर के शब्द छेकवाना होय छे त्यारे अक्षर के शब्द उपर ॥ आवी लीटीओ द्वारा निशान कर्यु होय छे, अथवा अे अक्षर के शब्द हरताळथी छेकेल होय छे केटलेक स्थळे आवा छेकवाना शब्दोनु यथायोग्य वाचेलु नथी होतु, अेवे समये अे अक्षर के शब्द वाचवानो नथी अेम समजी लेवानु होय छे

भाषाभूमिका

"ऋषिदत्ता"नी हस्तप्रतमा प्राप्त थतु भाषास्वरूप अे समयनो उच्चरित भाषानु प्रतिनिधित्व धरावे छे के नहि अेनो निर्णय करवो खूब कठिन छे अे समयनी बोलाती अने लखाती भाषामा खूब फेर होवो जोईअे अने हस्तप्रतमा लखाती भाषा अे जूना समयनी चाली आवती रूढि-प्रणाली मुजबनी होवी जोईअे टूंकमा, हस्तप्रतोना भाषा विभिन्न भूमिकाओमाथी पसार थई आज सुधी ऊतरी आवी छे.

भाषानी लाक्षणिकता :

मध्यकालीन गुजराती भाषानी लाक्षणिकता 'ऋषिदत्ता रास'ना आधारे नीचे प्रमाणे तारवी शकाय :

(१) संस्कृत तत्सम शब्दोनो वहोळा प्रमाणमा उपयोग थयेलो जोवामा आवे छे :
रूप (७ १) तुरगम (७ १) मुख–कर–चरण (७.४) जल (७.४) नदनवन (७.५) नाभि-कुलोदधि (७ ७) चद्र (७ ७) प्रासाद (७ १०) वल्लभ (७ १५) लज्जा (७ २६) कुकर्म (७ ३१) पायस (७ ३२) दुर्जन (७ ३८) सागर (८ १) उत्तर (८ १) नृपतनय (८.२) प्रकाश (८.३) पावक (८ ३) वगेरे

(२) छई नो सहायवारक क्रि. तरीके उपयोग थयेलो जोवा मळे छे
तइ धीधी छई चग (१.३), पूर्वइ छई सुकवि कर्या (१.७), ऋषि कहई मोटी अेह छई वात रे (५.२)

(३) सयुक्त क्रियापदोना वपराशनो आरभ जोवामा आवे छे
जेमके मरवा थयउ (१७.४), जईनइ जोई (१६.१७) जोईनइ आव्यउ (१६.१८), ग्रही राख्यउ (१७ ४), नासी आवी (१७.२१)

(४) कर्मणिरूप बनाववा माट आत्र प्रत्ययना वपराश वधतो जतो जोवामा आवे छे उदा.त कहावी (१४,१५).

(५) तद्भव शब्दोमा अन्त्य के उपान्त्य स्वरयुग्मो अई के अउ माथी अै के औ सयुक्त स्वरो विकस्या छे.
छता केटलेक स्थळे अविकसित रूपोनो प्रयोग पण करायेलो जोवामा आवे छे उ त वईरणि (१६.२०), विरचइ (१२ २), अेहवउ (९. १०), वलयउ (९.१०), स्यउ (९ ८)

(६) ऋ कोईक ठेकाणे ऋ तरीके ज वपरायेलो छे, ज्यारे कोईक ठेकाणे रु लखायो छे कोईक ठेकाणे तो ऋ, रि मा पण रूपान्तरित थयो छे
ऋषिदत्ता (१.४), रुषमणि (३ ४), रिषिदत्तानई (११ १४)

(७) क्वचित् स्वर मध्यवर्ती ई नु प्रतिसप्रसारण थयु छे. उ त. विलेप्यउ (१७ ९), चोपडयउ (१७.६) आथम्यउ (१७ १४), ल्यावई (३.१६) ल्यई (४.१८)

(८) चरणान्त प्रासमा कविअे खब ज सारो विवेक राख्यो छे. छता क्वचित् सरखा मेल विनानी पद्यरचना पण मळे छे जेम के सप्रेमि—तेम (१३—दू ६—३) माहि—दाह (१३—दू ६—६)

(९) केटलाक अर्धतत्सम शब्दोमा विप्रकर्ष जोवा मळे छे मुगतिइ (१.८), मनमथ (२ ३) रतनाली (४.४५)

(१०) मूळ सस्कृत न नो प्राचीन गुजरातीमा ण थयो छे. मोहणवेलि (४.२१)

(११) संस्कृत शब्दोमानो श प्रा गुज मा बहुधा विकार पामीने स बने छे उ त. सोर (१४.१), रोसइ (१४ २), सीयाल्ड (१४.५), वेस (१५ १).

(१२) क्वचित् म सानुस्वार व (=व)रूपे उच्चाराता हशे अेम लागे छे उ त कुअर (स कुमार) नो उच्चार कूवर थतो हशे.

व्याकरण

नाम—नर, नारी अने नान्यतर त्रणे जातिना नाम आ कृतिमा मळे छे. बहुवचनना सामान्य प्रत्यय नरजातिमा "आ" अने नान्यतरमा "आ" छे मानार्थे बहुवचन पण मळे छे दा.त. भद्रयशो गुरु अेहवई, पुहता वनि सुविचारजी.

विभक्ति—पहेलीमा प्रत्यय नथी. बीजीमा क्यारेक नई मळे छे. त्रीजीमा असयुक्त तेम ज सयुक्त 'इ', 'ई' तथा 'अे' मळे छे वेगि, राजाई, वैये 'थी' पण तृतीया दर्शावतो मळे छे पुण्यथी. 'स्यु' 'स्यउ' 'साथि' अने 'करी' अनुगो पण तृतीयानो अर्थ व्यक्त

करे छे अवरस्यु, गगन स्यइ, वन माथि, नयणे करी. चार्थीमा नई मळे छे: सेवक-नई, तेहनई. "माटई" "भणी" अने "काजई"नो पण उपयोग थयो छे. दीधा माटई, जोता भणी, जोवा काजई. पांचमीमा थी, थकी, थिकउ मळे छे: नयरवारिथी, वन थकी, किहा थिकउ ६११मा "माहिर्थी" मळे छे. छट्ठीमा नउ, ना, नी, नउं, नां, करी तणउ, तणा, तणी मळे छे: तरस्यानउ, तापसना, अवलानी, तेहनउं, शंख केरी (माला), रूप तणउं, मयण तणा, जिन तणी, प्रेम तणउ. सप्तमीमा असंयुक्त तेम ज संयुक्त इ, इ मळे छे भमरनीइ, ससारइ, गिरि, गुखि, मरुथलि, गभारई, "नयने" जेवो शब्द पण छे. उपरात मध्य, मध्यइ, माहिं, माहइ, माहइ, माहे, मझारि, मा सौनो उपयोग छे: मनि मध्य, सागर मध्यइ, त्रिभुवनमाहि, दीना माहई, मन मांहइ, मन माहे, स्वप्न मझारि, वनमा अेक वार प्रत्ययरहित "मन" प्रयोग पण छे

विशेषण : विकारी अने अविकारी बन्ने प्रकारना मळे छे. विशेष्यनी जेम तेमने पण प्रत्ययो लागे छे : नीरमथी.

संख्यावाचक अने संख्यादर्शक शब्दो

इक, अेक, च्यार, पाच, सात, दस, अेकोत्तर सत, त्रिहु (त्रिसि), पहिलु, बीजूं, अेकलउ बेहु, बेई पण मळे छे.

सर्वनाम : सर्वनामो मोटी सख्यामा मळे छे हु, तु–तूं, ते–तेह, आपण, अम्हे, तुम्हे, अे–अेह, जे–जेह कह, आ, अे, को, कुण, कोई, काई, वगेरे.

नीचेना विभक्तिरूपो मळे छे :

हु, मइ, मुहनइं, मुझनइं, मुझ, माहरई, माहरी, माहरु, मोरु, अम्ह
आपण, आपइं, आपणउ, आपणी, आपणा, आपणउ, तु–तू, तइ, तुझनइ, ताहरउ, ताहरी, ताहरु, ताहरा, तुम्हे, तुम्हनइ, तुम्हारी.
ते–तेह, तेणई, तणइ, तेहनी, तेहनउं, तेणीइ.
जे-जेह, जेणइ, जेहनी, जेहनउ.
अे–अेह, अेणइ, अेहनी अेहनउ, अेणी, अेणीइ.

उपरांत, सा, सोई, तस, जस, तास, जास, तसु, जसु, पण छे.

साधित रूपो पण ठीक ठीक मळे छे: जेहवउं, जिहवा, अेहवउ, अेहवउं, तेहवुं, जिसिउ, तेसिउ, किसिउ जेवा विशेषणात्मक रूपो छे.

क्रियापद : क्रियापदोमा त्रणे काळना रूपो आवे छे :

वर्तमानकाळ–पहेलो पुरुष : देखु, पामउ, लहु
बीजो पुरुष करई.
त्रीजो पुरुष हवई, सेवई, ल्यावई, सुणावइ, जगावइ, जेवा प्रेरक.
त्रीजो पुरुष ब. व वछति (२२)

भूतकाळ–भूतकृदत पण क्रियापदनु काम करतु जणाय छे

पहेलो पुरुष : सुण्यु, पाम्यउ.

त्रीजो पुरुष : दीध, कीध, थयउ, कीधउ, चाल्यो, आव्यु, दीठी, थई, गई, आव्या, अवतरीआ, उल्लघ्या, उतार्या, भराणी, मूर्छाणी, वीहनी, भोलाव्यो, कोपव्यू

भविष्यकाळ–पहेलो पुरुष : जस्यउं, लेस्यउ.

बीजो पुरुष · करिसि, धरिसि, करस्यउ (वधा "मा" जोड).

त्रीजो पुरुष होस्यइ, जास्यइ, थास्यइ, करस्यइ

आज्ञार्थ : खोहि, सुणि, वे, राखि, कहिजे, वोलिन र, उतारु, करु, सुणयो, करयो, फल्यो आपेयो, जायवउ

कर्मणि, प्रेरक अने विध्यर्थ रूपो पण क्यारेक मळे छे. सयुक्त क्रियापदो घणा छे : मेहल्या जोई, जोई आव्या, गयउ परणी, रही उवेखी, नाठी आवी, रोवा लागी, वगेरे, छउं, छई, अछई अने नथी (७ १५) पण नोधपात्र बने छे

"भू" धातुना विकसित रूपो हउ, हो, होयो, हुइ, हवी, हूती, हुती मळे छे.

कृदन्तो वर्तमान कृ जोतउ, देखत, सूता, धरतु, हसती, देती

भूत कृ : वछित, चिंतित, धार्यउ, वार्यउ, लिख्यु

हेत्वर्थ कृ · वखाणवा, परणेवा, पामेवा, मरवा, सहिवा, जिपिवा

संबंधक भू कृ. आरोही, पठावी, पामी, कहेवि (१५.८), करीय, कहावी, करीनइ, देखीनइं, जोइनइं.

अव्ययो जु–जउ, तु–तउ, जिहा, तिहा, किहा, जाम, ताम, कइ, जिम, तिम, आगलि, दूरि, अनइ, माहि, उपरि, सही, नवि, हवई, प्रति, भणी, स्यउ, पणि, वगेरे.

प्रास मेळववा माटे कवि रूपोनी बाबतमा छूट लेता क्यारेक देखाय छे.

नीचेना वाक्यप्रयोगो नोधपात्र छे .

राइ हु मोकल्यो तुम्ह भणी

हु वेचाती लीधी.

तुं देखीनइ मोही सुधि.

मइ तु परणी

राजाइ रति पामी खरी.

तुझ जीवितनइ हु कोप्यो.

ते सविइ हु सेवी.

हु पूरव करमनइ नडी केहई ?

जिनपूजानइं म हउ व्याघात. वगेरे.

आम भाषा अने व्याकरणनी दृष्टिए पण आ रास अभ्यास माटे महत्त्वनी रचना बनी रहे छे.

जयवंतसूरिरचित

ऋषिदत्ता रास

ऋषिदत्ता रास

श्री जयवतसूरि रचित

(रचना स १६४३)

ढाल १

दूहा

उदय अधिक दिन दिन हुवइ, जेह्नइ लीधइ नामि,
ते पाचे परमेष्टनइ, हु नितु करु प्रणाम १

सासनि सोहकरी सदा, श्री विद्या सुभरूप,
ते मनि समरु जेह्नइ, सेवइ सुर नर भूप २

मीठाई मुझ वाणीइ, तइ दीधी छइ चग,
वली विशेपइ वीनवऊ, द्यइ रसरग अभग ३

ऋपिदत्ता निर्मल थई, ते निज सत्व प्रमाणि,
तसु आरव्यान वखाणवा, द्यइ मुझ निर्मल वाणि. ४

कविता महिमा विस्तरइ, फलीइ वक्ता आस;
श्रोता अतिरजइ जिणइ सो द्यइ वचन विलास. ५

विविधि परइ कवि केलवण, निज निज मति अणुसारि,
तुझ पयकमल प्रसादथी, जगि वाणी विस्तारि ६

पूर्वइ छइ सुकवइ कर्या, एह्ना चरित प्रसिद्ध,
तउहइ रसिकजन आग्रहइ, ए मइ उद्यम किद्ध ७

केवल लही मुगतइ गई, कीध कलकह छेक,
ते ऋषिदत्ता सुच्चरित, सुणयो सहु सुविवेक ८

ढाल २

राग गुडी

(सिद्धारथ नरपति कुलइ–अे देशी)

श्री शुभरति शुभरतिकरं , सुभरत भूषण भूत रे ,.
रथमर्द्धनपुर सुदर, जिहा वसइ इभ्य प्रभूत रे.

त्रूटक

प्रभूत इभ्य जीमूत दानइ, रूपि परहुत सुदरा
निवसइ विलासी सदा उल्हासी, कीध दासी इदिरा,
कामिनी गजगामिनी जिहा , यामिनीकर सममुखी ,
जिहा चैत्यमाला पौषधशाला,सयम मुनि पालई सुखी १
हेमरथ समरथ तिणइ पुरइ , नयनिपुणो नरनाथ रे,
सेवकनइ सुरतरु समु, रणि चूर्या रिपुसाथ रे

त्रूटक

रिपुसाथ चूरण पुण्यपूरण, सोम भीम गुणाकरो,
अन्यायगजन न्यायरजन, गुरुगभीरिम सागरो,
परिणामि सुयशा, नामि सुयशा, पट्टदेवी भूपनी,
वछति अमरी नागकुमरी, सुभगता जसु रूपनी २
कनकरथ तसु नदनो, सकलकला गुणगेह रे,
वनिता जन मन मोहतऊ, मनमथ आयऊ देहि रे.

त्रूटक

देहि मनमथ रूपसुदर, गौर केतकि तनु जिस्यु,
अति सुभग ससिमुख कमललोचन, सरलता चपक हस्यउ;
अभ्यसी विद्या सकल हेला, उदय दिन दिन दीपए
यौवन्नि पायउ सुयशि गायउ, रूपि त्रिभुवन जीपए

ढाल ३

राग केदारु

(ढाल – अढोआनी)

इणि अवसरि नगरो कावेरी, अमरपुरीथी जे अधिकेरी,
सोभा जस वहुतेरी १.

तिणि पुरि नरवर सुदरपाणी, अरिराजी जसु भय डरपाणी
जगि जस एक कृपाणी २

तसु वसुधा सोहइ पटराणी, जमु तन सकल कलाइ भराणी;
पुण्यपथि सपराणी ३

ऋषमणि तसु तनया गुणवती, रूपइ रभा रति सम कती,
तेजि सदा झलकती ४

योवनवय सा कन्या जाणी, चितइ सुदरपाणि विन्नाणी;
वरचिंता मनि आणी ५

जगि वर सघला मेहल्या जोई, कनकरथ समसुदर न कोई,
जोडी सरिखी दोई ६

हेमरथनइ तव दूत पठावी सुदर पणइ सवि वात जणावी,
सवि कहिनइ मनि भावी. ७

तात तणउ आदेश ज पामी कनकरथ कुअर सिर नामी,
मनि हरख्यउ अतिकामी ८

चाल्यउ ऋकमणिनइ परणेवा ए ससारतणा फल लेवा,
वछित सुख पामेवा ९

तव मगल गावई कुलवाला, बदी बोलई विरुद वाचाला,
वागई तूर रसाला. १०

पाखरीआ करता हेषारा, कनक पहलाण रयण झलकारा;
तेजी तरल तुखारा ११

शृंगार्या मयगल मतवाला, कांने चाँमर झाकझमाला,
सोहइ चित्रित भाला १२

महोच्छवि नृपसुत मारगि चालइ, ठामि ठामि जनवृंद निभालइ,
सुभ सुकने मन महालइ १३

चिंतितथी को लाभ अनेरु, अतरालि होस्यइ अधिकेरु;
एहवउ सुकनउ केरू १४

जाणइ कुमर शकुनफल जाणह, दल चाल्या जिम जेठ उधाणह;
वागा ढोल नीसाणह १५

ठामो ठाम थकी सवि आवइ, भेंटि विविध सीमाडा ल्यावइ,
कुमरनइ वेगि वधावइ १६

इम दिन केतइ करत पीआण, आव्यउ एक अटवी अहिठाण,
जिहा नही नीर निवाण १७

तव कुमरइ सेवक पठाव्या, सरोवर थानक जोई आव्या;
वात असभम ल्याव्या १८

ढाल ४

राग असाउरी

(ढाल – वेलिनउ)

दूहा

ल्याव्या सेवक धसमस्या, वात असभम अेक;
कर जोडी कहइ कुमरनइ, सुणि स्वामी सुविवेक १

तुम्ह आदेश लही करी, जोवा चाल्या नीर,
जोता जोता सजल सर, दीठउ अति गभीर २

चालि

अति गभीर सजल सरोवर, पकजवन अभिराम,
जाणे आव्यउ अभिनव जलनिधि, तरस्यानउ विश्राम १

खेलइ हसी हस उदारा, चकवा चकवी जोडि,
चचल चालि चलइ वलि खजन, चतुर चकोरा कोडि २

चातुक केकी ढीक वलाका, मदनशाल सुकमाल,
शुक पिक कक कुटिल कलहसा, केलि करई वाचाला ३

पीन मीन पाठीन अदीना, धाई नीर तरगइ,
कच्छप जलचर जीव अनेरा, दीसइ करता रगइ, ४

दूहा

आगई सरोवर विमल जल, सीतल पादप छाह,
जाणे सुदर मधुर सर, विद्याधन उच्छाहि ५

सरोवर पालइ अववन, दोलाकेलि करति,
तिहा दीठी एक सुदरी, त्रिभुवनि रूप जयति ६

त्रिभुवन रुप जयती वाली, चालती मोहणवेलि,
अवगुणी अमरी फणपतिकुमरी, चमरी कबरी बेलि ७

सहसा अलोप थई सा सुदरि, अम्हनई देखत खेवि,
परि परि जोई काननमाहि, पणि नवि दीठी हेव. ८

अेहवा वचन सुणी सेवकना, कुमर थयऊ अवधूत,
जिम घन गरजइ केकि किगाइ, प्रेमपकि अतिखूत ९

सेवक–दर्शित मारगि चाल्यउ, सुदरि जोवा काजइ,
जांणइ जउ तसु मुखशशि देखु, तउ मुझ भागइ दाझि. १०

दूहा

नाम सुण्यउ जव तेहनउ, श्रवणि सुधारस धार,
तब लगि मन मोह उपनउ, जाणे मिलउ किवार ११

नाम मात्र जसु साभल्यइ, नरनइ लागइ मोह,
स्त्री साची मोहनलता, ए कीधउ आपोह १२

चालि

आपोह् करतउ आगलि चाल्यउ, दीठउ एक आराम;
अमरपुरीथी नदन कानन, आव्यउ ए अभिराम १३

अव निंव वीली वहु जवू, वाउल वोरि कदंव;
अेला केला साहल रिसाला, ताल तमाल प्रलव १४

नाग पुनाग पूगी वह्न ऊगी, चगु प्रीअगु मुरग,
उत्तंग तगर अगर अनोपम, लाल लचित लविंग १५(अ)

फनस प्रयाल वहुली वीजोरी, करणी कर्मदी द्राख;
अखोड वदाम अजीर अनोपम, कणयर केरा लाख १५(व)

कुरुवक तिलक अशोक अनोपम, कामी वकुल अपार,
जाइ जूई चपकनइ केतकि, मालती मोगर सार १६

पाडल वालउ वेलि अनोपम, भमर करइ गुजार,
कोकिल कुहु कुहु शव्द सुणावइ, सीतल पवन प्रचार १७

नृपनदन इम कानन जोतउ, अव तलि ल्यइ विश्राम;
तव सहसा ते कुमरी दीठी, रूप तणउ एक धाम १८

वेणी कुटिल भूयंगम काली, प्रेमतणी परनाली;
गोफणउ आड रह्यउ नितवइ, सोहइ अति सविशाली १९

दूहा

मदनसेर सीमत जस, अठमि ससि सम भाल;
सीगिणि साची कामिनी, भमहि कुटिल अणीआल २०

चालि

भमुहि कुटिल अणीआली काली, मोहणवेलि रसाली,
लोचनवाणि वेध्या जन थभइ, जाणे लीधी ताली, २१

मृग जीता सेवइ वनवासा, पंकज नीर पडति;
एक ठामि न रहइ वलि खजन, मनमई भीति वहति २२

दीपशिखा सम नासा उन्नत, तिल कुशम अनुकार,
मुखमसि जीतइ ससिहरमडल, दीसइ कलंक सभार. २३

अरूण अधुर वधुर नवपल्लव, दसनि वसइ मणि भूरि;
हेजि हसती जाणे वरसइ, फूलपगरनउ पूर २४

दूहा

श्रवणपासि सोहइ सदा, मयण तणा सुविशाल,
जोतो वीणा मधुरिमा, कलकठी सुकमाल २५

चालि

कलकठी सुकमाल शरीरा, पीन गौर कुचभारा,
कनक कलश जीता करिकुभा, युवजन, मोहनसारा २६
सरल गौर भुज पकज नाला, अगुली जेम प्रवाला,
क्षामोदरि सुदरि हरिलकी, त्रिवली नितव विशाला २७
रभाथभ निभ उरु मनोहर, कोमल जघा जूली,
उन्नत चरण अरुण नखमडित, अकुटिल अगुली कूली २८
अनुपम गति जीता गजहसा, कल्पवेलि अवतारा,
पहिरी चोली पाट पटोली, सोहइ सकल शृगारा २९

दूहा

कुमरी रूप देखी करी, मोह्यउ कुमर सुरग,
नादइ वेध्या नाग जिम, लय पाम्यउ अभग ३०
चिंतइ ए को अवतरी अमरी मुनिवर शापि,
कइ कौतक जोवाभणी, आवी आपोआपि ३१

चालि

आवी आपोआपइ कुमरी, जीवाडती काम,
मोहनीरुपि वसी मनि मोरइ, अनुपम अद्भुत धाम ३२
नयनवारिथी मत ए जाइ, सुदरि सुभग सरूप,
कुमरनइ प्रेमवती थई एहवी, जिम जल लह्यउ अनूपि ३३
अेक पुरुष ते त्रिभुवनमाहि, जस घरि धरणी अेह,
नयन सफल थया अे दरसनि, अमीइ वूठउ मेह ३४

किस्यइ उपाइ अेह्नइ वोलावउ, अेह्वउ चितइ जाम
सैन्य तणउ कोलाहल निसुणी, अद्दष्ट थई मा ताम ३५

दूहा

तव नृपसुत विलखउ थयउ, जव सा थई अलोप;
निधि देखाडी जिम हरइ, पाडइ गिरि आरोपि ३६
अणदीठानउ दुख नही, दीठउ विघटइ साल,
भूख्या भोजन दाखवी, जिम को करि विसराल ३७

चालि

विश्राल करइ खिणमाहि मेलो, हा हा दैव तु पापी;
प्रीतिवेलि नयने आरोपी, अकूरइथी कापी ३८
मरकलडा देती मृगनयणी, वार वार मुझ देखी,
आगलिथी पहिलूं मोह ऊपाई, हवइ रही काई ऊवेखी ३९
प्राण तिजउ जु ते नवि पामउ, एह्वउ चित्ति विचारी,
जोवा लागउ कानन सघलू, तिणि थलि सैन्य ऊतारी ४०
जोतउ जोतउ दूरि गयउ जव, तव दीठउ प्रासाद,
त्रिकलस सोविन दड पताका, गगनस्यउ मडइ वाद ४१

दूहा

चद्रकति परि ऊजलउ, मणि तोरण झलकति,
अट्ठोत्तरशत फटिकमइ, पावडोआरा पति ४२
चिहु दिसि सरिखी झलहलइ, वातायननी उलि,
चउवारउ प्रासाद ते, पोढी दीपइ पोलि ४३

चालि

पोलि प्रवेश कीयउ जव कौतकि, देखी चैत्य – सजाई,
हरख्यउ तिम जिम सागर मध्यइ, मीठी कूई पाई, ४४
मणिमय थभ चउकी रतनाली, विविधि भाति उल्लोच,
मणिमय कदुक मोतीमाला, नही विज्ञान स कोच ४५
वरमणिमडित सोविन दडइ, चामरमाला सोहइ,
पूतली उभी करि ग्रही दीवी, तेजइ त्रिभुवन मोहइ ४६
केसर कपूर अगर आमोदइ, वासी दसइ दिसि सार,
भमतीइ देई प्रदक्षिणा, पाम्यउ हरख अपार. ४७

ढाल ५

राग रामगिरी

(ईश्वरना वीवाहलानी)

तव गभारइ मूरति दीठी रे, ऋषभजिगदनी दरसनि मीठी रे,
पांम्यउ कुअर आनद पूर रे, जिम शसि देखी चतुर चकोर रे

त्रूटक

चकोर जिम ससि देखि हरखइ, तिम ते राजकुमार;
त्रिकरण शुद्धधइ प्रणाम करीनइ, स्तवन करइ वारोवारि
पूजा करीनइ रगमडपइ, कुमर वइठउ सोई,
करि ग्रही कुमरी एक तापस, आव्यउ तिहाकिणि कोई
ते कुमरी रमझिमि नेउरि करती, चद्रवदनी चंग,
नयन भावि आरोपती सा, कुमर हैडइ रग
प्रणाम ऋषिनइ करइ कुअर, आसीस देई ऋषि भणइ,
किहा थकी आव्या तुम्हे सज्जन, अवतरीआ कुल कहि तणइ
तव कुमरनी वशावली कहइ, वदिजन सुविचार,
ऋषि कहइ कुमरनइ, तुम्ह दरिसनि, थया कृतारथ सार
सार पूछइ कुमर ऋषिनउ, विनय बहुविध अणुसरी,
तुम्ह पासि स्वामी कुण कन्या, वात अेहनी कहउ खरी १

चालि

ऋषि कहइ मोटी अेह छइ वात रे, जिनपूजानइ म हउ व्याघात रे,
इम कही श्रीजिनपूजा काजइ रे, वेगइ पुहतु ते ऋषिराज रे

त्रूटक

ऋषिराज पूजा जिनतणी ते करइ विविध प्रकार,
गभीर घन धुनि चैत्यवदन, स्तवन करइ उदार
सफल जीवित सफल तन मन, सफल मुझ अवतार,
सासन्न ताहरू जउ लहिउ, तउ टल्यउ दुःख प्रचार
तू देव त्राता तत्व जीवित, तु हि जिगति मति स्वामि

तु पिता माता गुरू सहाई, वधू अति अभिराम
निशि दिवसि सूता वइसता, नई स्वप्नि सघली वेलि.
जिनराज! ताहरा ध्याननी, मुझ चित्ति हु रगरेलि.
तुझ चरणि मुझ मनि मग्न माहरु, तुझ चरण होयो लीन
जा लहु सास्वत मुक्तिना मुख, अक्षीण अमल अहीन.
अहीन गुणभडार जिननइ, करइ प्रणाम ऋषि इम कही,
नमो नमो भगवत तुझनइ, आण ताहरी सिरि ग्रही २

ढाल ६

राग गुडीमाहइ

(चउपइनी ढाल)

भगवतनी इम पूजा करी, भाव भलउ मनमाहि धरी,
ऋषि आवइ मडप छइ जिहा, वइठउ राजसुत दीठउ तिहा १
स्नेह सकोमल कुमरी तणा, चपल चकोरा जिम लोअणा;
राजकुमर मुखससिहर सगि, खेलइ उनमद रग तरगि २
मदधूमित मदनालस होइ, आडी दृष्टिइ खिणि खिणि जोइ,
हसती फूल खिरइ ससिमुखी, खिणि लाजइ जोइ समुखी ३
स्नेह ऊपाइ नयनइ करी, हावभाव दाखइ फिरि फिरी,
उरि आणइ वेणी गोफणउ, अधर डसइ जभाइ घणउ ४
थण भुज उदर देखाडइ मिसि, तनि त्रिभगी हुई मदवसइ
सरल जिसी हुइ चापाछोड, कुमर देखि करइ मोडामोडि ५
लोहसिलाका जिम चवकइ, लागी पाछी थई नवि सकइ,
वाधी कुमर नयनदोरीइ, कुमरी जाणी चित चोरीइ ६
प्रथम नयन करइ दूती पणउ, मननइ मन पूछइ अेकगणु,
सघली परइ सहीआरु करइ, जीवइ जीव प्रेम परिवरइ ७
प्रीउ स्यउ लागउ प्रेम मनि रुचइ, पापिणी लाज सतापइ विचइ,
जाणइ सकल वस्तु अवगुणउ, रही रही जोउ मुख प्रीउ तणउ ८

वेव तणी छइं वात ज घणी, प्राणीनइ मेलइ रेवणी,
नादइ वेध्यउ मृगलउ पडइ, पतग दीवामा तडफडइ ९

करणी वेध्यउ गज सहइ दाहि, अलि पीडाइ पकज माहि,
मीन मरइ आमिपनई रसइ, प्राणी पीडाइ प्रेमनइ विसइ १०

कुहुनइ कही न जाइ वात, माहिथी प्रजलइ सातइ धात;
लागु प्रेमतणउ सताप, ते दुख बूझइ आपोआपि ११

वयर वसायु कीधऊ नेह, नयणानइ सिरि पातक अेह,
निसिदिन चिता दहइ अतीव, प्रेम कीधउ तिहा वाध्यउ जीव १२

भूख तरस निद्रा नीगमी, जाणे तप साधइ सयमी,
वोल्यऊ चाल्यउ कहिस्यउ नवि गमइ, कृश तनु दोहिलइ दिन नीगमइ १३

खाची राखइ आसू नीर, सुदरि मनमाहे आणी धीर,
कुमरनइ पिण अे परि थाई, मनइ मन ते एक कहायइ १४

बेहुनइ प्रेम हुउ सारिखउ, पूरव पुण्यतणउ पारिखउ;
अेणइ ससारइ एतलउ सार, प्रेमतणउ मोटउ आधार १५

पुण्यवत मनि जे चितवई, ते ते आगलिथी तसु हुवइ,
हिव ते तापस साही हाथि, कुमरनइ तेडी आव्यउ साथि १६

चैत्यथकी उत्तरनइ पासि, उढवउ एक अछइ सुप्रकासि,
कुमरनइ तिहा देई अर्घपाद, पमाडयउ अधिकउ अह्लाद १७

कहिवा लागउ अपूरव वात, सुणि नृपनदन मुझ अवदात,
उत्तम नगरी मित्रतावती, हरिषेण राजा तिहा सुभमती १८

राणी तेहनइ प्रीयदर्शना, अति गुणवती प्रीयदर्शना;
अजितसेन उत्तम सुत तास, मदन मूरति अति लीलविलास १९

राय रवाडीइ सचर्यउ, इक दिनि चतुरगि दलि परवर्यउ,
शुकल हय एहवइ आव्यउ भेटि- जेहवउ अकथितकारीचेट २०

राजा तेणइ थयउ असवार तुरगमि कीधउ गति विस्तार
वार्यउ न रहइ विसनी जेम, उल्लघ्या पुर पत्तन सीम २१

ढाल ७

राग वइराटी

आण्यउ काननि नृप अेकलउ, भूख तरस चिंता आकुलउ.
अेहवइ अवलंबी तरुडालि, तुरगम तव मेहल्यउ भूपालि १
मुडइ मुडइ तरुथी ऊतरइ, राजा ते वन जोतउ फिरइ.
तिहां दीठउ एकसरोवर चंग, मधुर समिर जिहां नीर तरंग २
जिम चिर विरही प्रीय मुखदेखि, मनमांहि पामइ हरख विशेषि
तिम राजा रलीआइत थयउ, जिम ससि देखि चकोर गहगह्यउ ३
मुख कर चरण पखाली करी, त्रिप्त थयउ ते जल वावरी,
अति मीठा वनफल आहरी, राजाइ रति पामी खरी. ४
नंदनवन सरिखु वन तेह, जोता पाम्यउ अधिक सनेह,
दीठउ तापस आश्रम अेक, राजा चाल्यउ धरी विवेक. ५
कच्छ महाकच्छ वंश शृंगार, विश्वभूति तापस सुविचार,
ते कुलपतिनइ कीध प्रणाम, श्रीहरिषेण राजाइं ताम. ६
निर्मल नाभिकुलोदधि चंद, ऋषभदेव तुम्ह धउ आणंद,
इम नृपनइ ऋषि आसीसि देइ, माहोमाहि कुशल पूछेइ. ७
अेहवइ कोलाहल ऊछल्यउ, तापसलोक सयल खलभल्यउः
राजा कहइ मनि माणउ भीति, को नही लोपइ तुम्हारी रीति. ८
सकल सैन्य मुझ क्रम अनुसारि, अेणि वनि आवइ छइ निरधार,
अेहवउ जाणी ऊठी राय, सकल सैन्य ऊतार्यां ठाइ. ९
मुनिसेवा कारणि अेक मास, तिणि वनि राजा रह्यउ उह्लासि.
तेणइ ऋषभतणउ प्रासाद अेह कराव्यउ अति आल्हादि, १०
विषहर मंत्र राजानइ दीयउ, तापसि इतिथि धर्म इम कीयउ,
हिव निज मंदिरि आव्यउ राय, पालइ राज हरइ अन्याय. ११
एक दिन राजसभाइ कोइ, आव्यउ दूत महामति सोइ,
विनयपूर्वक ते वीनती करइ, मनोहर वाणी मुखि उच्चरइ १२

परउपगारी सुणि तु स्वामि, अे छइ मोटउ धर्मनउ काम
नयरी मनोहर मगलावती, तिहा प्रियदर्शन छइ नरपती. १३

प्रीतमती तेहनइ नदिनी, रुपइ त्रिभुवन आनदिनी,
काली नाग डसी ते आज, तव अति व्याकुल थयउ महाराज. १४

ते पुत्री वल्लभ प्राणथी, ते विण नृपनइ जीवित नथी,
कीधा वैद्ये विविध उपाय, पणि किमहई तसु सुख न थाइ. १५

परउपगार सिरोमणि सुणी, राजाइ हु मोकल्यउ तुम्ह भणी,
अे अवसर छइ उपगारनु, ते जीवसइ जीवस्यइ जन घणउ. १६

स्यउ कहीइ सज्जननइ देव, ते उपगार करइ स्वयमेव,
प्रार्थ्या विण वरसइ मेह भूरि, तिम अजूआलउ करइ ससि सूर. १७

ज्याच्या विण तरु छाया करइ, आपणपइ आतप अणुसरइ,
सहुको नइं साधारण अेह, सज्जन अे सरिखा गुणगेह. १८

सहिजइ करइ परनइ उपगार, स्वारथ वछइ नही लिगार,
तिणि सज्जनि अे सोभइ मही, रवि ऊगइ तसु पुन्यइं सही. १९

हिव स्वामी मल्लावउ वार, अवलानी वेगइं करु सार,
अेहवा वचन सुणी ते राय, करभि आरोही वेगइ जाइ. २०

ऋषि मत्रइ विप वाल्यउ वली, मगलवाणी तव ऊछली;
ते कन्या प्रीयदर्शन राय, तेहनइ परणावी उच्छाय. २१

प्रीतिमतीनइ परणी करी, हरिषेण राय आव्यउ निज पुरी,
इद्र तणी परि भोग भूयाल, सुख विलसइ नव नव सुविशाल. २२

इम करता गयउ केतु काल, सुत पाम्यउ यौवनइ रसाल,
राज्यभार तेहनइ सिरी धरी, दपती तापसव्रत आदरी. २३

विश्वभूति तापसनइ पाइ, सेवइ अनुदिन राणी राय,
प्रीतिमतीनइ अेहवइ समइ, गर्भवृद्धि पामइं क्रमि क्रमि. २४

चिन्ह प्रगट थया पचमि मासि, नील मुख पीन स्तन सुप्रकाशि
पाहुनी पुष्ट शरीर सुरग गौर गल्ल त्रिवलीनउ भग. २५

व्रत लज्जा कारण अेहवउ, राजा देखीनइ अभिनवउ.
प्रीतमतीनइ पूछइ भेद, अेकातइ मन धरतु खेद २६

व्रतथी पहिली वात अे हवी, तेणइं समइ पणि मइं नवि लही,
प्रीतिमती प्रीऊनइं इम कहइ, बेहु चित्ति विमासी रहइ. २७

आपण ठाणि अनेरइ जस्यउ, ईहा सहु ऋषि करस्यइ हसु,
इम चिंति सूता निसि समइ, जाग्या बेहु प्रह वहिसी जिमइ. २८

जूइ तु तापस को नही, सूनी दीठी आश्रम-मही,
सर सूकउ पखी जिम तिजइ, नीरसथी श्रोता ऊभजइ. २९

मदिरि जातउ मुनिवर अेक, जरा जीर्ण देखी सुविवेक;
राजऋषि तेहना पय नमी, पूछइ काइ गया सयमी. ३०

ते तापस कहइ आणी दया, तुम्ह कुकर्म देखी मुनि गया,
वारि हार धटिका सगि यथा, झल्लरि सहइ प्रहारनी व्यथा. ३१

विषमिश्रित पायस जिम हेय, कुशगति पडित वरजेय;.
वाइस-दोषि हणायउ हस, मद विसर्पण मत्कुण डस ३२

वा पणि कुष्टीनउ वर्जवउ, डाहइ कुशगति तिम तर्जवउ,
इम कही वहिलउ ते मुनि गयउ, राजऋपि विलखउथई रह्यउ ३३

निज कुकर्म निदी ते रह्या, च्यार मास युग सरिखा थया,
प्रसवी पुत्री पूरणि मासि, कल्पवेलि जगम सविलास. ३४

ऋषिप्रसादि अे पुत्री लही, ऋपिदत्ता नामइ ते कही,
सूआरोगि पामी अवसान, प्रीतिमतीना पुहता प्राण. ३५

ते वालानइ पालइ यती, रुपकलाइं जग जीपती
आठ वरसनी कुमरी हवी, तातइं सकल कला सीखवी ३६

रूपवत अे देखी हवइ, मत को दुष्ट पणउ चीतवइ
ते भणी कन्या लोचनि शुद्ध, अदृष्टीकरण मइ अजन किद्ध ३७

ते अे कन्या ते हु तात, अे मइ तुझ सघली कही वात,
अेणीइ आपइ दर्शन दीध, तु देखीनइ मोही मुधि, ३८

ढाल ८

राग–देशाख

(माई इन पराइ सरसति – अे देशी)

कुअरन् मुखशसि, मनमथ तणइ वसि,
निरखतो नेह्वसि, मुनिसुता अे,
नयन न खचअे, प्रेम प्रप्रच्च अे,
अचअे मरकले गुणयुता अे,
चतुर चकोरडी, ससिबिब चाहअे,
जिम तिम वेधि विलूधडी अे,
मनस्यउ अे वर वर्यउ, सवि गुणइ परवर्यउ,
अवरनी करी खरी आखडी अे,

त्रूटक

आखडी नर अवराह, ऋषिसुता करइ मनमाहि,
अगित्त लही मनवात, अति चतुर तापस तात,
रूध्यउ रहइ किम सूर, उलटचा सागर पूर,
उन्नयउ उत्तर मेह, तिम न रहइ ढाक्यउ नेह,
तिम न रहइ ढाक्यउ नेह कहिनउ, नयन वयन परगट करइ,
कुमर पिण तसु प्रेमि लुबधउ, अेक तेह्नइ मन धरइ, १

चालि

मनि वरी तव मुनि, बेहु तणउ प्रेम अे,
जिम अे दूधमाहि, साकर भल्या अे,
अतिहिं उमाह अे, करति वीवाह अे,
चिंतित बेहु तणा तव फल्या अे,
रति अनइ मनमथ, चंदनइ रोहिणी,
लखिमी नारायण जिम भजइ अे,
कुमरनइ कुमरीइ, बेहु सयोगइ अे,
तिम मनि आनद ऊपजइ अे.

त्रूटक

ऊपनउ अति आनद पालव्यउ प्रीतिनउ कद,
तिहा रह्य केता दीह, नृपननय अकल अबीह
अति चतुर कुमरनइ मगि, सा मुग्धि पिण हुई रंगि,
वर कुशमनइ सबधि, अति तैल हुइ सुगधि,
सुगधि होवति नीर निर्मल, पामति पाडल वास,
गुणवत नरनी सगतइं, गुणतणउ होति प्रकाश. २

चालि

प्रकाश प्रेमनउ मुनि लही वेहुनउ,
आनद मनमाहि अति लहइ अे,
लाडि गहिलो अनइं, मन किम दुख देइ,
तापस जमाईनइ इम कहइ अे,
देई भलामणि, करी मोकलामणि,
समरण नवकार तणउ करइ अे,
पुत्रीनउ विरह अे, न मइ सह्यउ जाइ अे,
इम कही पावक अणुसरइ अे.

त्रूटक

अणुसरइ पावक जाम, ऋषि मरण पाम्यउ ताम,
टलवलइ वाला दीन, जिम नीर विरहइ मीन,
हा तात! करुणागार! सौजन्यनउ भडार!
केही केही हित रीति, ताहरी समरुं चीति
चीति समरु ताहरा गुण, दूरिथा देखो करी,
प्रणय कोमल नयन वयणे, नेहतउ अति हित धरी ३

चालि

हित धरी कोमल अंकि आरोपीनइ
सबि तनकरि करी फरसतउ अे,
चुंबन देई करी, खिणि खिणि माहरइ,
मन मन भाषित हरखतउ अे,
वन परि पाटण, माहरइ मनि हतु
अेक ज तइ करी तातजी अे,
खिण खिण ते गुण समरतइ निसिदिनि,
प्राण न जाइ काइ तन तिजी अे,

त्रूटक

तन तिजी न जाइ प्राण, तउ कठिन हु निरवाणि
परिहरी केहइ दोसि, अति धयुं कां तइ रोस ?
मनि हती वात अनत, कहा वसइ तात उदंत ?
बइठी तिरथि पीऊपासि, उत्सगि सुत सुविलासि,
सुविलास सुतस्यउ हरखि आवसि, तातजीनई पाय,
ते रोर मनोरथ तणी रीतड, सवि वात रही मनमांहि ४

चालि

मनमाहइं इम दुख, पामती देखीनइ,
मधुर वचनि पीउ ठारवड अे,
सुदरि! मत करि अेवडउ सोक ए,
सरजित अन्यथा नवि हवइ अे
वासुदेव चक्रवृत्ति, सुरपति जिनवर,
वलवतइं मरणस्यउ न विचलइ ए
कोइ नही जगमाहि, सोइ विनाणीहि
काल कुशलनई जे छलइ अे

त्रूटक

जे छलइ कालपराण, ते नही कोइ विनाण,
नवि गणइ जाण अजाण, अे देव सरिस प्रमाण,
जेहवउ सध्याराग, कुश अग्रे जलबिंदु भाग,
जेहवउ चचल सास, नहो निमिषनउ वीसास,
नही निमिषनउ वीसास जीवित, अेहवउ जाणी करी,
'वलव म करु आतमसाधनि, निपुण शोक ज परिहरी. ५

ढाल ६

राग मल्हार

(मसवाडानी पहिली – अे देशी)

ऋषिदता इम कति कि, बूझवी गुणवती रे,
आराधइ जिनधर्म, विवेकिणि सा सती रे,
प्रेमइ पूरी पदमनि, पीऊ सासइ ससइ रे,
नयण वयण सुप्रसन्न कि, पीउ मनि अति वसइ रे १

प्रीयचरिता प्रियभाषिणि अकुटिल मन सदा रे
अचपल अतिंहि उदार कि, विनयवती मुदा रे
हित वाछल्य करइ अति, पति परिवारनइ रे
कल्पवेलि जाणे जगम, आवी धरि वारणइ रे २

गभीरा गुण जाणि, सदा अविकत्थना रे,
सतोषिणि सोभागिणि, धरमनी वासना रे,
उदयतणी दिणिहारि कि, नही मनि आतरु रे,
कुमर लहइ पुण्य पूरव, प्रगट्यउ माहरु ३

सती ससनेही ससिमुखी, सुभग सुलक्षणा रे,
शामा सर्वागसुदरी पामी, अगना रे,
हिवइ स्यउ माहरइ न्यून, मनीषित सवि फल्यउ रे,
जेंहवानी हुंती तरस कि, तेहवउ ए मिल्यउ रे ४

जाणता हुता कचण किमहइ करि चडइ रे,
पाम्यउं रयण अमूल कि तु कुण तडफडइ रे,
खाडनइ ठामइ साकर पामो पुण्यथी रे,
कल्पवेलि लही अलवितु, कारेलो खप नही रे. ५

लींबूनीर तणी परि सहु स्यउ सारिखु रे,
ते स्यउ माणस जसु मनि नहो गुणपारिखु रे,
फटिक सरीसा माणस तेहस्यउ कुण मिलइ रे,
ते विरला जगमाहि कि, प्रीतइ जे पलइ रे ६

भुजबलि उदधि उलधन नाग खेलावना रे,
खरा दोहिला होइ कि, प्रीतिका पालना रे,
अबमजरि विण कोइलि, अवरस्युं नवि रमइ रे,
जलधर विण चातक मनि, सेसजल नवि गमइ रे. ७

शसिस्यउ नही ससनेही, कमलनी रवि विना रे,
मांणस तेह प्रमाण जे, प्रीतइ अेकमना रे.
बइ नारीनउ कत मनि, साचइ कहु किम चलइ रे,
तिहारइ तेहनउ होइ, जिहारइं जेहस्यउ रमइ रे ८

वहु नारीनउ वल्लभ, उपम पुरुष नइ रे,
सुकि तणइ पणि सालकि, प्रजलइ स्त्री मनइ रे,
सूलि रुडी सउकिथी, वनिता इम भणइ रे,
तु प्रिय माणसनू मन वल्लभ कहउ किम दहइ रे ९

अेहवउ चित्तइ चिति कि नरवर सुत गुणी रे
ऋषिदत्तानइ मोहि कि, ऋखिमिणि अवगुणी रे,
वनथी वल्यउ निज मदिर भणी रे,
ऋषिदत्ता वनशाथि, करइ मोकला मणी रे. १०

वनतरुनइं कहइ सुंदरि, नीर भरि लोअणा रे,
खमयो सवि अपराध कि, वाधव मुझतणा रे,
लेती कुशम समार कि कोमल पल्लवा रे,
फल अति मधुर सवादि कि दिनि दिनि नवनवा रे. ११

सहीअ समाणी कोमल, फूल तवके भरी रे,
वेलिस्यउ देई आलिगन, वली वली हित धरी रे,
पुत्र समाणी रोप कि, सी चइ आसू जलइं रे,
द्यइ आसीस उदार कि, फलयो वहु फलइ रे. १२

वनदेवतिनइ पगि पडी, सीख मागइ सती रे,
मोकलावइ केली–शुक, केकिस्यउ विलपती रे,
इम मत जाणउ हंस जे, माया परिहरी रे,
मिलवा आवयो वेगि कि, वहिनिनइं मनि धरी रे, १३

मृगलीनइ कहइ प्रीय सखी, प्रांणथी तुम्हे प्रीया रे,
हु परदेसिणि पखिणि, ऊतारू मत मया रे,
अे तातजीनउं थानक, तुम्ह सारु कर्यउ रे,
तुम्ह हु विचि तात चित्ति कि, न हतु आतरु रे. १४

सुत सरिसा मृगवालक, ते सवि खलभल्या रे,
चालती जाणी सुदरी तव, टोलइ मिल्यां रे,
जे पाल्या उच्छगिकि वाहाला प्राणथी रे,
पोस्या निज कर प्रेमथी, परवर्या पाखथी रे, १५

ऋपिदत्ता कहइ तेहनइ आसू वरसती रे,
मुझ सरिखी को नीठर, नारी जगि नथी रे;
जेहवी आभा छाह कि पाणी लीहडी रे,
झवकइ दाखवइ छेह, विदेशी प्रीतडी रे १६

ऊचाऊस्यउ मोह विचक्षण कुण करइ रे.
नीठर मेहलीजति कि, परदुख नवि धरइ रे,
टलवलता मृगबालिक, मेहलती गहि बरी रे,
रडी रडी भर्या तलाव कि, ससनेही खरी रे १७

मोकलावी इम कानन, चाली कामिनी रे,
पीउस्यउ सोहइ जिम, ससि सगमि यामिनी रे,
वन वियोगनउ दुख कि, पीऊ तसु छडवइ रे,
खिणि खिणि वारइ चित्ति विनोदइ नवनवइ रे. १८

मारगि तरुतणी श्रेणि, आरोपइ मुनिसुता रे,
हरिवर्षकथी वीज जे, लाव्यउ तसु पिता रे,
सदा फल सरस सवादि कि, वनराजी भजइ रें,
जे जोता मनमाहि कि, आनद ऊपजइ रे १९

ढाल १०

राग धन्यासी

(विदेहीना देहइ रामइया राम–अे देशी)

दिन केते रथमर्दन नयरइ, सपरिवारि दोइ आव्या जी,
हेमरथराइ परमानदइ उच्छव विविध कराव्या जी. १

तलीआ तोरण अतिहि मनोहर, मडप मोटा सोहइ जी,
मचतणी तिहा रचना रूडी, जन वइठा मन मोहइ जी. २

विविध वर्ण लहलहइ पताका, मडप ऊपरि सार जी,
नव नव भातितणा चद्रूआ, बाधी परीअचि फार जी ३

छडा छावडा कुकमरोला, फूल फगर सुगध जी,
कृष्णागुरुना धूप मनोहर, गायन गाइ प्रबध जी ४

नाचइ पात्र ते ठामोठामइ, वाजित्र बाजइ कोडि जी,
बिरूदावली बदीजन बोलइ, गाइ सुहासणि कोडि जी ५

गुखि चढीनइ कोतुक जोइ, नारी केरा वृंदाजी,
कुमर सोहइ ऋषिदत्ता साथइ, जिम रोहिणिस्यउ चद जी. ६

मोती थाल भरी वधावइ, इहि वसू दीइ आसीस जी,
माय ताय परिजन सहु हरिख्या, पुहती सयल जगीस जी. ७

सुत गुणवंत विशारद जाणी, जाणी समरथ धीर जी,
युवराज पदवी प्रेमइ आपइं, हेमरथ नरवर वीर जी ८

कनकरथ ऋपिदत्ता वेहु, विविध परइं सुख विलसइ जी
प्रेम अभग बेहु परि सारिखु, दिन दिन उदय विकसइ जी. ९

ढाल ११

राग–पचम

हिवइ जे हुइ वात, सुणउ ते सहु विख्यात,
अदेखी स्त्रीनी जाति, कूड करती नाणइ भाति १

वेढाली होइ खोटी, यवरोटी कागइ बोटी,
जूठी रूढी धीठी, मायागारी मुहडइ मीठी. २

लोभिणी लपटि लूटी, निसनेही नीठर कुटी,
अवगुण केरी खाणि, नारी अेहवी निरवाणि ३

काबेरीनयरीनाह, वात निसुणी पाम्यउ दाह;
रूठी ऋखिमणि मनि चिंतइ, उपाय विविध ते चिंतइ ४

कामणगारी हुइ बेटी, तापस केरी कोइ चेटी,
तेणीइ मोरु नाह, भोलाव्यउ अति हि उमाह. ५

पोष्यउ आपसवाद, ऊतारु जउ तसु नाद,
तउ हु साची नारी, चिंतइ ऋखिमणि मदि धारी ६

कामणगारी रडा, योगिणी कूडकरडा,
सीकोतरि नांमइ, प्रसिघी ठामोठामइ ७

भगतइ तेहनइ आराधी, ऋखिमणिइ तिहा मति लाधी,
सा जपइ बेटी मागि, हु तूठी ताहरइ भागइं ८

वसि आणउ हु त्रैलोक, वइरीनइ पडावउ पोक;
आकरसी आणउं मेह, थमउ चद सूरिज बेह ९

सूकावउ नीला झाड, हु पालवउ सूका वाड,
गयणथी तारा पाडउ, दडनी परि मेरू भमाडउ १०

सातइ सागर सोषु, निकलकीनइ हु दोषउ;
चिटी आगुलीइ त्रिभुवन तोलउ, धरणीधर हाथइ चोलउ ११

माया भवानी देवी, ते सहूइ हु छउ सेवी,
नवि खडइ को मुझ आण, नवि चालइ कुणइ प्राण १२

जे मागइ ते हु आपु, लिख्यउं देव तणउ ऊथापउ,
इम निसुणी चित्ति आनंदी, बोलइ रायसुता पय वदी १३

देईनइ मोटउ आल, पाठउ रिषिदत्तानई झाल,
पीऊ थाइ माहरइ वस्यइ, काम करू ते अवश्यइ. १४

तउ हु वेचाथी लीधी, भवसूधी चेली कीधी,
माहरइ अेतली खप, सउकि संतापइ टप १५

अगीकरी अे वाणी, थइ सुलसा ते सपराणी
रथमर्दन गामइं आवी, ऋषिदत्ता द्ये वरतावी. १६

ढाल १२

राग केदार गुडी–देशी चदायणनी

(नमणी खमणी नई मनि गमणो–अे देशी)

रथमर्दनपुरि सुलसा आई, पापिणी ऋखिमणीइ पठाई;
जू हसीकु मीनी खावइ, त्यू छल करतो योगिणि आवइ १

जू पारधीआ विरचइ पास, मृगके वधनि धरइ उल्हास,
मीनके ताइ धीवर ताकइ, त्यू सा योगिनि कपटइ न थाकइ २

रथमर्दनपुरि कीआ रे ददोला, सेर सेरी करकका टोला,
मंदिरि मंदिरि कीनी मारी, विलपति सवजन ठाहारो ठारी ३

जन आसूकी भई नीझरणी, शोकानलकी भई तन अरणी,
हाहा कार करति सव लोका, सव्रजन व्याकुल भअे सशोका ४

दहनकु पावति नही अवकाशा, कुणपकी गंधि पूरी सव आकाशा,
वालक वृद्ध युवजन मार्या, हणतइ स्त्रीजन को न ऊगार्या ५

योगिणि भोगनिकी परि हुइ आई, आपइ किउ यमदूती,
करवि न धापइ पापकी कोरी, ऋपिदत्तास्यउं माडी जोरी ६

निशि निशि प्रति अवस्वापिनी, देवइ सा स्त्री पतिकु तेणइं लेवइ,
मानवकु निशि समइ मारी, कुमरके मंदिर नाखइ सा हारी. ७

ऋषिदत्ता के अधर यु रगइ, शोणित ले करि रोसि अभगइ,
वस्त्रइ देवति शोणित छटकी, रगति करइ युग योगिणि हटकी. ८

सती सियूया पासइ पिसत करडा, छोडइ सुलसायोगिणि रडा;
निद्रा लेकरि निकसी यावइ, मारि मारि जन सोर ऊठावइ ९

ऊठतउ नींद कुमर तव भुरइ, मृतजनके परिदेवन सोरइ,
करुणा पायउ जनके दुखइ, सोणित देखइ सतीके मुखइं १०

लाल भये कर सोणित भासइ, पिशत करडा सिज्याके पासइ,
कुमर आसंका चिन्तस्युँ पायु, विधिना अनरथ कहा रे उठायउ ११

मारि विधुर प्रजा हइ वहु दुस्था, वनिताकी दुरिया ही व्यवस्था,
यु विष वरपइ ससिकी कंतइ, भोर अधीआरा रविथी हुतइ १२

शसिथी निरमल चरित्ता कता, कदही न देख्या दोप वृतंता,
परतखि वात देखइ उर डसी, परिणित उसकी होवइगी कइसी १३

ईउ मनि चिंती कुमर जगावइ, वनिता ऊठी आपसुभावइ,
जभा पावति सग वग अलका, मुकलित नयना यु चपक कुलिका १४

ढाल १३

राग रामगिरी

(ब्राह्मण आव्यउ याचवा सुणि सुदरी–अे देशी)

कनकरथ पूछइ तदा, सुणउ सुदरी,
सुकुलीणी गुण जाणि, वात कहुउ खरी १

समुद्र मर्यादा किम तिजइ ? सुणउ,
छडइ गिरि किम ठाइ ? वात०

जिणि जनमहि हासु हुवइ, सु०
किम करइ उतम तेह ? वात० २

रेखमात्र मइ ताहरु, सु०
कहीइ न दीठउ वाक, वात०

एक अचंभउ माहरइ, सु०
हैडइ खटकइ साल, वात० ३

कहिता लाज मुझ ऊपजइ, सु०
कह्या विण पिण न सरति, वात०

मरकी सुणीइ घर पुरइ, सु०
लोक करइ पोकार, वात० ४

अधर लोहीआला ताहरा, सु०
पासइ पिशत करइ, वात०

कहिता लाज मुझ ऊपजइ, सु०
तु आपणपउ सभालि, वात० ५

काई कपट न राखीइ, सु०
आपणा वाहालेसर पासि, वात०
कुण कुल कुण रूप ताहरु, सु०
अे तऊ तुझ कुण काम, वात० ६

इम सुणी ऋषिदत्ता भणइ सुणउ स्वामीजी,
अेह असभम वात, दुख पामीजी,
इंद्रजाल कोइ अे खरु, सुणउ,
कइ अें सुपन विलास दुख० ७

थाग भाग नही वातनउ, सु०
जिम सायर कातार, दुख०
धर्मवत हु धुर लगइं, सु०
जनम लगइं दयाल, दुख० ८

लोहीथी ऊकाटा चडई, सु०
नासु मासनी गंधि, दुख०
पाली दीठइ दूरथी डरू, सु०
वननी मृगली जेम, दुख० ९

त्रणामात्र दूहव्यउ नथी, सु०
मइ तु आणइं भवि कोइ; दुख०
हुं कुहनइं नहीं पाडूई, सु०
मनि वचनि अनइं तनि, दुख० १०

अे विलसित को अरितणउ, सु०
पूरव करम विपाक, दुख०
जउ प्रतीति तुम्हनड नही, सु०
तउ कहउ ते करु दिव्य, दुख० ११

अथवा अपराधणि तणउ, सु०
मस्तक छेदउ हाथि, दुख०
तुम्हनइ मुखि स्यउं दाखवउं, सु०
जउ चडयउ करमि कलक, दुख० १२

दूहा ६

कोमल कता वचन इम, करूणा पायउ कंत,
कहइ सुदरि निर्दोष तु, मुझ मनि कोइ न भ्रंति. १

पणि अेहवउं देखी करी, मुझ मनि अचरिज होइ,
इम कही सइ हथि राय सुत, वनितानु मुख धोइ २

उत्तरीअ आगलि करी, मुख लूही सप्रेमि,
टाढे मीठे वोलडे, मन ठारइ वली तेम. ३

जाणइ अवटाइ रखे, अे मुगधा निज त्रित्ति;
माया लुबधउ कत ते, अेहवउ करइ नित नित. ४

अवगुण सघला छावरइ, जे जसु वल्लभ हुंति,
सरसव जेता दोषनइ, दोषी मेरु करंति ५

दिन केता इणि परि गया, रथमर्दनपुरमाहि,
व्यापी मरकी अति घणी, जनमन ऊठइ दाह. ६

ढाल १४

राग वइराडी

(त्रणतिणा तिहा पूला धरीआ–अे देशी)

जनतणा तिहा सोर ऊछलीआ, सोक सतापइ ग्रहीआ,
हेमरथ राजा वात सुणी ते, क्रोधारुण थई रहीया जी. १

राइ तलार वेगइ बोलाव्यउ, धूजतउ कापतु आव्यउ जी;
रे रे तु सुख–लुवधु पापी, राजा रोसइ वाह्यु जी, २

राजलोकनी चिंता न करइ, मइ ता बहु दिन साख्यु जी,
हिवइ तु मनि अेहवउ जाणे, खडोखड करि नाखउ जी. ३

प्रगट करी ते उपद्रव कारण, कुण करइ जन मारी जी,
कइ तुझ जीवितनइ हु कोप्यउ, अे जाणे निरधारी जी. ४

वलतउ तहलार वोल्यउ भय चचल, थरहर थरहर धूजइ तन्न जी,
जाणे अकालइ आव्यउ सीयालउ, गद गद कठ वचन्न जी. ५

दीन वदन अति चचल लोचन, तनि वरसइ परसेव जी;
गलइ शोष पडतउ ते वोलइ, सुणि करुणाकर देख जी. ६

परि परि सोधि करी मइं निरती, माहरी सकतइ स्वामी जी,
पणि ता प्रगट न थाइ कोई, जोयु ठामोठामइ जी ७

पाखडी वहुला इणि नयरइं, नरति न लाभइ तेणइ जी,
कांमण टूमण कूड कावडीया, अे जग धूत्यउ जेणइं जी. ८

वजडावी राइ ढंढेरू, ठामी ठामिथी तेह जी;
काढवा माडचा सर्व पाखडी, जाणा जोसी जेह जी ९

समरपंथी जोगी जे पडीआ, गणीआ नइ दरवेश जी,
यती सती मठवासी काढ्या, दर्शनी मात्र ऊसेस जी १०

सूकुं वलता नीलू लागइ, अन्याईनइ दोषी जी;
साधुजन पणि पीडा पांमइ, न गणाइ काई रोषइ जी ११

इणि अवसरि ते सुलसा योगिणि, आवी राजदूआरइं जी,
प्रतिहारीनइ कहइ रायनइ वीनवउ, वीनती अेक मुझसार जी १२

एक कोईनइ अपराधइं सहुनइ, कोप न कीजिइ चित्तइ जी,
भइसु मादउ तडिग डाभीइ, अे नही रुडी रीति जी. १३

दोषीनइ हु प्रगट करुं इम, रायनइ जणावी वात जी,
राय कहइ जे गाय वालइ, अर्जन तेह विख्यात जी १४

जे कहइ ते कीजइ दीजइ, नउ आपइ नीभेडी जी,
अेहवुं कहावी वेगइं राइ, सुलसायोगिणि तेडी जी. १५

ढ़ाल १५

राग_साभरी

(नेमनाथना मसवाडानी त्रीजी–अे देशी)

आवी सभाइ योगिनी पापिणी अद्‌भुत वेस,
ताड त्रीजउ भाग उची सिरि जटा जूटा केश. १

आखि राती त्रिपुट नाश, ललाट अगुल च्यार,
काश्मीरमुद्रा श्रवणि लहकइ, खलकति मेखल भार २

कठि माला शख केरी, भस्म धुसर वान,
ललाट चदन आडि, नखे ते आगुल मान ३

मृगचर्म केरी करीय कथा, उढणइ चित्रित चर्म,
मोरपिच्छनु ग्रह्यु आतप, हथईं दंड सुधर्म. ४

वाणही चिमि चिमि करती चरणे, शिष्यणी परिवार,
ध्याननइ वसइ घूमती, कर्यंउ भगिनउ आहार ५

उच्चरती आसीस उच्च शब्दइ, आवी रही नृप तीरि;
सभाजननइं शाति करती, मत्र पावनइ नीर. ६

वडवडती वदनई लोक जाणइ, जयइ मत्र वशिष्ट;
सीकोत्तरी सवि जास्यइ, नासी, देखता अेह्नी दृष्टि ७

तव दृष्टि सज्ञा भूपइ दीधी, वइठी ति अलख कहेवि,
राय कहइ तव भगवति, अम्ह विघ्न टालउ हेव ८

तव वदइ सुलसायोगिनी, मतिमत्ता सुणि नरनाह,
उपगार कारणि विश्वनइ, अवतर्यां अम्ह प्रवाह. ९

उपगार कीजइ शक्तिसारु, अेतलु सार ससारि,
उपगार कारणि सूर शसिहर, सुजन जन जलधार १०

आज रातइ इष्ट देवइ, मुझ कह्यु सुपन मझारि,
दर्शनी सहुनइ राय कोपइ जनमहइ जाणी मारी ११

भूपनइ तु जई कहिये, स्यउ दर्शनीनउ दोस,
सभालि मदिर ताहरु, तु म करिसि अवरस्यउं रोस १२

जे वहु आणी वन थकी, ते मारिरूप विकराल,
अवतरी नगरनु नाश करवा, दीसती अति सुकमाल. १३

अदृष्ट थई अेहवउ कही, मुझ सुपनमाहि देवि;
दर्शनी सहुनइ फोक काइ, दमइ नृप तु हेवि. १४

प्रतीति जउ नहीं स्वामिनइ, तउ जोईइ स्वयमेव,
आदर्शस्यउं कर ककणइ, अे वात कही सखेवि १५

नरनाथ विस्मय चितइ पायउ, इम सुणी सुलसावाणि,
काई विमासी मोकली, योगिनी देई मान. १६

ढाल १६

राग केदारु

(सरस्वति गुणपति प्रणमउं—अे देशी)

राइं योगिणि वउलावी, मनमाहइ सका आवी;
अे कस्यु खपण मुझ कुलि निरमलइ अे. १

सुत राखउ तिणि निशि राजइ, वहुनू चरित्र जोवा काजइ,
अेक जन छानउ तसु घरि मोकल्यउ अे. २

अेक जन छानउ तसु घरि मोकल्यउ, अे राइ जोवा चरित,
अे योगिणि साची कइ जूठी, अेहवी करवा निरति ३

तिणि निसि कुमरनइ निद्रा नावी, चितइ विसवा वीसइ;
प्राण प्रीआनइ दोहिली वेला, अेता आवी दीसइ. ४

दिहाडी दिहाडी हु छावरतु, दीठइ परतीख वाकइ;
हा हा मुगधानइ स्यु थास्यइ, लोक गूझ नही ढाकइ, ५

जउ अदृष्टीकरणनी विद्या, मुझ हुइ पंख समेत;
तु हिवडा जई ते सगिमुखिनइ, जणावउ संकेत ६

माहरी वाट जोई जोईनइ, सूती होस्यइ बाल,
आशा ताततणी अेक पासा, अेक ता प्रेम रसाल ७

कनकरथ मननु मनमाहइ, इम रह्यउ अवटाई,
जिम पंखी पाजरडइ घाल्यउ, पणि नवि चालइ काई ८

इणि अवसरि ते सुलसायोगिणि, छानी रही करइ घात,
रायना चर तेहनइ नवि देखइ, देखइ पिशत सघात ९

चर लहइ अे सहु वहुना करणी रायनइ जणावइ वात्त,
स्वामी अे सवि साचउ दीसइ, ऋषिदत्ता अवदात. १०

चालि

तव ते राजा कोपीय, त्रिवली ललाटि आरोपीय ..
लोपीय लज्जा सुतनइ, इम भणइ जे ११

रे रे पापी नदन, तु ता वशनिकंदन...
चदन निरमल कुल तई दूखव्यउ अे. १२

त्रूटक

दूखव्यउ कुल तइ विमल पापी, किहा राक्षसी आणी,
माहरी प्रजा ते जीवित सरिखी, तेहनी अेता घाणी १३

बालक वृद्ध युवाजन हणीया, प्रजानउं आण्यउ अत,
सिद्ध सीकोत्तरि ताहरी घरणी, अे मई लह्यउ व्रतत्त १४

दीन वचन विलखउ थई, वलतु बोलइ कुमर दयाल,
स्वामी तेहथी अेहवउ नुहइ, ते छइ अति सुकमाल १५

तइ साख्यउ पणि हु नही साखु, अवगुण सगा न होई,
माहरइ कहणइ वीसास नही जउ, तउ तु जइनइ जोइ १६

वचन सुणी अेहवा राजाना, मनि धरतउ विषवाद,
राजकुमर नीचउ जोईनइ, आव्यउ निज प्रासादइ १७

प्राणप्रीया दीठी तव झाखी, जिम वादलमाहि चद,
कुमार कहइ सुणि सुदरि, साचउ अे तुझ आव्यउ दद. १८

पूरव भवनी वइरणि कोई, योगिणि मतिनी ऊधी,
रायनइ कहइ वहु जे छइ ताहरी, ते तउ राक्षसी सूधी. १६

चर मूकी राजाइ जोवराव्यउ, ते ता जाण्यउ साचउ,
हिवइ तू प्रगट थयउ जनमाहि, मइं तु वहु दिन साख्यउ २०
हु ता तुझ दुख देखी न सकु, वरि अे छडउ प्राण,
सुदरि कहइ स्वामी धीर थायउ, मुझनइं करम प्रमाण २१

ढाल—१७

राग सवाव

वोलीउ ते प्रहलाद वाणी—अे ढ़ाल

हिवइ ते रुठउ नरेंस, सेवकनइ दीइ आदेश,
आणीनइ षेस १

जूउ करमनउ महिमाय, जेणइ रोल्या राय रक. जूउ०
अे भुडीनइ केसई धरी, वंधनि वाधी खरी,
काढउनई पहरी जूउ० २

भमाडीनइ ठामोठामइ, देईनइ अति अपमानि,
हणउ समशानि जूउ० ३

इम सुणी कनकरथ, मरवा थयउ समरथ,
ग्रही राख्यउ हथि. जूउ० ४

हवइ तेह सती धरी, पाटा पाडया सात सिरी,
दु ख विधूरी जूउ० ५

चुनउ ते चोपडयउ सीसई, त्रीलीफल झूवख दीसइ;
त्रिकृत वेसडं जूउ० ६

सूपडानउं छत्र धरइ, लहिकति चूथा चामरइ,
आरोहो खरइ जूउ ७

लीवपान तणी माला, ठवी ते कठइ विशाला;
दोसइ कराला जूउ ८

हीगइ ते विलेप्यउ तन्न, मषीइ खरड्यउ वदन्न,
दीसइ विषन्न. जूउ. ९

ठामोठामि पौरलोक, गालि दीइ थोकि थोकि,
पीड्या ते शोकि, जूउ १०

कोइ करइ मारि मारि, सतीनइ ठाहारि ठाहारि,
करम सभारि जूउ ११

आगलि काहालि वागइ, लोक तसु केडइं लागइ,
दुखडु जागइ जूउ. १२

सतीनइ संतापी गाढी, सेरी सेरी अति ताडी,
वाहिरि काढी. जूउ. १३

तव ते आथम्यउ सूर, प्रसर्यउं तिमिर पूर,
थयउ असूर जूउ. १४

अेहवइ ते आव्या समसानि, बोल्यउ अेक नीठर वाणि;
काढी कृपाणइं जूउ १५

समरि रे इष्टदेव, तुहनइ हणस्यइ हेव,
न कर खेव जूउ १६

सती सुणी इम वाणी, आकुल व्याकुल प्राणी,
पडी पडी मूर्च्छाणी जूउ. १७

तव सविजन जाणइ, राक्षसी तिजी प्राणि,
गया निज ठाणइ जूउ. १८

जन निज ठाणइ गया, नारीतणी तिजी दया,
नीठर थया जूउ १९

केती वेला थई जेतइ, मीठउ वाय वायउ तेतइ;
सा पाई चेत. जूउ. २०

अरहु परहु जोयउ जाम, निरव्यजन दीठउ ताम,
नाठी आवी साम जूउ. २१

वधनथी छूटी मृगी, नाठी जाइ तिम ऊभगी,
तिम सा अथगी जूउ २२

नाठी गई अति दूरइ, पूरव करम झूरइ,
रडइ दुख पूरइ जूउ. २३

ढाल १८

राग सोरठी

(वर वरयो रे वछित देई दाम–ए देशी.)

मत करयो रे, मत करयो रे, कोई गरव लिगार,
ऋषिदत्ता जे सती सिरोमणि, करमइ नडी रे अपार रे १ द्रूपद

सूनइ रानइ मोकलु मेहली, रोवत सरलइ सादि रे;
असुधार आषाढी घनस्यु, जाणे लायउ वाद रे २ मत

तिण वेलांइं पासु ताहरुं, जउ हु मूकी नावती तात रे;
तउ नवि पडती अनरथ सागरि, दुख हईयडइ न समात रे ३ मत.

जनमथकी कुणइ नवि दूहवी, वचन मात्र लिगार रे,
ते ऋषिदत्तानइ दोहिली वेला, आवी अेकइ वार रे ४ मत

प्राणथकी हु वल्लभ हुती, तुजनइ सुणि प्राणनाथ रे,
आ दुख तरल तरगि तणाता, कनकरथ द्यु हाथ रे ५ मत

घणा दिवस लगइ तइ स्वामी, ढाक्यउ माहरु दोस रे,
आश्रित–वच्छल ! तइ गभीरिम, जीतउ जलधि असेस रे. ६ मत

मइ भूडीइ तुहनइ लाज अणावी, ते किहा छूटिसि पाप रे,
ताहरा गुणनी हु दाणी घणि, तु छाया हु ताप रे. ७ मत

जनमलगइं मइं कोइ न दूहव्यउ, काइ न कर्या कुकर्म रे;
तु दैवइ अे दोहिली वेला, दोधी केहइ मर्मइ रे. ८ मत

नीसासइ सोषी वनराजी, रडि रडि भर्या तलाव रे,
खग मृग नाग तसु करुण विलापइ, पाम्या दुख सताव रे ९ मत.

हैअडु दुख भराई आव्यउ, आसू अंखडी धार रे,
कोइ न रडता वारइ वनमा, कोइ न ठारणहार रे १० मत

विलपि विलपि आपइं रही सुदरि, देती करमनइ दोस रे
पूरव करम शुभासुभ दाता, अवरस्यउ केहउ दोस रे, ११ मत.

ढाल १९

राग वइराडी

(पाडव पच प्रगट हुवा–अथवा

मन मधुकर मोहो रह्यउ–अे देशी)

सती सिरोमणि संचरइ, ऋषिदत्ता सुविचारजी,
तु धीर था रे प्राणीया, म धरीसि दुख लिगार जी,

करम साथइ रे कुणइ नवि चलइ, करमइ नड्या रे अनेक जी,
पडित अेम विचारता, आणइ हैअडइ विवेक जी. १ सती

श्री रसहेसर वरसतइ, पाम्या नही रे आहार जी,
पूरव करम उदय थकी, परीसह सह्या रे अपार जी २ सती.

घोरोपसर्ग सह्या घणा, चरणि रधाई खीर जी,
श्रवणि वि शिलाका करमथी, कालचक्र सहइ वीरजी ३ सती

रामइ स्या स्या दुख सह्या, पूरव करम प्रसादइ जी;
हैआ कापइ अवरना, सुणता तेहनी वात जी ४ सती.

वासुदेव छूटा नही, करमइ जउ वलवत जी,
स्वजन विछोह तेणइ लह्या, जराकुमार सिरि अत जी. ५ सती.

द्यूतइं हारी कामिनी, वनि रल्या पाडव पच जी,
मच्छेद्रराय सेवा करी, मोटउ करम प्रपच जी. ६ सती.

नल नरपति अति दुखीउ, वनमाहि छडी नारि जी,
अन्नपाक परमदिरइ, करइ ते करम प्रचार जी. ७ सती.

हरिचद सत्यवादी सदा, डुवघरि आणइ नीर जी,
सुत तनु वनिता वेचीया, करमइ इम रुल्या धीर जी ८ सती

ब्रह्म सिर करमि छेदावीउ, कीध कपाली ईश जी,
ग्रह भमवओ सशि सूरनइ, रावण गमीआ सीस जी. ९ सती.

इद नरिद न मेहलीया, करमइ जेह महत जी,
निज मन वालइ इम कही, ऋषिदत्ता गुणवत जी. १० सती.

ढाल २०

राग रामगिरी

(सूरिज तउ सवलउ तपइ–अे देशी.)

चित वालइ इम आपणउ, पणि वाल्यउ न जाइ,
परवत फाटइ डणइ दुखइ, नीला झाड सूकाइ
ऋषिदत्ता पंथि साचरइ, अति आकुल थाइ १ ऋषि. द्रुपद.

धीकइ अगनि अगीठडी, वेलू जघसमाणी,
परसेवउ खलहल वहइ, जाणे नीझर वाणी २. ऋषि.

रुधिरधार चरणे वहइ, खूचइ गोखरू काटा,
काकरा पीडइ आकरा, भागइ डाभना झाटा. ३ ऋषि.

अधर फाटइ सूकइ गलउ, जाइ सासि भराणी,
छाह मात्र पामइ नही, किहाइ नवि लहइ पाणी ४ ऋषि.

रडइ पडइ पथि आखडइ, आखइ अधारा आवइ,
डुंगरि दव जलइ दूरिथी, तेहनी झाल सतावइ. ५. ऋषि.

किहाइक फणिगर फूफूइ, किहाइ फ्याऊ फेकारइ;
घोर घूक किहाइ घूघूइ, किहाइ, वाघ हुकारइ ६. ऋषि.

किहाकिणी खोह बीहामणी, किहाइ डूगर मोटा,
देखता होअडू हडबडइ, किहाइ मारगि कुटा ७. ऋषि.

कुशमसेजि बीट खूचतइ, नीद नावतो जास,
अेहवी वेला तेहनइ पडइ, हा हा दैव विलास ८. ऋषि.

सूरिज किरण तनि जेहनइ, नवि लागइ कहीइ,
रानमाहि ते रडवडइ, पडइ पाथरि महीइ ९. ऋषि.

नवनीत पाहि कुअली, हुती जस तन वाडी,
ते ऋपिदत्ता तिणि समइ, थइ वज्रथी गाढी १०. ऋषि.

अनुमानइ सा अणुसरइ, दिसि दक्षणि डाही,
पूरव पुन्य तणइ वसइ, मति हुइ सहाई. ११. ऋपि.

निज करइ जे तरू रोपीया, पीऊ साथि आवता,
ते तरू दीठा नयणले, तव सा थई अतिसता. १२. ऋषि.

अहिनाणी ते तरुतणइ, आवी तात आरामइ,
ते देखी हीउ गहिवर्यंउ, राख्यु न रहइ ठामि १३ ऋपि.

पाहण पावक परजलइ, फाटइ पिण मिलइ वारइ,
सज्जन दीठइ दुख सभरइ, आवइ हईडला वारइं १४. ऋषि

ढाल २१

राग मारुंणी

(कासोमा आव्यउ राय रे-अे देशी)

ऋपिदत्ता आवी जिम रे, दोठउ तात तणउ आश्रम्म रे,
रोवा लागी सरलइ सादइ रे, आसु वरसइ मेह सवादइ रे १

तात दर्शन द्यु अेक वार रे, हुं अभागिणिनी करु सार रे,
निरधारीनइ द्यु आधार रे, तुझ पाखइ सूनउ ससार रे २

ऋषिदत्ता कारुण्ण विलापइं रे, गिरि रोया नीझरणा व्यापइं रे;
तरू रोया खग मृग मृगी जीव रे, देखी सतीनइ दुख अतीव रे ३

सा रोई रही आपोआपइ रे, जिम सायरइ लहिरी व्यापइ रे;
करइ वनफलनु तिहा आहार रे, पालइ तापसनु आचार रे ४

इम करता गया केता दिन्न रे, ऋषिदत्ता इम चितइ मन्न रे,
पाकी बोरि अनइ स्त्री जाति रे, देखी सूना वाहइ सहू हाथ रे. ५

वनिता अनइ सेलडी वाड रे, देखी पुरुषा तणी गलइ डाढ रे,
जगमोहन वनिता मूली रे, फूली विगेपइ यौवन फूलइ रे. ६

शील ते स्त्रीनइ परम निधान रे, ते जालवउ थइ सावधान रे;
वली विमासी अेहवउ चित्तइ रे, ऋषिदत्ता सती गुणवंतइ रे ७

आ औपधी देखाडी तातइ रे, स्त्री फीटी हुइ नररूप जातइ रे,
ते औपधी योगि सरूप रे, ऋषिदत्ता हुइ नररूप रे. ८

पवित्रि घाती घाली कानइ रे, मुनिवेष धरी सुज्ञानइ रे;
तिणि आश्रमइ कीधउ वास रे, जिनपूजा करइ उह्लासि रे. ९

धरइ धरमध्यान नित नित रे, सभारी प्रीऊगुण चित्तइ रे,
सुणो ऋषिदत्ता सतापइ रे, करइ कनकरथ विलाप रे १०

ढाल २२

राग मारुणी

(प्रीयु राखु रे प्राण आधार–अे देशी)

प्रिय बोलिन रे! तु प्राणाधार
ससिमुखी बोलिन रे! गोरी रे गुणभडार,
गजगति बोलिन रे! १ द्रुपद

तइं ताहरइ गुणइ करी, हु लीधउ वेचातउ दाई रे,
रणीउ हं तुझ नेहनउ, ऊवेखो हिवइ का जाई रे २ प्रिय

फूलइ भरी सेजडी, तुझ पाखइ शूली सचार रे,
जिहा जोउ तिहा तुझ विना, मुझ सूनउ सयल ससार रे. ३ प्रिय

चदन कौअचि जिम दहइ, ससिहर अगनि ऊठाइ रे,
भोग सयोग श्रृगार विनोदा, तुझ पाखड न सुहाइ रे, ४ प्रिय

रयणी रोता नीगमू, टलवलता दिहाडउ जाइ रे,
अेक खिण विरह ताहरइ, मुझ वरस समाणउ थाइ रे ५ प्रिय

पहिली माया दाखवी, हिवइ का नीठर थाइ रे
क्षामोदरि माहरु दुख देखी, तुझ का करुणा न धाइ रे ६ प्रिय

स्नेह रोसइ तु लेती अबोला, तव हु व्याकुल थातउ रे,
वार वार तुझ चरणे लागी, मीहनति करी मनावतउ रे ७ प्रिय

हसता हणती चरण प्रहारइ, तव हु लहइतु प्रसाद रे;
मानिनी ताहरा कोप ओलभा, थाता सुधा–सवाद रे. ८ प्रिय

सखीइ पणि तुझस्यउ नवि चालइ, मान तणी तुझ टेव रे,
विण अपराधो सेवक साहमु, नेह नयणे जूउ हेव रे ९ प्रिय

तुझ विण वाट जोस्यइ कुण माहरी, तृषित नयने अति हेजइ रे,
त्रिभुवनि सार लही न तुहारी, तुझ विण सूनइ राजइ रे १० प्रिय

सूडा सालही मोर क्रीडाना, ते रडइ ताहरइ वियोगइ रे,
सूका सरोवर आसू नीरइ, पूरइ सखीजन शोकइ रे ११ प्रिय

जन नयने वसीउ वरसालउ, उन्हालउ नीसासइ रे,
आकपइ अगइ सीआलउ, सुदरि ताहरइ विणासइ रे १२ प्रिय

अनोपम ताहरु रूप नीपाई, त्रिभुवनि वाली रेहा रे,
अेक जीभइ करी हु गुण ताहरा, बोलउ केहा केहा रे. १३ प्रिय.

शसिमृग अबुज करि हरि हसा, सीस कर्या सुविनाणी रे,
तेहनी लाज मेलेवा कारणि, जाणउ तु रही छानी रे १४ प्रिय

नागलोक कइ गमन कर्यु तइ, जीपिवा नागकुमारी रे,
कइ रभानु गर्व हणेवा, अमरपुरी सभाली रे १५ प्रिय

वनि ताहरइ तु रमती हुती, मइ दुख देवा आणी रे,
तु पुरुषारथ जगि स्यउ माहरु, जउ मइ तु न रखांणी रे १६ प्रिय

ताततणइ घरि लाडकवाही, मइ पणि आण न खडो रे;
लोकतणी ते नीठर वाणी, किम सहीस्यइ प्रचडी रे. १७ प्रिय
जातीकुशम तणी परि स्वामिनि, तु सुकुमाल सरीरा रे,
सह्या हुस्यइ किम कठिन प्रहारा, मुझ मनि वहइ दुख सारा रे १८ प्रिय
फिटी रे दैव अेहवी स्त्री हरता, तुझ मनि दया न थाई रे;
ते कुण पापी जिणि तु मारी, तेहनउ टालउं ठाई रे १९ प्रिय.
ताहरी क्रीडा-थानक देखी, मुझ मनि सालइ साल रे;
तुझ पाखइ स्यउ जीव्यउ सुदरि, पीडइ विरहनी झाल रे २० प्रिय
इम अतिविलवी मोहइ घार्यउ, कुमर ते मरवा धायउ रे,
तात कुटब मिली वारी राख्यउ, तिणि तसु गुणे जीव लायउ रे २१ प्रिय,

ढाल २३

राग केदारु.

हिव कनकरथ कामिनी गुण, समरि समरि दिन राति,
टलवलइ झूरइ दुखभरिइ, नवि गमइ केहनी वात. १
नवि गमइ वीणा गान मनहर, नवि करइ तन सभाल,
योगी तणी परि थई रह्यउ, मेहली नीसासा झाल. २
भोग भूषण सवि तिज्या, परिहर्या स्वाद उदार,
चद चदन तनु दहइ, रति लहइ नही लिगार. ३
अधघडी निशि निद्रा नही, वहइ आसूधार अखड;
कामिनी गुण खिण खिणि जपइ, लहइ अवर पाखड ४
प्रीय प्रीय करता जीभ सूकइ, थयउ विकल राजकुअर,
ते न रहइ वार्यउ कहितणउ, नवि गमइ सखी परिवार ५
रे भूमि तु अवकाश द्यइ, पाताल पइसउ जेम,
गुणवत गोरी तणइ विरहइ, हु धरु जीवित केम ? ६
हईडउ न फाटइ विरहइ जउ, तउ विलवता खरी लाज;
माणस पाहिं पखी तणा, नेह खरा दीसइ आज ७

जउ विरह ताहरइ प्राण न गया, तउ खरु कठिन सुभाव,
अथ दैव मुझ जीवत्त दीयउ, सहिवा रे विरह-सताव ८

कनकरथि विलापि परबत, खडइ खड ते थाइ,
नीझरण जिम नयना वहइ, ते केलव्या न जाइ ९

परवार सवि माता पिता, प्रीछवइ परि परि जाणि,
नवि चित्त दाझइ शोकनइ, चतुरिमा अेह प्रमाण १०

कल्याण कोडि लहइ सही, नर जीवता सुणि स्वामि,
इम धीर नर द्यइ धीरणा, करइ दुखनउ विश्राम. ११

ढाल २४

राग आसाउरो

(शिवना मगल वरतीअे-अे देशी)

हवइ कपटपेटी योगिनी, करी दुष्ट अेहवउ काज,
जई सुणावइ रुकमणी, जाणइ दीउ मइ राज १

पापिणी रुखिमिणी ते सुणी, उनमत नाचइ भूरि,
जिम दाय जीतउ दूतकारइ, विजय पाम्यउ सूर २

रुखिमणी तात अे वात जाणी, हेमरथ नर नृप पासइ,
अेक दूत अवसर जाण समरथ, मोकलउ उहलासि ३

ते दूत कर जोडी कहइ, सुणउ वीनती माहाराज,
परणवा तुम्ह सुत आवतउ, पाछउ वल्यउ कुण काज ? ४

अम्ह स्वामि जोई वाटडी, मया करु मनि देव,
श्री कनकरथ मोकलउ, वीवाह कारणि हेव ५

ते वात हेमरथराइ जि सुणी, संबध जाणी सार,
पुत्रनइ परिवार मेली, वीनवइ वारोवारि ६

सुणि वंशदीपक सुगुण नंदन, कुल तिलक कुल आधार;
अेक वोल मानी माहरु, ऊरण थाउ सुविचार. ७

आस्या विलधी रुखिमिणी, ऊवेखता नही धरम;
अवला तणइ नीसासडइ, पुरुषनइ पाडइ शर्म. ८

नर अवर जउ को तसु वरइ, तउ आपणी नही माम;
जउ माम गई मान्यातणी, तउ जीवतइ स्यउ काम ९

अेकवार परिणी तेहनइ, आपणउ महिमा राखि;
वार वार तुझनइ वीनवउ, पाछउ ते वोल न नांखि. १०

इम कही अणमनमानतइ, पणि कुमर पाम्यउ लाज;
छछउदिरी जिम सापि साही, जिम नई वाघ समाजि ११

ढाल २५

राग : मल्हार

(गिरजादेवीनइ वीनवउ–अे देशी
अथवा वीरजिणेसर वादउ विगतिस्यु रे.)

ऋषिदत्ता गुणइं मोहीउ रे, चितइ राजकुमार,
कुण नर काजी वावरइ रे, पी अमृत उदार १

धिग् धिग् नरना हैडला रे, नीसत नीठर अपार;
अेक गई वीजी आदरइ रे, नाणइ प्रेम लिगार. २ धिग् धिग्

नेह खरु नारीतणउ रे, नर पूठइ अवटाइ,
नर निसनेही निरगुणी रे, वीजी केडइ थाइ ३ धिग् धिग्

प्राण न दोधी तेहनइ रे, तउ लजाव्यउ प्रेम,
हवइ ते परणेवा जायता रे, निरगुणमाहि सीम. ४ धिग् धिग्

कनकरथ इम विलपतउ रे, तात तणइ आदेस;
कावेरीभणी साचर्यउ रे, लेई कटक असेस. ५ धिग् धिग्

वाटइ शकुन भला हवा रे, चिंतइ कुमर सुजाण;
जउ ते गोरी नवि मिलइ रे, तउ स्यु सुकन प्रमाण. ६ धिग् धिग्

जाणोस्यइ सवि छेहडइ रे, इम आणइ मनि धीर,
अनुक्रमि ते वनि आवीउ रे, जिहा परणी स्त्रीहीर ७ धिग् धिग्

ढाल २६

राग : देशाख.
(रोता रे रोता रे राई–अे देशो
अथवा सारद सार दया करि–अे देशी)

जोता जोता ते काननमा, कुमरनइ जाग्यउ नेह रे,
हीउ भराई आव्यउ दुखइ, नयणे वरसइ मेह रे १

आ वन ते जिहा मृगनयणी, मइ मनमोहनी दीठ रे,
तीने नयने नेह लगाइ, मुझ मनि मध्य पईठ रे. २

छूटी वेणी जिहा हीचती, आ ते अबाडालि रे;
आ ते सरोवर जिहा हसगामिनी, झीलती रगि रसालइ रे ३

आ ते नागरवेली मडप, जिहा मइ पालवि साही रे,
लाजती नवतन नेह समागम, जाती मुहनइ वाही रे ४

कुमरी कुदके जिहा मुझ हणती, आ ते कुशम सोहइ रे;
आ ते अशोक जिहा हु तेहनइ, मनावतउ ससनेह रे ५

ते क्रीडाना थानक देखी, हीउ न फाटइ काइ रे,
गोरी सुदरि ताहरइ विरहइ, ते वन खावा धाइ रे ६

इम विलवतउ कुअर पगि पगि, आव्यउ निज प्रासाद रे,
जिमणउ अग फरूकइ ते खिणि, छडइ कुअर विषाद रे ७

ढाल २७

राग · परजीउ.

(मृगावतो राजा मनि मानी–अे देशी
तथा छत्रोसोनो.)

कनकरथ कुअर चिति चितइ, उत्तम अगित अेह जी,
प्रीयसगम सूचक सुखकारी, आभा विण स्यउ मेह जी १ कन.
ते किहा मुझ घरणी मनहरणी, वछइ सगति जास जी,
तउ अे अगित किस्यउ करस्यइ, जे मुझ करइ सरास जी २ कन.
अथवा अे प्रीयमेलक तीरथ, मनि वीसामा ठाम जी,
प्रीयजन सवधी जे कोई, ते दुखनू विश्राम जी ३ कन.
इम चींतवतउ निज प्रासादइ, कनकरथ ते आवि जी;
रिषिदत्ता मुनिवेप विराजी, ते पुष्पादिक लावि जी. ४ कन.
कनकरथ स्वय हत्थइ लेवइ, मुनिकर दीधा फूल जी,
सचकार सगमनउ जाणे, जेहनउ जगि नही मूल जी ५ कन.
प्रेम सुकोमल नयने जोई, वलि वलि तसु मुखचद जी,
कनकरथ कुअर गुणमदिर, पामइ अति आनद जी ६ कन.
ऋषिदत्ता चिति प्रीऊ चाल्यउ, रिखिमिणिनइ परिणेवा जी,
आश्रमि आव्यउ कुअर मुनीस्यउ, विरची श्री जिनसेवा जी ७ कन
मुनिनइ पूछइ कहीइ आव्या, किहाथिकउ वनि अेणि जी,
तापस कहइ मइ आश्रम सेव्यउ, राजऋषि हरिषेणि जी. ८ कन
ऋषिदत्ता तसु तनया कोई, राजकुमर गयउ परणी जी,
साधी अगनि गयउ सुरलोकइ, श्री हरिषेण सविणी जी ९ कन.
तीरथयात्रा करतउ इणि वनि, हु आव्यउ ततखेव जी;
वरस पाच हुआ ते वातइ, करता श्री जिनसेव जी. १० कन.

ढाल २८

राग सीधूउ–गउडी.

(सपीआरा नेमजी–अे देशी
अथवा नयर राजग्रह जाणीइ जी–अे देशी.)

कनकरथइ इम साभली हो, बोलइ मधुरी वाणि,
सुणउ ऋषि तुम्ह मुख दीठडइ हो, अेह ठर्या मुझ प्राण १ द्रूपद.

सपीआरा साजण भलइ रे, मइ तुम्ह भेटि,
जिम उन्हालइ छाहडी हो, जिम सायरमाहि वेट २ सपी.

तुम्ह मुख जोता नयणनी हो, तरस न छीपइ अेह,
तउ जाणउ तुम्हस्यउ खरु हो, पूरव जनम सनेह ३ सपी

न जाणउ तुम्हे स्यु कर्यउ हो, कामण देखत खेव,
चवक लोहतणी परइ हो, आकरस्यउ चित हेव ४ सपी.

तव मुनि कुमर प्रतइ भणइ हो, तुम्ह बोल्यउ सवि साच;
मनइ मन तउ अेक मिलइ हो, अेहवी छइ जिनवाच ५ सपी.

कुण किहाना किहाथी मिलइ हो, पूरव प्रेम सयोग,
अेक देखी मन उह्लसइ हो, अेक दीठइ करइ शोक ६ सपी.

जिम तुम्हनइ तिम मुहनइ हो, देखत लागउ प्रेम,
नयण वयण मन साखीआ हो, साचइ नेहइ तेम ७ सपी

कुमर कहइ हु साकल्यउ हो, तुम्ह नेहइ रिषिराज,
बीजु काबेरी जायवउ हो, तिहानउ करवउ काज ८ सपी

तेह भणी कृपा करी हो, तुम्हे आवउ मुझ साथ,
वलतु जे तुम्हनइ गमइ हो, ते करयो मुनिनाथ ९ सपी

तउ ऋपि कहइ अम्ह मत करु हो, आदर अेणी वाति,
राजसगति मुनि नवि करइ हो, ते निवसइ अेकति १० सपी.

ढाल २६

(राग · रामगिरी जयमालानी
अथवा जत्तिरी.)

कहइ राजकुमार तव फेरी, सुणउ ऋषिजी वीनती मेरी,
वात जूई सयम केरी, प्रीति केरी वात अनेरी १

परमेस्वर मोटउ कहीइ, भक्ति आधीन ते लहीइ,
भक्तइ देव दानव वसि कीजइ, मनमानइ निज मन दीजइ. २

मन दीधउ अे तुम्ह हाथइ, मइ तुम्हे पणि लेवा साथइ,
इणि वातइ म करस्यउ प्राण, तउ निश्चइ लेस्यउ प्राण ३

इम कुमरनउ आग्रह जाणी, ऋषिदत्ता ऋषि मांनी वाणी;
जिम दूधस्यउ साकर भेली, तिम पाम्या वहू रगरेली ४

अेक खिण अलगा नवि थाइ, प्रीति नयना सरिखी कहाइ;
इम करता पुहतां कावेरी, वाजइ वाजित्र तूर नफेरी. ५

साहामउ आव्यउ सुदरिपांणइ, करइ उच्छव अतिमडाणइ;
ऊतारा आदरि दीधा, अति उत्तम मंडप कीधा ६

सुभग लगन जोसीइ साव्या, सहुनइ मनि आनद वाध्या;
धवल मगल सुहासणि गाइ, मनवंछित दान देवाइ. ७

अतिउच्छवि रुखमिणि परणी, कीधा वेहुजणइ निजकुलकरणी,
हवइ सुदरपाणि नृसीह, राखइ कुमरनइ केता दीह. ८

ढाल ३०

राग . अधरस

(पुण्य न मूकीइ–अे देशी.)

हवइ पीउ जाणी वसि थयउ, मदिमाती तिणिवार;
रुखमणि पूछइ कतनइ रे, धरती हरख अपारो रे १
कहउ प्रीउ ते किसी, जे वसी तुम्ह तणइ चित्ति रे २ कहउ.

कडि लकीली पातली रे, कइस्यउ मोहणवेलि,
कइ सुरकुमरी अवतरी रे, जिहा तुम्ह मनि करी केलि रे ३ कहउ.
कइ मुखि मटकउ तसु गम्यउ रे, कइ मनि मान्यउ वेणि,
कइ आखडीइ भोलव्यउ रे, कइ कुचकुंभ रसेणि रे ४ कहउ.
कइ ते कठइ किन्नरी रे, चतुरा चाल चलति;
कइ कटिलकी सिहनी रे, कोमल उदर सुकतइ रे ५ कहउ
अहिल्यास्यू हरि मोहीउ रे, तउ तेहस्यउ रसपूरि,
उत्तमनइ नेह नीचस्यउ रे, जिम मिरीआ कपूरो रे. ६ कहउ
अथवा जेहस्यउ मन मिल्यउ रे, ते विगुणाइ सुरग,
धतूरु हरिनइ रुचइ रे, ससि उच्छगइ कुरगो रे ७ कहउ.
ते तापसनी छोकरी रे, स्यउ दीठउ ते माहि,
जस कारणि हु परिहरी रे, आणी अगि ऊमाहो रे. ८ कहउ.

ढाल ३१

राग मेवाडउ.

(जीवडा तु म करे निदा पारकी–अे देशी)

ऋखिमणि केरी रे वाणी इम सुणी, मेहलतउ नीसास,
ऋषिदत्ताना गुण सभारतउ, बोलइ कुमर उदास १
ते ससनेही मुगधा गोरडी, त्रिभुवननउ अेक सार,
हु वेचाथउ रे लीधउ तेणीइ, निजगुण नेह प्रकार. २ ते सस
जे परमाणू रे ते घडता रह्या, तेहनी रभा कीध,
जाणउ चदउ रे तसु मुख दासडउ, दीसइ अक प्रसिद्ध ३ ते सस.
साकर जीती रे वाणी मधुरिमइ, मध्यइ सील रहति,
तसु गुण वीजइ रे किहा नवि दीसीइ, जिहा अे चित्त ठरति
४ ते सस.
अेकइ जीभइ रे गुण केता कहु, हु रणीउ छउ तासि,
त्रिभुवनि सुदर जे जे कामिनी, ते ते सवि तसु दासि ५ ते सस.
जग गोरसनू घृत ते सुदरी, अवर ते छासि समान,
स्यउ करु दैवइ रे जउ नवि सासही, रोर घरि जेम निधान ६ ते सस

काकर रयणारे जेतउ अंतरु, जेतउ सरिसव मेरु,
ऋषिदत्तानइ अवर महेलीया, तेतउ दीसइ रे फेर. ७ ते सस.

गगावेलूरे सायर जलकणा, जे गणी पामइ पार,
ते पणि तेह्ना गुण न गणी सकइ, जिह्वा सरिस उदार, ८ ते सस
अमृत अलाभइ रे काजी पीजीइ, कोदिरा कलम वियोगि,
तिम तसु विरहइ रे दैवइ सरजीउ, तुम्ह सरिखी स्त्री भोगि ९ ते सस

ढाल ३२

राग महलार.

(जूउ रे सामलीआनु मुखडउ–अे देशो)

तव कोपानली धगी धगी, मनि मच्छर आणी,
अदेखी ऊछाछली, बोलइ ऋखिमिणि वाणी १

सुणि सुणि प्रीतम वीनती, स्वारथ सपराणउ,
अेक द्रव्याभिलाषपणउ, तिहा मत्सर जाणउं २ सुणि

हु ऋखिमिणीनी तेणीइ, जोरइ आसडी कापी;
तउ ते तापस छोकरी, मइ केह्वी सतापी ? ३ सुणि

आल चडाव्यउ मारिनउ, माहारु वयर मइ वाल्यउ,
पी न सकु ढोली सकु, साचउ वचन सभालउ ४ सुणि.

तेह हती गाढी कुटिलिनी, पणि मुझस्यउ न चाल्यउ,
सीहनइ सरभ साहामउ मिल्यउ, मइ ते चीतव्यू पाल्यु ५ सुणि

काल भुयगम कोपव्यू, फल ततखिण लाधउ,
ऋखिमिणी स्यउ हठ केलवी, स्यु तेणीइ साध्यउ ६ सुणि

धन धन सुलसा भगवती, पूरव जनमनी माय,
माहारइ कहइणि जेणीइ, कीधा सयल उपाय ७ सुणि

रुखमिणि रगभरि अेणी परइ, थई उनमत बोलि,
ऋपिदत्ता मुनिवेपिणी, सुणइ कुमरनइ ओलि ८ सुणि.

आणद पामी अतिघणउ, परमेश्वर तूठउ,
ऋषिदत्तानइ कुलकिणी, अमीइ मेह वूठउ ९ सुणि

ढाल ३३

राग . केदारु

(दास फिटी किम थाउ राजा–अे देशी.)

(अथवा आज लगइ घरी अधिक जगीस–अे देशी)

रुखिमिणीनी वाणी सुणी, कनकरथ कोप्यउ सुगणी;
अरुण छाह भई मुख तणी, थयउ विकराल जिस्यउ फणी १

त्रिवली चडावी भीषणी, रथमर्दन पत्तन धणी;
अधर डसतउ खिणि खिणि, कपावतउ ते धरणि २

वोलि रे सुणि रुखिमिणी, तइ ताहरा स्वारथ भणी;
अे स्यउ कीधउ पापिणी, दुष्टमनी जिम सापिणी. ३

परभवनउ भय अवगुणी, कीधउ अत्यजनू करणी,
असुभ हेतु जेहवी भरणी, मइ विण जाण्यइ तु परणी ४

निरापराध ते मुझ घरणी, सती सिरोमणि मनहरणी,
तु तउ साची वइरणी, तउ ते गगा नीझरणी ५

कुगति भूमिहर नीसरणी, अपयस आवसनी पूरणी,
सुमति पटीनी कातरणी, कोपानल केरी अरुणी ६

लुटा लपटि लोभिणी, कामतणी अक्षोहणी,
कूड कपट केरी गुरुणी, अेहवी अधम कही तुरुणी ७

वेइ पीडा आपणी, परनी करइ ऊथापणी,
जिम ढोलानइ मारुणी, विचि अतराई मालविणी ८

पापिणी सुलसा योगिणि, जे अधमाधम धुरि गणी;
अपयशनी पाटी वणी, तुझनइ दीधी ओढणी ९

ते मुगधा जउ इम हणी, तु तु माहरी वयरणी,
ते यमघरि हुई पाहुणी, कनकरथ रह्यउ आहणी १०

मरण सरण मुझ हवइ सही, कनकरथ ते इम कही,
चिता रचावइ मदिरइ, हाहाकार ते जन करइ ११

दुहा:

तव हि कोलाहल अति थयउ, आकुल सवि परिवार;
कावेरी–पति ते सुणी, आव्यु तेणी वार १

परि परि वारइ भूप ते, वार्यउ न रहइ कुमार;
ऋषिदत्ता संभारतउ, वरसइ आसूधार. २

प्राणप्रीया प्रति जायता, मुझ मत वारु कोइ;
विसमी विरहनी वेदना, राम लहइ जगि सोइ ३

कहिनउ वार्यउ नवि रहइ, तव बोल्यउ ऋषिराज;
सुणि सुविवेकी कुमर तउ, अे स्यउ करइ अकाज. ४

जे अविवेकी अधमजन, करइ आपसुघात,
भव अनता तउ रलइ, न लहइ धरमनी वात. ५

पुरुष मरइ स्त्रीकारणइ, अेतउ अवली रीति,
जगि हासारथ का करइ, चतुर विचारि सुचीति ६

सवि वछित पामइ घणा, नर साहसीक जीवत;
भानु प्रधानिइ सरस्वती, जिम पामी गुणवत ७

जीवता मिलवा लहइ, किहारइ वनिता सोइ;
प्राणि प्राण तिजी करी, बेहु भव मत खोहि ८

ढाल ३४

राग केदारु गुडी.

(पारधीआरे मुझ ते वनवाट देखाडि–अे देशी)

ऋषिनी वाणी इम सुणी रे, बोल्यउ कनक कुमार,
ऋषिजी तुम्हे तु नवि लह्यउ रे, दोहिलउ प्रेम विवहार

सलूणा साथी को मुझ मेलइ तास, हु तउ तेहनउ भवि भवि दास. १
जउ तसु प्राण न दीजीइ रे, तउ स्यउ प्रेम मंडाण,
जे कसि पुहचइ छेह लगइ रे, तेहस्यउ साचउ बधाण २ सलूणा

छलछलीया वहिला ऊमटइ रे, छेह लगइ उडा नीर;
जे जन न वीहइ मरणथी रे, ते पालइ नेह धीर ३ सलूणा.

प्राण तिजइ तृणनी परइ रे, नेहइ बाध्या जेह,
अेक मरता बेहु मरइ रे, साचउ कपोत सनेह ४ सलूणा

जीवता वछित लहइ रे, पामइ सजन सहाय,
ता लगइ विरहनी वेदना रे, पणि किम सहिणी जाइ. ५ सलूणा

जे खिण जाइ ते विना रे, ते युग सरिखउ थाइ;
स्वजन विण जे जीवीइ रे, ते जीव्यउ न कहिवाहइ. ६ सलूणा

मिलइ लगी ते जीवता रे, तुम्हे जे कह्यउ रे उछाह;
मूआ माणस जउ मिलइ रे, तउ स्यउ दुखु जगिमाहि? ७ सलूणा

स्यउ वाहु छउ इम कही रे, मुझनइ तुम्हे गुणवत,
आपण माणस दुख पडइ रे, हासु केम करत ८ सलूणा

इम करता तुम्हे मेलवउ रे, तपनी सक्ति अनत;
तउ हु वेचातउ ग्रह्यउ रे, निश्चिय जनम प्रयत. ९ सलूणा

पुनरपि तापस वोलीउ रे, सुणि तु पुरुष रतन्न,
अेणइ साहसइ ते सुंदरी रे, तुझनइ होस्यइ प्रसन्न. १० सलूणा

कुमर पूछइ वली आकलउ रे, ऋषिजी तुम्हे रे दयाल,
ते किहा दीठी साभली रे, सुधी कहउ मुझ भाल ११ सलूणा

ढाल ३५

राग गुडी

(सभारी सदेसडउ–अे देशी
अथवा सारद सार अे देशी)

बलतउ ऋषि इम बोलीया, सुणि तू पुरुष रतन दे;
ज्ञान तणइ महिमाइ अम्हनइ, त्रिभुवन सयल प्रत्यक्ष दे १

ताहरी प्राणप्रीया ऋपिदत्ता, जिम घरि करइ कलोल दे,
कनकरथ ते इम साभली, मनमा थया विलोल दे २

पूछइ आदरइ अतिघणइ, लागी ऋषिनइ पाय दे;
ते किम आवइ ईहा सती, ते मुझ कहउ उपाय दे ३

वलतउ तापस ते वोलीउ, हु जई तेहनइ ठामि दे;
ऋषिदत्तानइ ईहा मोकलउ, ताहरा सुखनइ काम दे. ४

कनकरथ ते इम साभली, हसी वदन कहइ स्वामि दे;
सक्ति विलव न तव कीजीइ, दुखीआ मित्रनइ कामि दे ५

भोजन पामी भावतु, भूख्यउ न सहइ विलव दे,
तिम प्रीय-प्रापति कारणइ, विरही हुइ उत्तभ दे. ६

तव मुनि वोल्यउ अेणी वातइ, लाभ किस्यउ मुझ होई दे,
कुमर कहइ प्राण तुम्ह करइ, मइ दीधा इणि लोई दे. ७

उदधि ओलध्यउ कपिवलइ, रामि मित्रनइं कामि दे;
मित्र काजि अगनिनी झाला, कइ छाडथा राज रामि दे. ८

तउ मुनि कहइ प्राण ताहरा, तु कन्हइ रहउ चिरकाल दे;
अवसरि माग्यउ ते आपेयो, वाचाना प्रतिपाल दे. ९

इम कही परीअचि आतरइ, पइसइ तापस तेह दे;
कौतुक जोवा तव ते मिलीआ, सुर नर किन्नर जेह दे. १०

ढाल ३६

राग . देशाख.

(इद्रइं कोप कोउ-अे देशो)

तिणि अवसरि नरनारि, आनद चित्ति धरइ,
ऋषिदत्ता निज रुप, तव ते प्रगट करइ १

वादलमाहिथी सूर, प्रगट्यउ हुइ जिस्यु,
रण जीत्यइ जिम सूर, दीपति उहल्लस्यु २

ते ऋषिदत्ता देवि, तेजइ जगि जीपती,
देवइ दीधी सोह, सील गुणइ दीपती. ३

सुरनर करी प्रसस, कुशमनी वृष्टि भई;
ऊतारी कष्ट–समुद्र, भावठि सर्व गई ४

रमझमि कनक मजीर, पूरण चद्रमुखी;
पहिरणि कोमल चीर, नव नवी भाति लिखी ५

कचुक कुचि सोहत, मोतिन माल भजी,
रवि ससि कुडल मेल, स(श?)वि सिणगार सजी. ६

अधर सुरग तबोल, हसती फूल खरइ;
हीरा दीपति दत, वोलति अमृत झरइ. ७

क्षामोदरि गजगति, वेणी भूअग जिसी,
माननि मोहणवेलि, अेणी नयणि हसी ८

तिणि खिणि मागधथोक, जय जय सबद भणइ,
करइ प्रससा लोक, ऊलटि चिति घणइ ९

जव दीठउ तसु रूप, रुकमिणि दासि गिणी;
घटतउ अेहस्यु प्रेम, जन कहइ कुमर गिणी १०

ढाल ३७

(राग देशाख–अेकवीसानो)

अेहवउ वितिकर रे, निसुणी कावेरीधणी,
मनमाहि रे पाम्यउ आनद अतिगुणी,
आरोपी रे कुमरस्यउ, ऋषिदत्ता गजइ,
अति उच्छवि रे, निज मदिरि आव्या भजइ

त्रूटक

भजय नववय नवलनेहा, चदस्यु जिम रोहिणी,
अपराध जाणी कठिन वाणी, राइ तिरथी रिखिमिणी;
जे कूडकपट–करड रडा, योगिनी सुलसा खरी,
तसु नाशिकास्यु श्रवण छेदी, काढी देशथकी परी

भापइ कुअर रे, ऋपिदत्तानइ एक दिनइं,
सभारी रे, तापस मित्रनइ निज मनइ,
सुणि सुदरि रे, ते दुख मुझनइ अतिदहइ,
तुझ कारणि रे, मित्र जे जिम मदिर रहइ.

त्रूटक

रहइ स्वामी म करि चिंता, कहइ ऋपिदत्ता खरु,
नेहपरीख्या जोडवानइं, अेह विलसित माहरु;
पालीइ दीधी तदा वाचा, तुम्हे साचा सज्जना,
रुखिमणी ऊपरि प्रेम आणउ, माहरी परि सुभमना. २
इम निसुणी रे कुअर रोमच्यउ तदा,
चिति चिंतइ रे, आणीनइ अति समदा,
देखउ सज्जन रे, दुर्जन विचि अतर इस्यउ,
मणिपन्नग रे, विषकर मनमाहि वस्यउ

त्रूटक

मनि वस्यउ सज्जन दुर्जन अंतर, जिस्यउ दर्पण छाहारनू,
वावनाचदन छेदतइ पणि, सुरभिमुख कुठारनू,
रह्यउ सोषइ नीर निसिदिनि, माहिथी वडवानलो,
तुहइ न जलनिधि छेह दाखइ सजन सुभावइ निरमलउ. ३
तव कुमरइ रे, ऋपिदत्ता आग्रह धरी,
मानी रुखमणि रे, मनथी कोप निराकरी,
दिन केता रे, ससरानइ मंदिर रह्या,
हवइ चाल्या रे निजपुरि साहामा ऊमह्या.

त्रूटक

ऊमह्या निजपुरि वेगि आव्या, हेमरथइ उछव कर्या,
वरसता दानइं अखड जलधर, वदिजन जय उच्चर्या;
लाजतउ नरनाथ निसुणी, कूड सवि सुलसा तणउ,
सभारतउ अपराध वलि वलि, सतीनइ खामइं घणउ. ४

सुभ महूरति रे, कनकरथ राज्यइ ठवी,
श्री हेमरथ रे, सपद सघली भालवी;
वैराग्यइ रे, श्रीभद्रसूरिनी सानिधइ,
पालइ सयम रे, समरथ ते त्रिकरण सुद्धइ.

त्रूटक

त्रिकरण सुद्धइ सयम पाली, वेगि शिवरमणी वरी,
श्रीकनकरथ नरनाथ समरथ, कीरति त्रिभुवनि विस्तरी,
अन्याय टालइ राज्य पालइ, कला दिन दिन दीपती,
सुत सिंहरथ जितरूप मनमथ, लहइ ऋषिदत्ता सती ५

ढाल ३८

राग . आसाउरी.

(मसवाडानी पहिली)

ऋषिदत्तास्यउ अेक दिनइ, गुखि वइठउ नरनाहजी,
जोइ शोभा नगरनी, धरतउ अंगि ऊमाहजी

त्रूटक

ऊमाह अगि सुरगि धरतउ, कनकरथ वसुधाधणी,
क्षणमांहि वादल गयणमडल, छाहीउ निरखइ गुणी,
विश्राल सहिसा थयउ ततखिण, कारण ते वइरागनू,
कनकरथ नरनाथ चिंतइ, भवस्वरूप अेहवउ गणु १

जेहवी रे सायर लहिरडी, जेहवउ सध्यारागजी,
कुशअग्रइ जलबिंदूउ, जेहवउ नट वयरागजी

त्रूटक

वयराग नटनउ अथिर जेहवउ, प्रीति दुर्जन केरडो,
घरवास चचल कामिनीनउ, नीरमाहि लीहडी,

आक इधण घाडिसईनी, वाडि जवासा तणी,
असार अेह ससार तिणि परि, मूढ मनि माया घणी. २

पाप करी परकारणइ, स्वारथि सजन सहाय जी,
अे नित्यमित्रतणी परइं, विहडइ छेहडइ काय जी

त्रूटक

कायमाया अभ्रछाया, मोहवाह्या जन भमइ,
विषयसुख मधुविंदु लोम्यउ, कालमहीआ नीगमइ,
ससार सवि दुखमूल छाडी, धन्य ते अलगा थया,
इम कनकरथ सवेग पामति, पापना पाया खया ३

भद्रयशोगुरु अेहवइ, पुहता वनि सुविचारजी,
कनकरथ ते साभली, पाम्यउ हरख अपारजी.

त्रूटक

अपार नरवर हरख पाम्यउ, मोर जिम मेह आगमइ,
परिवारस्यउं गुरुचरण वादी, पाप सघला नीगमइ,
देशना छेहडइ सुगुरुनइ तव, पूछइ ऋषिदत्ता सती,
हु पूरव करमइ नडी केहइ, ते कहउ मुझ यतीपती ४

ढाल ३९

राग · सामेरी,

(जिम कोई नर पोसइ— अे देशी)

ज्ञानातिशय वधुर, वाणि सुधारस जलधर;
गणधर तव तसु, पूरवभव कहइ अे १

जवूद्वीप मनोहर, भरतखेत्र सोहाकर,
आगर पुरवर गगाभिध, गगासमउ अे. २

गगदत्त तिहां नरवर, गगादेवीनु वर,
सुदर तु गगसेना, तसु सुता अे. ३

चद्रयशा तिहा माहासती, सुमति गुपति न वरासती;
वासती त्रिभुवन, निज यशपरिमलइ अे ४
तु सवेगणिमाहि भली, भवथी थई ऊभाभली,
साभली तसु देशनध्वनि निरमली अे ५
ममता मोहइ नवि ठगी, भीषण भवथी ऊभगी;
नवि धगी काम क्रोध दावानलइ अे ६

ढाल ४०

राग गुडी

(करि आगली कि माडव जावइ – अे देशी
अथवा
सारद सार दया करि – अे देशी)

निस्सगा ते तिहा सगा चगा, गगा वरतइ सार रे;
आर्या बहु गुणवति वयरागिणि, पालइ सयमभार रे १
तेहनी लोक करइ प्रससा, दुःक्कर कारणि अेह रे,
ते निसुणी तू मच्छर आणइ, महिला मच्छर गेह रे २
युवती जाति हुइ अदेखी, परनी न सहइ प्रससा रे;
आपणपू अधिकेरु मवावि, ओछी अति नृससा रे ३
तव ते तेंहनइ आल आरोप्यउ, अेहनउ जाण्यउ धर्म रें,
तप तपइ दीसइ, निसि आहारइ, पापिणी पिशित कुकर्म्मई रें ४
सगा साध्वी उपसमवासी, अहीआसइ सुभ भावइ रे,
कलक सतीनइ दीधा माटइ, तुहनइ लागउ पाव रे ५
राग रोस वसिथी अज्ञानी, रसनानइ सवादइ रे;
साधुनइ आल देई सतावइ, धार्यउ मद उनमादइ रे ६
हसता आलइ कर्म ऊपराजइ, दोहिलउ तास विपाक रे;
दोहिला तेह अछइ भोगवता, कष्टइ पामइ थाक रे ७
अभ्याख्यान अनइ वध मारण, परधन नासि करति रे;
अेहनउ उदय जघन्य थकी जउ, दशगुण फल पावति रे, ८

सयगुण सहसगुण लखगुणय, कोडिगुण कोडाकोडी रे;
तेहथी विपाक हुइ अधिकेरु, जेम वड केरु छोडी रे. ९

निंदक ते चाडाल सहुथी, नरगि सहइ संताप रे,
अणकीधइ पणि जिम जरतीनइ, लागउ हत्या पाप रे १०

तउ ते पातक अणआलोई, बहु भव पामी दुखु रे,
कर्मविशेषइ पुनरपि गंगापुरि, राजकन्या थइ दक्ष रे ११

तिहां जिनदीक्षा पामी पुण्यइ, तप तपी कपट संयोगइ रे
अणसणि मरणि थई इंद्राणी, ईशानेंद्रनइ भोगइ रे १२

हरिषेण रायतणी थई पुत्री, पालइ सासन आया रे,
कर्मतणउ लवलेस रह्यउ जे, तिणि ते लाध अपाया रे १३

ढाल ४१

राग धन्यासिरी,

(मसवाडानी छेंहली देशी)

अेहवा श्रीगुरु वयणला हो, सुणि ऋषिदता देवि,
जातीसमरणि निजतणा हो, भव देखइ ततखेंव

त्रूटक

भव देखइ ततखेव विवेकणि, वीहनी करमविवागइ,
भवथी ऊभगी श्रीगुरुपासइ, सूधउ संयम मागइ,
कनकरथ पणि सो लघुकरमी, याचइ श्रीगुरुपासइ,
स्वामी संयम मुझ आरोपउ, जिम न पडउ भवपासइ १

श्रीगुरु उपगारी भणइ हो, सुणि तु कनक नरेंस,
उत्तम स्वारथ साधवउ ही, विलंब न करइ लवलेश.

त्रूटक

विलब न करइ लवलेस जे उत्तम, जाणी अथिर संसार,
जे जे वेला धरमसयोगइ, ते ते कहीइ सार,

कनकरथ गुरुवाणि सुणीनइ, स्वारथ साधन काजई,
सिहरथ सिह समान पराक्रम, सुत थापइ निजराजइ २
सयम सूधउ आदरइ हो, ऋषिदत्तानइ राय,
दुस्तप तपइ राय सुभमनइ हो, सेवइ सहि गुरु पाय

त्रूटक

सेवइ सहिगुरु पाय अमाई, चरण करण सावधान,
सुभ अणगार गुणे दीपता, वरजता दुरध्यान,
क्रमि क्रमि विचरता भद्दिलपुरि, पुहता श्रीगुरुसाथ,
जिणि पुरि श्री शीतलजिन जनमइ, कीधउ अतिहि सनाथ ३
परजाली ध्यान पावकइ हो, तिहा त्रिणि कर्म निकाय,
लही केवल मुगतइ गया हो, ऋषिदत्ता नइ राय

त्रूटक

ऋषिदत्ता नइ राय कनकरथ, मुगति बेहु जणि साधी,
सकल कलक थकी मूकाणी, कीरति निर्मल वाधी,
अेहवा उत्तम सुचरित सुणता, प्राणी हुइ पवित्र,
सुभ मनि धरम सेवता लहीइ, सवि सुख अत्र अमुत्र ४
वडतपागच्छ सोहाकरु हो, श्री विनयमडन गुरुराय,
रत्नत्रय आराधक हो, जे जगि धरम सहाय

त्रूटक

जे जगि धरम सहाय गुणाकर, सुविहितनइ धुरि कीध,
तासु सीस गुणसोभाग सुनामइ, जयवतसूरि प्रसिद्ध,
तेणइ रसिकजनाग्रह जाणी, विरच्यउ सती चरित्र,
उत्तम जन गुण सुणता भणता, होवइ जनम पवित्र ५
सवत सोल सोहाकरु हो, त्रिहितालउ उदार,
मागसिर शुदि चौदसि दिन हो, दीपतउ रविवार,

त्रूटक

दीपंतउ रविवार सुरोहिणि, शशि वरतइ वृषरासइं,
अे ऋषिदत्ता चरित्र वखांणइ जयवंतसूरि उहलासइ;
न्यून अधिक जे हुइ आगमथी, मिच्छादुक्कड तास,
कविता वकृता श्रोता जननी, फलयो दिन दिन आस ६

इति श्री ऋषिदत्तारास संपूर्ण ·
सवत् १७१६ वर्षे, प्रथम जेष्ट सुदि ६ गिनौ,
खिलि त श्री पत्तनमध्ये, श्री पूनिमगच्छे भ श्रीविनयप्रभसूरिणा
शिष्यादीना वाचनार्थं । शुभं भवतु श्रीसिं(सं)घस्य ।
श्रीरस्तु ।

पाठांतर

ढाल १

१ दिनी दिनी ब, क, ड, धन धन फ, हुवइ ब, वहइ फ, जेहनइ क, जेहनि इ, जेहनी ग, लीध इ, लीइ फ, नामि ब ड फ, पांचइ ब, पोंचि फ, परमीष्टनइ क, हूं ब ड.

२ शाशनि ब, शासनि क, शासन ड, सासन फ, श्रुतरूप ग, समरुं ब, समरू फ, जेहनइ क फ, जेहनि इ.

३ मीठाइ ब ड इ, मीठाइं फ, वाणीइ फ, तइ क, तिइं ब ड, ते फ, वसेषइ ब, विशेषिइ ड, विशेषि इ, विशेषिइ फ, वीनवू ब ड फ ग, वीनवु क इ, दि ब ड, दई क, दिई इ, दिउ फ ग.

४ ते नित फ, प्रमाणि ग, उस ब क ड, वखाणिवा ब, वखाणता इ, दि ब, ड, दिई क, दई इ, दिय फ, निरमल इ ग, न्यरमंल फ.

५ विस्तरी इ फ, फलाइ ते ग, जिणिइ क, जिणि इ, दइ ब, दिइ क, दिठ ड, देस फ, हइ इ, विचन फ

६ पइि क, परि इ, कवि केलवए ड फ ग, कविता केलवणि इ, निर्मिनत्ति फ, अनुसारि ब ड फ, विस्तार ब क ड इ, अस्तरी फ.

७ पूर्विइ ब क ड, पूर्वि फ, सुकवि ब क, सुकवि ड, करयां ब ड, अेहना ड, प्रसिद्धि फ, तुहि ब ड फ ग, तुहिइ क, तुहइ ई, आग्रहइं ब, रसिकजनाग्रहिइ क, जनयाग्रहइ ग, मइ ब फ, मइ प ग, पणि अदिम कीध फ.

८ केवलही इ, मुगतइं अ, मुक्तिइ क, मुगतिगइ फ, गयि ग, कीधु फ, कलकह ब, सुचरित्रं इ, सुचरिता ड, सुणियो फ, सहू ब, सविवेक ब, सुविवेक फ.

ढाल २

१ शुभरित ब क ई, सुभरति ड, सुभरत ग, सुभरतिकरं फ श्रुभरतिकरु ग. सुदर क, जेहांवसिई इ, जिही फ, इभ्य ब, प्रभुते ग, दानिइ क, दानिई डग, नीमतदानि फ, रूपइ क ड, रूप इ, रूपिइ फ, परहुत ब, पुरहुत क, सूदरा इ, निवनिइ वास्यी फ, उहलासी इ, पल्हास्यी फ, कामिनी ड, कामनी फ, भामिनी ड, सनमुखी ब, जेहा इ, जिहा फ, चैत्यशाला फ, पोषधशाला ड इ फ, संजिम मुनिपालि फ.

२ तिनि ब, तिनिपुरिइ क, तिणिपुरी इ ग, तिणि पुरइ फ, नयनपुणो क फ, न्याय निपुणो डइ, नरनाथयोजि इ, सेवकजनतइ ड, सेवकनि इ, शेवकनई फ, पूरन इ, पूरणपुन्य फ, न्यायिरंजन ड, परिणमि न्यायसुजिज्ञा ग, सुजपा इ, गुरुगमीरिम ब, गंभीरम डग, न्यायसुयशा ब, अन्यायभंजन ड, पछीन क, वृछते फ, अमरा ब, अमरि ग, सुभगती फ, तसरुपनी फ, यसरूपनी ब, जसरूपना कइ, जसरूपणी इ

३ कनकर्थं व, तसु इ फ, नामनो फ, गुंण क, गेहेरे ग, गुणगेहोजि इ, असमनमोह-
नउ व, मोहनो कइग, असमनमोहतु तसमनमोहनी फ, आयुदिहिरे घ, आयुदेहिरे
क ड फ. आयुदेहो जि इ, आयुदेहेरे ग, जेथेहि क, रूपि क, गौरकेततुन फ,
केतक क, जिसिउ कफ, जस्यु इ, सशिमुख ड, हसिउ क इ, वचकहस्यु ड,
(हसिउ) धरल पंचम कहिस्यू फ, यौवन्नि अ, पायु व क ड फ, सुयसि ड,
सुयसि व फ, सुयस इ, गायु व क ड इ फ, स्वय त्रिभोवन फ

ढाल ३

१ अेणइ व, इणइ ड, शोभा क, यश व, असभइ क, बहू अ.

२ तेणि इ, सुदरपाणी, व ड इ, अरिराजि व, असभयि व ड, असभइं फ, इ, हरपाणी
व ड इ, कृपाणी व ड इ.

३ तसवासुला अ ड, तसवसुधा क, तसवासुला फ, सोहि फ, पटराणी य ड इ, असतनु व क
फ, असुतनु इ, भराणी वडइ, पुण्यपथी क, सपराणी वइ, सुपराणी फ.

४ ऋषिमन फ, तसतनया वक, सतनया फ, गुंणवंती क, रूपि इ, सतिजिमकती फ, तेजि
क, झलाकंती ड, झलकति फ.

५ वयि क, वेयि इ, जाणी वड इ, चितइ अ, विंतइ ड, चिंति इ, सुंदरपाणि व इ,
विनाणी व ड इ फ, विनाणी क, आणी अड.

६ मेहेल्या इ, कनककायसम फ, सरीखी इ, सरिखी फ.

७ सुदरपाणिइ व, सुंदरपाणि क इ, सुंदरपाणि फ, सुदरपाणीइ ग.

८ तातवणु ड, तातवणो इग, आदेस क फ, कुंअर व, कुयर ड फ, कुयर इ, सिरनामी
व, शिरनामो क, शिरिनामी ड, शरनामी फ, शिरेनामि ग, हरखिउ अ क, हरख्यु
ड, हरख्यो इ ग, हरिख्य फ.

९ चाल्यु व, चालिउ क फ, चाल्यो ड ग, चालेइ इ, रुकमणिनइ वक, ऋषिमनिनइ ड,
ऋषिमणिनि इ, ऋषिमिणिनइ ग, ससारतणउ फ.

१० वदी व क ड इ फ, वदि ग, बोलि क, बोलि इ, बन्दवावाला व फ.

११ पाखरीया व ड, हेखारा क, तोषारा व ड, तुषारा क, तोखारा ग, पहलाण व, पह-
लाणि क, पल्हाण ड, पल्लोंण ग.

१२ श्रगाया ग, मयगल डमां नथी, चामर व, कानिचामर फ, कनि चामर ग, झाकझमाल
व, सोहिइ ड, सोहि इ फ, चितत व, चित्रनभाला फ.

१३ महमहोच्छव व, महामहोत्सव इ ग, महासुहछवि फ, मारगि नथी अकडगमा,
चालिइ इ. "ठामि ठामि" नथी डमा, नेहालइ इ, नभालइ फग, शुभ फ, सूकीन
फ, मनिमाहालइ व क ग, मनिमाहलइ ड, मनिमाहलि इ, मनिमाल्हइ फ.

१४ चिंतन इग, चिंतत ड, कउलाभ व, कोइलाभ क इ, अनेरउ क इ, अंतरालो व, अंतरालि
क, अनरीलि फ, हासइ व, होमइ क ड ग, होसिइं इ, होसिइ फ, अधिकेरउ क, अधि-
केरा इ, अेहवु व, अेहवु इ ग, शुकनउ ग, सुकुनउ व, सुकन ड, केरउ कइ, अधि-
केरू ड, अकेरून ग.

१५ जाणें व, जाणइ फ, स्वुन व, शुकुन ड, शुवन फग, जाण कफ, जाण ड इ ग, उघाण इफ, वागा इ, नीसाण क फ, निसाण ग.

१६ ठामि ठामि व ड, ठामोठामि क, ठामोठामि इ फ ग, सहू फ, आविइ इ, मेटिभली फ, विविधि व ड, लावइ इ, लाविं फ, कुमरनइ ब क, कुमरनिं इ, वधाविइ इ, वधावि फ, बधावइ ग

१७ दिनि व क, पीयाण ड, पीयाण व, पीयाण क, आविउ ब, आव्यू क इ, आव्युं ड ग, अहिठाण ड, जेहानही इ, नीवाण इ.

१८ कुमरि इ, कुयरइ फ, पाठव्या फ, थानिक इ, थानि फ, ल्याव्या ब क ड, अपूरवलाव्या इ फ.

ढाल ४

१ लाव्या इ फ, शेवक फ, धसमास्या व, करिजोडी फ, कहिइ इ, कहि फ, कुमरनइ कग, कुमारनिं इ, कुमरनइ फ, सामी व इ फ, स्वामी क, सविवेक ब ड, सुववेक इफ.

२ आदेस वक, आदिसि फ, लश्करि फ, चालिउ फ, चाल्या ड, दीठं व, दीठु डइग, अतिहइं ब.

३ पंकजते इ, अभिराम व ग, "जाणे" शब्द नथी ड मां, आविउ व क, आव्यु ग, जलनधि फ, तरस्यामुनि व, तरस्यानु कडफग, तरस्यानो इ, विसाराम फ.

४ हसी व, हस्ती फ, चालि क, वाएइ इ, मालवली ब, वलइवाली ड, चालिवली फ, चलइवली ग, चकोरा फ.

५ चातक ब, ढिंक व क ड इ ग, ढक फ, बलाका फ, मदनशालि ब, मदनसाल क ड ग, सुकुमाल क फ, शुकमाल ग, सुकपीक फ, कक गमा नथी, कटिल इ, कहसा ब, केलिकरि इ, कलिकरइ फ, वाचल फ.

६ मीन क, पाषठीन व, तरंग अ ड इ फ, तरग कग, कछप व, रंगा ब, रंग कड, करिता रंग फ, करता रग ग.

७ आगिइ इ, वछाहि वड, उच्छाहं क.

८ पालिइ क, पालि इ, पालिइ फ, अबवनइ व, अंववनि क ड, त्रिभुवन क, त्रिभोवन ड, रूपि व क, रूप फ ग, जयति य इयति फ.

९ वाला व इ ग, चालती फ, मोहनवेलि क फ ग, अवगणी व ग, फलनपति ब, फणति फ, वेलि व क.

१० अेलोय व, अम्हनिं इ, ढेखता ड, सेवि ब, रिव फ, वधिपरि फ, कानन ड, वनमाहि फ, माहइ व, माहिइ क, माहिंइ ड, माहइं इ, हेवि ग.

११ अेहवा डइ, विचन फ, शेवकना फ, थयु बकडइफग, भवधुत फ, यम इ, गराजिइं वकड, गजित इ, गरजति फ, गरजि ग, केकी कइफग, कीगाइ व, कींगाइ कड, गाइ इ, पेमपकि वग.

१२ अ ह मा आ कडी नथी; तेना पाठभेद–चालिऊ व फ, सदरि वकग, काजि क, जो व, जु फ, सुखराशि व, देखू व फ, मुरू व, तोमुसि इ, दाफ क फ.

१३ नाम डक, सुण्यु इफग, सुणिउ व, सुणूं इ, सुणउ फ; तेहतुं वड, तेहतुं कइफग, श्रवण फ, मार ग, लगइ वड, लाइ क, लगिइ व, मनि फग, उपन्यो वड उपनु कफ, उपनो ग, जाणइ कइ, जाणइं ग, मिल्ल केवार व, मिलुं किवार क, मलूं किवारि इ, मिलं किवहार फ, मिलं किवार ग.

१४ नाम वकडइ, जसुं अफ, साभलइ व, सामळउ क, सांभळइं ड, माभलिं इ, तव साभली फ; साभलिडं ग, लागउ क, नरनि इ, कीधो ग, आपुह व

१५ करंतो कइ, करतु डग, करतु फ, चालिउ क, चाल्यो ड, चालउ इ, दीठुं कइ, दोठउं वड, दीठो फ, आराम ड, कानन–इ, आव्युं फग, आविउ व, अव्युं ड.

१६ नीब इ, वहू क, बही फ, बीवल व, बाउलि क, बावलि क, बावलि ड, बावल फग, बोर डइ, केदंब फ, साल वकडइग, रसाल कड, वोल तमाल फ.

१७ पुन्नाग इ, पुगी वकडफ, बहु कड, ऊगी व, चग कडइफग, प्र अगु डकइ फ, सुरंग व, उत्तुंग क, मनोपत्रेन बदले कड, नारंगी अकडइ, लोल लर्चित वड.

१८ पनस वकडग, पनग इ, फणस फ, प्रियाल कड, बिजोरी ग, करमदा फ, दास ग, बदाम ड, केरालाल वकडइग, केलालाल फ.

१९ कुरबक व, असाक ग, कामीबकुल वडइग, केतकी क, केतक वडइ फ, मालति व

२० पाल्हेवालु वं, पाडलवालु कइफ, पाडलिवालु ड, पाडल वालो ग, करिइ इ, गूंजार ड, कउ कउ व, कहुकहु डइग, कोकिल बहू फ, शबद व, मबद डफ, सुणवि फ.

२१ अंम फ, कानन ड, जोतो डवइ, जोतू फग, अंबतलिं वड, अबतलि क इ, लइ वड, लइयं फगमां नथी, विश्राम वंइ, रूपतण वकग, रूपतणू ड, रूपतणु इ, धाम क, धीमा व.

२२ कुरलि फ, कुठील ग, भुयंगम कड, भुयग इ, परनालि वकडफ, परनाल ग, गोफणो कग, गोफणु डइफ, आइने बदले उपइ इमां छे, रहिउ कफ, आइरह्यू ड, आइरह्युं ग, नितंबइ क, निर्तिबइ ड, नितंबि इफ, सोहिं इ, सविशाली अं, सुविशाल कड, सुविशाल इफग,

२३ मदनसेरी फ, असा व, यमु इ, अठुमि वक, अठम फ, अठुमी ससी, सींगिण व, सींगणी कडइ, शीगणि फ, कांमनी क; कामिनी ड, कामनी इ, कामीनी सुमुहि फ, भमुह ग, अणिआलि वकडग, अणिआलि इ, अणीआली फ, मोह्या बेल इ, मोहया बेल फ.

२४ भंमहि ग, अणिआला व, मणिआलि ग, बाणि वकडइ, वाणें फ, बाण ग, जाण्इ व, जाने कइफ ग, जाणइ ड, जांणे लोधा तांणो फमां छे.

२५ सेविइ, सेव फ, बनवासी फ, नीरि वइग, दूरि पहूति इ, पहिति फ, पहति ग, ठामि अं, वलो इग; मनमहि वडफ, मामाहिं कग, मनमि इ, भींति ग, 'वलि' ड–मां नथी.

२६ दीपसंखा इ, दीपशाखा फ, नाशा उनत ब, नास्यारुन्नति क, कुसम इफग, अनुसार फ, मुखरूचि नीतइ ब, मुखरूचो कड, मुखरुचि जिपइ इ, मुखरूचि जिनइ ग, ससिहर इफ, ममहलि य, मदलि क.

२७ अधुर वडफ, दसति कड, देसनि व, मनिभूरि ड, मणिभूर इ, हेजिम व, हेजइ फ, जाणे कडइ, जाणइ ग, 'वरसइ जाणे' व , नुपुर ब, पगरनूपुरा ड, फूल पगरनु फ, फूलपगरनोपूर ग.

२८ श्रवणि पाप व, श्रवणि पासि ड, सोहि इ, फ, वीणी कमां छे, तणउ क, सुविस्याल कड, कलकठा व, सुरमाल डग.

२९ सुकमाल फ, सरीरा वक, कलस वकड, कुंबमारा फ, कुमारा ड, पीन क, जिती ड, करिकुंभी ड, 'जोवजन' युवजनने बदले छे, डमा

३० पंकजमाला ड, पंकजमाली फ, अगुलि वग, अगुल इ, जिम ग, पवाली फ, जिम ग, त्रिवल फ, त्रिशाली फ.

३१ निघ कड, रंभा थभा थभनीउरं फ उरमनोहरा इ, उर ग, मनेहर फ, जघ फ, जूली वफ, जुउली क, हूली ड, जुहुली इ, उनत ब, अगुलि ग, कुली ग.

३२ "गज" डमा नथी, पहिरा व, पहिरी कइफ, पहरी ग, प्रीत पटोली व, पीत पटकुली ड, पीतपटोली इ, सोहि फ, शृंगारा ब, शृंगार क

३३ माझु ड, मोझो इ, नादिइ वड, नादइ क, नादि वेधउ इ, नादि वेधु फ, नादिइ वेधुउ ग, लइ पामिउ वक, पाम्यु ड, ग, ल्यपामि फ.

३४ चितइ व, अवतरा व, मनिवर फ, मापि ग, कौतुक इ, आप व.

३५ आपो आपि इग, आयोआपोआपि फ, अमरी ड, समरी अग, जिवाहंति ग, जिवामहती व, काम अडइग, मोहनी ग, रूपि क, रूअइ फ, रूपि ग, मनमोरि इ, मनमोरइ फ.

३६ नयनबारथी इ, सुदरि क, सका ग, लहयू लहयुं, डग, जिम मरूथलि जलकुप क, जममरूथली जलकूप इ, निमजल लहयु अनूप ग.

३७ मोहइ य, माहिं कड, थआं ग, मेहदरसनि व, मेहदरशनि क, मेहनइ दरिसनि ड, मेहनि दरसणि इ, मेहदरिसनि ग, अमोइ वडफ, वूठ व, वूठुमेंह ड, वूठउ इ, बुठु मेह फ, वूठा मेह ग.

३८ किसइ वकड, किसह इ, किसिइ फ, किसइ ग, उपायि वक, उगयि ड, उगाय इफ, बोलावुस क, बोलावू डफ, बोलावु ग, मेहवु क, मेहवूं डग, मेहवु इ, चितइ इ, सैन्यतुणु ड, सैनतणउ इ, सैनितणउ फ, सैन्यतणुं ग.

३९ विलखु थयु डग, विलखउ थयु व, विलखो थउ इ, वलखउ थयु फ, अलोप वडइफ, यमहरिइ इ, जिम हरइ ग, पाडि फ, पाडई ग.

४० भणदीठानु वफ, अणदीठानु कडइग, दोठु व, दीठउ ड, इ, विधरेसाल फ, 'वकटइ व, विघटटे इ, भूक्षा फ, भोजिन व, डम, फो वरि इ.

४१ माहइं व, माहिड क, अकूरइ थी व, अकुराथी इग.

४२ मरकलडा ग, गिहिलं वड, पहिल क, पहल इ, पहिलं फ, ग, नेह डइ, भगाइ फग, हविंही इ, हिवइ फ, वाइं क, ठवेखी इ, काठवेस्त्री ग,

४३ प्राणतिज वड, प्राणतिजु कग, प्राणतिजु इ, प्राणतजूं फ, अउ कइ, अविपासुं व, पासु क, पमू डफ अहवू वड, अहवुं कग, अहेवु इ, चिति क, चिति इ, चित्त विति ग, लागु वडइ, सघलु वकग, तिणि व, तिणिघरि इ, तेणिपालि अन्य फ, तेणि थलि ग

४४ जोता जोता अकडइग, जोता जोता फ, दूरिगयु वकडयइ, दरि गयु ग, त्रिकल्स अग, सोवन फग, डंड ड, दंडने बदले "मडप छे गमां, गगनिस्यू व, गगनस्यूं क, गगनस्यु डइग, गगनसिऊं फ

४५ चद्रकांत सम वड, चद्रकातियम इ, उज्लु वकडफ, उजल इ, उमलो ग, तोरणा व, अठोत्तरसो ड, अठोत्तरसयो इ, अठोत्तरसय ग, फटिकमय व, फटिकइ फ, पावडीयारा फ, पावडियागा ग, झलकतिनी जग्याऐ "प्रसाद" व

४६ चिहुदसि फ, मरम वकडग, मरीखी फ, जलहन्इ ग, वातायण क, ठलि वकडइफ, चउवारु वड, चउवारउ क, चउवारो ग, प्रामावाताहा व मा छे, पोढि दीपइ पोलि गमा छे.

४७ पोल प्रवेश इ कीउ वकडइग, कीयु फ, कैतुकि क, कौतकइ फ, देखइ चइत सभाइ फ, हरिखिउ व, हरख्यु ड, हरख्यो इ, तिमयम इ, सागरमइं क, मध्यिइ ड, मीठी अ, सागरमाहि इ, सागरमध्ये फ.

४८ चुकी डग, उलोल व, अल्लोथ फ, नहीं व, विज्ञानि व, विविधि ड, कहुक फ, विज्ञान व, वज्ञान फ.

४९ सोवन ग, दडइं वकग, दंडिइं इ, सोहिक क, करग्रही इ, करीग्रही ग, तेजिइ क, तिजइ इ, तेजिइ फ, मोहि फ.

५० "भगर आमोरय" फ, वासि ग, दसदिसि वक, दसदसि डग, दशिदिशि इ, दसदसी फ, दसइदिसि ग, भमतीइ वक, प्रदक्षिण डइ, प्रदक्षण फ, पामिउ व, पाम्यु कग, पाम्यु डइ, पामि फ, हरिस फ.

ढाल ५

१ गमारि इ, ते गमायइ फ, ऋषभजिनंदनी ड, ऋषभजिन दन फ, रीषभजिणंदनी ग, दरिसनि ग, मीठोरे अ, पाम्यु वग, पाम्युं ड, पामिउ फ, कुयर इफ, जिमेसि व, ससि कग, सशि फ, यम इ, चकुर व, हरखि इ, शुद्ध व, शुधि क, त्रिकर शुधि ड, सुधि इफ, आणद क, शुद्धि व, करीनइ वकग, करीनि इ, स्तवइ वकड-इग, स्तवीय फ, वारोवार डइफ, वरिवार ग, पूजाकरीनि इ, करीनइ ग, मंडपि वकडइफग, मोइ फ, करग्रही क, आविउ वक, आव्यो ड, आव्यउ इ, आवि फ, तिहांकणि कडइ, तिहाकण फ, तिहाकण ग, रमझिमि अ, रमिझिमि क, रमझम

इग, रमझिम फ, कुमरि ड, करिती फ, करति ग, चन्द्रविदनी फ; आरोपति ग, हियडिरंगि ग, हीडइ रंग फ, नयनभाव इ, प्रणाम वकडग, करिंडइ कुंअर व, मणिइ ड, आव्या तुम्हे सज्जनने बदले "तुम्हे आव्या सज्जन" फ मां छे सजन व, अवतर्या वग, अवतरया कडइफ, कुलिकिहि ड, कुलकेहि इ, कुलिकहि ग, कुमरी वशावली अ मा छे, कहि उ, रषि व, ऋषि कहिइ कुमर तुम्ह इमा छे, कुमर-तुम्ह फ, दरसनि व, दरशनि क, दर्शनइ इ, दरसणि फ, रषिनु ब, ऋषिनु कइ, ऋषिनु डग, पूछि कुमररषिनु फ, बहुविधि ड, बहुवधि फ, तुम्हपास ड, कूउण क, कुण ड, एहनीं क, कहु वडग, कहोखरी इ, कहुंखरी फ.

चालि

२ अेहछि इफ, अेछइ ग, जिनपूजानइ वक, जिनपूजनि इ, महु कवड, "इम हुइ व्याघा-तरे" फमा छे, विघातरे इ, जिनपूजाकाजइ व, पूजाकाज कग, जिनपूजाकाजिरे इडफ, वेगइ वकडइ, वेगि ग, पोहतो इग, पुहुतउ व, पुहुतु कड, पहुतु फ, प्रकारि बक-डग, घनधुरि इ, "गभीर विन्दन धूनि" फ मा छे चैतिवंद फ, स्तवनकरि इ, जीवित फ, मूझ फ, तनुमन इ, शाशन व, शासन ड. ताहरूं ड, तहारूं इ, जोलहयू व, बउलहयु व, ओलहयुं ड, जउलहू इ, जुल्हीइ फ, तउ टल्यु व. तुटल्यु कड, तो टलुं इ, दु:खप्रविचार फ. त देव क, तु देव ग, ततवर्जिवित फ, माता शब्द नथी फमा, तुहजागति व, जगति फग, तुह जिगति क, तूहजगति ड, स्वामि कग, अभीराम इ, निसिदिवस वकडफग, सूता फ, बेसता ग, "निशि" अ मा छे, नि स्वप्नि वइ, सवपनि फ, नइ कड ताहरा व, ध्याना व, मोरूचिति फ, हुउ क, होयोमदालीन फ, रगरेलि ड, कुरंगरेल्या फ, चरण कइ, मुझ ग, माहारू क, माहारु डइ, चरणि कगइ, जेहालहु इ, जानलहू फ, सरस्वता ड, स्वासता फ, मुगतिना इ, जिननइ कइ, करिइ इ, "रुक्ष इम कहीं" फ मा छे तुझनि इ, आणता-हारी क, तकहारी इ, अणि फ.

ढाल ६

राग गुडीमांहइं

१ भावभलु कडग, भावभलो इ, "भाव घणउ" फ मा छे मनमाहइ व, मनमाहिइं क, मन-माहीइ डग, आवि व, ममाछइ अ, "बैठउ दिठउ राजसुत" ग मा छे

२ चकोरा कइ, लोयणा फ, संगि क, तरगि क, तरग इ, तुरंग फ

३. दृष्टइ इ, दृष्टि फ, दृष्ट ग, खिनखिन वइ, "ओडोदाष्टइ खिणि जोइ ड मां छे" हर्सात ग, खिरिइ इ, सूमुखो क, सनमुखी इ, सुनमुखी फ

४ सनेह न पाइ फ, नयने वडइ, नयणें वक, ऋणें फ, फिरफिरो ड, गाफणु क, गोफणू इ, गोफणो इ, अभाइ क, घणउ कइ, घणू ड, घणू ग

५. मिसिइ वड, मिसइ कग, मिसि इ, जिसि फ दिखाडइ ग, तनि त्रभंगी ब, इमबसइ अग, "मा छे" मदवसिइ ड, मदवसि इ, मदवसिइ फ, गरलभसी इ, हुइ ग, चांपाछोड वकड, मोडामोडि व.

६ सलाका कड, शालाका फ, चबकइं व, चबकइ क, याधिउ फ, दोरीइ व, नमनदोरीइ क, जाणि क, बिनचोरीइ क, चोरीही वड.

७. नयना कग, दूतीपणूं बडइफ, दूतीपणूं क, दुतीपणुं ग, मननइं मन अ, करि इ, अेछि फ, पछइ अ, पछि इ, अकगांणं व, अेकापणुं क, अेकंगणु ड, अेकांपणू इ, अका-रणूं फ, परि वडफग, परि इ, सहीयारोकरि इ, सहीयारु फ, सहियारू ग, मनइं य मा छे जिव्यइजिव फ, जिवि जिवा ग, प्रेमि फ, परिवरिइ इ, परवरइ फ.

८ प्रीयुस्युं क, प्रीउस्यु व, प्रउस्यु ड, प्रीउसिउ फ, प्रियेस्यु ग, लागु वकइफग, प्रेममन व, मनरुचिइं कग, मनरुचइ ड, मनरुचि इ, मनरुचिइ फ, सनापि इ, विचिइ क, ड, विचि इ, वचिइ फग, आणेक वस्तू य, वस्त फ, अवगणूं वडग, अवगणुं क, अव-गुणूं इ, प्रीउतणूं वडइ, प्रीउतणु कफग,

९. छि फ, प्राणीनइ व, पाणीनइ य, प्राणीन इ, नादइ व, नादिइ ड, नादीं इ, नादी फ, वेध्यू व, वेध्युमृगलु डग, वेध्यो मृग इ, वेध्यु मृग फ, मृगजिम कइ, मृगयम फ मा छे दीवामांहइ व, दीवामाहिं क, दीवामांहिं डग, दीवामाहि इ, दीवामाहि फ, तडफडिइ इ.

१० वेध्यू व, वेध्यु डग, वेध्यो इ, वधिउ फ दाह वकडग, सहिदाह फ, अली इ, माहइ य, माहि ड, माहिइ ग, मरिइ ड, आमिसनइ क, रमिइ ड, प्रेमिवसिइं कड प्रेमवसि ड, प्रेमवस्यइ फ

११ कुहुनइ क, कहुनइ डग, कहुनि ड, कहएनइ फ, वातु ड, माहियी ड, सातघात अग प्रेमतणो इ, पेमतणु ग, बुझइ इग, आपोभापि डइ, बुझइ आपि "व मा छे."

१२ बहर व, कींवु व, नयनान व, नयणानि कडइ नयणानि फ, सरिपातिग व, सरिपातक क, सिरिपतिक ड, सिरिपात्तिग फ, निसिदिनि ड, "चिंता बहइ अतीव" डमा छे, दहिं फ, प्रेम करयय क, प्रेमकीधु ड, प्रेमकरयो ड, प्रेमकरिउ फ, तीहां ग, बांध्या व बाधुजिव ड, बांधउ इ, बाध्यो जिव ग, नींद्रा ड, आणइ इ.

१३ मुखत्रस फ, नींद्रा ड, निगमी वइग, आणइ अड, तपशाइ फ, तपसावे ग, बोल्यूं चाल्यूं वकग, बोल्युं चाल्यु ड, बोलुं चालु ड, बोलि उ, व लि उ, कहिस्यु वकडग, कहिसुं ड. कुसतनु वग, दोहिलइ बकइ, दोहलइ ड, दोहिलइ ग, नीगमइं वग.

१४. "वालइ आयु" इ मा छे, मनमहि आणो वड, सुंदरी आणो मनमाहिं धीर कफ, मन मिंधीर इ, मनमाहि आणी धीर ग, कुमरनि पणि इ, मन ते एक एक कहायइ अ, मनइ मन पछइ एक वइ व, मनई मन कहाइ ड, मनि मन ते एक कहाइ इ, मनिइ मततव कहिवाइ फ.

१५ बिहुँनि इ, बेहूनइ फ, हुइ सरेखु ब, हुइ सारिपु, हुइसारपू ड, होइ सारिखु इ, हुइ सारिखु फ, तणूं पारिखू ब, तणउ पारिखूं फग, इणि फ, अेतलु बकडइफग, मेतलु ड, प्रेमतणुं मोटु ठग, आधारी ब, संसारिइ क, संसारि डफ, ससारिं इ.

१६ पुण्यवंत ग, जिवीतवइ फ, तस हवइ ब, सवि हुवइ फ, हिवइ क, "हवइ ते साही तापस" फमां छे कुमरनि ग, आव्यो वइ, आव्यू क, आव्यु डग, आविउ फ.

१७ चैत्यथिकी क, चैत्य उतरनइं ड, उतरनइं ड, उत्तरनइ बक, उत्तरनि इ, अडवए ब, उडवलु कै, उडवुं डइग, उडवउ फ, अेकअच्छ ग, सुप्रकाशि बड, सुप्रकाश कइ, कुमरनिं तेहा इ, पमाधुयूउ अ, अधिकु कड, "अे माहरु अधिकु आहलाद" फमां छे, अधिक ग, आल्हाद इ.

१८ कहिवा क, कहवा इ, लागु बडइफग, पुरवपात कइ, मन्त्रितावती बडइफ, मंचितावती क,

१९ तेहनि फ, प्रीयदर्शना अ, प्रीउदरशणा फ, प्रीय दरसिणा फ, दरसिणा फ, प्रियदर्शना ग, तासे ब, तासु ड.

२० रायरवाडी इ, ब, सचडो ब, सचरथ्यु ड, सचरिउ इ, सचर्यो ग, अेकदिनि बग, अेकदिनी फ, चतुरंगदल बकडइग, चितुरंगमदल फ, परिवर्यो ब, परिवर्येउ क, परवर्यु ड, परवरिउ इ, परवर्यो ग, श्रकलहय ग, आयु बडग, आवो इ, "अस्वकलम अेक आयु मेटि" फमां छे, जेहवु वकग, जेहवुं इ.

२१ तेणइ क, तेणइ थयु डफग, तेण थयु इ, तुरगम क, कीधु बकइ, तरंगइ कीधो ग, वायूं ब, वायुं ड, वारयो न रहि इ, वारिउ न रहिइ फ, वायूंग व्यसनी ड, व्यसना जेमजेम व, विस्यनी जेम फ, उल्लांघी ड, उलांघिउ फ, परवतनी शीम फ.

ढाल ७

१ आण्यउ क, आन्यु ड, आण्यां इ, आणु फ, आण्युं ग, कांनन क, कान ड, अेकलु कडग, अेकला इ, आकलउ ब, आकलु कडइ, आकुलु फ, आकल्यु ग, आलबी इ, तरुडाल बक, तरुयरडालि इ, "अवलबी डालीं" फमां छे, तुरगनि क, महेलिउ ब, मेहल्यु डग, मेहल्यो इ, मल्हउ फ, भूपाल बकड.

२ मोलइं मोडइं ब, मुडइ मुडइं इ, मोडइ मोडइ फ, तरुथउ कइ, तुरपो फ, उतरिइ इ, उतरइ फ, उतरइ ग, जोतो बग, वनिजोतु ड, वनजोतु फ, फिरिइ इ, दीठ ब, दीठु कडग, सरुवर चग इ, शशिहर फ, जहा इ, नीर तरंगि ब.

३ विरही विरही क, यम च, वरहो फ, पीयमुख वडइ, प्रियमुख देख कग, मयसुखदेखि फ, मनमांहि वग, मनमा इ, पांमि फ, विसेप ब, क, विशेष इग, वश्येष फ, रलीआय ब, रलीयायत कइफ, रलिआयत ग, थयु वकडइफग, ससिचकोरा गहिगह्यू ब, चकोरा मनगहिगयु क, ससिचकोर गहिगहइ ड, यमससि गहइगहयो इ, महिगयु फ, गहिगुहयउ ग.

४ त्रपततयु ब, तृपथयु क, तृपततयु ड, थयु तृप्त इ, तृपतु (तृ)पतु फ, तृपतथयु ग, राजाइं कग, रती ग.

५ सरखूं वड, सरखुं कग, सरीखउ फ, पामिउ वकडफ, पामु ड, अदिक फ, पाम्यु ग, अधिकउ व, चालिउ वफ, चाल्यू क, चाल्यु ड, चाल्यो इ, धरीय व, धरीय ववेक फ.

६ कछमहाकछ कग, कच्छमाहाकच्छु फ, वशशृंगार फग, वश्वल्लत फ, विश्वभूति व, कुलपतिनइ इ, कीधु प्रणाम व, कीध प्रणाम क, राजाइं व.

७. निरमल कडग, नरमल इफ, यू आनंद क, यु आनद डग, यो आनद इ, दिउ आणंद फ, रषि व, आसीस ड, माहोमाहाइ व, माहोमांहि कग, कुसल फ, पूछइ ग.

८ अेहेवइ कुलाहाल इ, अेहवि कुल्हाल फ, उछलिउ वक, उछल्या ड, उछलिअ इ, उछल्यु फ, उछल्यु ग, खलखल भल्यू व, खल भदिउ क, खलभल्यो ड, खलभलउ इ, खलभल्यु ग, राजाकहि इफग, मनिमाणू वकग, मनिमानु ड, मनिमाणो इ, मनिमाणिउ फ, आति फ, नही वड, रिति ग

९ सैन फ, कर्म उनसारि फ, इनइ कग, अेणे फ, निधार ड, निर्धारि फ, निर्घार ग, अेहवूं क, अेहेवु इ, अेहवू फग, उठउ इ, उठी अग, उतारयु क, उतारयो इ, उतारइ ग, थारि फ.

१० मासि क, वेणि व, तिणइ इ, तेणइ ग, रहयो इ, रहयु ग, ऋषभतणो इ, ऋषभतणु ड, कराविउ क, अेककराव्उ इ, कराव्यु ग, उहलादि वफ, आहलाद क, उल्हादि ड, अहार्लाद इ.

११ दीउ वकग, राजानिदीउ इ, दीयु फ, तापस ड, तापसइ क, अतिथ धरम फ, कीउ वकडइग, कीधु फ, हिवइ व, मदिर वइग, आव्यु वकडइ, राज्य वड, हरिइ इ, अन्याइ फ.

१२ इकदिनि ग, कोय फ, आविउ फ, आव्यु डइग, माहमति सोय फ, विनयपुरव फ, विनयपूर्व ग, करि इ, वाणी वग, उच्चरिइ इ, मुखी ग.

१३ उपागारी इ, सुणो तुम्हें इ, सुंणि छइं क, अेकछि फ, मोटु धर्मनु वकडइ, धर्मनू फ, पिदर्शन क, प्रियुदर्शनछि फ.

१४ प्रीतिमती ड, तेहनि इ नंदनी फ, रूपि इ, आनदनी इ, नागि वइ, नागिदंश्री क, नागदस्यी फ, नागइ डसि ग, थयु वकडग, थउ इ.

१५ विणु इ, नृपनि इ, वइदिइ विवीध फ, पण व, थाय डइ, तेहनि किसु इ, तसु गुण नवि थाइ क.

१६ उपकारि व, उपगारि क, शिरोमणि कड, सरोमणि इ, इ्रू वकड, मोकल्युं वकडग, 'अे अवसर' वकड, उपगारनउ फ, उपगारनो इग, घणु ड, "जे वीवसइ तुम्हनइं रूस घणउ" फमा छे.

१७ स्युं ड, स्यूं व, काउ क, करिइ इ, अजूआलुं वड, अजिआलुं क, अजूयालुं करि इ, अजूयालु फ, शशीसूरि फ.

१८ ज्याग्या वकड, विणु इ, तुर फ, करि इ, आपणपइं ड, आपणपिं इ, आपणयइ ग, अणुंसरइ ड, आणुसरइ इ, आताप तणसरइ फ, सहूकहिनइ वकड, सहूकहनइ ग, सजन वकड, सरखा वड, सरीसा इ.

१९ सिहिजइ ब, सहजइ क, सहिजि फ, करि इ, सहिजि परनइ करइ फ, वछिइ नही इ, लगार ब, तेणइ क, सजनि ब, सुजनइ फ, सज्जन ग, सोहि इ, शोभइ ड, उगतइ तसु पूज्यइं अ.

२० हिवइ ब, स्वामी इग, मल्हावउ क, वेगिइं ब, वेगि ग, अबलानीं क, करो इ, करउ फ, करामि ब, आरूही ड, सुणीनेइराय फ, आरोती इ, करिभि अरोही पेगि जाय फ, वेगेइं बकड, वेगि इ, यारेही वेगिइं जाइ ग

२१ मत्रि इ, वाल्यु कबफ, वाल्यु डइग, वाल्हयेवली फ, मगल ड, वाणी ड, प्रियदर्श-नराय बक, तेहनि इ, उछाहि बइग, उच्छाहि कड.

२२ हरषेणह ड, प्रीतीमतीनि इ, आवित ब, आव्यु क, आव्यो ड, आवु इ, निज ( ) री ब, नीजपुरी इ, भूआल बक.

२३ गयु बकडइग, केतोकाल इ, केतुउकाल क, पामिउ ब, पाम्यउ क, पाम्यु डग, पामउ इ, यौवन क, "यौवनन विशाल" इ, योनरसाल फ, राजिमार फ, तेहनइ बडफ, नेहनि इ, घरी ग, सिर धरि इ, वर्ते क, आदरिइ इ.

२४ विस्वभूरि क, तापना ब, पायउ, सेविइ इ, अनुदिनो ब, प्रीतिवतीनइं ड, अेहवि इ, गर्भनधि बड, क्रमिं क्रमिं क, क्रमि कमिइ ड.

२५ पकट ग, प्रगटइ फ, पंचममास क, पचममासि ड, पंचमेमासि ग, "पीन सुपकास" कर्मां छे, सुप्रकाश ड, सुकास इ, गोरगल ब, गोरगल्ल क, गोरगल ड, त्रिवलीतु कडइग

२६ मतलजा ब, लजाकारणि ड, अेहवु बइ, अेहवुं क, अेहवु डग, राजादेखीनि इ, अभिनवुं बकइ, अभिनवूं डग, अेकांतिइ बकड, अेकाति इ, अेकाति फ, मनि कइफग, धउतो इ.

२७ अेसही कइ, तेणि ब, तेणइ कडइग, समिइ इ, पणमइं बग, प्रियनइ बक, प्रियनि इ, इमहिइ ड, वेहू ड, बिहू ग, चिंतिइ क, चिंति इ, चित ग, विमाशी रहि फ

२८ ठामि बकइफ, ठामि ड, आपणि ठाम ग, अनेरे ब, अनेरि इ, जस्यू क, जस्यु डग, जस्यु इ, जसिउ फ, अहींसही रसि करसइ हसुं ब, 'अही रहिता करसइहसुं' क, कहिइ सहू करसइ हसुं ड, कईइ कमरहस्यु इ, अही रहिइ करस्यइ हसु फ, अहिइ सहू ऋषिकरसि हसु ग, वीती बडइ, यती क, सुता इ, बिहु क, बेहू ब, जगां बहु इ, पहिवइसा ब, प्रहिवाहिसी कग, प्रहिवइसी ड, प्रहिवहसी इ, जमिइ इ.

२९ जोइ तु ब, जोइ तु, सरसुकु बइग, सरसुंकु कड, त्यजइ बकड, त्यजइ इ, तजइ फ, तजइ ग, उभन्जइ ड

३० मद मद बफ, जातु बकडफग, मंदर इ, मुनिअेक बडइग, सविवेक बडग, सुविवेकु फ, राजऋषि क, काइ ड, पूछिकाइ फ, पूछइ काअे ग, गआ फ

३१ ते तास ड, आणि बडग, बोरिहार अ, सगिंवृथा अ, झल्लिरि इ, झल्लरी ग, व्रथा बड, वृथा अग, प्रहारनयथी क.

३२ बिपमश्रत फ, यमहेय इ, कुसगति ग, वरजेह इ, वरजेइ कफ, बायस फ, होषी

क, हाणायु वकडइ, हाणाड्डु, हणायुं ग, सर्पिणि व, विसर्पिणि कइ, मतकुण ड, विसर्पिणि ग.

३३ वापण वफ, वापनु ड, वायु पनइ, वायपणि ग, कुष्टीनु वज्जेवु कड, कुठिनो इ, वर्जिवठ फ, वज्जृवठ ग, डाहि व, कुशंगति अ, कुसगतेम इ, तरजवु व, तजुवुने बदले वर्जवु डमा, तजवठ फ, तज्जृवठ ग, वहिड कड, वहछ इ, विहिड फ, बहुले ग, गयु कडग, गठ इ, विळखु थइ रह्यु वकड, विलेखा थइ रहठ इ, विलखु थइ रहिठ फ

३४ ते निंदी रह्या क, "निदी रह्या" इ, तंदी ते रह्या फ, निंदि ग, सरखा वक, सरखागया ड, सरिखागया ग, पूरण वडइ, पूरणमास क, पूरइमासि फ, पूरणमासि ग, सुविलास कफ.

३५ ऋषिप्रसाद ग, नामिइं व, नाइ ड, रिषिदत्ता नामि इ, नामि ग, सुयरोगि वइ, सूयरोगिइं फ, सूअरोगी ग, पामी व, प्रीतिमतीना पुहुंता फ, पुहुता वड, पुहतां इ.

३६ तें वालानइ वक, पालइ ग, रूपलाइ ग, ते वालइ फ, वलाइ वडइ, अणि ड, जिपती फ, तातिइ ड.

३७ रूपवति व, रूपवंती इग, हवइ ग, कठ दूष्टपणु व, दुष्टपणुं कइग, दुष्टपणूं ड, चीतवइ अ, चीचतवइ इ, लोचन इफग, लोचन शुधि ड, अद्रशीकरण डइफ, अदशीकरण ग, मइं कग, कीध ग.

३८ हतात व, मइ अ, "तुझं सघली कहीं वात" अवकइफग, इणीइं आपिं इ, आपइ अ, दरसन क, दरिसन ड, दरसण फ, हरिशन ग, दिद्ध ग, तुं देखीनिं इ, मोहि ग, मूंधि वड, मुधि क, मुधि फ, मुद्धि ग.

ढाल ८

१ कुमरतुं वडग, कुमरतुं क, कुमरनु फ, शसि अ, ससि क, वसि अ, नेहवधि क, नेहवसइं ड, मनु सुताअे फ, नयण क, नयन खंचइअे फ, "अंचमे ने बदले पंमे छे" अवमे ड, मरकल ग, गुंणयुताए क, वेधविलुघडी अे कडइग, मनस्यू वकफ, मनस्यु डग, मऊंसुं इ, वयुं व, वेधरू फ, वस्यठ ग, सविगुणइ परिवरिठ व, सविगुणी परिवर्यु क, सविगुणपरिवयु ड, सविगुणि परवरीठ य, परवरू फ, सविगुण परिवर्या ग, अंखडीअ इ, करीधरी आखडी फ, अखडी अ.

त्रूटक

अवराहि इ, अवराह ग, मनमाहि ड, करीमाहिं इ, अगिनलही क, अंगिति फ, अंगितिइ ग, रुधिठ व, रुध्यठ क, रुंध्यु डग, रहि ग, रुंध्योरहि इ, रुंध्युरहि फ, किम क, ठलतीयां व, अलटिठ फ, ठनयु वड, ठनहयु क, ठननठ इ, ढाक्यु वक, ढाक्यु ड, ढाक्यो इ, ढाकिठ फ, ढाक्यो ग, कहिनु कग, कहितु ड, कहहनु फ, यचन डइ, पकट फ, करिइ इ, कुमरणि वकड, कुमरपण्य फ, कुमरिपणि ग, तसपेमलवधु वडफ, लुधठ क, लधु इ, तेहनु फ, मनि वडग, मनिध क, तेहनि मति घरिइ इ, (मुनिघरी फ)

चालि

२ मुनिवरी फ, बेहू बग, बेहु इ, तणु ड, तणुं ग, दुधसाकर मिल्या अे बक, डफग, दुधसाकर मल्याअे इ, अतिहइं उमाहइं ब, उमाहइ ड, उमाहेअे ग, करती फग, वीहावाहए ब, वीहवाह फ, चितत फ, विवाहअे ग, बेहूतंणा बक, फल्याअे बकड· इग, चंदमइ अ, रतिअनि इ, लक्ष्मी बड, लखमी इग, कुमरीअे बड, कुमरनइ कुमरी अ, क, कुमरनि कुमरीय इफग, सयोगिइ अे डफ, सायोगिइए इग, माआनद ग, वपनु अे क, उपमोअे इ.

त्रूटक

वपनु कड, उपनु फ, उपजइ ग, पालविउ बकफ, छाल्ह्यु डइग, प्रीतिनु कफ, पीतिनो इ, पीतिनु ग, पणि व, रहू ब, रहिउ कफ, रह्यु डग, रह्यो इ, दीन्ह ग, मुखपणि थइ कडफ, मुखपणिइ थइ इ, मुखथइ पणि ग, कुशमनइं ब, कुशनइं ड, कुसुमनि इ, सबधि अ, हुइ सुगंध ब, तेलहुइ सुंगध कडग, होइ सुगध इ, "तैल निर्मल" बमां छे, पामति ग, पामीते क, संगतिइ डग, सगतिं इ, तणो होइ इ, होत प्रकास फ, गुणतणु होत प्रकाश ग.

चालि

३ प्रेमनु बकफ, प्रेमनु ग, प्रेमनो इ, बेहनउ अ, बेहनु कफ, बेहुनु ड, बेहुनो इ, बेहनउ ग, मनमाहइ ब, मनमाहिं क, मामाहइं ड, मनमाहि फ, अतिलहीइअे ड, लाहिगहिली अनइं अ, नइ बफ, गहेलि क, गहइलीनइं ड, गहेलीनइ इ, मतकिम ग, दुखदे ब, मन दुखदाखइं अे कइ, दुखदेइहि ड, मतमिक दूखदीउ फ, अेम कहइ ब, अेमकहि अे फ, भलामण बकइफग, मोकलामण कफग, मोकल्यामण ड, नवकारतणु बग, नवकारणु इ, पुत्रीतुन इ, पुत्रीनु इ, पुत्रीनुड ग, पुत्रीसु विरहि फ, अे अब, वधारानो शब्द छे, सहिहु ब, सहयु डग, मिसहयू इ, सहूआइए फ, अणुसरिइ अे इ.

त्रूटक

अणुसरइ ब, अणुसरि इ, जांम अ, जामा ड, पाम्यु ड, पामिउ कइफ, तांम अ, तलवलि इ, तांम अ, दिन ग, "सिरहइं ने बदले विणरहइं छे" सिरहिं इ, यम नीरवाण ण रहइ फ, विरहइ ग, करुणागार क, सौजन्यनु कड, सौजन्युनुं इग, सोजनिनु फ, "केही कोहि हित सीख" क, कहि केहि ड, केहि केहि ग, काइकहु कहु इ, चींती फ, चींति बड, चींति क, चिंती समरू इ, समरूं चिंति ग, दूरथी देखी ब, "प्रणयने बदले प्रगम" छे, नयण बग, तेडउ ग, तेडतु बकड, तेडतो इ, तडपउ फ, हीतघरी इ.

चालि

४ आरोपीनिं इ, आरोपीनइ ग, सवेतनु इ, फरसतु बकड, फरसतोअे इ, फरसनु अे ग, चूमन फ, खीणखीण ग, खिणमाहरइ ड, माहरिइ इ, मनमना भाषितिं इ, भाषिति

हसतु ग, हरखतो अे इ, खिणिखिणि व, समरतइ क, निसि दिन इग, घनपणि गफ, अेकनति ग, तातजिइ च, "कांइ वनतिजिमे ने बदले तातजिमे चमा छे" का तातनी अे क, प्राण तजांइ काइं तातजि अे इ, प्राण न कांइ जाइ तन तजि ग.

त्रूटक

प्राणन काइ न तजिअे फ, प्राण ग, तुउ क, तु ड, तुं ग, हूं कडइग, निरवांणि च, नरवाणि फ, परहरी क, दोम क, केहइ देसि ड, दोसिइ फ, केहेइ ग, अंति घरयो हूइ काइ रोस इ, का तइ ग, तइका व, कातिइ चड, हूती इ, कहा चकडग, काही वसी फ, बेठी ग, प्रीउ पासि अ, सुतविलाश व, सविलास कग, सुविलास ड, सुविसाला इ, विलास क, सुविलासि ड, सुतसिउ व, सुतस्यु कडग, सुतसुं इ, हरि-खीया फ, अविधि ग, तातजिनइ चडग, तातजिनिइ पाइ क, तेरउर फ "रोरने बदले मेरो कमा छे" मनोरथ तेणी क, रीतिइ इ, मनमाहइ व, मामांहि क, हरी मन-नाहि ड, मनमाहि इ.

चालि

५ मनमांहि क, मनमांहि डइ, मामाहि फ, मनमाहि ग, अेम ग, वचने ड, वचनइ फ, ठार वइ अे फ, वारवइ अे ग, सुदरि क, अेवडु कडग, मनिकरठ फ, अेमडो इ, स्योकये फ, सोकअे व, हविअे फ, चक्रवृत्ति अ, चक्रवति ड, चक्रधर फग, सुर-(पति) शब्द नथी फमा, बलवंतिइं क, बलवतइ ड, बलवति इ, बल्वंत फ, मरण-स्यु कडग, मरणसु इ, कोइ न जगमाहिइ क, कोइ न जगणिहिइ ड, जगमांहिइं ग, जगमाहइं इ, जगमइ फ, विचाणोय कड, विवाणी अे ग, कुशलनि इ, कालकुसलनि फ, कुशलनइ ग, वलइअे ड.

त्रूटक

पुराण फ, नही वड, निवाण अ, निवाण वड, जाण अजाण अ, सीरिस इ, शरिस फ, देवसठप्राण व, जहवुं व, जेहवु क, जेहवो इ, कुशअग्रे बकड, कुशअग्नि ग, लेहवउ इफ, जेहवु व, नही अ, निमिषतु व, नमिषतु ड, नीमिषनो इ, नहींषणठ विसास कडी डमां नथी, नीमिषनु ग, जिविति कग, अेहवूं गव, अेहवुं क डक, सोकज ग, विलम न करइ डफ, वीसास साचो जिवित वधारानो शब्द इमां छे, इम जाणी करी इ, विलबन करइ इ, "परिहरी ने बदले अणुसरी डमा छे, सोकज ग.

ढाल ९

१ कतिके वड, कतिके फ, बुझवी इ, गुणवती रे अ, गुणवणी रे क, आराधि ड, आराधइ ग, सवेकिइ फ, विवेकाणि ग, धर्म्म व, प्रेमिइं व, प्रेमइ ग, पदमिनि वकग, पदमनी इ, "सासइं ससइरे ने बदले फक्त सासइरे" ज छे वमा, सासइ ड, पीउ पासइ इ, पीउ सासि फ, ससइंरे ग, सदा वसइरे बक, वसिरे इ.

२ प्रियचरिता डइ, प्रीयचिरता इ, प्रीय थिरता फ, अतिहइ व, उदारके ड, वात्सल्य करि इ, वाच्छलय करइ फ, करइ शब्द अमा नथी, अतीव क, अतिप्पति फ, के [illegible]

क, पतिपरवारिनि रे इ; जाणइ ड; कल्पजाण फ, घरबारण ब, बारणेरे ड, घरबार-णिरे ग.

३ जाणि कड, जाणइ फ, अविकिथनारे ब, संतोषानी इ, घरमना ड, देमाहारि क, दिणि हरि कि ड, देवाहारि इ, देणहारके नही फ, नहीमनि ब, नहींमणि ड, आतरूरे ड, 'नहीं मनि आतरू रे.. सती' त्यासुधीनी कडी फमा नथी, लहिइ इ, लहयइ ग, पूण्य ग, प्रगटिउ ब, प्रगटयु ड, प्ररके प्रगटूं इ.

४ सुभग सुखलिणा इ, शामा बडग, श्यामा क, पांमी अ, हवइस्यू बकडइ, हवइस्य मांह-रइ नून मनादित्त सवि पल्हरे फ, महारइ इ, माहरे ग, मनिषीत ग, फल्यु रि ब, पल्यूंरे क, फल्युं रे डइग, जेहेवानी ड, हुती तरसके ब, हूती ड, हूंति ग, तेहवूं बकडग, तेहेवुं इ, तेहव्यू फ, मिल्युं बक, मिल्योरे ड, अेमल्यूंरे इ, मलयूरे फ, मील्युरे ग.

५ जाणता हुंता अ, जाणताहूंता ड, किमिहइ क, किमहइ ड, पामिउ पाम्युं कडइ, पाम्यूं ग, अमूलिक बक, अमलिक ड, रयण शब्द इमां नथी, अमूलिकेतो इ, अमूलिकि ग, कुण बडग, तु तु कुण क, कुण तडफडिइरे इ, खांडनइ थानकि बकड, खांडनिं थानिक इ, खाडनिइं ग, खांडनइ थाकि फ, पामी वकडग, नहीरे ब, नथीरे कफग.

६ अलविइं ग, लीबु ब, नीरतणी ग, परइ ड, परिं ग, सहस्यू बग, सहस्यू कड, सहूइ इ, सरिखूरे ग, सारिखूरे ब, तेस्यू वकग, तस्युं ड, तेसुइ माणस अ, जमसनि ब, माणस जेम ड, जासमनिं इ, पारिखूरे ब, पारिखुं डइ, पारख ग, फटक बफ, कउण ब, कुण कड, मलइरे फ, वरला फ, जगमाहि के बड, जगिमाहिकि ड, जगमाहिके इफ, प्रीतिइ क, प्रीतिं डइ, प्रीतिंइ ग.

७ गजबलइ फ, नागर खेलावणारे इ, नाग खेलावणारे ग, दुहिला बकड, दुहेला इग, खरी दोहली तेहवइ प्रीतके पालनी रे फ, अटमजरि ग, अबमजरि ड, कोइलि ब, कोयलि अवरिस्यूं फ, अवस्यू ब, अवरसरयूं ग, चातकमित्र अवरस्यु नवि रमइरे अ, मति-गमइरे ड, विणुवेकमनि इ, अवरको फग, मन्नि ब, अवस्यू ब, न वधारानो शब्द.

८ ससिस्यू ब, ससिस्यउ क, ससिस्यु ड, नहीं ब, ससनेहा ससनेहि फ, ससिसुं ग, ससनेही अ, कमलिनि ब, कमलिनि कग, कमलिन ड, ते ग, प्रमाण कड, अेक-मनांरे बग, प्रीतिइं बग, प्रीति ड, विइनारीनु क, वइनारीनु डफ, मइनारीनो इ, वेनारीनु ग, कहउ इ, कत...सककइ बफ, (मनि शब्द नथी), तिहारइ ब, तेहारिं इ, तिहारइं अ, तेहनु कडग, तेहनो इ, जेहस्यउ मिलइ रे इफ, जेहस्यूं बकग, नेहस्यूं ड, जिहारइ ड, जेहारिं जेहस्युं इ, जेस्यू फ

९ बहुनारीनु ड, बेठनारीनु इ, बहु अ, नारीवल्लभ फ, सूउकि क, बेहु नारीनउ ग, ओपम ब, उपम इ, सउकि बड, सालके ब, सालिकि क, प्रजलिइ क, प्रजवलि स्त्रीमनिंरे इ, स्त्रीमनिरे फग, सुउकिथी क, सोकिथी ड, सुकिथी फ, सुकीथी ग, कहिइरे कड, वनीता इ, कहइरे इफ, विनता फ, तुउ क, मांणसनूं अ, तो प्रीय इ, वलिभ कहकि फ, कहु बड, कहव शब्द कइगमां नथी, आ " " चिन्ह वच्चेनी कडी अवमा नथी.

१० अेहवुं चिंतिइ व, अेहवुं ड, चिंतिकि ड, अेहवुं चीतवी इ, अेहविठ उचित क, चितइ अ, चिंतिकि अ, चितके च, चींती चिंति कि क, चिन्न फ, सतगुणी रे फ, ऋषिदत्तनि वइ, ऋषिदत्तानइं डग, रपिदत्तानइ फ, मोहिके चफ, मोहिके डइ, ऋषिमिणि ड, रिपमणी ई, रषिमणि फ, अवगणीरे क, उवगुणीरे फ, ऋपमणी अवगुणिरे ग, वल्यु वड, वला इ, वचखिण फ, मंदिरि सड, करि इ, मुक्तामणीरे ड.

११ वनतरुनि इ, कहिसुदरि इ, कहि फग, लोयणांरे वकडइफग, अपराध के च, बंधवमाहरा रे च, धधव मुझतणारे वकडग, बंधव इ, बंधव मझतणा रे फ, कुसुम क, कुसम वड, सभारके व, सभारकइ ड, सभारणि इ, सवादकि डग, सादके इ, नवनवारे ड, दिन दिन नवारे ग.

१२ सहीअ संमाणी अ, सहीसमाणी क, तव कइग, ठेलिस्यूं दे ब, वेलिस्यूं दिइ फ, वेलिस्युं ड, दिइ इ, वेलिस्यूं दिइ फ, वेलिस्युं दइ ग, हीत इ, पुत्र समांणी इ, संमाणा अ, रोमिकि डइ, रोप के च, सीचइ व, आसु व, असुजलइरे क, असुंजलइरे ड, आसूजलिरे इ, दिइ आसोस कडइ, दइ च, फलियो फ, फलिरे इ.

१३ वनदेवतिनइ वक, मोकलावि फ, केकिस्यू वक, किकिस्युं ड सूक नेकीछुं इ, केकस्यूं फ, वलवंतीरे फ, विलयती व, जाणत क, जाणु डग, जिणो इ, परिहीरे क, बहिन नइं कडग, वोहनिनइ ई, न मनइ घरी फ.

१४ मृगलीनि काहि इ, मृगलीनइ क, मृगलानइ ग, प्रेमसखि वड, प्रियसखि क, कहि प्रियसखि फ, प्रियसखी ग, प्रांणथी अ, प्रियारे डग, तुम्ह प्रियारे क, तुं प्रीयारे इ, हूं परदेसणि इ, परबीणि ग, उतारु ग, तातजिनु वकडफ, तातजिनुं थानिक इ, तातजिनुं थानकि ग, थानक अ, कारयूंरे व, करयुरे क, करुरे डग, कलरे इ, हुं ग, विचिंतात क, चिंतिके अ, तितिकि कग, तितिके ड, चिंतके फ, नुठ ब, नहतु ग

१५ सरिखा क, सरखा ड, मृगबालिक व, सवे खल्बालारे इ, चालती जाणी मलीरे इ, सुदरि फ, सुंदरि ग, मल्यारे फ, मल्यारे ग, उछंगिके ब, उत्संगि ग, वाहला ग, प्रांगर्थीरें अ, पाखथी रे अ, निज करि प्रामिकि क, परिवया पाखतीरे कग, परिवरयां ड, करि प्रेमिके इ, निजकरि प्रेमके परिवरा पाखतीरे फ.

१६ तेहंनई ड, तेहनइ ग, सरली वकडग, मजसरीगी फ, जेहेवो इ, पांणी अ, दाखि इ, दोषाइ व, दाखइ ग, छाहिकि ग, अवकइ शब्द गमा नथी, विदेसी वक, वदेसी फ, विदेसि ग.

१७ उचाठ अ, स्यूं वक, ऊंचाउस्युं ड, कुण वकडग, कुणकरिरे इ, करेइरे ग, जंतकि क, जातके इ, जतके फ, मृगबालक कग, मृ गलिक ड, मेलती इ, गहिबरीरे बडग, नेहनी महिबरीरे क, गहबरीरे इ, अेक "रढी" शब्द अबडइगमां नथी, भरया ड.

१८ कातन अ, कामिन फ, कामिनी अ, पीउस्यू व, प्रीउसुं इ, प्रोयुसिठ फ, पिउस्यूं ग, सोहि वड, सोहिइ फ, जेमकि ससिसंगि क, जेम इ, जमकेससीसंगि यामनीरे फ, "पीउस्यठं ... यामिनीरे" आखी कडी डमां नथी. खिणखिण डइग, वियोगनुं बकइग, वियोगनु ड, दुःखके व, पोउतस वग, ठारइं चीति वग, ठारइ चिंतकि

क, ठारइ चीति ड, वारि चित्तिके इफ, विनोदिइ बड, बिनोदि इ, वनोदिइ फ, विनोदि ग, नयनप्रहरे क.

१९ श्रेणि शब्द फमां नथी, आस्यइ बड, लयावयु बक, लाव्यु ड, हरीबर्षकाती इ, लाव्यो इ. लिविउ फ, ल्यावु ग, सवादके इ, मनमांहि कडइफ, मनमाहके ब.

ढाल १०

राग धन्यासी

विदेहीना देहइं रामइंया राम-ओ देशी

१ दिनि बड, वेतइ बक, नयरिं इ, सपरिवार वकडइफग, आव्याजि ड, आव्याजि कग, परमानदिइ बफ, हेमरथराय इ, परमानंदि इ, परमानदि इ,ग, विविध ने वदले नयरी बमां छे.

२ तलीआं क, तलीया डगफ, तल्यिां इ, अतिहइ बग, अतिहिं डइ, तेहा इ, सोहिजि बइफ, मोहिजि बफ.

३ लहलहि ब, लहइलहइ कइ, "लहइ" बीजीवार नथी डमा, लहिहइ फ, लहिलहि ग, ऊपर ग, वच्या ब, बाधीपरांअचि ब, परीयछ इ, परीयचि फ, परियच ग.

४ कुकु मरोला ग, कूकुमरीला इ, फूलफगर फ, कृष्णगुरूना फग, गाइण बडग, गायन वइफ.

५ नाकिं ग, ठामोठामि बग, ठामोठामि ड, ठामोठामिं इ, बरदावली इ, बिंदिजन ड, वाजइ ड, वाजइ इ, सुहासिणि वकग, बोलि इ, गाय सोहासणि इ, गायसोहासिणि फ, कोडिइजि ड, कोडिजिणे वदले टोडेजि इमा.

६ गउजि ड, गोखि वड, जडीनइ कडफ, जडीनिं इ, कौतक वडफग, वद्रजि बड, बृदजि इ, सोहि इ, साथिइ रोहिणिस्यू ब, रोहिणिस्यु ड, यमरोहीणीसु इ, अहिविदीइ वकडफ, अहविही इ, सुहिविदीइ ग, परिअण व, परियण कफ, परीअण ब, परीयण ड, हरख्यां बकड, रहूने वदले सवि फमा छे, पुहुती वकड.

७ आणि अ, विनंत बकडफ मा वधारानो शब्द छे, "जाणी" क मा नथी "जाणी" बीजीवार ड मा नथी, "मायताय परिजन . समरथधीरजि" इमा आखी कडी ज नथी.

८ रषिदत्ता व, बेहू ड, विविधपरिं इफ, वेलसइजि इ, विलसीजि फ, सरीखउ इ, सरखु फ, बेहुपरि अ, दिनि दिनि वकड, उदयिइ डग, उदयइं इ.

ढाल ११

राग पंचम

१ हवइ वकडइग, सुणु इफग, सहु फ, नाणइ अ, कुड करिती मनमइ भ्रांति फ.

२ हैडइ क, हइइं डफग, अवरोटी वक, "मागायारी मुहडइ" वमां नथी, कागि इ, मुकुडइ मीठी क, मुढइ ड, मुहडइ इ, मीठी अ.

३ नीठर व, लेभणी इ, लौंठी फ, कउटी व, कउटी क, खाणी फ, नरवांणि फ.

४ पांभिउ वफ, पाम्यु डग, रुथी फ, चिंतिइं इग, चींतइ क, चीतइ डइ.

५ कामणिगारी फ, होइ कगफ, "चेटी वकइफगमां नथी" तेणी ग, 'मोरुमाह ने बदले उमाह' छे इमां मोरो डइ, मारउ फ, मोरउ ग, मोल्ह्यु वड, मोल्ह्यू इ,

अतिउंमाह क, अतिउमाह डइ

६ पोष्यु व, पोष्यो ड, पोषयो इ, पोषू फ, पोष्यूं ग, सवाद ड, ओठ इ, पो व, तु वक, तु साची हुं नारी डइग, तु साच्यी हू नारी फ, मदधारी फ

७ कामणगारी अ, जोगिनी क, योगिनी इ, जयोगिनी फ, सीकोतरी इ, शीकोततरी फ, नामि वडफ, नामिं इ, प्रसीधी वडइ, प्रसधो फ, ठामोठामि वकडइग.

८ भगतिइ वड, भक्तइ कफ, भक्तिइं इ, तेह आराधी वकड, तेह (वधारानो श) इमा. तेहा इ, साजपि इ, मागइ फ, मागि क, मागिइं डफ, माग्यि इ

९ आणू वडइफ, आणु कग, त्रैलोक डफ, त्रिणिलोक इ, वयरीनइं ग, पढावुं व, पडाव्युं क, पाडावू ड, पठावू ग, आकरउं फ, आणू फ, आणु कड, आणु ग, शुमुं इफग, चंदसूरअेह डइग, सूरय क.

१० सूकवू वडग, सूकव्युं क, सूकवु इ, सूंकवू फ, हूं पाल्वूं वइ, भमा व, दंडानी व, पाल्वुं कड, पाड्ड इफ, पाडुं ग, भमाडुं इ, भामू य.

११ साते वड, से ख ड, सोखु इग, दोपूं वफ, दोपु क, दोषु ग, टवी वक, चटी डग, टिच इ, आगली व, अगुली कइ, त्रभोवन तोलु कफ, तोल वड, वोलुं क, हाथिवोलुं ड, हाथिवोलं फ, वोलुं ग,

१२ माइ भवानी क, छंसेवी व, सवी हूं सेवी क, हूं छु सेवी ड, सहू मे हुं सेवी इ, सहूइ हू छ स्येवी फ, ते सहुअेह छु सेवी ग, खंडि इ, पराण वकडग, कुणहइं क, कुणहीपराण इ, परांण फ.

१३ ये फ, आपुं वफ, लख्युं वइ, लिख्युं क, लखिट फ, लख्यू ग, देवतणुं व, देमतुं ड, उथापुं डइ, देवतणू इफ, उथापूं फ, उथापू ग, "डमसुर्णी वकडग," चिंत्ति इ, आणंदी डइफ, वोलि ... .

१४ देइ मोडुं डइफग, पाडु वडग, ऋषिदत्तानिं पाडउ झाल इ, वसि वडग, विश्य क, वश्यिं इ, वश फ, काजकरू व, कामकरु कड, कामकरो इग, करउं फ, अवश्य कग, अवश्यि इ, तेह अवश्य फ

१५ तू हूं वकडइफग, वेवाणी व, अेतलु वकडफ, अेतलउ इ, अेतल्इ ग, सोकि ड, मुकि इफग, संतपाइ कग, संतापी इफ, टप्प इ

१६ वाणी व, नगरइ कफ, गामिं ड, नगरिं इ

ढाल १२

१ ताकइ वड, सतापइ कइ, ज्युंतहंस्योकु फ, त्यू इ.

२ युं पारधीयां वड, वीरचि इ, यउं फ, विरचइ वग, मीविर ग, ताकरइ ग, युगिणि ड, मीनयुंताइं इ, धरतु इ, कपटि वडइफ, कपट क, तु सयोग्यणि फ.

३ कीय व, कीया ड, मिंदिरि मिंदिरि क, ठारी अ, "ठाहारो" शब्द डमा नथी, बाहारि बाहारी इ.

४ असुकी वड, अंसूकी कग, अंसूकी भयरे फ, गौकानल व, भइरे सपोका ड, सबलोका अ, भयरे फ

५ अवकाश घ, अवकासा कग, अवकाश ड, सवअसो फ, पावन इ, दहिनकु फ, पाविनि फ, आस ड, आसा इग, अनमार्या ड, मनिमाढा इ, व्यावसबमार्या फ, युवानसव-

मार्या फ, युवानसवकार्या कग, हनतिइ बड, हनत हनत कइफ, "स्त्री शब्द कफ मां नथी " को नरगारया ब, कुणउगारया ड

६ आपि इ, पयु यमहइ बग, क्यूं यमदूइ कइ, कुयजिमदूइ ड, करति डइ, ऋषिदत्तास्यु बकडग, मडीजोरी क, "ऋषिदत्तास्यु माडी जोरी ....निशि निशि........साहारी" आखी कडो फमा नथी

७ निसि निसि बकडइग, प्रतिइ ग, तेणइ कडइ, खेविइ क, खेवइ ड, मदिरि बकड, "निसिगममइ नारी" ड, शाहारी क, साही ड, नाखाशाहारी इ

८ ऋषिदत्ताकइ ब, अधुर ग, सोणित बडग, शोणित फ, भंगिइ क, अभगिइ डफ, करी रोस अभगि इ, वस्त्रिइ बड, वस्त्रिइं इ, देवइ बग, सोणित ग, करघु कइग, योगिन फ.

९ सितिसिया ड, शियया क, शया फ, सिज्जातलि ग, पासइ पिसित ब, गासि पिशित करडी कइ, पासिविसिनि फ, छुंटि फ, छुंडइ ड, छडिइ इ, आवइ फ, "मारि" बीजीवार नथी फमा, मारमार ग.

१० उठतिउं बकडग, उठतिल इ, उठतोल फ, भुरइ अक, मृतजनि ब, मृतजनकि ड, शोरि व, मुखिइ क, पायु ड, दुखिइ ड, देखिइ इ, सुखिइ डइ, करुणापायु फ, दूखी फ.

११ बिधुर बकडग, "हइ" शबद कमा नथी, दुया ही कड, दुरियाही ग, विवच्छा ब, अव्यवस्था इ, छाही व्यवस्था फ, लिभ बिरषि इ, क्यु कग, कियु फ, वरिषइ बक, वरिसइ ग, कति वकग, कतिइ ड, सलीकीकती इ, सिसिकींकति फ, उस अधीआरा बकडफ, उहरीअधारा इ, हूति ब, उवितइ हूति कइफ, हुति डग.

१२ ससितइं क, शशिपल इ, सिसिनइ फ, समिथी ग, वरणकता फ, परतख ब, बातदेखुं रहयु रहसी इ, सरयइ ब, हुर ग, अइसी डग, पणित अ, परिणति बडग, होवगी क, हुवइगी ड, होवेगी इ, परिणित फ, होवइ ते कहस्या फ,

१३ मनचींती बक, मनचिंता ड, मनचिंती फ, कुयर फ अलग ब, सभावइ बकडइ, चपकुलिका अब, मुकलि नयनना इ

ढाल १३

राग रामगिरी

ब्राह्मण। आव्यउ याचवा सुणि सुदरी–अे देशी

१ सुणी सुदरीअे बकड, सुणिसुदरी फग, सुकलीणी बकइ, जाण इ, सुकलीनी ड, कहु बडग, कहुए क, कहू इ.

२ त्यजइ बडइफ, तजइ ग, छडि बग, किम ठाय कडइफग, जेणइं बडइ, माहइ इ, जनजनमाहिं ग, हासू ब, हासू ड, हास्यु इ

३ रेखमात्रिमिइ क, रेषमात्र ड, रिषमात्रमइ फ, ताहेरु ड, दीठ ड, कइी न दीठउ इ, कहिइ फ, अेक असंभम ताहरइ बगड, असभव क, असभमहरिं इ, अेक अचभव ताहरइ फ, हैइ क, हइअे ड, हीयडिं इ, हइइ फ

४ उहिता जिलन उपजइ कडइ, उपजइ ब, उपडिइ इ, पिणि ड, पण कग, वणि न सरंति फ, घरपुरि इ, लोककरि इ.

५ अधुर ड, लोहीयाला इ, 'पासइ पिशत......मुझ उपजइ' आ आखी कडी इ,फमां नथी, पासिइं **व**, पिसित **डग**, आपणपूं व; आपिणपुं इ, आपणपुं **कडग**.

६ ताहरूं ड, वाहालेसर साथि इ, वाहालेसर साथि **कफ**, कूण इ, अेतु **वग**, तुतुझ **क**, अेतु कुल तुझ काम ड, अेतो इ.

७ सुणि **वडग**, सुणो इ, सामीजी व, असमव क, कोअेखरु **वग**, कोप **क**, खरू **क**.

८ थाक ड, वातनु **कफग**, वातनो इ, कतार **वकडफग**, धर्मवति **वग**, धूरिलगइं **फ**, धर्म वितिहूं घरलगइ ड, धर्मवती होइ इ, घरलगइ **फ**.

९ लोहीयकी इ, उकांटा अ, नाहासू **वड**, तास **फ**, गघ **ग**, दीठी **ग**, डसू ड, जिम **वड**, जोइउ इ.

१० त्रिणमात्र **ग**, दूहव्यू व, दहव्यू क, दूहव्यू ड, दुहुवु इ, दूहविउ **फ**, दुहवू **ग**, मिंइ **क**, आषणइ **फ**, आणइ **वकड**, भावे कोइए इ, हुं कोइनइ इ, कहूनि **फ**, वचनइं नइ **क**, अनइ काइ **व**, काय इ, अनि ड, विचननइ काय **फ**, अनितनि **ग**.

११ वलिसित इ, अरितणूय बइ, अरितणू **कडग**, पूरवहुकर्म **ग**, कर्मपसाय इ, जु प्रतीति **वकइग**, जु प्रतीति तुम्हमनि सहीं ड, तुम्हमनिनही **वग**, तुम्हनिं इ, प्रतित **फ**, तु कहूते **व**, तु कहु ते करूं हु दिव्य **क**, तु कहुते करू दिव्य **डग**, कहु ते करुं धीजे इ, तुझकहु ते करू दिव्य **फ**

१२ अपराधिंणि **वडग**, तणु **डग**, छेदु **वकडफ**, टेदकीनि इ, हाथ **ग**, मुखसिउ **व**, मुखस्युं **कड**, मुखसु इ, मुखस्यू **फग**, दाखवु ड, दाखवू **फग**, जुवडुं **वड**, जुचडयुं **कग**, चदशे कर्मि इ, जउ कर चडिउ मह कलक **फ**, करमकलक **ग**

१३

दूहा ६

१ करतां वचनि **व**, वचनइ **फ**, पासु **कडइग**, "करुणापायु" **वमा** नथी, कहि **क**, कहिइ इ, सुंखरिनि देखिउ **ग**.

२ अेहवू **व**, अेहवु **कड**, अेहेवु इ, अचरित **व**, अचिरतहुइ ड, अश्रिय इ, हाथि **क**, सय इ, विनिता इ, स्वइहाति **व**, कहिस **ग**.

३ चंचलि **वकड**, वली **क**, सइप्रेमि ड, दाढिमीठे **फ**, यचली **ग**

४ आणे **व**, चिंति अ, लघधु **वकडइफग**, अेहवुं **वकइ**, ओहवु **ग**, अेहेवूं करि इ, नित **क**, नितु नितु इ, करि **ग**.

५ छावरें **ग**, जसवल्लभ **वडग**, दोषछइं अ, सरशव **कफ**, दोषनि **इफ**

६ अेगीपरि **वग**, जनमनि **व**, मरिकी **फ**.

ढाल १४

राग वइराडी

प्रणतणां तिहां पूला धरीआ — अे देशी

१ ता सोर **वडग**, उछलीआ **व**, उछलिआ इ, सतापि इ, प्रहहीआ अ, थै **वड**, रहीआ **वकइफग**.

२ राय **वडग**, राजाइं इ, बोलाव्यु **व**, बोलाविउ **क**, बोलाव्यो इ, बोलाव्यू **ग**, धुजतु **कड**, धूजतो इ,ध्रजतु **ग**, कापतो इ, आव्यो इ, आव्यु **कग**, लवधु **डफग**, लुवधउ इ, साहाव्यु **वड**, वाहाव्यू **क**, रोसि वाहावउ इ, रोसिवोलाव्यु **फ**, रोसिंवीहाव्यो **ग**.

३ चींता इ, करिइ इ, करि ग, मइ तु व, साखयउ कइ, साखिउ फ, हवइ ताव बकग, हविता इ, हवता फ, हविता इ, अेहवु जाणे कग, अेहवु डइ, जाण व, खडोखडि डइ, नौखिउ व, नाख्यु कग, नाख्यू ड, नाख्यो इ, खडोखड इ, करी नाखू फ

४ वरिके वकड, वरे इ, "ते उपद्रव कारण" अ, प्रगट के फ, करीकइ ग, कारिणि डग, कउण वकइ, जिव्यतिनइ फ, हू कोपिउ व, हू कोप्यु ग

५ वल्तु कफ, वलतो इ, वल्उ ग, तलार बोल्यु कडग, तलाहर फ, बोल्यो इ, धरहर परहर अ, अकालि आव्यु व, अकालि आविउ फ, आव्यु ड, आवउ इ, कालिआविउ फ, अकाल आव्यु ग, सीआलउ अ, सीआलु क, सीयालु ड, सीयालो इ, सायलु फ, वदन्त इ.

६ दीन वचन फ, वरसे व, तनुवरसि इ, तिन्य वरसइ फ, गलिशोक पहुतो व, शोख पड तउ फ, शोकपडतु ड, गलिसोक पडतउ इ, गलइ सोक पडतु वोलइ फ, सोकपडतु ग, करुणाकरहेव फ.

७ मिनरती इ, स्वामि कइ, महारी सविंत इ, सामि फ, सकति स्वामी ग, प्रणिता इ, पणितिहा कइ, ठामोठामि वकग

८ अेणइ वडइग, इणीइ फ, नगरिं नरत्य फ, नयरिइ ग, लाभि व, तेणि व, कावडआ ग, जगधुतु जेण ग, धुतु तेणइ क, धुत्र जणणि ड, धूतो तेणइ इ, धूतिउ तेणि फ

९ वजावी वकइफग, राय ग, डडे उ वक, ढढेरा इ, ढंढरेउ फ, माराय ड, माडा फ, सरव वक

१० योगी जडिया व, योगो कइ, योगी जे जडिआ फग, गणियानइ कड, गणिआइ इ, दरवेस वकइग, गणीओनइ ग, मतवासी कग, जिती फ.

११ नीलु क, अन्याननइं दोषइ क, निंदोषि ड, अन्याइ निंदोसि इ, अन्याइनिं दोषइ ग, पण व, खाइ क, पामइ रोसइ व, न गणइ कोइ सरोसइ इ, सणइ सोषिइ फ, रोषिइ ड

१२ अेणइ वड, इणइ इ, इणिइ फ, अवसिरि इ, दूआरि बकडग, दुआरिं इ, दूयारि फ, प्रतीहार वकडग, प्रतिहारनिं इ, रानइ वीनवु व, वीनवुउ क, वीनवु ड, रायवीनवउ इ, रानइ वीनवूं ग.

१३ कुहनइ व, कुउनइ कइ, कुहुनइ डग, करइनइ फ, अपराधि वफ, चिंति व, विंति कग, विंति डफ, वींतिं इ, भइसोमांदउ व, भइ सुमादु क, मइसोमाउ ड, मइ सो मादु इ, भइ सोमांदु ग, तडग डांमिइ वड, तणग क, तणग डामीइ इफ, तडग डाभी ग.

१४ दोषीनिइ क, रानइ गव, जणाबी वार फ, बायनइवालइ वड, गाइनइ वालइ फ, अर्जुन व

१५ जु डग, जो इ, अेहेवु इ, वेगिइ डं, वेगी फ, रायइ इ, राय फ

ढाल १५

राग सामेरी

नेमनाथना मस्तवाडानी त्रीजि

१ अदभूत ग, ताडत्रीजु ड, ताडत्रीजो इ, ताडत्रीज ग, जूटा फ, केम ग, मरि ड

२ तिपुठ क, नासा कग, च्यारि इड, कास्मीर क, श्रवणइ वफ. लहिकइ कडफ, सलवतो कइफ.

३ कठमला ग, संखकेरो वडग, वानि इ, ललाड व, ललाटि विचित्र आगुल मान कइं खनेते च्यार अगुमान व, चित्रति नखवि अच्यारि ड.

४ करी कथा वकड, "मृग चरम केरी करी कथा उढनइ चित्रक कार्म मोर पीछनो ग्रहउ आतप" इमा छे, उढणि फ, उढण ग, चित्रकचम्र्म क, चित्रकचरम फ, मोरपींछ व, मोरपीछनु क, ग्रहयू कग, गुहू फ, अेकहाथि व, हाथि कडइ, हथइ ग, धंमर्म क

५ यमि चमि ड, करति क, सिष्यणी व, सिष्यिणी कइ, साध्यणी फ, परिवारि ग, वसि वकडइग, नवसि फ, घूमति ग, धूमवीं व, करिउ व, करयु ड, करयो इ, करइ फ, भोगनु क, भगिआहार डग, भूगीआहार इ, आहर फ

६ उररीति आसी उच साठइं व, सच्चर उचउति आइ क, उचरति आसी उचशवदिइं ड, आशी उचशवर्दइ फ, आसीस अ, नृपतीर ग, साति वड, "शातिशब्द" बीजि वार नथी कगमा, शातिकरती इ, नशांति फ, पावन वकइ, पावनि डग.

७ वडवडइ वकइफग, वडवडइ ड, वदनि इ, वदनिइ फ, वशिष्ट अ, विमिष्ट कड, पइसंत्र वसिसउ फ, साव इ, जसइ घगकडइ, जासिइ फ, नहासी वडग

८ भूपि वकडइ, भूपिइ फ, भप ग, वहेवी क, कहि इ, भगवती कडइग, वेठिते अलख फ, टालु हेवि क, डफ, विघन टालो हेवि इ, कहेव फ, वघन फ

९ मदिमती वकडइफ, विस्वनइ वड, विश्वनिइं इ, अवतरया वकडइ, अम्हेप्रवाहि वडइ, अम्हेप्रवाह क

१० ससिहर फड, शक्तिनासु इ, भिवितसारु फ.

११ रातिइ वकड, राति इ, "इष्ट शब्द वडमा नथी" देवि वकडइफ, मुझ वग, मुझनि इ, कहयुग क, कहू फ, कहयूं ग, सहूनि इ, कोप्यु व, कुगसिइ क, हुवसइ ड, उपसि इ, जनमाहि कइ, जममहिइं ड, जनमहइ फग, सारि इ

१२ तु जे व, कहिये अग, भूपनरतू इ, कहजे इ, "भूपनइ तुं अइ, हिजेस्यउ" आटली कडी फमा नथी, स्यू व, स्यु डग, दर्शनीनु कडफग, दर्शनीनो इ, मदिरी व, मंबर फ, मकरि अवस्यूं ब, करि अवरस्युं कड, मकरि अवरसुं इ, अबरस्यूं फग

१३ अेवहु फ, मारइरूप फ, कराल वकडइ, नगरनु अ, नगरनो इ, नासिकरवा फ, सुकमाल इग.

१४ अेहवुं वग, अेहवु कड, अेहेवुं इ, सहूनि इ, फकि मोटइ व, पोकमाटइ कडग, फोकमाटि फ, दमि इ, हेव फ.

१५ प्रतीन फ, प्रतित ग, जोणही वइ, जुनही कफग, तुजोईई वकइ, जोइइस्वमेव फ, आदर्शस्युं गक, आदर्शस्यू व, आदर्शशुं इ, करि व, करि कर्काणि इ, कहिं इ, सखेवि अ.

१६ पाम्यु क, चित्रि पाम्यु वड, चिंति पाम्यउ क, विसमइ पामिउ फ, चिंति पाम्युं ग, "इम" शब्द गमां नथी.

ढाल १६

राग केदारु

सरस्वति गुणपति प्रणमउं—अे देशी.

१ वुलावी कडफ, बोलावी इ, मनमाहि इ, क, मनमाहि डइफ, मनमाहिं ग, सका अग, "शंकाने बदले चिंता आवी अेम कइफमा छे", अेकिस्युं कड, अेकिसु ग, निरमलुअे फ, निरमलुंइ अे क.

२ तिणि अ, रारूउ फ, निसि सजई अ, निसि राजइ कइग, निसिराज्यइ फ, बहूनउ क, वहूनू चिरीत फ, काजिइ कड, छानु कड, छानो तस घरि मोकल्यो इ, छानु तस घरि मोक्लु अे ग.

३ छानु ड, मोकल्यु ड, राय जोवाइ चिरत फ, किइ ग, निरति अ, नरतिम फ.

४ तिणइ क, तेणइ इ, कुमरनिइ क, कुमरनिइ फ, चींतइ इ, विसावीसइ कबडइफ, बीसावीसइ ग, प्राणप्रीआनइ अ, प्राणप्रीयानइ ग, दोहली फ, जेता अ

५ याढो याढी फ, "दीहाडो" गमां बीजीवार नथी, छावरेतू डइ, अेतु छावरतु ब, हूताछा-वरतु क, रहूछावरतू ग, परतकि ग, मुग्धानिइ क, मुग्धानि इ, स्यू थासइ बकग, शु थासइ ड, सु थासइ इ, मुझ ब, गूह्य बड.

६ जु बग, अदिष्टीकरणनी ग, समेते फ, तुउ ब, हवडां कइग, हवडा फ, जोते ब, जइ जे ड, शशिमुहिववइ कडइ, ससिमुखइ ग, जणावूं ब, जणावु कइग, जणाव्युं ड, संकेते फ

७ माहारी इ, होसइ बकग, हुसइ ड, होसि फ, बला बड, तातणा अ, पासे ब, रसाला बड.

८ मननउ क, मननो इ, मनमाहिइं क, मनमाहिं डग, मनमाहि इ, रहयू ब, रहउ क, रहउ इ, पजरइ इ, घाल्यु बडग, घाल्यो इ, घालिउ फ, चालिइ क

९ अेणइ बड, अेणिइं ग, रानावर बकडइ, "विखदेइ" डमा छे, नवि देखइ ने बदले पिसित बकडगमा छे, पयसत फ.

१० रानइ बकड, रायनि इ, जणावी ब, साचुं देखइ ब, साचु कइग, साचू डफ

११ आख्यीय ब, आरोपिय ग

१२ तु तु बक, वसनिकंदन इ, निमल ड, दुखव्युअे ब, दुखव्युं ड, दुखवु इ, दखबिउ फ, दुखव्युं ग.

१३ दुखवु इ, कुलनइ निरमल फ, कुलंति ड, राषिशी फ, माहारी इ, ते जिवित अ, सरखी कडइग, जिवन सरिखी फ

१४ वालवृन्द कड, प्रजानु कफग, आण्यू ब, आण्यु डग, आणउ इ, आणिउ फ, सीकोतरी ग, शधि शोकातरी फ, लह्यु बक, लहयु ड, तुन्धरणी इ, लहूं, लहिउ फ, व्रतत अ

१५ विवन फ, वलखु बकडफग, विलखु क, वलखो इ, तेहवू ब, अेहवु कडइ, अेहवू फग, नुहइ अ, नोहि बड, नोहइ इ, हउइ फ

१६ कोपजल अ, कोपाजलि इ, बोल्यु बड, बोल्यू ब, बोलउ इ, प्रतषि फ, उवगुण फ, अवगुण इम छावरतु न्यापति कड, अवगुण तु छावरतु नापित इ, इमछावरतु तु तापिनि शकाश फ

१७ पाठातर (न्यापित तुझ गुण पासइ बड, न्यापित गुण तुझ पासि कइफ, न्यापित गुण तुझ पास ग)

१८ सांख्यु बकइ, सांख्यो ड, साख्यू ग, पण ग, इू ग, नवि कइफ, साखू ग, अवगणि ड, महारि इ, कहणि बकडइफ, किहिणि ग, नहीजु तु बकड, नहोउ इ, जु तो तुं ग, तु जै नई बक, जो फ

१९ अेवा फ, घरतु वकडग, घरतो इ, विषवाद अ, नीचुं वकडइग, नीचू फ, आविठ वकऊ, आव्यु ड, आवठ इ, प्रासादि वकडइफ, प्रासादइं अ

२० तेआखी वकडइग, कहि इ, साचु वकडइग, साचू फ, आवयू च, आव्युअ क, आव्यु डग, आवड इ, आविड फ

२१ वइरिणि ड, वीरणि इ, वयरणि फ, योगीनी ग, मतनीअषी ग, रानइ वक, कहिषहु जेतहारो इ, तउराक्षसी अ, कहिवहू जेताहरी फ

२२ मुकी कड, राइं कइ, रायइ ग, जोवराव्यू व, जोवराव्युं डग, जोवरावुं इ, जोवारा-विउ फ, जाण्यू साचुं व जाण्यु साचुं कड, जाणइ साचु इ, जाणियमाचु फ, जाण्युं साचूं ग, हिवइ वइफ, जनमाहिइं ड, हवइ च, थयु वकडइग, थयुं वकडइग, जनमाहइ व, मइंता व, मइतों इं, दिनि व, साच्यु वड, खांच्यु कगइं, खाचूं व.

२३ हु तु ग, छडुं वकडग, छइ इ, छाइ फ, कहिस्वामी क, थायु वइ, थाउ कडफच, मुझनि कर्म इ, महानइ फ, प्रणाम ग

ढाल १७

राग सवाव

वोलीउ प्रहलाद् वाणी—अे ढाल

१ हवइ वकडग, हवि इ, रुठो ड, सेवकनि इ, सेवकनइ फ, आदिम व, आणीनिं इ, दइ प्रेस अ, आदेस इ, दिइआदेस कग, ओठ करमनु वाक क, करमणु डग, महिमा व, जेणे ग, रायनइ रक फ.

२ केनि फ बंधनबांधी करी ग, बाधीनइ फ, काढुनि क, काढउनि इ, काढुनइ ग.

३ भमाडो भमाडी नइं ग, ठामिठामि वग, ठामोठामिघणु क, हणो इ, ठामोठामि फ, देइअपमान कइफ, अपमान डग, मशानि कड, शमसानि ग

४ थयु वड, थउ इ, मरिवा थउ फ, मरवा थु ग, राख्यु वकड, राख्यू ग, ग्रहीराख्यो हात्थि क, हाथि इ, हाथ ग.

५ पाटाव्या ड

६ चुजु क, चुवु ते चुपडु ड, चोपडउ इ, चूनु ते चोपडिउ फ, सिसिं इ, सीसि फ, चोपडु व, चोपड्यो वकड, झुवक ग, झूवक इग.

७ सुपडानू व, सूपडानुं कडइग, धरिइ इ, लइक्इति ग, लइकनो इ, चथा चामरइ कइ, चूंथी चामरइ फ, चामइ ड, आरुहि व, खरिं इ, खिरइ फ

८ ठावीति व, ठवि ग, कंठि कफग, कंठ इ, विकराला कइ, वीकराला फ.

९ हीगिं ग, हीगिइ फ, विलेप्यु वकड, वलीपू फ, विलेख्यूं ग, मसइ ग, तन फ, खरड्यु व, खरड्यु डग, खरडूं इ, वसिइ डव, विलन्न इ

१० सुरलोक वकडइफग, देइ ग. (पाठातर कर्मबंधइ फोक इ) पाम्या ते शोकइ ग, शोकिइ व, शोकइ क.

११ करि इ, सनोनिं ते इ, ठारिठारि वइ, छाहरि छाहारि फ, वाहारि वाहारि ग, सभा-रइ वकड.

१२ आगिलि ग, काहली कगड, काहलइ तस केडिइ इं फ, लाइ अ, दुखदु व.

१३ सती सतापी इ, सेरीसेरीइं कइ, सतावी काढी ग, अतिभाडी फ, अतीताडी ग, बाहिर ग.

१४ आथम्यु बफ, प्रसरयुं ब, पसरयू ड, पसरूं इ, पसरिउ फ, पसर्युं ग, तिमिर पूर अ, तिमरनूपूर फ, थयुं बकडइग.

१५ स्मशानि व, बोल्यू बग, बोल्यु इ कड, काढीपाणि व, कृपाणि ग.

१६ स्मरिरे क, समरे रे इ, तु न्हइ इ. तुहनि फ, हणिस वड, हेंणसि क, हणसइ इ, हणिसि फग, देव अ

१७ "पडी" बीजी वार नथी वकडइफमा, पडि फ, मूरछानी बग, मूरछावी ड.

१८ त्यजि क, तजि फग, सवजन ड, सवेजण इ, प्राणिइ व, प्राणिइ ड, ठाणिइ ड, ठाणि वकइफ, ठांणि ग.

१९ ठाण ग, ठारिगया व, नीठर अ, "तेणइं त्यजि दया" इ, मारतिण तजिदया फ.

२० वाय क, मीठु वायु वायु ड, वा वायु इ, वाउवायु फ, मीठ वायु ग.

२१ अरू परू जोयु व, अहरू पहरू जोयु वडइफ, जाउ फ, जिम वड, निर्विजन दीठु कड, दीठुं क, नरसज फ, नविजन ग, नाहाठी वकग, अवीसाम कइग, छाह ठीय वीसाम ड.

२२–३ नाहाठी कड, अतिहरि ड, दूरिं इ, अतीदूरिं ग, कर्म्म क, कर्मद्धुरिइ फ, रडिइ फ, पूरिं वकइ, पूरिइ ड, दूखपूरिं ग

ढाल १८

राग सोरठी

वर वरयो रे वछित देई दाम–ओ देशी

१ करजो क, सगार वड, करमिइ क, शिरोमणि ड, रली अपार रे वकडइफग.

२ सुणि रानि इ, सूंनइ अ, रानि ग, मोक्लं वकडइ, मेहेली इ, महेली ग, रोवत अ, रोवइ ड, अवुधार अ, अंसूधार क, आसुधार इ, असूधारि फ, घनस्यू बक, जाणइ डग, लायु वग, लागु कडइ, लागुवाद फ.

३ तेणी वकडइफ, लेंलाइ अ, पासू बकडफग, तहारू इ, जोहूं व, जुहू कडइ, मेहली अ, न जायती क, न जाती इफ, तु अ, तो इ, हैडइ वकड, हैडि इ, हइडइ ग.

४ कउण इव, कुणहिइ क, कुणहइ इग, वचन अ, लगार वडग, लगारि क, मात्रि लगारइ, अेकइवारि वकडग, अेकइंवारिइ ड.

५ वलभ दूती ब, तुहनइं वकड, तुहनि इ, तुन्हइ फ, यउ क, योहाथ फ, सुणि ग.

६ लगइ तिइं कग, लगइ ते ड, ढाक्यु, वडग ढाक्यू क, महारयो इ, वत्सल ग, गभीरिमि वइ, गभीरिणि क, गभोरमि ड, गभीरइं मइ फ, जितु डफ, गंभीरमइ ग, असरि वकइग, कीहा छूटिस पाप इ.

७ हू मिइंसुडी ड, हू छूटसि कग, तुम्हनइ इ, तुझनइ फ, कीहा छूटिस पाप इ, हू दाणीगिणि वड, गुणनींछउ दाणि क, छूहू दाणी फ, ह दाणी गणि ग.

८ मिइ क, मिं ई, दूहव्यूं वड, दूहवउ इ, न हुविउ फ, दूहव्यु ग, अेहवी व, कोइ-नकयों क, मर्मिइ वड, मर्मि क, कहि अधर्मइ फ, केहिमर्म ग

९ नींसासइ अ, नीसासिइ ग, सोसी ड रडीरडी वड, भरया वइ, भर्या कग, भरया ड, "सग" शब्द डमा नथी, पाम्या दुःख इ, नीग तव कुरणा फ, सताप ब.

१० हैडुं वकड, हैइउ इ, हइइ फ, दूखि फ, दूख ग, आंवुंठ इ, आंव्युं ग, असु वड, आंसुखडाधार ड, असू अखडाधार रे क, वारिइ इ, वनमहि व, वनमहिइ कड, वनमाहिं ग.

११ आपिइं क, आपिं फ, करमतु वड, कर्मनउदोस क, कर्मनु फ, अवरस्यू कउ दोस व, केउ गेस कड, अवरस्युं केउ रोस इ, अवसरयूं केउ रोस फ

ढाल १९

पांडव पंच प्रगट हवा—अथवा
मन मधुकर मोही रह्यउं—अे देशी

१ सरोमणि इ, शिरोमणि ग, प्राणीया अ, साचरिंड इ, मधरसि वफग, म धरेसि क, मधरिस इ, लगारजि कडडग, कुणनविचलइ इ, 'करमसाथि कोणि नवि चालि' फ, चालइ ग, करमेनडया ग, इमाविचारता कडइग, हैडइ वड, हैयडइ क.

२ श्रीरिसहेसर ड, वरसीतिइ वडक, वरसतइं ग, वरसताइ ग, परिसह ग.

३ चरणि व, चर्णि ड, चरणिइ ग, सिलाका व, श्रमणे शकाला फ.

४ रामिशा शा फ, सहा इ, प्रसादिजि वकड, पसादिं इ, हैया वकडग, हइडा कांपिइ इ, सुणिता फ

५ वाशदेव फ, करमइ जेह व, जे कग, करमि इ, करमइं इम जे फ, लह्यो ग, सरि ग, सजन वड, सुजन कफ, सज्जन डग, जराकुमार फ, शरि क, शरि अतही फ, करिअतजि इ.

६ युतइं ड, हारि ग, पडव वडग, विनिरला इ, सेवाकारी क, मोटु ड.

७ दुकिखउ ग, वनमहिं ग, छाडी इ, छडि ग, मदिरिइं ड, मदिरि इ, करमि ड, प्रचारिजि ड, प्रचारजि ग.

८ सत्यवादी व, डूंबघरिइं ग, वेचीआ क, करमिइं व, रल्या कडइ

९ शिर क, शरि फ, करमिइं ग, भमवू वग, भमवुं डइ, भमंवउ फ, इसजि ग, रावणि कगड. गमीया वड.

१० कर्म इंद्रनरिंद फ, जेमहतजि क, इमकरी वकड, मेहलीआ क.

ढाल २०

राग · रामगिरी

सुरिज तट सबलउ तपइ—अे देशी

१ चिंतवालइ वकड, चिंत इ, चित ग, आपणु वकडफग, आगणू इ, वाल्युं वड, वालं इ, वाल्यू ग, अेणइ व, परवत ड, इणि कफ, अेणइ डग, दूखइरे ग, दुखि इ, सुकाय इ, सचरइ क, पथइसंचरइ थाय इ.

२ धीखइ फ, जाघ समाणि वकडइ, जाग समाणी ग, परसेवु वकइग, परासवु ड.

३ रुधिरधार ग, चरण ग,

४ अधुर वड, गल्ल वडइग, गलु क, फाटिइ इ, किंहानवि कइ, किंनवि ग.

५ पढि ग, पथई कइ, आखडिइ ग, डुंगर कड, डूंगरि ग, दूरथीरे ग, तेह झाल इ, "दव जलइ ने वदले दवबलइ छे" इमा, संतावइ व

६ किहींअके वक, किहिंइ ड, किहिं इग, फणिगर वक, फणधर इ, किही फेरु फेकार व, किहा फेरू क, किहिइं फेस फेकारइ डग, किहा फेरू फेकीरि इ, किंहीं घूघूइ वग, घोर धूकही घूघूइरे ड, घोर घूक तेंहा इ, किहीं वाघ हेकारइ वडग, किहइ वाघ हेकारइ इ.

७ कहीकणि व, किहाकणि क, कहीकणि ड, होइ कमकमइ व, हैउ कमकमइ कग, देखती हैउ कमकमइरे ड, हइडु कमकमइ रे इ, मारग कुटा काम, मारग कुउटा व, किहि मारगकुटा ड, किहा मारग कउटो इ, किहि मारग खोटा ग, हईउ कंमकमइरे फ

८ कुसुम क, कुमम वड, कुममशेज इ, खूचता क, वीठ व, नीद्रानावंती फ, नीद्र इ, अहेवी इ, पडिरे इग

९ सूरज क, सूरय ग, नविलागा वडग, नविलागतां क, नवीलागता फ, कहीइ व, जेहनिइ इ, रामनाहइ वइ, राममाइ क, पडवाथिरि फ

१० पाहिइ कग, पीहि फ, कुअली ड, कुयली इ, तनुवाडी इ, तिणइ क, तेणइ समइ इफग.

११ अनुमानि सा फ, अनुमानिइ क, अनुमानाइं ड, अणसुयिइ इ, अणसरेरे फ, दक्षिण व, छांहीं कइफ, ठाही ड, सहीअे फ, मतीहोइ ग

१२ निवकारि व, निजकरि कगड, रोपीआ क, नयणलहरे ड, जं तररोपीयारे फ, अतिसत व

१३ तरूतणि कइ, तिरूतणीरे फ, वावीतात कइ, हैउ गक, हइउ ड, हइडु इ, गृहिं-वरिउं क, गहवरूरे डफ, गृहिवयुरे ग, नविरहइ वड, राखिउ नविरहि ठामि फ

१४ पाहणि फ, पावकिं इफ, परिजलिह क, परिजलइरे इ, पणिनिविलइ ड, साभरइ डइ, साभरिरे इ, सजन घकग, हैडलु व, हैडलु वारि क, हैडलुवारि ड, हैयडु बारि इ.

ढाल २१

१ दीठु वकइग, तातणुं कडग, आश्रम्म अ, साहिरे वकडइग, वरसि ग, सवादिरे वकडइफग

२ दरसन वग यू व, करो ग, नीरधारीनइ ग, पाखि फ, सूनउ व, सूनु कड, सुनु इग

३ करूण वकड, करणि व्यलाप फ, करुणा ग, वयरिंगेया फ, झरणां वड, व्यापिरे वड, व्याप फ, ख मृग ग, दु खी ड.

४ सा रही रोइ फ, आपोआपिंरे कइग, यमसायर व, सायरलहरी कग, यमसायरल-हरी डइ, व्यापिरे वक, व्यापरे डइग, फलनु व, वनफलनो इ, "तिहा शब्द कड मां नथी" तापसनो इ, तापसिनउ व.

५ "इम शब्द डइमा नथी" इसिकरता फ, केदिनरे फ, दिनरे व, केता गयादिनरे ग, मनिरे व, मन्निरे डइ, चित्तमंनिरे फ, वोरडीनइ कइफ, सूनी व, सूनादेखी क, सूनीदेखी डइफ, बाहि सहु फ, हाथिरे ड.

६ वनितातइ वड, वनितानि इग, वनोतानइ फ, पुरूषतणो कवडइग, मूलिरे वक-डग, मूलरे इ, विशेषिइं ग, योवन फ, फूलिरे वडफ, फलिरे क, फूलरे इ, फूलीरे ग.

७ सील वड, स्त्रीनिं इ, जालवूं वकड, जालवू ग, अेहवुं वली शबद इमां नथी, चिंतिरे वकड, अेवू चिंतिरे फ, अेहवू चिंतरे ग, गुणवंतिरे वक.

८ उषधि वकडफ, ओषधी ग, तातिरे वक, तानइ ड, निधाडीतातिरे इ, नररूप अ, जातिरे वकडइफग, ओषधी ग, योगि अक, स्त्री फीटी हुइ नर मतिरेव थइनररूपि रे कफ, थइ इ, स्त्रीफीटीथाइ नररूपरे ग.

९ घाली शबद वकफमा नथी, कानिरे वकडग, "पवत्री घाली कानिरे इमा" सुतानिरे वड, सुतानरे क, सुनानानिरे इ, तेणइ कडइग, आश्रमि वकडग, आश्रम इ, कीधु कड, यनीपूजकरइ फ, करिउ हुआसिरे इ

१० धरिइ धर्म इ, संभारइ वकडग, नित्युनित्तुरे इ, नत्तिनित फ, संभारिइ प्रीउगुण इग, चितिरे वकड, चींतिरे इ, चित्तरे अ, सतापरे वकडइफग.

ढाल : २२

राग : मारूणी

प्रीयु राखु रे प्राण आधार–अे देशी

१ गेलिनरे वोजीवारछे कमा, गुणभडारने बदले गुणरयन भडार छे वकडइमां, बोलि-नरे ने बदले बधेज बोलिव छे ग प्रतिमा

२ तिइ वड, तइता वकइग, ताहराइ ड, ताहारि इ, गुणेकरी इ, ह्व लीधुं ड, गुणिकहू फ, विचातउ व, वेचातु कडइग, दाइ शबद व मा नथी रणीओ ग, नेहनु डग, हवइकाइ ड, काइ आइ इ, हवइ व, हविइ क, हवे ग.

३ फूली विछाइ क, फुलि बिछाही इ, फूल विछाइ फ, फूलिभरी ग, मूली क, तुबिना व, सूतु कडफग, तुझविण सूनो इ.

४ कउचि इ, उठावइअे क, उठावइ इ, वनोदा फ, पाखिनसोहाइ फ, पाखिइं ग, सूहाइरे ग, सोहावइरे इ.

५ नीगमु वकडग, वलवलता इ, दिहाडु वकडग, भाढउ फ, जायरे ग, विरहइं वक डइग, मूहनइं व, मुहनइं कडग, मुनहनिं इ, मुहनि फ, समाणउ व, समाणु कड, समाणो इग

६ पिहिली वड, पहली इ, हवइ वकडग, क्षामोदरी इ, माहारूं इ, न पाइ रे वड.

७ वेह रोसइं वकडग, नेह रोषिमा इ, छेति ग, थातुरे वकड, थाउरे ग, मनावतु रंगि रातु रे वकड,फग, मनावतो रंगि रातोरे इ.

८ हसती ग, प्रहारि इ, प्रीहारे फ, प्रहारइ ग, लहि वडग, लहतु कइ, प्रसाद व, माननि वकडग, मानी इ, ताहारा इ, ओलमा वड, संवादिरे वड, सवादिइरे क, सवादिरे इ, संवादरे ग.

९ तुझस्यूं क, तुझसुं डइ, तुझसू ग, चालिइ कइ, माहायू व, विणु इ, साहाणु कडग, सहासुं इ, नयणइ गफ, जोउ कइ, जउ ग.

१० नोसइ **बडग**, जोसिइ क, "जोसइ वाटिकूंण" इ, तृषत ड, नयन डग, महारी **क**, अतिहेजिरे **बकडइ**, अतिइेजरे **फग**, सूनीजसइरे **बड**, सेजिरे **क**, सुनीसेजरे **ग**.

११ क्रीडाना **क**, तेरूह **फ**, वियोगिरे **ब**, वियोगिइरे ड, विजोगिरे **ग**, आसूनीरिंइ ड, आसूनीरि इ, पूरे **फ**, पूरि इ, शोषइरे **ब**, शोकिइरे **व**, शोकिइरे **क**, शोषइरे ड, शोकिइरे **फ**.

१२ उनाहालउ **व**, उन्हालु **क**, उहलवीउ **इ**, उनाहालु **ग**, वरसालु **कग**, नीसासिरे इ, नीसासारे **ग**, अंगि **ग**, आगई **क**, सीयालु **क**, सीआलु ड, सीयालउ इ, सिआलु **ग**, त्रिभुवन **ग**, त्रिभोवनि इ.

१३ अनुपम **वकग**, तहारु इ, वाली देहारे **फ**, ताहारा **क**, बोलु **बड**, बोलु **कइग**.

१४ ससिमृग **बग**, हरीहसी इ, सूविनाणीरे **कग**, जाणू **बडग**, जाणु **कइ**, सेलेवा **क**, कारणिइ **ग**, तेरही **ग**.

१५ नागलोकि **वकडइग**, तिइ **व**, करयू ड, करूतड इ, कर्यु निइ **ग**, जिपवा **वकडइग**, रंभानो इ, गरव **वग**, संभारीरे **कइफ**.

१६ हूती **ब**, "तु वनि ताहरइ रमतीहूनीं" **कम**, जगिस्यू **वग**, जगिस्युं **कडइ**, जगिसिउ **फ**, माहरु ड, माहारो इ, गु **बडग**, जुउ **क**.

१७ लाडिकवाही **वकग**, लोकनरणीतिइ **कग**, सहीहसइ **वकड**, सहीहोसइ इ, सहीहसिइ **फ**.

१८ कुसम **व**, कुसुम **कडग**, पारिस्वामिनो ड, परिमामिनि इ, परिसामिनिइ इ, परिसमनिनि **फ**, परिस्वामीनी **ग**, हस्वइ **व**, हसिइ **कफ**, हसइ **डग**, होसइ इ, वहि **ब**, सीरारे इ, बरह दुखसरीरे **फ**.

१९ इसि स्त्री **क**, इसी स्त्री इ, अस्यी **फ**, दया न थाइरे **ग**, जेणइ **वडफग**, तेहनु टालु **बकडइग**, ठायरे **कडइफग**.

२० क्रीडाना थानक **कइ**, क्रीडाना थानिक **फ**, ताहरि क्रिडा **ग**, सुदरी **इग**, पाखि **फ**, स्यू **ब**, स्युं जिवित **क**, स्यु जिव्यु ड, सुजिवित सिउ **फ**, स्यू जिवू **ग**

२१ विलपी ड, धारिउ **बक**, धारयु ड, धायुरे **बकड**, मरिवा धारयुरे **फ**, कुंटवइ **क**, कुटुब **ग**, कुटु बि वारीने राखिउ **फ**, राख्युं **वकग**, मे वारी राख्यु ड, तेणइ तसगुणि जिवलायुरे **वकडफ**, तेणि तसगुणि जिवलायुरे **ग**, "इम अतिविलवी जिवलायउरे" आ आखी कडी इमा नथी

ढाल : २३

राग : केदारू

१ हवइ **वडग**, कामिनितणा **कफ**, कामिनीताणा इ, समरइ ड, समरिइ **फ**, समरि **गमा** बीजीवार नथी, दिनिरिति **व**, दिनरत्ति **क**, दिनिशत्ति ड, दिनदिन **फ**, दुखमरइ **वकडग**, दुखमरि इ, दूखभरइ **ग**, नविगमिइ **क**, नवि गमि **फ**, तेहनी अ, वत्त **ब**, केहेनी ड, कहनी वत्त इ, कहिनी वात **फ**, किहनीवात **ग**.

२ वीणानाद ड, मनोहर इ, वरि तनु समाल इ, रहयू **वक**, रहयु **डग**, रहउ इ, मेहलइ **वकफग**, मेहइ ड, मेहेलइ इ, नीसास **ग**.

३ त्यज्या वकडइ, तज्या फग, चदचदॅन वकग, चंद्रवदन फ, लगार वडग, नहीम लगार कइफ, लहि फ.

४ निसि वकड, निशि आसूधार अ, असुनार वडइ, अंसूधार कफ, वहिइ फ, खिण खिण वइ, 'खिणि शबद बीजीवार नथी डमां' जाइ क, लहि फ, अवरसाव पाखड वकडइफ.

५ प्रिये प्रिये वडग, ''प्रीय प्रीय'' शबद कमा नथी, विकराल अ, विकल कइ, कुयरे व, राजकुमार क, राकुयार डइ, कुंभार ग, थयु वकडग, ते नरहि वड, वारयू व, वारिउ इ, वाहिउ फ, वार्यो ग, वहितणु डग, तुणइ फ, मित्रपरिवार ड.

६ आवत्रासि फ, दइ कडफग, पातालि वकडइ, पेसू व, पइसुं कडइ, पइसू ग, जिम वफग, जिम फ, तणिइ क, विरहिं इ, हू शबद डगमा नथी, हूं धरू व, धरउं इ, धरू ग, किम कडफ, किम्म इ.

७ हैउ वकग, हैडु ड, विरहि तु कइ, वरहइ तु फ, जो व, जु ड, तु वकडग, विन्वता क, माणवपइ फ, पहि वक, पहइ डग, पहिं इ

८ जु विरहइ ग, विरहइ वड, जु विरहि क, जो विरहइ इ, तु खरी व, तु खरू क, ''तउ शवद डमा नथी'', तु खरो इ पुरुष सभाव कइ, तु खरउ फ, दैवि जिवत दउं वक, जिवित दीउ ड. दउ इ, दैवि मुझ जिवित दीउ ग, सजामेव व, सहिवारेइ ड, सहवा इ.

९ विलप ग, परवत वग, पर्वत कइ, खड खडइ वकग, खडखड ड, मंडोखडि इ, न झरण जन नयने व, जननये क, जननयणे डफग, जनयरण इ. केलवा ग, जम्य इ.

१० परिवार अ, पूछवइ इ, जणि व, दाजइ क, दीजइ इ, शेकिनइं ड, दीमिइ ग.

११ कोडी लहिइ ग, जिविता ड, दिइ क, हइ ग, करइ इ, दुखतु कडग, दुखनो इ.

ढाल २४

राग : आसाउरी

शिवना मगल वरतीमे—ओ देश

१ ते योगिना इ, ओहवूं वग, अेहवु कडइ जइ सुणाइ व, ऋषिमणीनइ, जाणइ दीठ मिइ राज क, आअँ ग.

२ नावइ अ, जिधु कफग, जिनयु ड, जिनो इ, धुनकारनइं ड, दूतकारनइं इ, चूतिकारिइ फ, जिम वधारानो शब्द कमा छे, पाम्यु वडग, पामिउ कइफ

३ पामि वकडग, पासि इ, मोकल्यु व, मोकलिउ क, मोकल्यो इ, मोकल्यू ग, मनउहलासि क, मनि उहुलासि इ, मनि उल्हासि फ.

४ कहिइ इ, सुणुसग आवउ ग, पाछु गड, वल्यु वडग, विलिउ क, वलउ इ, वालि फ, कुणकाजि वकडगफ, कूणकाजि इ.

५ आदर अ, स्वामी ड, करामानदेवा इ, करुनि दैव ग, ओदनकरथवइ व, मोकल्यु डग, मोकलो इ, देवि ड.

६ हेमरथराय वकडइग, जिसुणी अ, परीवार इ, वारवार इ.

७ सुगण ब, कुलतिल तिलक आधार अ, मानेमाहरा इ, माहरउ क, छरणथाअे इ, उरनथा कग, छरणथा ब, उरणथायु फ

८ आदया ब, विलुधी ग, वलुधी फ, धम ब, धरमे क, अबलातणे ब, नीसासडें बकडग, शर्मि व, शम्मि ड, इाइ स्यंमे फ, शर्मि ग

९ कउ ब, तसवरइ बड, जु ड, जुको ग, तु आपणी बकडइ, मनाग इ, मानीतणी बड, मानीतणी बड, मान गयु मानीतणो इ, मानीतणी क, तु जिवितिइ स्यु काम कग, तो जिवितिसु काम इ.

१० आपणी महिमा व, आपणु महिमा डग, आपणो महिमा इ, वीनवु ब, तुझ वीनवु कगडफ, तुझनि वीनवु इ, ति बोल्न नाखि वकफ, गछु ति बोलमनाखि डग, पाछो ते बोल्म नाखी इ.

११ पाम्युलाज व, अेणि कुमर क, पाम्यु लाजि कडग, अेणि कुमर पाडल जालि इ, पाडिउ लाजि फ, छछुदरी वकग, छछूंदरी डइफ, इम विमासी राजि क, नहींवाध समाडि ब, नहीवाध समाजि ड, नदी वाध समाजि इफ.

ढाल : २५

राग : महलार

गिरजा देवी नइ वीनवउ – अे देशी

१ गुणि बकडइग, मोहिउ इग, चींतइ इ, थावरि इ, वाइइरे फ, पीइ ब, पाइ इ, आहार कड, आहारोरे इ.

२ धगि धगि फ, नरहैडला अ, हइडलारे इ, निठर ब, निठुर ड, आदरि रे इ, आदरइ ग, लगार डइ.

३ खरउ क, खरउ फ, तणुरे डग, पूठइ ड, पूठिइ क, पूठिइ क, अवटाय इ, केडइ क, केडिइ इ.

४ तुं लजाविउ बफ, तु लज्याविउ क, तु लजाव्यु ड, तु लज्जावो इ, तु लजाव्यु ग, माहिइ ड, जोइता फ, शीम फ

५ विलपतु बकड, विलपतोरे इ, आदेसि बकडइफग, साचरयुरे वड, साचरिउरे क, साचरउरे इ, साचरिउरे फ.

६ वापट इ, बाटि फ, सकुन अ, शकुन ड, हवा भलारे ग, जो ते गोरी ग, जुउ क, मिलिरे ग, तु स्युं इड, तु स्यु वक, शकुन प्रमाण इक, सकुन ब, तुसि तउ शकुन प्रमाण फ

७ जाणीसिइ ड, जाणीसइ गक, परणी स्त्री हारि अ, तेणइ वनि इफ, जाणीसिइ फ, जेंहापरणी इ, परिणी स्त्री हीर फ.

ढाल : २६

राग : देशाख

रोतां रे रोता रे राई – अे देशी

अथवा

सारद सार दया करि – अे देशी

१ जोतां जोतां तेह कानन वडफग, कुअरनइं डग, कुयरनि फ, जाग्युं डग, जागिउ फ, हीडु ब, हैड कडग, हैयु इ, हइउ फ, आव्युं वकडइग, आविउ फ, दुखइ व,

दुक्खिइ क, दुखिइं ड, दूखिं इ, दूखि फ, नयने वकडगइ.

२ आवनि इ, मृगनयनी क, मनिमोहनी ड, मोहिनी क, दीठीरे वड, तीनइ नयनइ फ, मुझमन वकफ, मध्यइ वग, मधि क, मध्यि इ, मन पइठरे फ

३ वेणइ इ, वेणिइ कफ, आवाडालरे वकडग, हंसगमिनी व, हंसगमनी कडग, "हंस गामिनी ने बदले मृगनयनी छे इमा" झलती फ, रसालरे कग.

४ नेहां मिं इ, लाजत फ, नवतनु इ, नवतंठ फ, समागमि व, पालवी ग, मुंहनि व, मुंहनइ कग, मुहनइं ड, मुहनि इ, मूहनिइ फ

५ कुसुम कुंदक, कुंदकि ड, कुसुम सगहेरे व, मनावतु वकडग, नेहनिं इ, मनावतो इ

६ थानिक इफ, हैउ वकडग, हइउ इ, न फटिकाइरे फ, फटिइ ड, गोरीताहरइ वक, मुझनइ तेवन व, ताहरइ विरहिंइ क, तहारि विरहिं इ, धाय रे इग.

७ वलवंतु व, विलवंतु कडग, विलवतो इ, वलवतु क, आविउ व, आव्यू ग, आवु इ, अव्यु ड, जिनप्रासाद फ, प्रासादिरे वकडइग, जिमणू वकडइ, यमणूं फ, जिमणु ग, फिरइइ इ, तपदिणि इ, छंडि इ, कुयर इफ

ढाल : २७

राग : परजिउ

मृगावती राजा मनि मानी – ए देशी

तथा, छत्रीसीनी.

१ चिंतित क, प्रियसगम ग, सिउचक फ, विणस्यू व, स्यु ड, विणठनु मेहजी इ, येजि फ, विणस्यो ग

२ केंहा इ, वछ सगति व, वंछु कड, वछउ इ, वच्छसगते फ, वछुसंगत ग, तु मे वकइग, किस्यू व, किस्यु क, किसुं ड, वसु इ, किसू ग, कसिउ फ, करेसइ वकडग, करेसिइ फ

३ मनवीसामा वकडइ, जेकोभे क, दुखनु वकग, दुखनो ड.

४. चीतवतु वड, चींतवतो इ, निज अ, ३ावइजि वडइ, मुनिवेष फ, मुनिवेस वग, पुष्पादिक डग, पुफादिक वइ, त्यावनि कडवग, लावइजि इ

५ स्वइ व, सहाथइ स्विइ हाथइ ड, सईं हाथइ इ, स्वयहाथि फ, स्वइ हाथिइ ग, मुनिकरि वकड, मुनिकर व, सगमतु कड, सगमनो इ, सगमिनु फ, जाणइ ड, जेहनू वड, जेहेनु इ, तेहनु क, नहींजगिमलजि कडइ, जेहनु ग.

६ सकोमल वकडइग, नयणे क, वलीवली वकडइफग, कुयर इ, आनदोनि इ.

७ चिति अ, चिंतइ वकडइ, चितइ फ, प्रियउ ड, प्रिउ ग, चाल्यू व, चाल्यु डग, चाल्यो इ, चालिउ फ, आव्यु वड, आश्रिमि आयु इ, मुनिस्यु व, मुनिस्यु कड, मुनिसु इ, मुनीस्यू ग, जिनसेव जि अ, सेवीजि ड, श्रीजनसेवजि फ

८ किहाथकी व, किहाथकु कडग, कंहा थका इ, किहा थका फ, हुइ इण वन्निजि क, भेणइनि ड, इणइ वनिनि, इणि वनिजी फ, आश्रमि सेव्यु वड, कहिभे आश्रमसेव्यो इ, कहिमे आश्रमशेवुं फ, कहइअे आश्रम सेव्यु ग, दुरिषणइजि क

तीरथजात्रा ग, गयु वकडइग, सवर्णीजि वकइ, सुवरणजी व, सवर्णीजि ड, सवरणीजि ग. करतु बडफ, करंतो इग, अेणइ वडग, इणइ इ, आव्यु वडग, आव्यो इ, आविउ फ, तत खेविजि डइ, हूआ कड, हुया इ, हूया फ, ते वातिइ फ, करी श्री यनसेवजि फ

ढाल २८

राग : सींधूउ-गउडी

सपीआरा नेमजि—अे देशी अथवा नयर राजग्रह जाणइनि अे

१ कनकरथइ अ, वा सुणु कडइग, दीठइ हो इ, ठरया क.

२ सपीयारा कड, साजन वकडफ, भल्लइरे इ, मेटजि क, मुझमेटि इ, नाहालइ व, उन्हालि इ, उन्हाल्इ ग, नयणना हो य, नयणि इ, नेहो फ

३ तुजाणउ व, तु जाणु कइ, तु जणू डफग, तुम्हस्यु खरूहो यफडग, तुम्हसु खरउ हो इ, तुम्हसिउ कवरु हो फ

४ न जाणू वइग, न जाणु कड, तुम्हे सुंकरु हो इ, स्यू करूहो वफ, कयुं हो ग, परिहो इफग, आकरस्यू वग, आकरस्यु कडइ, चित्तहेव वडइ

५ प्रतिइ वड, तुम्हे बोल्यु वडग, तुम्हे बोल्यु क, तुम्हे बोलु इ, मनिइ अनतु फ, मनि मातो इ, अेक मलइहो इ, अेहेवी इ, जनवाच वकडइ

६ संयोगि वकडइफग, अेहके व, इक ड, उल्लसिइ हो ग, दीठा ग.

७ तुम्हनि इ, मूहनइ वड, मूहनि इ, मुझनइ फ, लागो फ, लागु डग, यम तुम्हणइ फ, साखीया डइग, नेहिहइ क, तिम ड.

८ कुमरभणइ कडइफग, हूमापल्य हो ग, सांकल्युहू वड, साकल्यो इ, तुम्हनइरषिराज फ, बीजू वग, जवू हो वफ, जायवु क, जवू डइ, तिहानू करवू वकडग, तेहानू करवू इ, तिहान् करिवू फ.

९ किया ग, आवु कड, साथि बकडइ, तुम्हनिं इ

१० तुम्हे मत क, कहि तुम्हे इ, कहि तुम्हइ फ, आवो ग, मतकरउहो फक, नविकरहो फ, नविसइ फ, अेकात वडइफग.

ढाल : २९

राग रामगिरी

अयमालानी, अथवा—अत्तिरी

१ सुणु डग, जोइ सयकेरो फ

२ मउटउ व, मोटु ड, तेहलहीइ बडग, तेहिइ वहीइ क, भक्तइ अधीन ग, भक्ति देव ब, भवितइं डग, दैवदानव ग मनमानि फ

३ दीधु वड, हाथि वडफ, हायिइ इग, मिइ ड, तुम्हेपण वग, तुम्ह पुण क, साथि वकडइ, अेणिवाति, अेगीवातइ कइग, अेणीवातिइ फ, करस्यु बडग, करसिउ क, तु निश्चिइं कडग, तु निश्चि इफ, लेस्यू व, लेसिउ क, लेस्यु डग, लेसउ इ.

४ कुमरतु कडफग, आग्रिह फ, मानइ वडफग, मानि क, बेद ब, रगिरेलो फ

५ क्षणअलगा कइ, अेकक्षिण ड, न्यणा क, सरखी वकडग, पुहुता वकड, करत पुहोती इ, पहुता फ, पुउता ग

६ साहसु वकइग, साहसुं डफ, आविउ क, आव्यो डइ, सुंदरिपणइ अ, मठच्छव फ, मडाणि वकडइग, उतारया इ, आदर इ, कीधा डइ, अतिउत्तग कफ, उत्तूग इ, मडपदीधा इ.

७ शुभलगन इग, सुहासिणि वकड, सोहासणि इ, सोहासण ग, गावइ ग, योसीइ ग

८ उत्सवि ग, उच्छविइ व, वेहूजणि क, वेहूजणि ड, वहुजणि इ, वहूजणइ फ, वेहूजेणि ग, नृपसीह क, नरसीह फ

ढाल : ३०

राग : अधरस,

पुण्य न मूकोइ--अे देशी

१ थयु क, थयुजि डइग, तेणिवारि वक, तेणइवार ड, तेणइवारि फ, तोणिवार ग.

२ कठ क, कहु डग, कुहु इ, चितिरे व, चित्योरे कइग, चित्योरि ड

३ कइलाकी व, कइलाकेली कडफ, कटिलाकी इ, कइलकाली ग, कइस्यूं वग, कइसु क, कइस्यु ड, केल्युरे वड, केल्योरे कइफ

४ मुख मटकइ मोहीउजि कइफ, मटकु तमगम्यूजि ड, मुखमटको तसगम्योजि ग, ममभान्युं वड, मनमानु इ, मोलव्योनि वग, मोल्व्युजि ड, मोलवउजि इ, मोल्वु फ, कुभरसणोरे कफ, कुभकरणोरे इ.

५ किनरिजि वडग, कंनरीजि क, कंमनरीजि फ, चालि वकडइग, कटिलम्इ वक, सहिनीजि व, सिंहणीजि क, सुकतिरे वड, सुकंठोरे कइ, सुकत्तिरे फ

६ अहिल्यासुं व, अहिल्यासु ड, इलहासिउ फ, तुं तेहस्यु कड, ते तुं तेस्यू फ, नीचसुजि इ, मिरीया वडइग

७ जेहस्यूं वग, जेहस्यु डग, मनमिल्यूं वकडग, मनिमिल्उजि इ, नविगुणइ फ, हरनदी वड, हरिइ फ, घरतुरु ड, चडिइनि इफ, उछंगि इ, उत्सगि ग.

८ स्यू दीठु वकड, सु दीठउ इ, सिउ दीठउ ग, हू खरीहरीजि फ, अतिनमाही डइफ.

ढाल : ३१

राग मेवाडउ

जिवडा तु म करे निंदा पारकी--अे देशी

१ मेहलतु वकडग, मेहेलनो इ, मेहलतु फ, नीसासि फ, सभारतु वकड, सभारतो इ, सभारितु फ, सभारउ ग.

२ त्रिभुवननूं वकडइ, त्रिभुवनमाहिं व, वेचातु वइ.

३ रहयु क, जाणुचंदोरे वग, जाणूचद्रुरे क, जांणूचद्रुरे ड, जाणूचदरेफ, दासहु डग, प्रसीव व, 'जे परमाणू ' प्रसीध' साखी कडी इमा नथी.

४ मधुरिमय वडग, मधुरिमिइ डइ, मधूरीमिइ फ, सालवहंति वकडइ, मध्य मलन्ही हति फ, वीजिइरे ग, किहि नवि कइफ, किही ड, कही ग, चीत हरंति ग

५ रणीत छूरे त्रास वइफ, छुरेतास कग, सुंदरि इ

६ समानि बइफ, स्युकरुं ग, जुनवि ग, रकधरि इ, जमनिज्यान फ
७ जेतुं आतरू वकडगफ, जेतु सरसव डइ, जेतु सरिसिव ग, मेर ड, अवर महेलीयां वड, महइलीया इ, महिलीया फ, तेतुदीसइ ग.
८ तेपण वकडग, ते पानि फ, सहसउदा कड्ग, जिहा फ.
९ अलामिरे इ, विरह व, विरहिइ क, सूरजिठ फ, सरली स्त्री भोग वकडग.

ढाल ३२

राग . महलार

जूउ रे सामलीआनु मुखडउ – अे देशी

१ कोपाली अ, कोपानल कइफ, मत्सर ग, उछाछल फ, प्रीतिम ड, प्रीयतम इ, ऋषि-वाणो ड.
२ वातडी वग, सवारति डफग, स्वारथ माराणउ अ, सपराणु वकडइफ, द्रव्याभिलाषो-पणु वगकडइ, तेहामछर जाणु इ
३ ओरेआसडी वइग, जुरे कड, चउरे आसडी फ, तु ते डग, तो ते इ, केहेवी इ.
४ आलि फ, चडाव्या व, चडाव्यु कड, चडावु इ, चडाव्यू ग, मारिनू बडफग, मारिनु कइ, कइर वकग, वैर इ, वाल्यूं व, वाल्यु कडग, वालुं इ, पीइ कइ, साचु वकडग, साचू डफ, सभाल व, सभाल्यु क, समालु डइग, सभाल्यू फ, मुझसु इ.
५ कुटल्नी इ, मुझस्यू वग, मुझस्यु कड, मुझसु इ, चाल्यू व, चाल्यु ड, न चालु इ, नविचाल्यू फ, सीहनि इ, साहामउ मिल्यु व, माहामु मिल्यू कडग, साहामो मलिउ इ, "मइ ते चींतव्यु पाल्यू" "काल भयगम कोपव्युं" आटली कडी अबडमा नथी, माहारू चींतव्यु क, महारु चीतवु इ, माहरू चीततवूं फ, पालु इ, पाल्यू फ.
६ भुअगम कफ, कोरवी कइ, कोपवो फ, ततखिणि क, लाधु कडइग, लाधू फ, साध्यूं व, साध्यूं कडग, तीणइ साधु इ, तेणइ साधू फ
७ माहरइ कगड, महरइ इ, कहणइ वड, कहिणिइ कफ, कहइणइ इ, गिणीइ इ, तेणीइ फ.
८ रणभरिइ ग, इणी इ, परिइ कइग, उनमतकुलि व, कीधउ सघलु फ, बोलइ कडग, बोलिइ फ, उल्इ कडफ, कुमरनि उल्इ इ, उगलिइ ग
९ आनद कइ, आनद पाम्या फ, अतिघणू वइ, अतिघणू ड, अतिघणो ग, तुठो ग, रूषिदत्तानि व, ऋषिदत्तानि क,-कलकिणा अ, कलकणी इफ, वुठउ इ.

ढाल ३३

राग : केदारु

दास फीटी किम थाउ राजा – अे देशी

अथवा, आज लगइ घरी अधिक जगीम – अे देशी

१ कोप्यु वडग, कोपिउ क, कोप्यो इ, सुगुणी ग थयु कग, जस्यु ड, जिसिउ फ, यस्यु ग, जिसु कइ, "फणीनरहरी" इमा वधारानो शब्द.
२ त्रीवली ग, चठावी बाफडा पनघणी व, डउतु वकडइग, डसतो फ, खिणि खिणि इ, कपावतु वकड, कपावतो इ, धरणी इ, कपावउ ग.

३ बोलइरे कडइफ, बोलरे ग, अेस्यू कीधुं व, अेस्यु कीधु कडग, अे सुं कीधु इ, अेस्यूं कीधु फ, दुष्टमना ड, दुष्टमनि वक, सापीणी ग

४ परभवतु कड, परभवनो इ, अवगणी ग, कीधु कइग, अन्यजनु क, अनिजनूं फ, अस्यूम फमा, मिईंजाणइ परणी ड, नइ विणु जाणइ इ, विणजाणि फ, विणजाई ग.

५ शरोमणि ड, कइतरूणी व, वइतरणी कडइ, वइतुरणी फ, तु तुउ क, "तु तु वइतरुणी ड"

६ अपयश डफ, अपजस इ, अवासनी वकड, आवासनी फ.

७ लुटा अ, लूटी क, लुटि ग, लपट लोभीनी इ, अक्षेहिणी क, कपटाकरी अ, तुरणी अ, आपिणि ग, उथापिणि ग.

८ ढोलोनइ मारुणी व, टोलुनइ मारुणी कडगफ, ढोलानि मारुणी इ, वनि ड, मालवणी कइ.

९ साविणी ड, अधुमाधुम ड, गुणी ड, गिणी ग, तुझनिदीधी फ, वटणी कडइफ.

१० ते मुखघा क, जु इमहणी कग, तउ तु व, तु तो महारी फ, वइरणी वड, वेरणी ग, पाहूणी इ, "हुइ शवद वमा नथी" रहयू व, रहयु ड, रहु इ, रहिउ फ, आहरणी वफ, आहारुणी क, आहाअणी व

११ मरणगरण व कड, इवइ मुइ'वइ इफ, रवावो फ, मदिरिं इफ

ढाल : ३३

दूहा

१ तवही वडफग, कोहल इ. थयु वग, आव्यों इ, 'अति' शवद गमा नथी.

२ वारिइ इ, वारयउ व, वार्यु डग, वार्यो नरहि इ, वारिउ न रहि फ, समारतु वकडइग, वरसे अश्रुधार ग.

३ आदता व, पायता ग, वारउ क, वारुकोइ ग.

४ वारयू व, कहितु वार्यु कड, कहिनो वारयो इ, कहितु वार्यु ग, बोल्यु व, बोलइ कइ, बोल्यु डग, सविवेकी ग, कुमरतु वग, अेस्यू कग, अेस्यु ड, केस्यउ करि इ.

५ ते रलइ वकडइग, लहेइ व.

६ जियति ड, जिवत फ, प्रवानइ ड, स्वस्वर्तो फ, यन फ

७ स्त्रीकारणिइं ड, अेतु वकडग, अेतो इ. अवलि ग, रीतू इ, मागिहासारथ अ, जगहासारथ व, कांकरिइ ड, सुचोंति वडग, न चोंति क, चतुरि ड, निचोति इ, नवीन फ

८ मलवा लहिइ इ, केहारि वनीना इ, पनोला फ, प्रणई प्राण वइ,-प्राणिइ प्राण डग, त्यगिस्री इ, वेहं ड.

ढाल : ३४

१ बोल्यू व. बोल्यु डग, म्हेडरे व. म्हरे कडग, म्होरे इ, दुहिलो व, दोहिलु कइग, दुहिलु ड, दोहिलु फ. अवतार वकडइग

२ तुम्हप्राण वडग, तु स्यू वग, [illegible] कडइ. [illegible] क. पुहुनाउ व, नेहस्यु साचु कडग. [illegible] नचू ड, [illegible] इ, नेहमिगड फ, वामाण ड

३ बलाबलीयां ड, छलछलीया ग, विहइला इ, विहला फ, उमटिइरे इ, छेहलगि कइ, छेहलइ फ, जे जस अ.

४ प्राणत्यजइ वकइ, तजइ फग, त्रणनीपरइरे व, तृणनी परिरे इफ, साचा इ, साचु फग, नेहबाध्या फ.

५ सुजन सुहाय ग, तिहालगइ क, तेहालगइ इ, सहणी आय इ.

६ लेखिणि फ, सरखु वकडग, सरिखो इ, सजनविण वग सज्जन क, सजनविना इ, जिव्यु ड, जितु न कहाय इ, जिवित न काहाड क, न कहीइ ड जिवाइरे फ, जिविनकहाइ फ, जिव्यु न कहाय ग

७ मरइ इ, मिलइ लिगी फ, तुम्ह ड, कहयू व, कहुरे कइ, कहयु डग, जे कहु ते फ, उछाहि वफग, मूया माणस वइ, जउ मिलउरे व, जुमिलउरे डग, जोमिलउरे इ, जगमाहि वक, जगिमाहिइ ड, जिगमाहि फ

८ वाउछु ग, वाहुछु ड, मुझनि इ, आपणा माणस वडग, आपणु माणउ क, हासुं केमकरति व, हासी केम करंति कडग, हास्यो किमकरति फ

९ मेल्वु क, मेलवारे इफ, शक्ति वडइग, वेचातु ग्रहयूरे व, वेचातु ग्रहउरे कइ, वेचातु ग्रहोरे, निश्चिइ कग, निश्चि डइ, पर्यंत इ.

१० बोल्भिोरे ग, रतन वड, साहासइं व, इणि क, अेणइ डग, इणइ इ, साहासइ कड, तुझनि इ, होसइ वकडग, होसिइ इ, सासइ ग.

११ आकलु व, अकुलुरे ड, निहा केहि दणि अ, कहु कड, कउ ग.

ढाल : ३५

राग : गुडी

समारी सदेसउ – अे देशी

अथवा सारद सार - अे देशी

१ वल्वु इ, बोलोयो क, बोलीआ इग, सुणितु कुमर सुदक्षदे कइफ, सुलक्षदे डग, ज्ञानी न तणइ फ.

२ यमघरि वकडग, यम तुझ घरि इ, मनमहातयु विलोलोले इ.

३ आदरि वकडग, आदर क, आहासती वक, आहांमाती ड, आहा सती ग, " ते किम आवइ . उपाय दे " फमां आ कडी नथी

४ बोलोउ व, नेमिदे क, इहोआ फ, अहा मोकलु वग, सुखनिकामिंदे वफ, कामिंदे कडग, कामइ दे इ

५ हसित-वदन वकड, शकित वड, शवितइ कग, "तव" शवद वकडगमा नथी, हसित विदन फ कहि सामिदे फ, "कनकरत कामिदे" इमां नथी

६ भुखिउ व, भुख्यु ड, भुख्यो इ, लख्र नसहि फ, होइ वइ, उतुभदे फ

७ कस्युउ इहिइ दे ड, होयदे ग अेणइ लोह दे वड, लोअदे इ, तुम्ह कन्हइ कइ, दीधाइ लोइदे फ.

८ उल्ध्यु व, उल्लध्यउ क, उलघिउ फ, उल्लंध्यु ग, उलघउ इ, काचि दे कड, काजइदे इ, जल्या वकडइ, केते छडया राजदे वकडइ

९ कहिननतइ ग, अवस्य अ, आपयो वकडइफ.
१० परीयछि इ, आरिं इ, (अतिर इ) अतिरि फ, तवमिल्या वकडइ.

ढाल : ३६

१ निरनारि ब.
२ वादलमाहाथी क, प्रगट्यो इ, होइ इ, जसुउ इ, भितइ वकड, उल्हसिउ व, उल्हस्यु क, उल्हस्यु ड, उहउलस्यु उ फ, उल्लस्यू ग
३ विपती वकडफ
४ प्रायस अ, प्रशस इ
५ मात्तेलिखो क
६ सगारिसजि वड, सिंगारिसजि क, सिंगारजसि इ, सगारइ सजि फ.
७ तिबोली फ, अधुरि क, सरंग कफ, खरडण वक
८ विणि भुयंग ब, भुयग कडइग, भुइगम फ
९ मागणथोक इ, प्रशशा व, चिन्निधरइ ग, धगइ फ
१० कुमुरगुणी वडइफग.

ढाल : ३७

राग : देशाख

अेकवीसानी

१ अेहवइ व, अेहव्यति क, अेहव्यतिकररे डफग, अेहवतिकर इ, आरूपीरे व, अति छवि क.

त्रूटक

२ रूपि जिम ससि रोहिणी कड, रूपि यम मसिरोहिणी इ, रूपइ जिम शशी राहिणी फ, तिरथी अग, राइं तज्या क, राय तजिय फ, तसनासिकास्यू ब, नासकास्युं ड, तस मासिकासिउ फ, पहरी इ, ढेसियकी पहरी.
३ माखइ इग, कूयररे इ, यममंदिरि क

त्रूटक

नेह परीक्षा कडइ, जोयवा वड, जेइवानिइ क, जोइवानि इ, जायवानइ फ, पालाइ फ, दीधी नवावा फ, प्रेमआणु ग, रोमन्यू व, रोमंचिउ क, रोमच्यु ड, कूयर रोमंच्यो इ, रोमचि फ, पनगरे चिहर फ, "मणिपन्नगरे विषहर" वक, विषहर विपधर इ, मनिवस्यु कडइफ, सजनसभावइ निरमला क, सज्जन सवावइ निरमलु ड, सज्जना सभावइ निरमलो ग.

४ आगूवरी फ, मदिरि वकडफ, उमटाया वड

त्रूटक

बिंदीजन इ, लाजतुर क, लाजतु ड, राजनो इ, खामिवणू फ, राजइ ठवी वकफ, राजिइं इ, सघली वडइ, मरहावी फ, वैरागिय डस सानिधिइ इ, सान्निध्यइ ग.

त्रूटक

शवससणी ड, खिवरमणो इ, किर्ति डग, दिनि दिनी डट

ढाल : ३८

राग : आसाउरी

१ गउखि व, गुणि कग, गोखि इ, गोखिइ फ, सोभा ड, धरतु डग, धरतो इ, उछाहाजि इ.

त्रूटक

विसराल इ.

२ सायरलहरडी क, "जेहवड जेह वयरागजि" अ, वइरागजि क, जेहेवड नट वैराग ब.

त्रूटक

कांम्यनीतु 'धाडिकाय सूइनी वाडि जवासातासी इ.

त्रूटक

३ लोहयू ब, लोम्युस ड, सगपामति क.

४ भइयशागुरू ग, भद्रजिशा फ, पुहुता बड, पोहता इ

त्रूटक

हर्ष पाम्यु कगड, रममेह आगमिइ क, सुगगुरूनि इ, सुगरनइं फ, केहि क, कहिइ फ, केहेते ड, यतियति ब, जिनपती फ, यपती ड, जतीपतीइ इ, आगमिं इ.

ढाल ३९

१ ज्ञानातित्रय ड, सोभाकर डग, मोमाकर फ, "गणधर पुरवभव ततखणि कहइओ' इ"

२ भरखेत व, पूरव अ.

३ सुमति अ, गुपति ब, समिगुप्ति क, चद्रयसा तेहा इ.

४ देसन व, वुने वडफग, उसामगो इ, कोध समता सोहइ बफड.

ढाल : ४०

१ निसंगा बक, तिहा चगा अ, तिहा सगा वगा ड, गगा चरिता बकडग, विरागिणी ग

२ "तेहनीलोक मच्छरगेहरे" आ कडो डमा नथी, मत्सर आणइ कइ

३ तवावि व, भवाडिइ क, नृ ससार रे अ.

४ तव तइ ब, तवरगइ क.

५ सगा अ, उपशमइवासी कफ, अहीयासइ क, शुभभाविरे क, सतीन दीधा फ

६ रागरोग ड, सवादइं अ, धारिउ फ, उपमादिरे बग, मदउनुदमादिरे ड

७ उपार्जइ क, दूख दोहिलागइ क, दु हुहिलांछइरे इ

८ बंधमारण इ, नाशकर्रातिरे कइ, अेह उदय ग, थकी जो इ

९ सयसहस गुणम ड, नडा करू छोडीरे अ, लरकगुणयं इ

१० नरगि अइ नरगिइ फ, सतारि क, जरतानिं इ, नरतीनइ फ.

११ कर्मशेषि ग, कर्मशेष इ, कर्मवीशेषि क, राजसुता यकडइफ, "थइ देखो रे" फ

१२ सयोगिरे वक, थइ इद्रा ग.

१३ सासन आयारे इशाना आयुरे ग, सान आयरे व, लवलेश रहोजे इ, ते लिध अपायरे व, ते लध अपायरे कइ, लिधउ पायरे इ, ते लीध अपायरे फ, भइ लद्ध अपायरे ग

ढाल ४१

राग : धन्याश्री

मसवाडानी छेहली देशी

१ सेवा क, जेहेवा इ, आनीसमरण ड, गुरुवयणा इ, सुण्याहो इ, निजतइ हो इ

त्रूटक

२ ततखेव व, वचनि ण इ, ली होती क, सुधू वक, सुधू ग, पावइ श्री गुरु पासइ अ, मुझआरोपउ क, आरोपु ग, "भवदेखे ततखेव" गमा वीजंवार नथी' "विलव नकरइ लवलेश" गमा वीजिवार नथी सुत थासुउ क, थाप्यु निजराजि वगड, थाप्यो निजराउजं इ, थापिउ निजराजि फ

३ संयम लीधु आदरिं इ, रषिदत्तास्यू वक, दुषूप क

त्रूटक

अमायी ग, अनगार क, विवर्जन क, वर्जता इ, दुध्यान ड, दुर्ध्यान इ, दुध्ययत्ति ग, भदिदिलपुरि क, भदलिपुरि फ, जिननइ कीधु ड

४ प्रजाली वकडइग, कलकी मत्राणी अ, तृणकर्मनिकाय कडइग, शुभमुनिधर्म इ, सुधि मनि फ.

परिशिष्ट–१

'ऋषिदत्ता रास'ना छंद

कविए आ रासमां सस्कृत-प्राकृत भाषाना मात्रामेळ छंदो के देश्य भाषाओना वर्णमेळ छंदोनो प्रयोग नथी कर्यो ए हकीकत एमनी कथावस्तुने जे स्वरूप आपवा धार्युं छे तेनु सूचन करती होय एम जणाय छे. रासमा ४१ ढाळो छे जेमा वीस जेटली राग-रागिणीओना प्रयोगो कविए कर्या छे. एवुं लागे छे के ऋषिदत्ता जेवी ऋषिपुत्रीने उचित आ रासना काव्यदेहने रूपपरिधान करवानुं कविने उचित लाग्यु होय आधुनिक शहेरी नारीना देहसौन्दर्यने नहि पण एक वन्यबालाना सहजप्राप्य देहलावण्यने अनुरूप काव्यदेहने अेमणे विस्तार्यो अने विकसाव्यो छे छटादार शब्दोनी झलकथी काव्यदेहने अलंकृत कर्यो छे रस निपजावी `एमा स्वाभाविक लावण्य आण्युं छे. राग–रागिणीओथी गरबा लेतुं चापल्य अने गीतनी लढणमा तरबोळ ने-तेथी ज देहभान भूलती मदोन्मत्त रीति प्रयोजी छे. पासादार भाषाप्रयोगोथी एना देह उपर वस्त्रपरिधान कर्युं छे कयाक कयाक कहेवतो मूकीने अेमना कवित्वने पुष्टि आपतो झाझरना तालनो मेळ मेळव्यो छे साचे ज जयवंतसूरिना आवा लाक्षणिक रचनाकौशलमा बाह्य सस्कारमा राचती शहेरी नारीना नहि पण ग्राम्यसस्कारथी स्वय प्रतिष्ठा मेळवेली ग्रामीण नारीना स्वरूपनो ख्याल डोकियुं करावी जाय छे कालिदासनी उक्तिमा कहीए तो

"किमिव हि मधुराणा मण्डन नाकृतीनाम्"

रासमा आवती देशीओ अने कडीओनुं परिमाण नीचे प्रमाणे छे :—

ढाल–१ दूहा १–८.
ढाल–२ राग गुडी सिद्धारथ नरपति कुलइ–ए देशी. कडी १–३ (कुल ११)
ढाल–३ राग केदारु. ढाल–अढीआनी. कडी १–१८ (कुल २९)
ढाल–४ राग आसाउरी. ढाल–वेलिनउ. दूहा १–२, कडी १–४७ (कुल ७६)+२
ढाल–५ राग रामगिरी. देशी–ईश्वरना वीवाहलानी. कडी १–२ (कुल ७८)
ढाल–६ राग गुडीमाहइ. ढाल चउपइनी. कडी १–२१ (कुल ९९)
ढाल–७ राग वइराडी. कडी १–३८. (कुल १३७)
ढाल–८ राग देशाख. देशी–माईई न पराई सरसति कडी १–५ (कुल १४२)
ढाल–९ राग महलार. देशी–मसवाडानी पहिली कडी १–१९ (कुल १६१)
ढाल–१० राग धन्यासी. देशी–विदेहीना देहइ रामइया राम कडी १–९ (कुल १७०)
ढाल–११ राग पचम. कडी १–१६ (कुल १८६)
ढाल–१२ राग केदारगुडी. देशी–चन्द्रायणनी–नमणी खमणी नई मनि गमणी कडी १–१४ (कुल २००)
ढाल–१३ राग रामगिरी देशी–ब्राह्मण आव्यउ याचवा सुणि सुन्दरी कडी १–१२. दूहा–६. (कुल २१८)

ढाल–१४ राग वइराडी देशी–त्रण तणा तिहा पूला धरीया कडी १–१५. (कुल २३३)
ढाल–१५ राग सामेरी. देशी–नेमनाथना मसवाडानो त्रीजी. कडी १–१६. (कुल २४९)
ढाल–१६ राग केदारु. देशी–सरस्वति गुणपति प्रणमउं कडी १–२२ (कुल २७१)
ढाल–१७ राग सबाब ढाल–बोलीउ प्रहलाद वाणी. कडी १–२३ (कुल २९४)
ढाल–१८ राग सोरठी. देशी–वर वरयो रे वंछित देइ दाम कडी १–११ (कुल ३०५)
ढाल–१९ राग वइराडी देशी–"पाडव पंच प्रगट हवा" अथवा "मन मधुकर मोही रहयउं" कडी १–१० (कुल ३१५)
ढाल–२० राग रामगिरी. देशी–सूरिज तउ सबलउ तपई. कडी १–१४ (कुल ३२९)
ढाल–२१ राग मारुणी. देशी–कासीमा आव्यउ राय रे. कडी १–१० (कुल ३३९)
ढाल–२२ राग मारुणी. देशी–प्रीयु राखुरे प्राण अधार. कडी १–२१ (कुल ३६०)
ढाल–२३ राग केदारु कडी १–११ (कुल ३७१)
ढाल–२४ राग आसाउरी देशी–शिवना मंगल वरतीए कडी १–११ (कुल ३८२)
ढाल–२५ राग महलार. देशी–"गिरजा देवीनइं वीनवउं' अथवा "वीर जिणेसर वांदउं विगतिस्यु रे" कडी १–७ (कुल ३८९)
ढाल–२६ राग देशाख. देशी–"रोता रे रोता रे राइ' अथवा "सारद सार दया करि". कडी १–७ (कुल ३९६)
ढाल–२७ राग परजीउ. देशी–"मृगावती राजा मनि मानी" तथा छत्रीसीनी, कडी १–१० (कुल ४०६)
ढाल–२८ राग सींधूउ–गउडी. देशी–"सीपीयारा नेमजी' अथवा "नयर राजग्रह जाणीईजी." कडी १–१० (कुल ४१६)
ढाल–२९ राग रामगिरी देशी–जयमालानी अथवा जत्तिरी. कडी १–८ (कुल ४२४)
ढाल–३० राग अधरस. देशी–पुण्य न मूंकीइ कडी १–८ (कुल ४३२)
ढाल–३१ राग मेवाडउ. देशी–जीवडा तु म करे निंदा पारकी कडी १–९ (कुल ४४१)
ढाल–३२ राग महलार. देशी–जूउरे सांमलीआनुं मुखडउं. कडी १–९ (कुल ४५०)
ढाल–३३ राग केदारु. देशी–"दास फीटी किम थाउं राजा" अथवा 'आज लगइ धरी अधिक जगीस" कडी १–११ दूहा १–८. (कुल ४६९)
ढाल–३४ राग केदारु–गुडी देशी–पारधीआ रे मुझ ते वनवाट देखाडि कडी १–११ (कुल ४८०)
ढाल–३५ राग गुडी देशी–"संभारी संदेसडउ" अथवा "सारद सार" कडी १–१०. (कुल ४९०)
ढाल–३६ राग देशील देशी–इद्रइं कोप कीउ कडी १–१० (कुल ५००)
ढाल–३७ राग देशाख. देशी–एकवीसानी. कडी १–५ (कुल ५०५)
ढाल–३८ राग आसाउरी देशी–मसवाडानी पहिली कडी १–४ (कुल ५०९)
ढाल–३९ राग सामेरी. देशी–जिम कोई नर पोसई ए कडी १–६ (कुल ५१५)
ढाल–४० राग गुडी देशी–"करि आगली कि माडव जावई" अथवा "सारद सार दया करि" कडी १–१३ (कुल ५२८)
ढाल–४१ राग धन्यासी, देशी–मसवाडानी छेहली. कडी १–६ (कुल ५३४)

परिशिष्ट–२

"ऋषिदत्ता रास"मांना केटलाक अलंकारो

कवि जयवतसूरिए पोतानी कृतिमां शब्दालंकारो अने अर्थालंकारो मोटा प्रमाणमा वापर्या छे कृतिमाना शब्दालंकारो वाचकनुं पहेलुं ध्यान खेंचे तेवा होइ तेमाना केटलाक जोईए

अन्त्यानुप्रास . आखी कृतिमा मळे छे पहेली ढाळमा पंक्तिओने अते नाम–प्रणाम, श्रुतरूप-नरभूप, चंग-अभग, प्रमाणि–ताणि, वगेरे छे

आंतरप्रास : भजय नववय नवलनेहा (३७ १)
कायमाया अभ्रछाया मोहवाह्या जन भमई. (३८ ३)
दीनवदन अतिचचल लोचन, तनि वरसई परसेवजि (१४.५)
कामिनी गजगामिनो जिहा यामिनी कर सममुखी. (२ १) वगेरे

वर्णसगाई : सासनि सोहकरी सदा, श्रीविद्या श्रुतरूप,
ते मनि समरूं जेहनइ, सेवई सुर नर भूप (१.२)
तेजि तरल तोखारा . (३ ११)
चंचल चालि चालई वलि खजन, चगुर चकोरा कोडि. (४.२)
शुक पिक कक कुटिल कलहस. (४.३) वगेरे

आ अने आवा शब्दालकारो पक्तिओने कर्णमधुर बनाववा उपरात भावप्रदर्शन अने रस-जमावटमा उपयोगी भाग भजवे छे

अर्थालंकारोमा उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अने दृष्टातनी तो आ रासमा झडी वरसे छे. दरेकना पाच–छ उदाहरण जोईए. बधा ज अलंकारो नोंधवानो उद्देश नथी

उपमा गौर केतकि तनु जिस्यु (२ ३)
अष्टमि ससि सम भाल (४ २१)
दीपशिखा सम नासा उन्नत, तिलकुसुम अनुकार (४ २४)
रभाथंभ निभ उरु मनोहर (४ २८)
वेणी भूअग जिसी. (३६ ८)
सरल जिसी हुई चंपाछोड (६.५) वगेरे

रूपक : सकलकलागुणगेह (२ २)
चालती मोहणवेलि (४ ७) प्रेमतणी परनाली (४ २०)
लोचनबाणि (४ २१) कल्पवेलि अवतारा. (४ २९)
अवगुण केरी खाणि (११ ३)
जग गोरसनू वृत रे सु दरी (३१.६) वगेरे

उत्प्रेक्षा जाणे सुंदर मधुर सर, विद्याधन उच्छाहि. (४ ५)
लोचन बाणि वेध्या जन थंभई, जाणे लीधा ताणी (४ ७)
कल्पवेलि जांणे जंगम, आवी घर बारणई रे. (९ २)
हेजि हसती जाणे वरसई, फलपगरनउ पूर (४ २५)
असुधार आषाढी घनस्यु, जाणे लायउ वाद रे (१८ २) वगेरे

दृष्टांत : जिम चिर विरही प्रियुमुख देखी, मनमाहिं पामइ हरख विशेपि,
तिम राजा रलीआयत थयउ,जिम ससी देखी चकोर गहगहयउ. (७.३)
जोई तु तापस को नही, सूंनीं दीठी आश्रम मही,
सर सूकउ पंखी जिम तिजई, नीरसथी श्रोता उभजई. (७.२९)
अति चतुर कुमरनई सगि, सा मुग्धि पिण हुई रंगि,
वर कुसुमनइ सबन्धि, अति तैल हुई सुगन्धि (८ २)
कनकरथ मननु मन माहइ, ईम रहयउ अवटाइ.
जिम पखी पाजरडई घाल्यउ, पणि नवि चालइ काई. (१६.८)
सा रोइ रही आपोआपइं रे, जिम सायरडं लहिरी व्यापइ रे. (२१ ४)
भोजन पामी भावतु, भूख्यउ न सहई विलंब दे,
तिम प्रियप्रापति कारणइ, विरही हुइ उत्तम दे (३५ ६) वगेरे

व्यतिरेक : मुखसशि जिनइ ससीहर मडल, दीसइ कलंक समार. (४.२४)
नगरी कावेरी, अमरपुरीथी जे अधिकेरी, सोभा जस बहुतेरी. (२ १)
जीती वीणा मधुरिमा, कलकंठी सुकुमाल. (४ २५)
नवनीत पाहिं कुअली, हूंती जस तनवाडी (२०.१०)
जे परमाणूं रे ते वडता रहया, तेहनी रभा कीध,
जाणउं चंदउ रे तसु मुखदासडउ, दीसइ अक प्रसिद्ध. (३१ ३)
मृग जिता सेवई वनवासो, पंकज नीरि पडंति,
एक ठामि न रहइ वली खजन, मनमंइ भीति वहंति वगेरे (४ २३)

अतिशयोक्ति : रडी भर्या तलाव कि, ससनेही खरी रे. (९ १७)
. प्रासाद गगनस्यउ मंडई वाद. (४ ४२)
परवत फाटइ इणइं दुखई, नीला झाड सुकाई,
ऋषिदत्ता पथि साचरई, अति आकुल थाई (२०.१)
गंगावेल् रे सायर जलकणा, जे गणी पामइ पार,
ते पणि तेहना गुण न गणी सकई, जिहवा सहिस उदार (३१ ८) वगेरे.

अर्थान्तरन्यास :
समुद्र मर्यादा किम तिजइ ? छंडई गिरी किम ठाइ ?
जेणइं जनमाहिं हासु हुवई, किम करई उत्तम तेह ? (१३ २)
एक कोईनइं अपराधइं सहुनइ, कोप न कीजइ चित्तइ जि,
भंईसु मादउ तडिंग डाभीइ, ए नहीं रूडी रीति जि (१४ १३) वगेरे

श्लेष :- इणि वातइ म करस्यउ प्राण, तउ निश्चइं लेस्यउ प्राण. (२९ ३)
(प्राण= (१) हठ, वळ (२) जीव.)
वादल्माहिथी सूर प्रगटयउ हुई जिस्यु,
रणजित्या जिम सूर दीपति उहल्लस्यु (३६.२)
(सूर= (१) सूर्य, (२) शूरवीर)

(नोंधः- उपर उदाहरणरूपे ज थोडा अलंकारो नोंध्या छे. बधा ज
अलंकार व्यवस्थित रीते नोंधवानो आशय नथी)

परिशिष्ट—३

"ऋषिदत्ता रास"मांथी सूक्तिओ अने कहेवतो

अणदीठानउं दुख नहीं, दीठउ विघटइ साल (४. ३७)
वेध तणी छइ वात ज घणी, प्राणीनइं मेलइ रेवणी (६ ९)
प्राणी पीडाइ प्रेमनइ वसइ. (६ १०)
प्रेम कीधउ तिहा बाध्यउ जीव. (६ १२)
मनइ मन ते एक कहायइ (६,१४)
एणइ संसारइं एतलउ सार, प्रेम तणउ मोटो आधार. (६.१५)
वार्यु न रहइ व्यसनी. (६ २१)
प्रार्थ्या विण वरसई मेह भूरि (७.१७)
स्युं कहीइ सज्जननइं देव, ते उपगार करइ स्वयमेव (७.१७)
सहजइं करइ परनइं उपगार, स्वारथ वछइ नहीं लगार,
तेणइ सज्जनि ए सोभइ मही, रवि उगइ तस पुण्यइं सही. (७.२९)
वारिहारि घटिका सगि, झल्लरि सहइ प्रहारनी व्यथा (७ ३१)
डाहइ कुसगति तर्जवउ. (७ ३३)
न रहइ ढांकयउ नेह. (८ १)
दूधमाहि साकर (८.२) दूध स्यउं साकर भेली (२९.४)
गुणवंत नरनी सगतइं, गुण तणउ होत प्रकाश. (८.२)
रोर मनोरथ रही मनमांहि. (८.४)
सरजित अन्यथा नवि हवई ए (८ ५)
काल कुशलनइं जे छलई ए (८.५)
नहीं निमिषनउ वीसास जीवित (८.५)
खाडनइ ठांमइ साकर (९ ५)
कल्पवेलि लही अलवि तु कारेली खप नहीं रे (९.५)
ते विरला जगमाहि कि प्रीतइं जे पलइ रे. (९.६)
खरा दोहिला प्रीतिका पालना रे (९ ७)
माणस तेह प्रमाणि, जे प्रीतइ अकमना रे (९ ८)
सूली रूडी सउकिथी. (९.९)
जेहवी आभां छाह कि, पाणी लीहडी रे,
झबकई दाखवई छेह, विदेशी प्रीतडी रे. (९ १६)
उंचा स्यउं मोह, विचक्षण कुंण करई रे,
नीठर मेहलि जंति कि, परदुख नवि धरई रे. (९.१७)
अदेखी स्त्रीनी जाति, कूड करती नाणई भ्राति. (११ १)
अवगुण केरी खाणि, नारी एहवी निरवाणि (११ ३)
जेणइं जगमाहि हासु हुवई, किम करइ उत्तम तेह ? (१३ २)

अवगुण सबला छावरई, जे जसु वल्लभ हुंति,
मरसव जेता दोपनइं, दोषी मेरू करति (१३.दूहा ५)
सूकुं बलता नीलूं लागई. अन्याईनइं दोषी. (१४ ११)
एक कोईनइं अपराधइं सहुनइं, कोप न कीजइं चित्तइं जि,
भइंसु मादउ तडिंग डाभिइं, ए नहीं रूडी रीति जि. (१४.१३)
जे गायनइं वालई, अर्जन तेह विख्यात जि. (१४.१४)
आदर्श स्यउ करई कंकणई ? (१५.१५)
अवगुण सगा न होई. (१६.१७)
पूरव करम शुभाशुभ दाता, अवर स्यउं केहउ दोस रे (१८.११)
करम साथइं रे कुंणइं नवि चालई, करमइं नडया रे अनेक जि (१९.१)
पूरव करम उदय थकी, परिसह सह्या रे अपार जि. (१९ २)
पूरव पुण्य तणइं वसइं, मति हुई सहाई. (२० ११)
पाहण पावकि परजलई, फाटई पिण मिलई वारई,
मज्जन दीठई दुख साभरई, आवई हईडला वारइं (२०.१४)
पाकी बोरि अनइं स्त्रीजाति रे, देखी नूना वाहई सहु हाथ रे. (२१.५)
वनिता अनइं सेलडी वाड रे, देखी पुरुषा तणी गलई डाढ रे. (२१ ६)
शील ते स्त्रीनइं परम निधान रे. (२१.७)
कल्याण कोडि लहई सही, नर जीवता (२३ ११)
अबला तणइं नीसासडइ, पुरुषनई पाडइ शर्म (२४.८)
जउ माम गई मान्या तणी, तउ जिवतइं स्यउं काम ? (२४.९)
छछुंदरि जिम सापि साही. (२४.११)
नेह खरु नारी तणउ रे, नर पूठइं अवटाई,
नर निसनेही निरगुणी रे, बीजा केडइं थाई. (२५.३)
आभा विण स्यऊ मेह ? (२७.१)
कुण किणना किहाथी मिलई हो, पूरव प्रेम-संयोग,
एक देखी मन उहलसई हो, एक दीठइ करई शोक (२८ ६)
प्रीति नयना सरिखी कहाइ (२९.५)
उत्तमनइं नेह नीच स्यउ रे, जिम मिरीआ कपूरो रे (३० ६)
जेह स्यउं मन मिल्यउ रे, ते विगुणाई सुरंग (३० ७)
रोर घरि जेम निधान (३१.६)
स्वारथ सहू सपराणउ. (३२.२)
पी न सकुं ढोली सकु (३२.४)
अमीइं मेह वूठऊ (३२.९)
वेई पीडा आपणी, परनी करई उथापणी,
जिम ढोला नइं मारुणी, विचि अंतराई मालविणी (३३ ९)

पुरुष मरई स्त्री कारणइ, ए तउ अवली रीति (३३. दूहो ६)
विसमी विरहनी वेदना, रांम लहई जगि सोई (३३. दूहो ७)
दोहिलउ प्रेम विवहार. (३४ १)
युवतीजाति हुई अदेखी; परनी न सहई प्रशंसा रे,
आपणपू अधिकेरुं मवावि, ओछी अति नृशंसा रे (४०.३)
हसता आलई कर्म उपराजई, दोहिलउ तास विपाक रे. (४०.७)
निंदक ते चाडाल सहुथी, नरगि सहई सताप रे (४०.१०)
विलंब न करई लवलेस जे उत्तम, जाणी अथिर संसार,
जे जे वेला धरम संयोगई, ते ते कहीई सार. (४१.२)

परिशिष्ट–४

"ऋषिदत्ता रास" मांनां केटलांक वर्णनोनी सूचि

स्थळोनां वर्णन :

रथमर्द्दनपुर (२.१). कावेरी नगरी (३ १) मित्रतावती नगरी (६.१८). सरोवर (४.१–५) बगीचो (४ १३–१८) जिनमन्दिर (४.४१–४७).

पात्रोनां वर्णन :

राजा हेमरथ (२.२) राजा सुन्दरपाणि (३ २), राजा हरिषेण (६.१८) तापस विश्वभूति (७ ६), गुरु भद्रयशो (३८ ४). कुंवर कनकरथ (२.३) कुंवर अजितसेन (६ १९) कुंवर सिंहरथ (३७ ५,४१ २)

पटराणी सुयशा (२ २), पटराणी वसुधा (३ ३), राणी प्रियदर्शना (६ १९)

कुंवरी रुखमणी (३.४,३२ १). महासती चंद्रयशा (३९.४), साध्वी सरा (४०.१ अने ५)

नायिका ऋषिदत्ता (४.७,४.१९,२९, ५.१,९ १–४,३१,२–५,३६ ३–८)

योगिनी सुलसा (११ ७,१५.१–७)

अन्य वर्णनो :

कनकरथ ऋषिदत्ता परणीने आव्या त्यारे रथमर्दनपुरमा उत्सव (१०.१–६)

रथमर्दनपुरमा सुलसाए मचावेलो उत्पात (१२.१–९)

ऋषिदत्ताने अपमानित करी गाम बहार काढवी (१७.५–१३)

ऋषिदत्तानो विलाप (१८)

कर्मनियम अफर छे ते जणाववा दृष्टांतो (१९)

असहाय दशामा जंगलमा रखडती ऋषिदत्ता (२०.१–१०)

कनकरथ विलाप (२२) कनकरथनी विरहदशा (२३.१–९)

कावेरीमा कनकरथनुं आगमन अने लग्न (२९.६–८)

परिशिष्ट–५

जयवतसूरिमां न होय तेवां पुरोगामीओओ आपेलां वर्णनोमांथी किंचित्[1]

आख्यानकमणिकोष :

रथमर्दननगरनुं वर्णन :

मध्यदेशमा रथमर्दननगर छे. जेमा विलास करता रथो छे अने चक्रवाकनी शोभाथी युक्त सरोवर छे. ज्या स्वजनोनो विरह नथी. जेमा फीणना जेवा धोळा मंदिरो छे जेणे पोताना पगना स्पर्शथी पृथ्वी पवित्र करी छे अने जेओ शास्त्रना भावने जाणनारा छे तेवा मुनिओ त्यां वसे छे. ज्या कोई जातनो उपद्रव नथी अने जे धनधान्यथी भरपूर छे ओ तमाम देशोमां शिरोमणि छे. ज्या श्रावकोए पोताना बाहुबळवडे धन पेदा कर्युं छे अने दान देवामा तेओ कल्पवृक्षना माहात्म्यने पण नीचुं पाडनारा छे. त्याना राजा शक्तिशाळी छे तेमज गयेली संपत्ति पाछी मेळववामा रस धरावनारा छे तेमणे भारे पराक्रमथी शत्रुओने हराव्या छे. एवा एमना पराक्रमथी लाल थयेला नखोमा नमस्कार करता सामंत लोको धन्यता अनुभवे छे.

कावेरीनगरीनुं वर्णन ·

कावेरी नदीथी जेनी शोभा वधेली छे. जेना महेलो आकाशने चाटे छे जे नगरी धन-धान्य तेमज मनुष्यथी युक्त छे ज्याना माणसो पासे चकचकता पद्मरागना रत्नो छे अने मोती, शंख तेमज परवाळा अढळक छे तेवी कावेरीनगरी छे तेनुं वर्णन कोण करी शके ?

सरोवरनु वर्णन :

ए सरोवर घणा झाडोथी युक्त छे ने तेनी आसपास वन छे वनमां विस्तीर्ण शाखा-वाळा, पाददावाळा ने साग फळवाळा अनेक वृक्षो, संतापने हरनारा अनेक दृश्यो अने नयन तेमज मनने हरे तेवी मोहकता छे सरोवर पोताना पाणीनी लहेरोवडे जाणे के कुमारने भेटतुं न होय ! अदरना कमळो जाणे के कुमारने अर्घ्य न आपता होय ! अंदर तरता कलहंसोनो मनोहर अवाज अने गुंजारव जाणे कुमारना गुणगान न गाती होय !

हरिषेण तापसनु वर्णन :

तापस फळ-फूल ने कंदनो आहार करतो पोताना नियममा चुस्त हतो घडपणथी एना अंग ढीला पडी गया हता एना माथा उपर शरदना चन्द्र जेवा धोळा वाळ हता. माथानी जटा जाणे के पक्षीना आश्रय माटेनुं कल्पवृक्ष न होय ! शरीर उपर शरदना वादळ जेवी भस्म लगाडतो ते एवी लागती जाणे के शरीर उपर पुण्यलक्ष्मी ना आवी होय ! आ तापस आश्रमनो संरक्षक हतो अने तत्त्वज्ञाननो प्रकाश करनारो हतो. पोतानी मर्यादाने पाळनारो–खूब सत्त्ववाळो–मेरु पर्वत जेवो भारे अने लोकोमा मध्यस्थ हतो

१. सस्कृत–प्राकृत रचनाओमांथी गुजरातीमा सार आप्यो छे

श्मशाननुं वर्णन :

श्मशानमा शियाळना भयंकर अवाज थाय छे कायर माणसो डरी जाय छे' कोल्हुनी डाढथी मुडदाना मास चुंथाय छे वेतालनो भय घणो देखाय छे कोइक ठेकाणे मुडदा बळे छे तेनी दुर्गंध आवे छे. कोईक ठेकाणे भूत हाथ ऊंचा करी नाचे छे कोइ ठेकाणे वीरपुरुषना देहना बे कटका पड्या छे. कोईक ठेकाणे कापालिको विद्या साधे छे.

कनकरथ रूक्ममणीने परणीने ऋषिदत्ताने साथे लइने पोतानी नगरीमा पाछो फरे छे त्यारे डाबी बाजु ऋषिदत्ता ने जमणी बाजु रूक्ममणी ए वच्चे कनकरथ उत्तम हाथीना स्कंध उपर बेठो छे. आम बे प्रियाथी हाथीनी उपर रति ने प्रीति वच्चे जेम कामदेव शोभे तेम शोभे छे एना उपर सुधानी धाराथी अभिवृद्धि थाय छे लज्जा अने श्री वच्चे जेम कोइ शोभे तेम ते शोभे छे, गंगा अने सिंधु वच्चे मध्यदेश जेवो, उत्तरकुरु अने देवकुरु वच्चे सुवर्णना मेरु पर्वत जेवो, सीतानदी अने सीतोदा वच्चे महाविदेह शोभे, दर्शन अने ज्ञान वच्चे कोइ मोक्षगामी जीव शोभे तेम ते शोभे छे

ऋषिदत्ताना शयनगृहनुं वर्णन :

बहु किंमती, विशिष्ट प्रकारना अने बराबर मजबूत लाकडाथी बनावेलुं एनुं वासभवन छे सुन्दर वस्त्रना चन्दरवा बांधेला छे. भींतो पर पंचरंगनी भातोवाळा चित्रो लटकावेला छे. धूपसळीनी सुगन्धथी घर सुगन्धित बन्युं छे ताम्बुल–पुष्प वगेरे भोगसामग्री छे जेनुं कोमल ओशीकुं गंगानदीना काठानी रेती जेवु सुवाळु छे, एवी सुंवाळी शय्यामा ऋषिदत्ता सूए छे.

धर्मनु वर्णन :

आ संसार इन्द्रजाळ जेवो छे पिता–माता, पुत्र, बळ ने राज्य सर्व क्षणभंगुर छे. विषयमा मोहित थयेला माणसो धर्मनु आचरण करता नथी. जे प्रमाणे मृगो झांझवाना नीरने पाणी मानी एनी पाछळ भम्या करे छे तेवी ज रीते माणसो संसारनी मोहजाळमा फसाई भवमा भम्या करे छे किंपाकनु फळ देखावमा सुन्दर होय छे परन्तु स्वादमां कडवुं होय छे, ते ज रीते विषयो शरुआतमा मधुर परन्तु परिणामे भयानक होय छे जे रीते बिलाडी दूधने ज जुए छे परन्तु पासे लाकडी लईने उभेलाने जोती नथी तेम मनुष्य विषयसुखने ज जुए छे भविष्यना दु:खशल्यने जोतो नथी. पाच इन्द्रिय होवी ते मनुष्यभवमा उत्तम छे अने सारा कुळमां जन्मीने साधुसमागम थवो ते वधारे उत्तम छे हे भव्य जीवो ! आ बधा गुणो मेळववा दुर्लभ छे माटे जिनधर्ममा उद्यत थाओ संसारमां जीवो आठ प्रकारना कर्मथी भमे छे आयुष्य, नाम, गोत्र, वेदनीय, अंतराय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय अने मोहनीय कर्म इच्छाओने मर्यादामां राखवी जोईए. हिंसा, परिग्रह, मांसाहार—आ बधा नरकना कारणो छे. आ नरकमा तेत्रीस सागरोपमनुं आयुष्य व्यतीत करवुं पडे. त्याथी नीकळीने तिर्यंचगतिमा जीव जाय. त्यारपछी मनुष्यभव मळे. मनुष्यभवमा मानसिक शुद्धि थई शके. परंतु जे माणसो रागमा मूर्छित थयेला होय छे. परलोकथी पराङ्मुख अने बहु ज प्रमादी रागद्वेषथी युक्त होय छे तेओ भवमां भम्या करे छे. ज्यारे अशेष कर्मनो क्षय थाय त्यारे मोक्ष प्राप्त थाय दुष्ट प्रवृत्ति, अविरति मिथ्यात्वनो त्याग करो त्यारे समकित प्राप्त थाय सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्रथी अविरतिनो नाश थई शके. मुक्तावस्थामां अनंतगुणु सुख छे. तमाम कर्मोनो नाश थाय छे जीव केवळज्ञान केवळदर्शन अनुभवे छे मनुष्य तेमज देवोने जे सुख नथी ते सुख सिद्धने छे.

विवेकमंजरी अन्तर्गत वर्णनो—

कनकरथ अरिदमन साथे युद्ध करवा चाल्यो त्यारनु वर्णन:

लश्करे जयारे प्रयाण कर्युं त्यारे सूर्य ढंकाई गयो पवनवेगी घोडा लश्करमा हता. आकाशरूपी वक्षस्थलमा जाणे स्तनरूपी घोडा दोडता न होय तेम तेओ चाल्या.

आश्रमनु वर्णन :

राजा हरिषेण जे आश्रममा गयो ते आश्रममा विश्वभूति तापस हता त्या पोपटो तापसना शिष्योने प्रेरणा करता हता के "अतिथिनु आतिथ्य करो" हरणाओना मोढामाथी खाधा पछी आवेला धानना ढगला पड्या हता ने मोढामा फीण आव्या हता मुनिना खोळामा बच्चा वेठा हता वृक्षोनी छायामा तापसमंडळ वेठेलुं हतु ने कुलपति शिष्योथी वींटळायेला हता.

अज्ञातकविकृत कथामां आवतां वर्णनो :

पंचतीर्थंकरोनु वर्णन :

जे तीर्थ पासे राजाओना मुकुट नमेला छे. प्रकाशरूप नदीना प्रवाहथी जेना पग धोवायेला छे, कचनना पाच मेरुना फूल जेना पर चढेला छे एवा पंचतीर्थंकर भविपुरुषोना कल्याण माटे लक्ष्मी आपनारा थाओ

(१) उछळता भ्रमर समान तरंगोवाळा मागध नामना आनद आपनारा तीर्थना पाणी वडे स्फुरायमान योजनप्रमाण नाळचावाळा कळशोवडे देवोवडे जेओ अभिषेक कराया, नृत्य करती कुम्भस्थल समान श्रेष्ठ (स्तनवाली) अने नम्र श्रेष्ठ होठवाळी अप्सराओवडे जन्ममहोत्सवमा स्तुति करायेला ते वृषभ प्रभु कष्टोथी तमारु रक्षण करो.

(२) भूत, प्रेत, विकराल अने श्यामवर्णवाळो विलास करतो वेताल, काळज्वर, अंधकारमा भमती राक्षसीओ. वनमा फरती दुष्ट डाकिनीओ, शाकिनीओ, शक्तिशाळी एवी पिशाचनी श्रेणीओ, दुष्ट देवीओ, पामर स्त्रीओ आ बधाने, स्फुरायमान छे नयनी श्रेणी जेमा एवुं श्री शातिनाथनु स्मरण शातपणाने पमाडे छे.

(३) विकस्वर रात्रिविकासी कमळना कोमळ अने उज्ज्वल पत्र समान श्यामवर्णवाळा, स्त्रीओना मननी क्रीडाने माटे क्रीडागृह समान अजोड निर्मळ गुणना समुदायवाळा, पवित्र आत्मावाळा, स्फुरायमान यादववंशरूपी मानस सरोवरमा राजहस सरखी शोभावाळा, भव एटले संसारमा इष्ट मनुष्योने विलास करतु छे रूप जेमनु एवा, श्री नेमिनाथ भगवानने नमस्कार थाओ

(४) स्पष्ट (सुन्दर) रूपवाळा, अत्यंत बळवान महान नागराजवडे धारण करायुं छे छत्र जेमने एवा, विकस्वर पद्म, विशाळ कुवलय अने कमळ सरखा विकसित नेत्रवाळा जेमने जोईने सुंदर नम्र, अप्सराओ सहित श्रीनागराज तथा तेमनी देवीओनो समुदाय सेवानी प्रार्थना करे छे ते आ श्री अश्वसेन राजाना पुत्र पार्श्वनाथ भगवान भव्य जीवोनी समृद्धिने माटे थाओ.

(५) वास्तविक जेमनी स्तुति करवाथी आधि, विरोध, केदीपणु विगेरे विपत्तिओ नाश पामे छे, वळी वाघ, दुष्टहस्ति, पाणी, अग्नि, वायु विगेरे महान विघ्नोनो समुदाय क्षय पामे

नारी जाति नरहि मरवादि, लोक पड्या सहू मिथ्यावादि.
गुरुसिउं ठगाई पापनइ संचि, थोडि आयुखई द्वेप न मूकई,
माय बेटीना गरथ जिसातई, आपणा छोरु कुखेत्रिई घाति.
पापी धनी जीवई चिरकाल, मत विशेषि पामिई आल,
धरम तणउ कोई मरम न जाणिई, तु कुण सीलतणा गुण माणिई.
थोडूं घणूं जे आपणूं राखई, ठाम नही कई माणस पाखई,
जग व्यापि विठउ सहू माहलिड, लाजि लाज करी कोई चालि
साचूं कहिता राख ठाम नही कई, माणस सह रीसाई तिणई,
कारणि अधिकुं न कहाई वली, जे सील धरिई सुखवास तिहतणूंउ ह जाई दास.
तेह खरुं जे कसवटि पहूंचि, सोनानी परि गुण आलोचई,
मटिउं मादल तिम सहू को जाणिई, आपणी घरि तिम सील वखाणई."

ऋषिदत्ताना अलंकारोनुं वर्णन :—

"आगई ते वली सयल शृंगार, तेउ नही कहिनि पाडि रे,
राखडीई वली गोफणउ, तिलक तपई नलाडि रे
झालि झमालि झबूकती, मयण शखा करि टीलूं रे,
हार, दोर, करि कंकण खेलिइं, कई केउरडूं कोटील् रे
चूडि तणउ चलकारउ सारउ, मेखला मउड मंडाण रे,
बाहुडलीई नवा वहिरखा, मूंद्रडीए मन मोहि रे
नाग नगोदर पदकडी, पान कउली करि झाली रे,
नेउरडे रम रम झमकती, ठमकंती सा चाले रे.
माथई मोतीनी सरि सोहिई, सींदूरीउ सिणगार रे,
आजी अलविई आखडो रे, खडीकाम मफार रे
कूंत्रते झूबख झूमणा, ताकई लोचन त्राण रे,
ते नवि दीसि आवती, साजणनालि प्राण रे

कनकरथ रुखमणीने परणवा अयोध्यानगरीमा आवे छे त्यारनुं वर्णन –

"नयर अयोध्या आवीया ए, करई परवेस मंडाण तु,
हाटि हाटि गूडी बहु उभवी ए, वली वन वन वाला शोभवीए
बहू चित्र विचित्र चद्रूआ ए, अतिफार मनोहर मंडीआ ए,
घण दर्पण उली झलकीअ ए, करि कंकण सोवन खलकीआ ए
श्रेणि चडावी कलसनी ए, झल्लर मंगलि रुणझणई ए,
सखी मोती चउक पूरावीअ ए, धूपघटी धूपावीअ ए
नवरग तुरगमसू खेलीअ ए, पगरभर फूल मेहिलीअ ए,
रमसार शृंगार सगाईअ ए, वरवीणा वंस वजावीअ ए
मोति करि झूबक झूमन्या ए, हीरागल चीर कलबन्या ए,
छड छाबड ककू नीपना ए, किम लालि झमाली कि सीपना ए
छत्र चामर चउपट गहई ए, दलि केतकी परीमल महमहि ए,
इम नयर सुश्रीक विभूषीउं ए, सह फोफल पानि सतोखीउ ए.

गजकोटि घूघर सामटा ए, झगझाग तुरगम सखिटा ए.
एक धाई हार जि त्रूटितई ए, एक वेणी दंडसु छूटतई ए,
सखी नेउर पासे फटितई ए, एक अतिमादल कूटितइ ए
एक आविइं ढोल ज ढमढमाटि, वली वाजा केग गुमगुमाटि,
रण तूरण तेजे रणरणाटि, घरि पहुतु उछव घमघमाटि
सही टोले रूपणि हरखतीए, नयणे वली प्रीय प्रीय नरखतीए,
हेविई आवी वेला वहिलडीए, बिहू पामे रोपई केलडीए

देवकलशरचित कथामां आवतां वर्णनो :—

कनकरथ रुखमणीने परणवा जाय छे त्यारनु वर्णन :-
"तात वचन कुंअर सामहियु, तिणि परि गह गाढउ गहिगहिउ,
मत्रीसर सामहणी करइ, धन धानि करहादिक भरई
गयवर शतगुडीयइं माल्हता, जाणे करि पर्व्वत चालता,
पंचवर्ण हयवर पाखर्या, दिनकर वाहनथी अपहर्या
जेहे रथि सोवनमई धुरी, तेहे रथि जूता छइं तुरी,
बीजा वाहननउ स्यू कहउ, पायक सुभट पार नवि लहूं
ढोल ददामा सुसर नीसाण, सांभलि वईरी तिजइ पराण,
झल्लरि मद्दल भेरी ताल, रीझई अबला बाल गोपाल.
नफेरी सरणाई सखा, अवरतणी जाणूं नवि सखा,
ईणिइं रिद्धि करी परिवरिउ, भला सुकन वली सेसिं भरिउ.
करई भट्टचारण कईवार, दीजई दान वंछित अनिवार,
परिइं परिइ सतोष्या सहू, तिणि आसीस दिइ तेहनइ बहू
कीया कनकमई कुंडलवानि, नवसर हार हींई नव वानि,
हाथि खडग सिरि सोवन टोप, चालिउ कुमर करी आटोप"

कनकरथ ऋषिदत्ताने परणीने पोताना नगरमा पाछो फरे छे त्यारे हेमरथ राजा उत्सव करे छे त्यारनुं वर्णन :-

"माहि वधावउं जाई, नरपति हरखित थाई; नयर शृंगारीईए, उच्छव कारीयई ए.
तलीया तोरण बारि, लुहकइ जोध अपारि, चंदन चरच्या ए, नाटक विरच्या ए.
हाटे घरे चित्रामा, कीजई दीजई टाम, भूमि पवित्र करइंए, कचवर अपहरइं ए
परिघल सौरभ वारि, छाटई सेवक नारि, धूप सुमहमहई ए, भोगी गहगहई ए
कीआ चंद्रोदय चग, फूल पगर नवरग, वन वन वालिका ए, बांधइ वालिकाए.
एम करी भूपाल, सज थाइ ततकाल, परिगह परिवरिउ ए, साम्हउ साचरिउ ए.
आवत देखी तात, पूछिइ मात सघात, घरणि सहित नमइ ए, माडी मनि गमई ए.
सिंघासनि बईसारि, मिली सुहासणि नारि, वेउ न्हवारीई ए, विघन निवारीई ए
पहिरणि पट्टदुकूल, दैव तिहा अनुकूल, कुमर सिंगारीई ए, भगतिइं भारीइ ए.
मस्तकि मुकट सफार, काने कुंडल सार, बांहिइ बहिरखाए, नदि किहि सारिखाए.

रत्नजडित सिरि बोर, कहिडिइं कनकमई दोर, हाथे मूंद्रडी ए, हीरे जडी ए
हवइं कुंयरि सिंगार, उरि नव नव परि हार, मस्तकि गखडी ए, आजी आखडो ए
श्रवणे झालि झलाल, कंचूकि सिणि विशाल; गलई निगोदरु ए, विचि विचि मोरु ए.
रिमिझिमि नेउर पाय, जाणे हंस चालतु जाइ, कंकण चूडीने बाहिं रुडी ए
सोहइ तिलक ललाट, उढिउ सूहवघाट, कटि मेखल धरी ए, तिह घमकइ घूघरीए
तिहूं तंबोलह रंग जाणे आदन दाडिम भंग, एम सिंगारीया ए, कुंजर चाडीया ए.
परिवरीउ परिवारि, आवइ नगर मझारि, ढलइं चमर सिरि छत्र, नाचइं बहु परि पात्र.
मागत दीजइ दान बीजा फोफल पान, नारी मंगल गावइं, मोती लेई वधावइं.
बहिनर लूण उतारइ, कुकम तिलक वधारइं, सरआ वाजिंत्र वाजइं, जे वर आगलि छाजइं
चदन भरीय कचोली, छाटइ भमर भोली, पहिरणि नवरग चोली, तेवडातेवड टोली
साथि सहसकुमार, सिणगार्या तोणी वार, याचक करइ कईवार, अवसर विनोद अपार.
हयरथ आवइं जाइं, साम्हा गयवर थाइं, हसमिसि लोक उजाड, हीयडइं हरखि न माइ.
भोजन अन्न अवारी, कीजइं घर घर बारी, दीजई कुंकमि हाथ, जाणे मनमथ भाथ
कहीई किसिउ मंडाण, नवि दीसइ तिह भाण, देखी हरख ईह गण, कोई न लोपइ आण
ए इम उच्छव जोतउ, वासभवनि वर पुहतु, विषयादिक सुख माणई, जातउ काल ना जाणई

परिशिष्ट–६

जीमूतवाहननी कथा (कथासरितसागरमांथी)

दानवीर, दयाळु, पितृभक्त बोधिसत्त्वना अवतार एवा विद्याधर राजकुमार जीमूतवाहने वंशपरंपरागत कल्पवृक्षने लोकोनु दारिद्र्य दूर करवा मोकली दीधु तेनी कीर्तिनी ईर्ष्याथी पितराइओनो राज्य पडावी लेवानो ईरादो जाणी, रक्तपात अटकाववा जीमूतवाहन राज्यत्याग करी माता पिता साथे मलय पर्वत पर आश्रम बांधीने रह्यो एकवार पोताना मित्र सिद्धकुमारे मित्रावसुनी बहेन मलयवतीने गौरीमंदिरमा जोइ परस्पर प्रत्ये अनुराग. विरहपीडित मलयवतीने फांसो खाता अटकावीने आकाशवाणीए कह्यु, ''विद्याधर चक्रवर्ती जीमूतवाहन तारो पति थशे'' त्या जीमूतवाहन आव्यो ने मलयवती बची. मित्रावसुना कहेवाथी मलयवतीने जीमूतवाहन जोडे परणावी. एक वार वनमा भमता जीमूतवाहने हाडकानो ढग जोयो. मित्रावसुए खुलासो कर्यो पोतानी माताने नागमाता कद्रूए दासी बनावेली तेनु वेर लेवा गरुड पाताळमा गमे त्यारे जईने नागोनो कच्चरघाण काढतो छेवटे नागराज वासुकिए दररोज एक नागनो भक्ष्य दक्षिण समुद्रने काठे गरुड माटे मोकलवानी शरत स्वीकारी. ए रीते गरुडे खाधेला नागोना हाडकानो त्या ढग थयो

जीमूतवाहननु हृदय द्रव्यु ते त्या रोकायो. ते दिवसे शंखचूड नागनो वारो हतो, विलाप करती तेनी माता तेने वळाववा साथे आवी शंखचूडने बदले पोते भक्ष्य थवानी जीमूतवाहननी तत्परता एवा पापना भागी थवानी बंनेनी ना माता पाछी फरी शंखचूड गोकर्णना मन्दिरे अन्तिम दर्शन करवा गयो त्या गरुड आवतो जणायो वध्यशिला पर जइ ऊभेला जीमूतवाहनने चाचनो प्रहार करी, पकडीने गरुड झाड पर जइ बेठो. जीमूतवाहननो नीचे पडी गयेलो ने लोहीमा तणाइ आवेलो चूडामणि मलयवतीए जोयो सासु ससरा साथे ते शोधमा

नीकळी. शंखचूड पण लोही जोइ जीमूतवाहनने बचाववा गरुडनी शोधमां दोड्यो जीमूतवाह-नने परार्थे प्राणत्यागमा आनन्द बतावतो जोईने गरुडने शंका गई के आ नाग नथी. त्या शंखचूड आवी पहोंच्यो तेणे कह्युं "ते पकड्यो तेने छोड, नाग तो हुं छुं, मने खा" एटलामा अर्धा खाधेला जीमूतवाहनना प्राण ऊडी गया मलयवतीए देवीने संबोधीने भविष्यवाणीनी याद आपी देवीए अमृत छाटी जीमूतवाहनने सजीवन कर्यो ने विद्याधरचक्रवर्ती स्थाप्यो. गरुड पासे नागभक्षण बंध करवानुं ने मारेला नागो सजीवन करवानुं वरदान मेळव्युं विद्याधरोए हिमालय लइ जइ जीमूतवाहननो राज्याभिषेक कर्यो.

कवि जयवंतसूरिए काव्यप्रकाशनी टीकानी नकलने अंते आपेल प्रशस्ति :

टीका जयन्तमुख्या विलोक्य तत्संग्रहरसमास्वाद्य ।
सहृदयमुदे प्रयत्नाच्छ्रीगुणसौभाग्यसूरिवरः ॥

इति साहित्यचक्रवर्तिलौहित्यभट्टगोपालविरचिताया साहित्यचूडामणौ काव्यप्रकाशविमर्शिन्या दशम उल्लास ॥

आसन् वृद्धतपोगणे सुगुरव श्रीधर्मरत्नाह्वया—
स्तच्छिष्या विनयादिमण्डनवरास्तेषा विनेयान्तिमः ।
सूरिः श्रीजयवन्त एप गुणसौभाग्योऽपराह्वोऽस्ति य–
श्चित्कोशे समलीलिखद् विवरणं काव्यप्रकाशस्य स ॥ १ ॥

श्रीविनयमण्डनगुरोर्गिरा शिशुत्वेऽप्यवाप्तचारित्रा ।
आर्या विवेकपूर्वा प्रवर्त्तिनी सुन्दरी जज्ञे ॥ २ ॥
विवेकलक्ष्मीस्तत्सेवाहेवाकिन्यप्यजायत
तद्विनेया विजयिनी धर्मलक्ष्मीः प्रवर्तिनी ॥ ३ ॥
टीका काव्यप्रकाशस्य सा लिलेख प्रमोदत ॥
गुणसौभाग्यसूरीणा गुरूणा प्राप्य शासनम् ॥ ४ ॥

सवत १६५२ वर्षे पोपसुदि १३ बुधे समाप्तोऽयं ग्रन्थ ॥

शब्दसूची

अगर–(४ १४ ४७) (स.अगुरु) अगर नामनुं सुगन्धी काष्ठ अने तेमाथी बनेलो धूप

अचरिज–(१३ (दू ६) २) (सं. आश्चर्य, प्रा अच्छरिअ), अचरज

अचभउ– (१३. ३) (सं अत्यद्भुत, प्रा. अच्चब्भुअ) अचबो

अजूआलऊं – (७.१७) सं (उज्ज्वलकम्) अजवालुं

अणआलोई–(४०.११) आलोचना विना– गुरु समक्ष दोषनो स्वीकार कर्या विना.

अणगार (४१ ३) घर विनाना, साधु.

अणसणि (४०.१२) (सं अनशन) उपवास.

अणसरई (७ १८) (सं अनुसरति, प्रा अणुसरई) अनुकरण करेछे, पाछळ जाय छे

अतिखूत (४ ९) अत्यन्त खूपी गयेलो

अतिम डाणई (२९.६) (सं अतिमण्डन) मोटा पाया उपर.

अतिलील (६.९) अतिसुन्दर

अतिसता (२० १२) (स अतिश्रान्ता, प्रा. अइसता) अत्यत थाकेल.

अतिसंमदा (३७ ३) घणो हर्ष

अत्र-अमुत्र (४१ ४) (सं) आ लोकमा अने परलोकमा.

अथगी (१७ २२) (देश्यधातु थक्क) अटकया विना.

अनेरइ (७ २८) (स अन्यतर, प्रा अन्नयर) अनेरु , बीजु

अपाया (४० १३) सकटो

अबीह (८.२) (सं अ+भी, प्रा अ+बीह) बीक वगरनुं–निर्भय

अभग (१ ३,४ ३०,१० ९) निरंतर

अभ्याख्यान (४० ८) आळ, तहोमत, अढार पापस्थानकमानु एक

अभ्याख्यान (सं) (४०. ८) आरोप मूकवो ते, आळ चडाववुं ते

अभ्यसी (२ ३) अभ्यास करीने

अमरी (२.२) देवी

अमी (३२ ९) (सं अमृत, प्रा. अमिय) अमृत

अरणी (सं) (१२.४) अग्नि पेदा करनार काष्ठ.

अरहुं परहुं (१७.२१) (सं अर्वाक्-पराक्) आगळ–पाछळ

अरुणी (३३.६) (सं प्रा अरुण) ज्वाला, लालिमा, लालाश

अर्घपाद (स) (६ १७) पग धोवा वगेरे सत्कार सामग्री

अलका (१२, १४) (स. प्रा अलक) वाळनी लट.

अलख (१५ ८) (सं अलक्ष्य, प्रा अलक्ख) योगी द्वारा उच्चारातो शब्द

अलगा (३८.३) (सं अलग्न, प्रा. अलग्ग) जुदा, छूटा.

अलवि (९ ५) अनायासे, सहजभावे.

अलाभइ (३१ ९) लाभ न मळता

अलि (सं) (६ १०) भमरो.

अवकाशा (१२.५) प्रसंग, अवसर

अवगुणऊ (६ ८) गुण वगरनु

अवटाई (१६.८, २५ ३) मुंझाईने

अवदात (स) (६ १८,१६.१०) वृत्तान्त.

अवधूत (४ ९) हाली ऊठ्यो

अविकत्थना (९. ३) बडाश न मारवी ते

असंभम (३.१८) (स असंभव) जेनो संभव न होय ते, असंभवित.

असूर (१७ १४) (सं उत्सूर, प्रा. उस्सूर) साज, मोडुं

उमाह (८ २) (सं. उन्माथ ?) उत्साहथी, उमंगथी
उरु (४ २८) (स.) साथळ
उलटि (३६.९) उलटथी, उत्साहथी
उल्लोच (४.४५) (स) चदरवो
ऊकाटा (१३.९) ऊबका
ऊछाछली (३२.१) (सं उच्चंचल) उछाछळी.
ऊठावई (१२ ९) (सं उत्+स्था) ऊभो करे छे, नचावे छे
ऊतारा (२९ ६) (सं उत्+तृ) उतारो
ऊथापणी (३३.८) (स उत्थापन, प्रा उत्थावण) स्थानभ्रष्ट करवु, घर बहार काढी मूकवु ते.
ऊधाणह (३ १५) तोफानी वरसाद.
ऊपराजइ (४० ७) (सं उप+अर्ज) उपार्जन करवुं, प्राप्त करे छे.
ऊभजइ (७.२९) जतुं करे, कटाळो चाली जाय.
ऊभाभली (३९ ५) मुंझायेली, ऊंचा मनवाळो
ऊरण (२४ ७) (स अनृण) देवामुक्त
ऊवेखी (२२ २,४ ३९) (सं उप+ईक्ष्) उपेक्षा करीने.
ऋषभजिणद (५ १,७ १०) जैनोना प्रथम तीर्थंकर.
एकमना (९ ८) (सं) एकमनवालु, सरखे सरखा मनवालु, एकाग्र
एणीनयणि (३६ ८) हरिणी जेवी आखोवाळी, मृगाक्षी
एतलउं (६ १५) (स. एतावत् प्रा. एत्तिल) एटलुं.
एला (४ १३) (स) इलायची
ओलभा (२२ ८) (सं उपालम्भ) ठपको
ओली (४ ४३) (३२.८) (सं आवली, प्रा. ओली) पक्ति, श्रेणी
कडि (३० ३) (सं. कटि, प्रा कडि) केड, कमर
कणयर (४ १५) (स कर्णिकार, प्रा कणेर) करेणनु झाड
कदही (१२ १३) क्यारेय पण
कन्हई (३५ ९) कने, पासे.
कबरी (४ ७) स. अंबोडो, विशेप प्रकारनी केशरचना
करणी (३३ ४) कार्य, आचरण
करणो (६ १०) (स करिणी) हस्तिनी, हाथणी.
करभि (७.२०) साढणी.
करक (१२ ३) (स) हाडपिंजर, हाडका
करड (३७.१) (स) करडियो
करिकुभा (४ ४६) (स करिकुम्भ) हाथीनो कुभस्थळ
कर्मनिकाय (४१.४) कर्मसमूह
कलकंठी (४.२५) (स) कोयल
कलम (३१ ९) (स) चोखानी एक जात
कलहंसा (४ ३) (स) हस
कलोल (३५ २) (स प्रा कल्लोल) आनंद.
कहणइ (१६.१७) (स कथने, प्रा कहणे) कहेवामा
कहा (१२ ११) (स कथा, प्रा कहा) कथा
कहायई (६ १४) (सं कथ्यते, प्रा कहीअइ) कहेवाय छे.
कक (४ ३) (सं बगलो
कंथा (१५ ४) कंथा गोदडी
कंदुक (४ ४५) (सं.) दडो.
कातरणी (३३ ६) (सं कर्तरी, प्रा कत्तरी) कातर
कारुण्ण (२१ ३) (सं. कारुण्य, प्रा कारुण्ण) करुणा.
कालपराण (८ ५) (सं कालप्राण) काळबळ
कालभुयंगम (३२ ६) (सं कालभुजगम प्रा कालभुयगम) काळरूप साप
कावडीया (१४ ८) (स कार्पटिक, प्रा कावडिय) कपट करनारा, लुच्चाई करनारा

खेलइ (६ २) (सं खेल्, प्रा. खेल) खेले छे, आनंद करे छे.
खेव (१७ १६) (सं क्षेप) कालक्षेप, विलब
खेवइ (१२ ७) (स क्षिप्) नाखे छे फेंके छे
खेवि (४ ८) (स क्षिप्रम्, प्रा. खिप्पं) शीघ्र. [गुजरातीमा खेपियो शब्द छे तेनो सम्बन्ध आ खिप्प साथे छे खेपियो जल्दी चालनारो होय छे.]
खेस (१७ १) खार, द्वेष, रीस.
खोह (२० ७) खो, गुफा.
खोहि (दुहा–३३ ८) (स. क्षपयिष्यति, प्रा खवइ) खोइश
गउखि (१० ६) (स. गवाक्ष, प्रा. गवक्ख) गोखमा, झरूखामा.
गणधर (३९ १) तीर्थंकरना प्रधान शिष्य.
गभार (५ १) (गर्भागार) गभारो, गर्भगृह
गमीआ (१९ ९) गुमाव्या
गयण (११ १०) (सं. गगन, प्रा गयण) गगन, आकाश
गरव (१८ १) (सं गर्व, प्रा. गारव) गर्व, अभिमान.
गलइ (२१ ६) (स गल्) गळे छे, टपके छे, मोढामा पाणी आवे छे.
गह (१९ ९) ग्रह.
गहगहयउ (७ ३) आनदित थयो
गहिबर्यउ (२० १३) गाभरू बनी गयुं, गभरायुं.
गंजन(२ २) (स) तिरस्कार, अवज्ञा.
गंभीरिम (२.२, १९ ६) (स गम्भीरिमा, प्रा गभीरिमा) गंभीरता, ऊंडाण.
गुणगेह (७ १८) (स) गुणगृह, गुणोनुं घर
गुणाकरो (२ २,४ ५) (सं गुणाकर, प्रा. गुणायर) गुणनो आकर–खाण.
गूझ (१६ ५) (सं गुह्य, प्रा गुज्झ) छानुं राखवा जेवु
गेह (२ ३) गृह, घर
गोफणउ (४.१९ ६ ४) वेणी ऊपर अंबोडामा पहेरवानो अलंकार.
गोरडी (३१ २) (सं गौरी, प्रा गोरी गौरी, सुन्दर युवती.
गोरस (३१.६) (सं) दूध–दहीं.
घटतउ (३६.१०) (स घटित) योग्य
घणउ (६.४) (सं घन, प्रा घण) घणु.
घरणी (१६ १४) (स गृहिणी, प्रा घरिणी) पत्नी
घाडि सईनी (३८ २) (?)
घातीकर्म (२१ ९) आत्माना गुणोनो घात करनार कर्म
घार्यऊ (२२ २१) घेरायेलो
घूक (२० ६) (स) घूवड.
घूघूइ (२० ६) घूघवे छे, अवाज करे छे.
घोरोपसर्ग (१९ ३) देव, दानव के मानव कृत कठोर विघ्न के आपदा
चऊकी–(४ ४५) (सं चतुष्की, प्रा. चउक्की) चोरखूणावाळी चोकी.
चउबारउ–(४ ४३) (सं. चतुर्द्वारक, प्रा. चउ-ब्बारअ) चार बारणावाळो
चकोरडी–(८.१) (स चकोरा, प्रा. चओरा) चकोर स्त्री.
चतुरगि–(६.२०) चार अग (गज, रथ, पदाति, अश्व)वाळी सेना
चरण–करण (४१ ३) व्रतो अने तेनी पुष्टि माटेना नियमो, मूल अने उत्तर गुणो
चग, चगा, चंगु (१ ३, ५.१, ४०.१, ४ १४) सुंदर.
चंदूआ–(१०.३) चदरवो
चमकइ-(६ ६, २८.४) (सं चुम्बक. प्रा चुम्बअ) लोहचुम्बक वडे
चिपुट–(२५ २) (स चिपिट, प्रा. चिविड) चपट्ठ, वेसी गयेलु.

चिमिचिमि (१५.५) चमचम अवाज
चिहुदिसि–(४ ४३) (सं चतुर्दिक्) चारे दिशामा
चूर्या (२ २) चूरेचूरा करी नाख्या
चेट–चेटी (६ २०,११.५) (स चेट, प्रा चेड) दास–दासी
चेत (१७ २०) चैतन्य
चैत्यमाला–(२.१, ४ ४४) जैन देरासरोनी हार
छछुंदरी–(२४ ११) छछूंदर
छटकी–(१२ ८) छाटणा.
छंडई–(२६ ९) (सं. छद्) छाडवुं–छोडवुं.
छावरइ–(१३ (दू ६ ५) ढाके छे.
छाह–(३३ १) (स.) छाया.
छाहार–(३७.३) छार, राख
छेह (१ ८) छेडो, अंत.
छेहडइ–(२५ ७) छेडो
जगीस–(१० ७) जिज्ञासा–इच्छा.
जटाजूटी–(१५ १) (स जटाजूट) माथामा बांधेली जटा.
जरतीनई–(४ १०) डोशी. वृद्धाने
जराकुमर–(१९ ५) विशेषनाम
जल्या–(३५ ८)
जस्यडं–(९.२८) जईशुं
जंति (९.१७) जाती.
जंपई–(११.८) (सं. जल्पति,प्रा. जपई) बोले छे.
जंबू–(४ १२) (स) जांबुडानु वृक्ष.
जभाइ (४.६,१२ १४) बगासुं खाय छे
जातउ–(७.३०) (स. या) जतो.
जातीसमरण–(४१.१) पूर्वजन्मना वृत्तातनुं स्मरण.
जाम–(४.३५) (सं यावत्, प्रा. जाव) ज्यारे
जावउ–(२८.८) (सं या) जावुं–जवानुं.
जांणह–(३.१५) जेना
जिमई–(७.२८) जेम
जिमघरि–(३५ २, ३७ २) (स. यमगृह. यमने घेर.
जिमूत–(२ १) मेघ
जिस्यु–(२ ३) जेवु
जीपती–(९ ३६) जीतती
जीपिवा–(२२.१५) जीतवा माटे
जूली–४ २८) युगल–जोडी.
जे कसि–(३४.२) जे कोई.
जेहनइ (१.१) जेने, जेना
जेहवउ–(६.२०) जेवो
जोतउ (७.२) जोतो
जोरी (१२ ६) जोरजुलम.
जोसीइ (२९.७) जोषीए
ज्ञानातिशय–(३९.१) उत्कृष्ट ज्ञान, केवल-ज्ञान. मुख्य चार अतिशय छे, (१) ज्ञानातिशय (२) पूजातिशय (३) वचनातिशय (४) अपायापगमातिशय
झलकंती–(३.४) झळकती.
झल्लरि–(७ ३१) (स. प्रा.) झालर
झाल–(११.१४) (सं ज्वाला) अंतरनी बळतरा
झाटा–(२०.३) डाभनी अणीओ.
झीलंती–(२६.३) स्नान करती.
झूरई–(१७.२३) झूरे छे, खेद करे छे
झुंबख–(१७.६) (सं. युग्मक, प्रा. जुम्मय) झूमखो.
टलवलइ–(८.३) टळवळे.
ठवी (१७.५,२७ ५) (स. स्थापयित्वा, प्रा. ठवेऊण) स्थापीने.
ठाय–(७.९,१३,२२.९.) स्थान.
ठारणहार–(१८ १०) ठारनार
ठाहारि (१७.११) ठहेरो, थोभो.
ठाणइ–(१७ १८ १९,७.२८) (सं स्थान प्रा. ठाण) स्थाने, ठेकाणे.
ठामोठामई (१४.७) ठेकाणे ठेकाणे.
डर पाणी–(३.२) डरी गई.
डंस–(७ ३२, ६ ४,७.१४) (सं दंश) दंश.

दीन-(८.३) (सं. दीन) दीन, अनाथ
दीह-(८ २) (स. दिवस) दिवस
दुरिया-(१२ १२) (सं. दुरिता, प्रा दुरिता) दुरिता, खराब.
दूतीपणउ-(६ ७) दूतीपणुं.
दूहती (१८ ४) दूभती
देशना (३८ ४) उपदेश, धर्मोपदेश
दोई-(१०.१) बंने जणा
दोला-(४ ६) (स.) हिंडोळो, हींचको
दोहिलई-(६.१३) दुःखीथी भरेल.
दोहिली-(१६.४) कपरो (वेळा)
द्यउ-(३९.६) आपो
द्ये-(११ १६) दे.
धरमध्यान-(२१.१०) चार ध्यान माहेनु ए नामनुं एक ध्यान.
धसमस्या-(४ १) धसारो कर्यो.
धाम-(४.१८) धाम, स्थान.
धायई-(१२ ६) (त्रै—तृप्तौ) धराई जाय
धायउ-(२२ २१) दोड्यो.
धीठी-(११.२) (स धृष्ट) निर्लज्ज, बेशरम.
धीरणा-(२३ ११) धीरज
धुर-(१३.८, ३३.९, ४१.५) (१) मूळथी (२) मुख्य, अग्रणी
धूजतउ-(४.२) ध्रूजतो
धूत्यउ-(४ ८) धूती लीधुं, ठगी लीधुं
धूसर-(५.३) (स प्रा) भूखरा रगनुं
नवकार-(८ ३) पंच परमेष्ठीने नमस्कार करवाना सूत्रमा नव पद होवाथी ते नवकार कहेवाय छे.-"नमो अरिहंताणं, नमो सिध्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मगलाणं च सव्वेसिं, पढम हवइ मंगलं" आ नव पदो छे
नाभिकुलोदधि-(७ ७) नाभि राजाना कुल-रूपी समुद्र जैनोना प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवना पितानुं नाम नाभिकुलकर हतुं. तेथी ते आधारे कुलनु नाम.
निकाय-(४१.४) पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, अने त्रसकाय. ए छ प्रकारना जीवोनो समूह.
निभ-(४.२८) (सं.) सरखा.
निभालई-(३.१३) (सं. निभालयति, प्रा. णिहालइ) निहाळे छे
निरति-(६.३, ४.७) तपास, पत्तो. (?)
निरवाणि-(९.४) निर्माण, भावी, भाग्य
निरव्यजन-(१७ २१) निर्जन.
निराकरी-(३७ ४) (सं. निराकृत्य) दूर करीने.
निवसइ-(२.१, २८.१०) (स निवसति, प्रा. निवसइ) रहे छे.
निवाण-(३.१७) नवाण, झरो.
निसुणी-(४ ३५) साभळीने.
निस्संगा-(४०.१) (सं. निस्संगा) संग-राग वगरनी.
नीपाई-(२२.१३) निपजावीने, उत्पन्न करीने.
नीभंडी-(१४ १५) ?
नीसत-(२१.२) (सं. निःसत्त्व) कस विनानुं.
नीसाणह-(३ १५) निशानना.
नींगमइ-(६ १३) वीतावे छे
नींगमी-(६ १३) दूर करी
नेउरि-(५.१) (स. नूपुर, प्रा णेउर) झाझरथी.
न्यापित-(१६.१६) (सं. नापित, प्रा. ण्हाविअ) हजाम.
पईठ-(२६.२) (सं. प्रविष्ट, प्रा पविठ्ठ) पेठी, प्रवेश कर्यो.
पखाली-(४ ४) (स. प्र+क्षल्) धोईने.
पगर-(१०.४, ४.२४) गुच्छ.
पगि पगि-(२६ ७) पगले पगले.
पठाई-(१२ १) (सं. प्रस्थापित) मोकलेल
पठावी-(३ ७) (स. प्रस्थाप्य, प्रा. पट्ठावीअ) प्रस्थान करावीने, मोकलीने.
परई-(१ ६, ६ ७) (सं. प्रकार) पेरे, पेठे, जेम.

परजलइ-(२०.१४) (स प्रज्वलति, प्रा. पज्जलइ) खूब बळे छे.
परतखि-(१२.१३, ६.५) (सं प्रत्यक्ष) प्रत्यक्ष.
परनई (७.१९) पारकाने
परनाली-(४.१९) (स प्रणाली) परनाळ, पाणी जवानो मार्ग.
परवर्यउ-(६.२०) (स. परिवृत, प्रा. परिवरिअ) घेरायेल.
परवार-(२३.१०) परिवार
पराणि-(३२.दू ७ ८) पराणे, बळात्कारे.
परि-(४.४२) पेरे, पेठे, समान, जेम.
परिदेवन-(१२ १०) (स खेद) दुःख, शोक.
परिपरि-(३३ दू, २,४.८, (१४.७) फरी फरी, अनेक प्रकारे
परिवरई-(६.७) वींटळाय.
परी-(३७.१) दूर, बहार
परीअचि-(३५ १०) पडदो (?)
परोखया-(३७.२) पारख्या
पहूरी-(१७.२) प्रहार करीने, (?) मार मारीने (?)
पहलाण-(३ ११) घोडा उपर पलाण, चडवुं ते
पहिरणि-(३६ ५) (स परि+धा) पहेरवामा
पंकजनाला-(४ २७) कमळनो डाडो
पंति-(४ ४२) (स पंक्ति, प्रा पंति) पात, पंगत, हार, श्रेणी
पाखई-(२१ २) (सं पक्ष, प्रा पक्ख) विना
पाखती-(९.१५) जोती
पाखरीआ-(३ ११) (दे पक्खर) पाखर एटले घोडानु बखतर, पाखरवाळा
पाठीन-(४.४) (स) भयानक, ते नामनु जलचर प्राणी
पाडल-(४ १७, ८ २) (सं पाटल, प्रा पाडल) पाटला वृक्षनु लाल रगनु फूल.
पाडूई-(१३ १०) पाड्या
पात्र-(१० ५) योग्य, नाटक भजवनार
पाथरि-(२० ९) पथ्थरमां
पामेवा-(३ ९) पामवा
पायउ-(२.३) प्राप्त कर्यु
पारिखउ-(६.१५) पारखुं
पालई-(२ ३) (सं. पालयति) पाळे छे.
पालवउं-(११ १०) नवपल्लवित करुं.
पालवउ -पल्लवित करुं
पाली-(१३.९) पाळी, पालिआ दे=तलवारनी मूठ
पावकि-(२०.१४) (सं पावक) अग्निमां.
पावडीआरा-(४.४२) पगथियानी.
पावति (१२ ५) पामे
परीसह-(१९ २) टाढ, तडका, भूख, तरस वगेरे बावीस प्रकारना श्रमणोए सहेवानां कष्टो.
पाहण-(२०.१४) (सं पाषाण, प्रा पाहाण) पाषाण, पथ्थर
पाच परमेष्ठी-(१.१) पाच परमेष्ठी ते अरिहंत, सिध्ध, आचार्य, उपाध्याय अने सर्व साधुओ.
पाहनी-(७ २५) (स. पार्ष्णि) पगनी पानी
पाहि-(२० १०) थी, करता
पाहुणी-(३३ १०) (सं प्राघूर्णिकी, प्रा. पाहुणिआ) परोणो थयेली, महेमान थयेली
पीआण-(३ १७) (स प्रयाण, प्रा पयाण) प्रयाण.
पीतपटोली-(४.२९ (स पीत पटकूली) पीळा रगनु नानु पटोलु
पुरहूत-(२ १) (स पुरुहूत) इन्द्र
पुहचई-(३४ २) पुहती-(१० ७) (सं. प्रभवति, प्रा पहुच्चइ) पहोंचे छे.
पूठई-(२५ ३) (सं. पृष्ठ, प्रा. पुट्ठ) पूंठे, पाछळ

पूरणी–(३३.६) पूरनारी.
पोढी–(४ ४३) (दे.) घरवडे
पोलि–(४ ४३) (स. प्रतोलि) पोळ शेरी.
पौषधशाला–(२.१) उपाश्रय, अपागरो.
प्रतई–(२८.५) (सं. प्रति) प्रत्ये.
प्रतिपाल–(३५.९) (सं) बोलेलु वचन पाळनार
प्रमाणि–(१.४) (सं. प्रमाणेन) प्रमाणे.
प्रवाला–(४ २७) (सं) परवाळा
प्रसवी–(७ ३४) (स प्रसूता) प्रसव आप्यो, जन्म आप्यो
प्रह–(७.२८) प्रभात.
प्रियाल–(४ १५) रायणनुं वृक्ष.
प्रीअगु–(४ १४) (सं प्रियङ्गु) घउंलानुं झाड, कागना छोड
प्रीउस्यउं–(६ ८) प्रियतममा.
प्रीछवई–(२३.१०) समजावे छे.
प्रीयमेलक-(२७.३) प्रियने मेळवी आपनार
फटिकमई–(४२.४, ९ ६) (स. स्फटिकमयी) स्फटिक रत्नथी बनावेली.
फणपति–(४ ७) नाग
फणी–(३३.१) साप, फणीधर (साप).
फरसतउ–(८.४) स्पर्श करतो, पंपाळतो.
फरुकई–(२६.७) (सं. स्फुरति) फरके छे.
फलयो–(४१.६) फळजो.
फार–(१० ३) (सं. स्फार, प्रा. फार) घणु, खुब, पुष्कळ (मराठीमा आ शब्द 'घणा' अर्थमा प्रचलित छे)
फिरई–(७ २) फरे छे
फिरीफिरी–(६.४) फरी फरी, वारवार
फूलपगर–(४.२४) फूलोनो जथ्थो, ढगलो.
फेकारई–(२०.६) (शियाळ) अवाज करे छे
फेरु–(२०.६) फेरु, शियाळ.
बईठउ–(३८.१) (स. उपविष्ट, प्रा. उवविट्ठ) बेठो
बंदई–(३.१०) बंदी, भाटचारण.
बंदिजन–(५.१) भाटचारणो.
बंधाण–(३४.२) (सं. बन्धन, प्रा बंधण) बन्धन, जे व्यसन जीवन सुधी टकनारुं होय तेने बंधाण कहेवामा आवे छे.
बधुर–(३९.१, ४ २४) (सं.) सुंदर.
बाउल–(४.१३) (स. बब्बूल) बावळनुं वृक्ष.
बाध्यउ–(६.१२) बाध्यो.
बींट-(२० ८) फूलना दींट
बूझवी–(९.१) (६ ११) बोध पमाडी, समजावी.
भई–(३६.४) थई.
भईसु–(१४.१३) भेंसो, पाडो
भए–(१२.४) थयो
भगतई-(११.८) (सं. भक्ति) भक्तिथी
भजई–(३७.१) (भ्राज्) प्रकाशे छे, शोभे छे
भमती–(४.४७) मंदिरमानी प्रदक्षिणानो मार्ग.
भमाडउ–(११ १०) भमाड्यो. फेरव्यो
भमुहि–(४ २०) भवा, भ्रूकुटि.
भरणी–(३३ ४) (सं.) भरणी नक्षत्र.
भलउ–(६.१) भलो, सारो, उत्तम
भंगिनउ–(१५ ५) भागनो
भागई–(११.८) भाग्यमा.
भातितणा–(१०.३) भातना
भाल–(३४.११) भाळ, समाचार, पत्तो.
भालवी–(३७.५) भळावी, सोंपीने
भावठि–(३६ ४) मानसिक दु'ख, मुश्केली.
भाति–(३६ ५) (सं भक्ति, प्रा भत्ति) साडला वगेरेनी भात
भुयंगम–(४.१९) (सं. भुजंगम) साप.
भूमिहर-(३३ ६) (सं भूमिगृह) भोंयरुं
भूयाल–(७.१, २२) (सं. भूपाल) पृथ्वीपालक, राजा.
भेलेवा–(२२ १४) लूंटवा.
भोगिनि–(१२.६) सर्पिणी
भोरई–(१२ १०) वहेली प्रभाते, पो फाटता
मच्छर–(३२.१) (सं मत्सर, प्रा मच्छर) मत्सर, द्वेष, अदेखाई.
मच्छेदराय–(१९ ६) मत्स्यदेशनो राजेश्वर.

मटकउं-(३०.४) मटकुं, कटाक्ष.
मत्कुण-(७.३२) (सं) माकड
मदनशाल-(४ ३) मेना.
मनमथ-(२.३, ८ १) (३७.५) (सं मन्मथ) मनने मथनार, कामदेव
मनि-(७ ८, १.२) (सं मनसि,) मनमा
मनीषित-(९ ४) स मनमा इच्छेलु
मयगल-(३ १२) (सं मदकल, प्रा मयगल) मद झरतो, मकनो हाथी
मया-(२४ ५) (स मत) इष्ट, अभीष्ट
मरकलडा-(४.३९, ८ १) मरकाट, स्मित, मलकाट
मवावि-(४० ३) मपावी, गणी
मषीइं-(१७ ९) (सं. मषी) मेश वडे.
महेलीया-(३१.७) महिलाओ, स्त्रीओ
मंडई-(४ ४१) (दे.) माडे छे
मंडाण-(३४ २) आरंभ
मागध-(३६ ९) स्तुतिपाठक, भाटचारणो
मायताय-(१० ७) (स मातृ तात, प्रा मायताय) मातापिता
मारुंणी-(३३ ८) मारु देशनी स्त्री.
मालविणी-(३३.८) मालवदेशनी स्त्री
माणउ-(७ ८) (सं मा+आ+नी) न लावशो
माम-(२४ ९) (सं. माहात्म्य, प्रा माहप्प प्रतिष्ठा, आबरु
मिच्छादुककडं-(४१.६) (मिथ्या दुष्कृत) मारुं दुष्कृत्य मिथ्या थाओ
मिसि-(६ ५) (सं मिष, प्रा मिस) वहाने
मीहनति (२२ ७) महेनत वडे.
मुगधा-(१३ ४) (स मुग्धा) मोह पामेली स्त्री
मुंधि (७ ३८) (सं. मुग्धा) मुग्ध कन्या
मूढ-(३८ २) (सं) जड, पशु जेवु.
मूर्छाणी-(१७ १७) मूर्छित थई गई, बेभान थई.
मृगजीता-(४ २२) मृगोने जीतनार
मेखल-(१५ २) कदोरो
मेलई-(६ ९) मूके
मेह-(२१ १) (सं मेघ, प्रा. मेह) वादळ
मेहलंतउ-(३१ १) मेलतो, मूकतो.
मोडामोडि-(६ ५) मोकलुं (१८ २) दे. मोकलु छूटथी लटका करवा ते.
मोतीन-(३६.६) (सं मौक्तिक, प्रा मुत्तिअ) मोती
मोरई (४ ३२) मारे
मोरु-(११.५) मारो
मोहणवेलि (४ ७, ३० ३) मोह पमाडे एवी वेल
मोहतउ-(२ ३) मोह पमाडतो
मोहनसारा-(४ २६) मोह पमाडनारी.
यतीपतो-(३८.४) (सं यतिपति, प्रा जईवई) यतिओना पति, स्वामी, आचार्य
याचई-(४१ १) याचे छे
यामिनीश्वर-(२ १) (सं) चंद्र
रडवडई-(२० ९) रखडे, अथडाय
रणीउ-(२२.२) (स ऋणिन्, प्रा रिणि) ऋणवाळो, देवादार
रती-(१४ ७ ८) (सं रति) सुखचेन, आनंद.
रत्नत्रय-(४१.५) (१) सम्यग् दर्शन (२) सम्यग्ज्ञान (३) सम्यक् चारित्र
रमिझिमि-(५ १) रुमझुम अवाजथी
रलई (३३ ५) रोळाय, अटवाय
रलीआयत-(७ ३) आनदित
रवाडीइं-(६ २०) क्रीडा करवा (?)
रसना-(४० ६) (सं) जीभ
रगरेली-(२९ ४) आनंदनी रेलमछेल
रभा-(४ २८) (सं) केळ
रानइं-(१८ २) (सं अरण्य, प्रा रण्ण) अरण्यमा, रानमा
रिपुसाथ-(२ २) (स रिपुसार्थ, प्रा रिउसत्थ) शत्रुओनो समूह
रुठउ-(१७ १) (सं रुष्ट, प्रा रुट्ठ) रूठ्यो, क्रोधे भरायो
रुल्या-(१९ ८) रोळया

रुंध्यउं–(८ १) (स रुद्ध प्रा रुंधिअ) अट-
काव्यो, ढकायेल
रेवणी–(६ ९) खेदानमेदान, अस्तव्यस्त
रेहा–(२२ १३) (सं रेखा, प्रा रेहा) रेखा,
लीटी
रोमंच्यउ–(३७ ३) (सं रोमाञ्चित, प्रा रोमं-
चिअ) रोमांचवाळो
रोर–(३१ ६) रांक, गरीब
रोलया–(१७ २) गेळी नाख्या, पायमाल
कर्या
रोवति–(१८ २) (सं रोदिति, प्रा रोवइ)
रुवे छे
रोहिणी–(३७ १) (सं प्रा रोहिणी) चंद्रनी
पत्नी
लघुकम्मी–(४१ १) जेना कर्मो हळवा छे
ते, मंद फळ आपनारा कर्मवाळो
लवलेस–(४० १३) (सं लवलेश, प्रा लवलेस)
थोडामां थोडुं
लहईतु–(२२ ८) लहेतो, मेळवतो
लहकई–(१५ २) लहेके छे
लहिउं–(५ २) प्राप्त कर्युं
लहु–(५ २) मेळवुं
लंकीली–(३० ३) कमरना मरोडवाळी, सुंदर
लागउ–(६ ८) (सं लग्न, प्रा लग्ग) लाग्यो,
लागेलो
लाजइ (६ ३) (स. लज्जते, प्रा. लज्जइ)
लाजे छे शरमाय छे.
लाडगहिली–(८ ३) लाडघेली
लाधउ–(४० १३) (सं लब्ध) लाध्यो, मळ्यो
लायउ–(१८ २, २२.२१) लाग्यो (?)
लिगार (१८ १) थोडुं, लगार
लीहडी–३८.२) (सं लेखा, प्रा लेहा)
रेखा, लीटी
लुबधउ–(८ १, १३.४) (सं लुब्ध) लल-
चायेलो, लोभायेलो
लोअणा–(६ २, ९ ११) (स लोचन, प्रा
लोअण) आंख
लोई–(३५.७) (स लोक, प्रा लोअ) लोकमां
वउलावी–(१६ १) वळावीने, विदाय करीने
वजडावी–(१४ ९) वगडावीने
वडतपागच्छ–(४१ ५) ए नामनो एक जैन
संघनो गच्छ
वधावई (१० ७, ३ १६) (सं वर्धापयति,
प्रा वद्धावेइ) वधावे छे
वयर–(४ ३२, ६ १२) (सं वैर, प्रा वइर)
वेर
वरसालउ–(२२ ११) (सं वर्षाकाल) वर-
सादनो काळ
वरासती–(२९ ८) विपर्यास–ऊलटुं करती (?)
वर्जवउ–(७ ३३) तज्या
वसू–(१० ७) साधु–सज्जन
वहिमी-(७ २८) वही गयुं (?)
वंछंति–(२ २ ३४ ५) वांछा करती
वाचाला–(३ १०, ४ ३) (सं वाचाल)
वाचाळ, चारण लोको
वाणही–(१५ ५) वाणी (नववधूनी मोजडी)
वारियउ–(६ २१) (सं वारित, प्रा वारिअ)
वारेलो, अटकावेलो
वारिहारि–(७ ३७) (सं) समय बतावनारुं
सछिद्र घटिकायंत्र
वारोवारि–(५ १) वारवार
वालउ–(४ ११) चणकबावनो छोड. वाळो
वाहइ–(२१ ५) (स वह्) ताणे छे, खेंचे
छे
वाही–(२६ ४) (सं वह्) खेंची, ताणी
वाह्यु–(१४ २) तणायेल, खेंचायेल.
वाहु छउ–(३४ ८) लई जाउं छुं
विघटइ–(विघटते, प्रा विघडए), नाश करे छे.
विचई–(६ ८) वच्चे
वितिकर–(३७ १) (सं व्यतिकर, प्रा वइ-
अर) वृत्तांत, हकीकत
विधुरी (१७ ५) दुःखी, आकुळव्याकुळ,
गभरायेलो.

हणस्यई-(१७.१६) हणशे
हत्थई-(२७.५) हाथे
हय-(६.२०) (सं) घोडो
हरई-(७ ११) (प्रा हरइ) दूर करे छे
हरख्यउ-(३.८) हर्षित थयो
हरिलंकी-(४.२७) सिंहनी केड समान पातळी कमरवाळी.
हवई-(१ १) (स. भवति, प्रा हवइ) थाय छे.
हवी-(७ ६) (सं. भूता, प्रा हविआ) हुई, थई.
हसारथ-(३३ ६६) उपहास, मश्करी
हसुं-(७ २८) हासी
हारी-(१२ ७) पकडीने, ऊंचकीने.
हासुं-(३४ ८) हास्य, उपहास.
हुआं-(२७ १०) (सं भूत, प्रा. हूअ) थया
हेजि-(४ २४, २२ १०) सहज (?)
हेला-(२ ३) (स. हेला) अनायास
हेषारा-(३ ११) (स हेषारव) हणहणाट
होयो-(५ २) (स भवतु, प्रा होज्जउ) होजो, थजो
होस्यई-(३ १४) (सं भविष्यति, होस्सइ) हशे-थशे

शुद्धिपत्रक

		अशुद्धि	शुद्धि
ढाल ३	कडी ६	समसुंदर	सम सुंदर
,, ,,	कडी ७	सुंदर पणइं	सुंदरपणइं
,, ,,	कडी ८	सवि कहिनइं	सविकहिनइं
,, ,,	कडी १६	ठामो ठाम	ठामोठाम
ढाल ४	कडी १६	चंपकनइं	चंपक नइ
,, ,,	कडी ३१	जोवाभणी	जोवा भणी
,, ,,	कडी ३४	घरणी	घरणी
ढाल ५	कडी १	कहि तणइ	कहितणइ
,, ,,	कडी २त्रूटक हु		हो
ढाल ६	कडी ७	एकंगणुं	एकगणुं
,, ,,	कडी १७	अह्लाद	आह्लाद
,, ,,	कडी २०	अकथितकारीचेट	अकथितकारी चेट
,, ,,	कडी २१	विसनी	व्यसनी
,, ७	कडी २	ससिर	सिसिर
,, ,,	कडी ३	प्रीयु मुख	प्रीयुमुख
,, ,,	कडी ७	घउ	द्यउ
,, ,,	कडी १६	धणउ	घणउ
,, ,,	कडी २४	गर्भवृद्धि	गर्भ वृद्धि
,, ,,	कडी ३०	जरा जीर्ण	जराजीर्ण
ढाल ८	कडी ५	न विचलइ	नवि चलइ
ढाल ९	कडी २	धरि	धरि
,, ,,	कडी ७	उलंधन	उलंघन
,, ,,	कडी ७	सेसजल	सेस जल
,, ,,	कडी ९	सालकि	साल कि
,, ,,	कडी ९	हम	इम
,, ,,	कडी १०	वनशाथि	वम शाथि
,, ,,	कडी १०	मोकला मणीरे	मोकलामणी रे
,, ,,	कडी ११	सुंदरि	सुदरि
,, ,,	कडी ११	समार	सभार
,, ,,	कडी १५	उच्छंगिकि	उच्छंगि कि
,, ,,	कडी १७	मेहलोजंति	मेहली जंति
ढाल १०	कडी ४	फूल–फगर	फूल पगर
,, ,,	कडी ६	वृंदाजी	वृंदजी

		अशुद्धि	शुद्धि
ढाल १०	कडी ६	सोंहइ	सोहइ
ढाल ११	कडी २	होइ	हीइ
,, ,,	कडी २	रूढी	रूठी
,, ,,	कडी ५	अति हि	अतिहि
,, ,,	कडी ६	आपसवाद	आप सवाद
,, ,,	कडी ७	प्रसिधी	प्रसिध्धि
,, ,,	कडी ७	सीकोतरि नामइ	सीकोत्तरि सुलसा नामइ
,, ,,	कडी १४	पाठउं	पाडउ
,, ,,	कडी १६	ध्रे	धे
ढाल १२	कडी ३	सेर सेरी	सेरी सेरी
,, ,,	कडी ७	लेवई	खेवई
,, ,,	कडी १०	भृतजनके	मृतजनके
,, ,,	कडी १४	जभा	जंभा
,, ,,	कडी १४	यु	यु'
,, ,,	कडी १४	कुलिका	कलिका
ढाल १३	कडी २	उतम	उत्तम
,, ,,	कडी ४	घर	घर
,, ,,	कडी ८	भाग	माग
,, ,,	कडी १०	हु	हु
,, ,, दूहा ६	कडी ६	धणी	घणी
ढाल १४	कडी ६	देख	देव जी
,, ,,	कडी ९	ठामी	ठामि
,, ,,	कडी १०	पडीआ	जडीआ
,, ,,	कडी १०	उसेस	असेस
,, ,,	कडी १४	बालइ	वालइ
,, ,,	कडी १५	नउ	जउ
,, ,,	कडी १५	नीभेडी	नींमेडीजी
ढाल १५	कडी १	योगिना	योगिनी
,, ,,	कडी १	जटा—जूटा	जटाजूटा
,, ,,	कडी २	नाश	नाशा
,, ,,	कडी ५	बाणही	वाणही
,, ,,	कडी ७	जगइ	जपइ
,, ,,	कडी ७	जास्यइ नासी	जास्यइ नासी
,, ,,	कडी ११	मारी	मारि

		अशुद्धि	शुद्धि
ढाल १६	कडी १	वउलावी	वउलावी
,, ,,	कडी १	ए कस्युं	एक स्युं
,, ,,	कडी २	घरि	धरि
,, ,,	कडी ४	प्राण प्रीआनइ	प्राणप्रीआनइ
,, ,,	कडी ९	धात	घात
,, ,,	कडी ९	संधात	संघात
,, ,,	कडी १०	दोसई	दीसइ
,, ,,	कडी ११	जे	ए
,, ,,	कडी १३	धाणी	घाणी
,, ,,	कडी १४	घरणी	धरणी
,, ,,	कडी १५	विलखउ	विलखउ

ढाल १६ कडी १६ पछी आवती एक कडी छापवानी ज रही गई छे जे आ प्रमाणे

तव कोपाज(घ)ल राजा बोल्यउ, रे रे स्त्रीना दास,
प्रत्यक्ष इम अवगुण छावरता, तुं न्यापित मकाश

		अशुद्धि	शुद्धि
ढाल १७	कडी २	भुंडीनइं	भूंडीनइ
,, ,,	कडी २	केसइ	केसइं
ढाल २४	कडी ८	आस्या-विलधी	आस्या विलूधी
ढाल २५	कडी ४	प्राण न दीधी	प्राण न दीधां
ढाल २९	कडी ४	वहू	वेहु
,, ,,	कडी ६	सुंदरिपाणइ	सुन्दरपाणइ
ढाल ३०	कडी ३	कइस्यउं	कइ स्यउं
ढाल ३३	कडी ५	निरापराध	निरपराध
,, ,,	कडी ७	लुंटा	लुंटी
ढाल ३४	कडी १	कनक-कुमार	कनककुमार
,, ,,	,, १	प्रेम-विवहार	प्रेमविवहार
ढाल ३५	कडी १	वलनउं	वलतउं
ढाल ३६	कडी ८	एणी नयणि	एणीनयणि
,, ,,	कडी १०	कुमर गिणी	कुमर गणी
ढाल ४०	कडी ६	संवादइ रे	सवादइ रे
ढाल ४१	कडी १	त्रूटक साधवउ ही	साधवउ हो
पानु ६०	लीटी ८	खिलित	लिखितं

संदर्भग्रंथसूची

अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, जूनी गुजराती, अर्वाचीन गुजराती, हिन्दी पुस्तको

अंग्रेजी

Gujarat and its literature Munshi K. M , Bombay, 1954.

संस्कृत-प्राकृत

आख्यानक मणिकोप. कर्ता-नेमिचंद्रसूरि (स आम्रदेवसूरि) बनारस, सवत २०१८.

कथासरित्सागर. भट्ट सोमदेव मुंबई १९३०.

कुमारपालप्रतिवोध कर्ता-सोमप्रभाचार्य (सं जिनविजयजी) वडोदरा, १९२०.

पउमचरियं कर्ता-विमलसूरि (स याकोबी ह.) भावनगर, १९१४

बृहत्कथामंजरी कर्ता-क्षेमेन्द्र (स शिवदत्त अने परब) मुबई, १९३१

भरतेश्वरवाहुवली वृत्ति (भा १-२) लेखक-शुभशीलगणि, सुरत १९३२.

विवेकमंजरी कर्ता-आसड, (टीकाकर्ता-बालचन्द्रसूरि) सवत १९७५

समराइच्चकहा कर्ता-हरिभद्रसूरि (स मोदी एम. सी.) अमदावाद, १९३३

गुजराती

अभिमन्यु आख्यान. कर्ता-प्रेमानंद (सं जेसलपुरा शिवलाल) अमदावाद, १९६७.

अभिवन ऊझणू. कर्ता-देहल (सं. जेसलपुरा शिवलाल) अमदावाद, १९६२

आनन्द काव्य महोदधि. संपादक-झवेरी जीवणचन्द साकरचन्द मुबई, १९१८.

आपणा कविओ शास्त्री के का. अमदावाद, १९४२

इतिहासनी केडी. साडेसरा भोगीलाल जे वडोदरा, १९४५

कथासरित्सागर कर्ता-भट्ट सोमदेव, अनु-देशाई ई छ अने शास्त्री शा गि मुंबई, १९०९.

कवि नाकर. एक अध्ययन त्रिवेदी चीमनलाल शि. अमदावाद, १९६६

कान्हडदे प्रवन्ध (खंड १-२) कर्ता-पदमनाभ (सं व्यास कान्तिलाल ब) मुम्बई, १९२७

कुमारपाल प्रतिवोध सोमप्रभाचार्य, भावनगर, १९२७

कुवलयमाला (गुर्जरानुवाद) ले उद्योतनसूरि स. हेमसागरसूरि (सहसंपादक-शाह रमणलाल ची.) मुम्बई, १९६५.

गुजराती भाषानी उत्क्रान्ति दोशी पडित वेचरदास. मुम्बई, १९४३

गुजराती साहित्य-मध्यकालीन रावळ अनतराय, मुम्बई, १९३३

गुजराती साहित्यना स्वरूपो मजमुदार मञ्जुलाल र वडोदरा, १९५४.

गुजराती साहित्यनी विकासरेखा ठाकर धीरुभाई, सुरत, १९५४

जंबूस्वामीरास कर्ता-यशोविजयजी (सं शाह रमणलाल ची) अमदावाद, १९२४.

जूनी गुजराती भाषा. पटेल चतुरभाइ च मुम्बई, १९३५.

जैन गुर्जर कविओ (भाग १, २, ३) लेखक-संपादक-देशाई मोहनलाल दलीचन्द मुम्बई, १९२६-४४

जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास देशाई मोहनलाल दलीचन्द मुबई, १९३३.

जैन सोळसती चरित्र शाह अ ओ अमदावाद, १९३९

तपागच्छ पट्टावली (भा. १) कर्ता-उपाध्याय धर्मसागरजी. स पन्यास कल्याणविजयजी महाराज, अमदावाद, १९४०

त्रण प्राचीन गुजराती काव्यो भायाणी हरिवल्लभ चु मुंबई, १९५५.

दशमस्कन्ध १. सं. जोशी उमाशंकर अने भायाणी हरिवल्लभ चु. अमदावाद, १९६६.
नलदवदंती रास. कर्ता समयसुंदर (सं शाह रमणलाल ची.) अमदावाद, १९५७.
नळाख्यान कर्ता प्रेमानन्द (सं. रावळ अनंतराय म) अमदावाद, १९५१.
नेमिरंगरत्नाकर छंद. कर्ता–लावण्यसमय (सं. जेसलपुरा शिवलाल) अमदावाद, १९६५.
पंदरमा शतकना प्राचीन गुर्जर काव्य स ध्रुव केशवलाल ह अमदावाद, ई. स. १९२७
पृथ्वीचंद्र चरित्र कर्ता–माणिक्यसुंदरसूरि (सं. त्रिवेदी भूपेन्द्र त्रिवेदी अनसूया) मुम्बई, १९६६.
प्राचीन गुजराती गद्यसंदर्भ. स जिनविजयजी अमदावाद. संवत १९८६
प्राचीन गुजराती छंदो. पाठक रामनारायण वि अमदावाद, १९४८
प्राचीन फागुसंग्रह म साडेसरा भोगीलाल. पारेख सोमाभाई, वडोदरा १९५५,
बृहत् पिंगल पाठक रामनारायण वि मुंबई, १९५५
भरतेश्वरबाहुबली वृत्ति. शुभशील अमदावाद, १८९८
मदनमोहना कर्ता शामळभट्ट (सं भायाणी हरिवल्लभ चु) मुंबई, १९५५.
मध्यकालनो साहित्य प्रवाह मुनशी कनैयालाल मा मुंबई, १९२९.
मध्यकाळना साहित्य प्रकारो महेता चन्द्रकान्त मुंबई, १९५८.
मध्यकालीन रास साहित्य वैद्य भारती मुम्बई, १९६६
स्थूलिभद्र फागु स. भायाणी हरिवल्लभ चु मुम्बई, १९५५.
वसंतविलास कर्ता–अज्ञातकवि (सं शास्त्री के का.)अमदावाद, १९६६
विमलप्रबंध कर्ता–लावण्यसमय (सं. व्यास म ब.) सुरत, १९१६
विमलप्रबंध. कर्ता लावण्यसमय (सं शाह धीरजलाल धनजीभाई) अमदावाद, १९६५.
वेतालपचीसी कर्ता–शामळ (स पटेल अ त्र) मुंबई, १९६२
शोध अने स्वाध्याय–भायाणी हरिवल्लभ चु मुम्बई, १९६५
संशोधननी केडी. साडेसरा भोगीलाल जे. अमदावाद, १९६१
सिंहासन बत्रीशी कर्ता–शामळ (सं भायाणी हरिवल्लभ चु.) मुम्बई, १९६०

हिन्दी

प्रबन्ध चिन्तामणि कर्ता–मेरुतुंगाचार्य (सं. द्विवेदी हजारीप्रसाद) अमदावाद, १९४०.
रास और रासान्वयी काव्य. ओझा दशरथ अने शर्मा दशरथ, काशी, १९६०
शत्रुंजय तीर्थोद्धार प्रबंध सं. जिनविजयजी. भावनगर, १९१७
संदेशरासक–कर्ता–अब्दुल रहेमान (स द्विवेदी हजारीप्रसाद, त्रिपाठी विश्वनाथ) मुम्बई, १९६०.

शब्दकोषो

पाइअ–सद्द–महण्णवो कर्ता स्व पं शेठ हरगोविन्ददास त्रिकमचंद (सं अग्रवाल वासुदेवशरण, मालवणिया दलसुखभाई) बनारस, १९६३
भगवद्गोमंडल कर्ता–भगवतसिंहजी भाग १ थी ९, गोंडल, १९४४–१९५५.
राजस्थानी शब्दकोष (खंड १) कर्ता–सीताराम लालस (परिष्कारक दाधीच दयानन्द शास्त्री) जोधपुर, संवत २०१८.
A Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages
Turner R L New York-Toronto, 1966

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर ग्रन्थमाला

*१	सप्तपदार्थी–शिवादित्य, सपा० डॉ जे एस. जेटली	४=००
२	५,१५,२० सस्कृत प्राकृत हस्तप्रत केटलोग भाग १–४	१६०–००
*३	काव्यशिक्षा विनयचंद्रकृत सं डॉ एच जी शास्त्री	१०–००
४	योगशतक हरिभद्रसूरिकृत स्वोपज्ञवृत्तिसह	५–००
६	१६,२४ रत्नाकरावतारिका रत्नप्रभसूरिकृता भाग १–३	२६–००
*७	गीतगोविंद–जयदेव मानाककृतवृत्तियुत	८=००
८	नेमिरगरत्नाकरछद कवि लावण्यसमयकृत	२६–००
9	The Natyadarpana of Ramcandra and Gunacandra A Study	30-00
*१०	*१४,२१ विशेषावश्यकभाष्य–स्वोपज्ञवृत्ति जिनभद्रसूरि भाग १,२,३	१५–२०–२१
11	Akalanka's criticism of Dharmakirti's Philosophy	30-00
१२	रत्नाकरावतारिकाद्यश्लोकशतार्थी जिनमाणिक्यगणिकृत	८–००
*१३	शब्दानुशासन आचार्यमलयगिरिकृत	३०–००
१७	कल्पलताविवेक अज्ञातकर्तृक	३२–००
१८	निघंटुशेष हेमचंद्रकृत श्रीवल्लभगणिकृतवृत्तिसह	३०–००
१९	योगबिन्दु आचार्यहरिभद्रसूरिकृत. अंग्रेजी अनुवादसह	१०–००
२२.	शास्त्रवार्तासमुच्चय आचार्यहरिभद्रसूरिकृत हिंदी अनुवादसह	२०–००
२३	तिलकमंजरी. पल्लीपाल धनपालकृत	१२–००
२५	३३. नेमिनाहचरिउ. आचार्यहरिभद्रसूरिकृत भाग १–२	८०–००
26	A Critical study of Mahapurana of Puspadanta	30-00
२७	योगदृष्टिसमुच्चय हरिभद्रसूरिकृत अंग्रेजी अनुवादसह	८–००
28	37-Dictionary of Prakrit Proper Names Part 1-2	67-00
२९	प्रमाणवार्त्तिकभाष्यकारिकार्धपादसूची	८–००
३०	प्राकृत जैन कथा साहित्य ले. डॉ जगदीशचंद्र जैन	१०–००
31.	Jaina Ontology by Dr K. K Dixit	30-00
32	The Philosophy of Sri Svaminarayana by Dr. J. A. Yajnik	30-00
३४	अध्यात्मबिन्दु उपाध्याय हर्षवर्द्धनकृत	६–२०
३५.	न्यायमंजरीग्रन्थिभग चक्रधरकृत	३६–००
३६.	जेसलमेरुस्थ हस्तप्रत केटलोग	४०–००
38.	Karma and Rebirth	6-00
३९	मदनरेखा आख्यायिका जिनभद्रसूरिकृत	२५–००
४०	प्राचीन गूर्जरकाव्यसचय	१६–००
41.	Jaina Philosophical Tracts	16-00
४२.	सणतुकुमारचरिय	८–००
43	The Jaina Conception of Omniscience by Dr. Ram Jee Singh	30-00

* Out of Print

44 Tattvārthasūtra, Com by Pt Sukhlalji. Eng Translation 32-00

४५ इसिभासियाइ १६-००

४६ हैमनाममालाशिलोञ्छ १६-००

47 A Modern understanding of Advaita Vedanta by Dr. Kalidas Bhattāchārya 6-00

४८ न्यायमजरी-गुजराती अनुवाद भा.१

49 Atonements in the Ancient Ritual of the Jaina Monks. by Dr Colette Caillat 30-00

50 The Upabrmhaṇa and the Rgveda Interpretation by Prof T G. Mainker. 6 00

५३ ऋषिदत्तारास. जयवंतसूरि

संबोधि (त्रैमासिक) भा १,२,३,४, ८०-००

In the Press

१ गाहारयणकोस–जिनेश्वरसूरि

२ शृंगारमंजरी–जयवंतसूरि

३. विलासवईकहा–साहारण कवि.

४ लघुतत्त्वस्फोट (अंग्रेजी अनुवाद)

५. प्राचीन गुजराती हस्तप्रत सूची

6. Fundamentals of Ancient Indian Music and Dance

७ वसुदेवहिंडी–मज्झिमखंड–धर्मसेनगणि

८ न्यायसिद्धांतदीप–सटिप्पनक.

९. भुवनभानुकेवलिचरिय–इन्द्रहंसगणि

१० तरंगलोला–(गुजराती अनुवाद सह)